

# बनजारा जाति : भाषा और लोकसाहित्य

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

की

पी-एच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

1983

प्रस्तुतकर्ता

यल. पाण्डु, एम. ए.

अध्यक्ष एवं निर्देशक

डॉ. चन्द्रभान रावत,

एम. ए., पी-एच.डी., डी. लिट.,

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद ।

DECLARATION

It is declared that this work has been originally carried out by the under signed, under the Supervision of professor Chandra Bhan Rawat in the Department of Hindi, University of Hyderabad, Hyderabad, and that this has not been submitted for any degree to any other University.

Hyderabad (INDIA)

  
L. PANDU.



C E R T I F I C A T E

It is certified that this thesis work has been originally carried out by Sri L.Pandu under my Supervision.

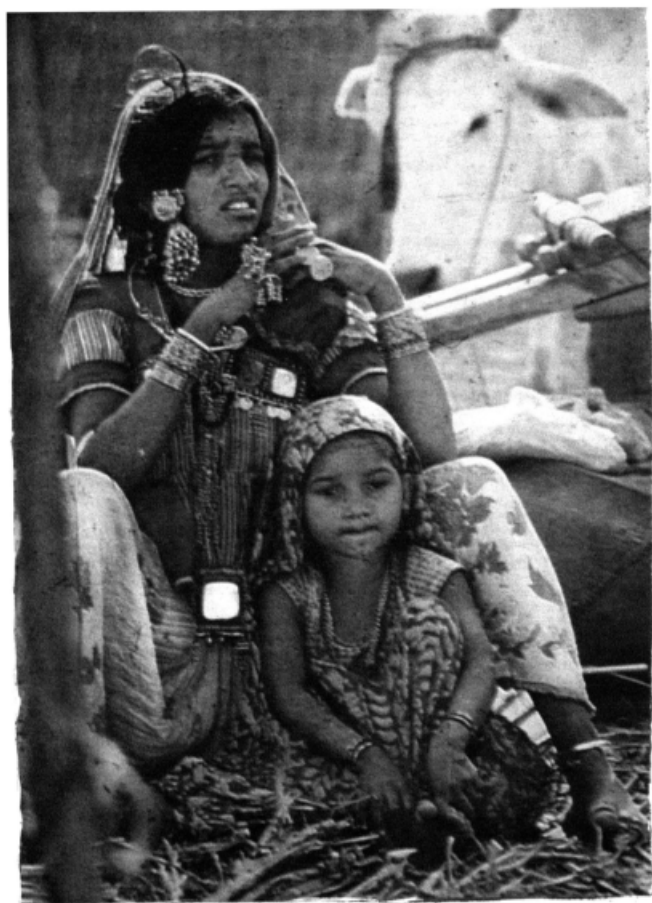
This thesis has been submitted in the Department of Hindi, University of Hyderabad, Hyderabad for the award of the degree of Doctor of Philosophy.

DATE:

HYDERABAD(INDIA)

  
(PROFF. CHANDRA BHAN RAWATH)  
Supervisor & Head,  
Department of Hindi,  
University of Hyderabad,  
HYDERABAD.

-..oo0oo.-



विषय अनुक्रमिका  
=====

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय :

बनजारा जाति : सामान्य परिचय

0. बनजारा : सामान्य परिचय

1.1. बनजारा शब्द और व्युत्पत्ति

1.2. बनजारा : उद्भव और विकास

1.3. बनजारा : मूल निवास स्थान

1.4. बनजारा बोली

1.5. बनजारा जनसंख्या

1.6. बनजारों का दक्षिण गमन

1.7. बनजारों और जिप्सी

1.8. बनजारा : वंशोद्भव

2.7 राजपूत और बनजारा गोत्र

3. गोर बनजारा

4. चारण बनजारा

5. दांडी बनजारे

6. मधुरा बनजारे

7. मुसलमान बनजारे

- 1.1.1.1 द्वस्व स्वर
- 1.1.1.1.1 द्वस्व स्वरों का संस्वनात्मक विवरण
- 1.1.1.2 दीर्घता पर आधारित संस्वन
- 1.1.1.3 श्रुति पर आधारित संस्वन
- 1.1.1.4 नासकीय करण-जन्म संस्वन
- 1.1.1.5 अनुनासिक्य
- 1.1.1.6 स्वर संयोग
- 1.2 व्यञ्जन ध्वनिग्राम
- 1.2.1 व्यञ्जन ध्वनिग्राम के स्वल्पान्तर धुम्म :
- 1.2.2 व्यञ्जन ध्वनिग्राम तथा उनके संस्वन
- 1.2.3 व्यञ्जन संयोग ।

चतुर्थ अध्याय :

### पद विचार

- 0. प्रस्तावना
- 1. संज्ञा की प्रत्यायात्मक संरचना
- 1.1. पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग
- 1.2. जन्तव्य प्रत्यय
- 2. वचन प्रत्यय

- 2.1. वचन प्रत्यय के रूप
3. कारक और विभक्ति
4. सर्वनाम
- 4.1. संज्ञाओं के तिथिक रूपों के स्थानापन्न
- 4.2. विशेषणों के स्थानापन्न
5. परसर्ग :
6. विशेषण

पंचम अध्याय :

### क्रिया-विचार

0. प्रस्तावना
1. धातु
  - 1.1. एकाक्षरात्मक धातुएँ
  - 1.2. द्व्यक्षरात्मक धातुएँ
  - 1.3. रूप रचना
  - 1.4. धातुओं के साथ प्रत्ययों का योग :
  - 1.5. काल रचना
  - 1.6. कृदन्तीय रचना

- 1.7. वर्तमान पूर्ण निश्चयार्थ
- 1.8. भूतकालिक पूर्ण निश्चयार्थ
- 1.9. क्रियार्थक संज्ञा के साथ रूप रचना
2. संयुक्त क्रिया :
- 2.1. पूर्वकालिक कृदन्तों पर अन्य क्रियाओं का संयोग

§

तृतीय छण्ड § लोक साहित्य §

छठ अध्याय :

लोक साहित्य : सामान्य परिचय

- d. लोक
  1. ग्राम जन तथा लोक
  2. लोक-संस्कृति, लोकवाता तथा लोकलोक
  3. लोक साहित्य
  4. परम्परा
  5. साहित्य और लोक साहित्य
  6. लोक साहित्य की विधायें
    - 6.1. लोकगीत
    - 6.2. लोकगाथा
    - 6.3. लोक कथा

- 6.4 लोकोक्ति
- 6.5 लोक कला
- 6.5.1 लोक संगीत
- 6.5.2. लोक नृत्य
- 6.5.3. लोक चित्र कला

सप्तमः अध्यायः :

### बनजारा लोक गीत

- 0. पुस्तावना
- 1. जन्म के गीत
  - 1.1. गर्भवती का छाना-पीना
  - 1.2. प्रसव गीत {जगोदगीत}
  - 1.3. पुत्र जन्म
  - 1.4. कादा {काड़ो}
  - 1.5. भूषमा लाम्पसी {उलवा}
  - 1.6. छटी
  - 1.7. जल पूजन और कौमरी बाटना  
{धूँधरी बेटणो}
  - 1.8. नामकरण
  - 1.9. जन्म प्रशान {लपटी घटाणो}
  - 1.9.1 कर्ण छेदन {कानों में बाकली डालना}

2. विवाह के गीत
  - 2.1. सगाई
  - 2.2. मनोरंजन
  - 2.3. वर यात्रा
  - 2.4. वर का स्वागत
  - 2.5. घोटार नक्ता {घोल पीने का कार्यक्रम}
  - 2.6. नखतोर वाद्यार हंगोळी  
{कन्या का विवाह स्नान}
  - 2.7. खेतदूर हंगोळी {वर का स्नान}
  - 2.8. वाद्यार जंगेर नक्ता {सप्तपदी से पूर्व अनुष्ठान}
  - 2.9. वाद्यार भदिर तैयारी {सप्तपदी की तैयारी}
  - 2.9.9.2 छोरीन भार काङ्गो {कन्या की बिदाई}
3. मृत्यु संस्कार के गीत
  - 3.1. मृत्यु संबंधी गीत
  - 3.2. श्रद्धायात्रा के पूर्व का गीत
4. देवी-देवताओं के गीत
  - 4.1. पौराणिक देवता
  - 4.2. लोकदेवता
  - 4.3. सन्त या महापुरुष वर्ग
  - 4.4. सती
5. पर्वोत्सव सम्बन्धी गीत
  - 5.1. होली



- 5.2. दीपावली
- 5.3. काहरा {दसराव}
- 5.4. तीज
- 6. अन्न परिहार सम्बन्धी बनजारा लोकगीत
- 6.1. पशु चराने के गीत
- 6.2. कृषि गीत
- 6.3. तक्की गीत
- 6.4. पणिहारी गीत
- 7. व्यापार के गीत

अन्तम अध्याय :

### बनजारा लोक गाथा

- 1. लोक गाथा की परिभाषा
- 2. लोक गाथा की विशेषताएँ
- 3. लोक गाथा साहित्य का वर्गीकरण
- 4. बनजारा लोक गाथा का वर्गीकरण
- 4.1. धार्मिक गाथाएँ :
- 4.2. वीरगाथा
- 4.3. पुण्य गाथाएँ
- 4.4. रौमसिक गाथाएँ

### नवम् अध्याय :

#### बनजारा लोक कथा

0. प्रस्तावना
1. लोकगीत और लोक कथा
2. कथा और कहानी
3. लोक कथाओं की प्राचीनता
4. बृहत्कथा
5. बनजारा लोक कथाओं का वर्गीकरण
  - 5.1 उपदेशात्मक कथा
  - 5.2. प्रेम कथा
  - 5.3. पशुओं की कथा
  - 5.4. उद्भूत कथा
  - 5.5. मनोरंजक कथा
  - 5.6. व्यापारिक कथा

### दशम् अध्याय :

#### बनजारा लोकोक्तियाँ

0. बमबडडड लोकोक्तियों की प्राचीन परंपरा
1. लोकोक्तियों की विशेषताएँ

2. मुहावरें
3. लोकोक्तियाँ
4. कथावस्तु
5. पहेली
- 5.1. पहेलियों का वर्गीकरण

§

उ प सं हा र

परिशिष्ट

परिशिष्ट - एक

परिशिष्ट - दो

परिशिष्ट - तीन

सहायक ग्रन्थ सूची

हिन्दी

अंग्रेजी

बनजारा चित्रवाली

प्रकरण

वाक्कल विषय के अनुसन्धान केन्द्रों पर जन-जातियों की संस्कृति, भाषा और उनके साहित्य सम्बन्धी शोध कार्य में संचि ली जा रही है। भारत में जन-जातियों के क्षेत्रों में देशी और विदेशी विद्वानों के द्वारा शोध कार्य किया जा रहा है। बनजारा जाति याथा प्रकृति की एक भारत व्यापि जनजाति है। भारत में ही नहीं यूरोप में भी जिप्सी जाति के छुर्तु समूह और टाडि मिल जाते हैं। भारत में विशेष रूप से इस जाति के पड़ाव महाराष्ट्र, कर्नाटक और ताम्ब में है। महाराष्ट्र में इनके संबंध में शोध कार्य भी हुआ है। किन्तु ताम्ब के विश्वविद्यालयों में इस जाति पर कोई महत्वपूर्ण शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन ताम्ब प्रदेश के बनजारों/सम्बाडियों की भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में पहला कार्य है।

किंवदंतियों, परम्पराओं अनुश्रुतियों और भागवत प्रमाणों के आधारों पर यह सिद्ध होता है कि ताम्ब प्रदेश के बनजारों का जातीय मूल स्रोत राजस्थान है। वहाँ से चलकर विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए यह जाति ताम्ब में प्रविष्ट हुई और उसके केवल धूमन्तु समूह ही यहाँ नहीं मिलते बल्कि टाडों के रूप में इनकी बस्तियाँ भी ताम्ब में मिलती हैं। बनजारा और सम्बाड़ी शब्दों की व्युत्पत्ति कई प्रकार से की जाती है। इन व्युत्पत्तियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह जन जाति पशुओं के व्यापार, सामान लादने के काम और नमक के व्यापार से सम्बन्धित रही।

साक्षात् बनजारे की अनुश्रुति इस जाति के प्रान्त होने के व्यापार को प्रमाणित करती है। बनजारा जाति के जातीय संघटन को देखने से

यह स्पष्ट हो जाता है कि मुसलमान और हिन्दू दोनों ही प्रकार के बनजारे मिलते हैं। हिन्दू बनजारों के गोत्र प्रायः राजपूत गोत्र ही है। व्यवसाय के आधार पर बनजारों की चारण, ढाढी, सोनार आदि शाखाएँ भी मिलती है।

जहाँ तक बनजारों के टाँडे की संरचना का प्रश्न है, इसका एक प्रधान होता है जिसको नायक कहते हैं। बनजारों की, बनजारों की जातीय पंचायत के संघटन का केन्द्र यही नायक होता है। जातिगत समस्याओं का न्याय नायक "नसाब" § न्याय स्थान § में जाति के अन्य प्रमुख व्यक्तियों के साथ करता है।

बनजारों के पारिवारिक सम्बन्ध सामान्य रूप से अन्य हिन्दुओं के पारिवारिक सम्बन्धों जैसे ही है। केवल उनकी वेशभूषा और इनके वाभूषण अन्धों से विशिष्ट है। जहाँ तक इनके धार्मिक संघटन का प्रश्न है, बनजारा जाति कुछ स्थानीय लोक-देवताओं के साथ-साथ शक्ति के उपासक है। बलि की प्रथा भी इनमें मिलती है। इनके पर्व त्यौहार मस्ती और उल्लास से भरे रहते हैं।

उमर बनजारा जाति के जिन पक्षों को स्पष्ट किया गया है उनका सम्बन्ध बनजारों के जातीय स्तर और उनकी संस्कृति से सम्बन्धित हैं। इन दोनों विषयों का विवेचन प्रबन्ध के प्रथम छण्ड के पहले और दूसरे अध्याय में किया गया है।

दूसरे छण्ड में बनजारों की भाषा का परिचयात्मक विश्लेषण किया गया है। इस छण्ड के तीन अध्यायों में बनजारा भाषा की ध्वनियों और पदों व क्रिया विचार पर विवरणात्मक दृष्टि से विचार किया गया है। वाक्य विचार को इस अध्ययन में

सम्मिलित नहीं किया गया है क्योंकि बनजारों का वाक्य विधान इतना जटिल और विस्तृत है कि इसके लिए अलग से एक शोध-ग्रन्थ आवश्यक है। केवल प्रमुख वाक्यों के नमूने परिशिष्ट में संकलित कर दिये गये हैं।

तीसरे छण्ड में के छठे अध्याय में बनजारा जाति में प्रचलित लोक साहित्य के विविध प्रकारों और रसों का सामान्य परिचय दिया गया है। अन्य क्षेत्रों के समान ही बनजारा लोक साहित्य में गीत, गाथा, कथा, लोकोक्तियाँ आदि समाविष्ट हैं।

सातवें अध्याय में बनजारों के लोकगीतों का विस्तृत परिचय दिया गया है। इस जाति के जीवन में कोई भी ऐसा महत्वपूर्ण अवसर नहीं होता जबकि गीतों का गायन नहीं हो। विशेष रस से पुत्र जन्म और विवाह के अवसर अपरिमित गीतों से गूँजते रहते हैं। विवाह का तो एक-एक अवसर गीतों की भीड़ से भरा रहता है। विशेष रस से कन्या की बिदाई का अवसर करुण गीतों से सजल रहता है। स्वयं बिदा होती हुई कन्या भी रोते-रोते गाती है। इसके लिए उसे पहले प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

वर्ष के पर्व और उत्सव भी गीतों से निनादित रहते हैं। इनमें मुख्य रूप से दशाहरा, दीपावली, होली और तीज उल्लेखनीय हैं।

धार्मिक गीतों में यात्रा के गीत और देवी देवताओं के गीत आते हैं। देवी देवताओं से सम्बन्धित गीतों के दो प्रकार किये जा सकते हैं। एक तो वे गीत जो हनुमान, देवी, राम, कृष्ण और बालाजी आदि प्रसिद्ध हिन्दू देवी-देवताओं से सम्बन्धित हैं। गीतों का दूसरा वर्ग लोक-देवताओं और संतों से सम्बन्धित है। इनमें तुलजा, लोकामसंद,

सेवाभाषा तथा कुछ सतिया जाती है ।

धार्मिक गीतों के अतिरिक्त जनजातों के काम का परिवार भी कुछ गीतों के द्वारा होता है । इनको काम गीत की संज्ञा दी जा सकती है । यदि पशुचारण और कृषि कार्य के समय गीतों का गायन होता है तो स्त्रियाँ पानी भरने के समय, चक्की चलाते समय गीत गाती है ।

आठवें अध्याय में जनजातों की लोकगाथाओं का वर्गीकरण और विवेचन किया गया है । नौवें अध्याय में लोकगाथाओं का वर्णन किया गया है । यद्यपि नृत्य साहित्य में सम्मिलित किये नहीं जा सकते फिर भी इनको इसलिये विवेच्य बनाया गया है कि लोकगीत इनके साथ गाये जाते हैं और वे गीत साहित्य के अभिन्न अंग हैं ।

दसवें अध्याय में जनजातों के व्यवहार में गूँधी हुए मुहावरों तथा पहेलियों एवं लोकोक्तिओं का परिचय दिया गया है । यह जनजातों के जीवन व्यवहार का बहुत सजीव अंग है ।

अंत में कुछ परिशिष्ट भी जोड़ दिये गये हैं । पहले परिशिष्ट में जनजातों के कुछ हास-परिहासमय गीतों का परिचय दिया गया है । दूसरे परिशिष्ट में जनजात बोलों के वाक्यों के नमूने जोड़ दिये गये हैं । इनको एक विशिष्ट व्याकरणिक क्रम में रखा गया है । तीसरे परिशिष्ट में जनजात जाति की विशिष्ट शब्दावली प्रस्तुत है ।

प्रस्तुत शोध पुस्तक की प्रकृति ऐसी है कि इसके लिए बहुत कुछ क्षेत्रीय कार्य भी करता पड़ा । मुख्य रूप से धारू टाँडा, डम्मम टाँडा, मदनपल्ली टाँडा आदि उल्लेखनीय हैं । इन टाँडों के नायकों और वहाँ के जनजात भाईयों से सामग्री संग्रह में बहुत सहयोग प्राप्त



हुआ । इन सभी का मैं जाभारी हूँ । सभी ने उस प्रकार मेरी सहायता की कि जैसे - उन्हीं का कार्य हो रहा हो ।

प्रबन्ध की योजना बनाने से लेकर प्रस्तुतीकरण तक मेरे निदेशक प्रोफेसर चन्द्रभान रावत का वर्दहस्त मेरे ऊपर रहा । हर स्थिति में उनका वैज्ञानिक निदेशन मुझे प्राप्त होता रहा । उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ । विभाग के अन्य गुरुजनों से भी समय-समय पर प्रोत्साहन मिलता रहा उनके प्रति भी मैं जाभारी हूँ । मेरे कई मित्रों ने मेरी जाने-अनजाने सहायता की उन्हें भी मैं धन्यवाद देता हूँ ।

मेरी धर्म पत्नी श्रीमति सरोजा देवी का सहयोग भी कम नहीं है । मैं उसको साभार स्वीकार करता हूँ ।

इन शब्दों के साथ मैं शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

- एल. पाण्डु



पृथम सर्गः  
\*\*\*\*\*

बनजारा जाति

પ્રથમ અધ્યાય :

..

....

....

બનજારા જાતિ : સામાન્ય પરિવેશ



## 1. बनजारा : सामान्य परिचय

भारत की बनजारा जाति का इतिहास प्राचीन तथा गौरवमयी है ।<sup>1</sup> राजस्थान के साहसो एवं पराक्रमी राजपूत वीरों के ये वंश हैं ।<sup>2</sup> ये राजस्थान से जाये और देश के सभी प्रदेशों में फैल गए ।<sup>3</sup> प्राचीन काल से ही बनजारा कुम्हड़ जाति रही है, जिसका प्रमुख व्यवसाय व्यापार रहा है ।<sup>4</sup> एक स्थान से सामान कैलों पर लाद कर उसे दूसरे स्थान पर पहुँचाना एवं उस स्थान से आवश्यक वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हुए अपने परिवार के साथ घूमते रहना ही बनजारों की विशेषता रही है ।<sup>5</sup> मध्य-काल में मुगलिया फौजों के लिए सामग्री पहुँचाने का काम उनके जिम्मे था ।<sup>6</sup> मुगलों का राज्य अस्त हुआ, अंग्रेज आए और इनके साथ रेल्गाड़ी और मोटर आई, फिर स्वयं इन बनजारों का नक्क का व्यवसाय नष्ट हो गया ।<sup>7</sup> काल - पुत्राह में पड़कर इनके सारे लोग हथर उधर बिखर गए ।<sup>8</sup> अवग-अलग प्रदेशों में इनकी अवस्था भी एक सी न रही । बिहार, उड़ीसा, बंगाल, आंध्र, गुजरात में इन्हें आदिम जाति माना गया । दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मेसूर, राजस्थान, केरल में अनुसूचित जाति के रूप में मान्यता मिली । महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मद्रास में सर्वोच्च जाति के अंतिम इन्हें रखा गया है । अन्य राज्यों में अन्य अनुसूचित पिछड़ी जाति के रूप में स्वीकार किया गया है ।<sup>9</sup>

1. Col. Mackenzie : Berar Census Report, 1881, p.152.

2. Report of the Criminal Tribes Act Enquiry Committee, 1949, Government of India, p.12.

3. Irvin : Army of Indian Mughals, p.192.

4. Baines, Athlستان : ethnography, 1912, p.60.

5. Ibid : p.61.

6. Col. Tod, James : Letters on Mahrattas, Indian Office Tracts, (1798), p.67.

7. - Nanjundayya, H.V. : The Mysore Tribes and Castes, Mysore (1928), Vol. II, p.136.

8. The Constitution (S.T.) Order, 1950.

9. Report of All India Banjara Study Team, 1968, p.24.



भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद के शब्दों में --  
 " कोई विदेशी जो भारत से बिल्कुल अपरिचित हो, वह एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करे तो उसको इस देश में इतनी विभिन्नताएँ देखने में आएंगी कि वह कह उठेगा कि यह देश नहीं बल्कि कई देशों का एक समूह है, पर विचार करके देखा जाए तो इन विभिन्नताओं की तह में एक ऐसी एकता फैली हुई है जो अन्य विभिन्नताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुंदर मणियों का समूह बना देती है । " 1.

बीमती गांधी के अनुसार - " हिंदुस्तान की एकता की बुनियाद में यह बात है कि हम हिंदुस्थानी हैं, हिंदुस्तान की तरफ की है लिए उड़ी से उड़ी जो काम हैं, उन्हें करते रहें और अपने व्यक्तिगत को भी कायम रहें - यही बुनियाद है भारत की एकता में । " 2

विविधता और एकता के इस ध्रुवों की रेल में बनजारा जाति के योगदान का रंग अनूठा है । " नक्की काम का कपड़ा जब बनता है तो जुलाहा जहाँ जरूरत हो, वहीं सुनहरा धागा लगाता है, बाकी सब कपास के धागे होते हैं । फिर भी सुनहरा धागा कपड़े के अंदर फैला हुआ दिखाई देता है, ऐसा ही यह बनजारा समाज है ।  
 हिंदुस्तान के अंदर इस बनजारा समाज का धागा सब जगह फैला हुआ है ।

- 
1. डा. राजेंद्र प्रसाद : अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन -1951, दिल्ली का उद्घाटन भाषण ।
  2. बीमती बीदरा गांधी : अखिल भारतीय बनजारा सेक शिविर, 1966 उद्घाटन का भाषण ।
  3. मेहता अशोक : अखिल भारतीय बनजारा सेक शिविर 1966, समारोह का भाषण ।



1.1. बनजारा : शब्द और व्युत्पत्ति : ... ..

बनजारा के लिए ये शब्द प्रचलित हैं : \*

बनजारा, बजारा, बनबारे, बनजारी, बिजारी, ब्रजवासी, लभान, लभानी, लम्बानी, लम्बाठा, लम्बाडी, लवान, लवाना, लभान, लभानी, लभाना, लोभाना, लदेनिया, सुगाली, गवार, गोरिया, गवरिया, गमालिया, गवरा, कागिया, कागरिया, पचनाठा, शिरकीबन्द, शिरकीवाला, रिगाडे, बनजारी

इनमें से प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति नीचे दी गई है ।

॥क॥ बनजारा :

1. वाणिज्यकार > वाणिज्यार > बनजार<sup>2</sup>
2. बन + जारा = बनजार = बन का राजा

\* रिपोर्ट आफ दि जल इंडिया बनजारा स्टडी टीम, 210 हिन्द राजस्थान लिमिटेड, दादर, बम्बई-14, पृ.सं. 9 के अनुसार बनजारी महाराष्ट्र की बनजारी जाति नहीं ।

2 राजा का ध्वनि विपर्यय हो गया ।



3 बनजर > बंजरा > बंशा > बंज > बंजार - आ  
बनजर भूमि पर बसने वाला ।

4 बनजारा~ बंजारा~ बंजारा~ बनजारे~ बनजारी

॥ख॥ कुजवासी = "कुज प्रांत के निवासी"

॥ग॥ समान~सामानी~सम्बानी~सम्बाडी~सवान

सवाना~सवान~सवानी~सवाना~सोभाना

सवान \* से समन = समान = समनी

"नमक का व्यापार करनेवाला"

इनमें से ॥वन॥ का संशयक व्युत्पत्ति अधिक मान्य है ।

सम्बाडा शब्द दक्षिण भारत में अधिक प्रचलित है ।

॥घ॥ लदेनिया - "लादनेवाला"

॥ङ॥ सुगाली - "पशु पालन करनेवाला"

॥च॥ गवार या गोरिया

1॥ गवार~गोरिया~गवारिया

पंजाबी भाषा से प्रभावित जाति <sup>2</sup>

2॥ गौर शब्द पंजाबी से आया है ।

गौर से ही गौर बनजारा बना । <sup>3</sup>

3॥ गवारिया~गमालिया~गौरा

राजस्थानी भाषा से प्रभावित जाति । <sup>4</sup>

\* रिपोर्ट आफ दि बनजारा स्टडी टीम

2 रिपोर्ट आफ दाल बंध्या बनजारा स्टडी टीम, 210 दिन्द

राजस्थान विजिलेंस, दादर, बम्बई-14, ९.10

3 वही 4 वही ।



॥उ॥ कागि-कागिशिया-फनाठा

१॥ कागि = कंगी \*

२॥ कागिशिया = कंगी का व्यापार करनेवाला ।<sup>२</sup>

३॥ फनाठा = कंगी मराठी में कंगी को फनी कहते हैं ।  
फनी से ही फनाठा हुआ ।<sup>३</sup>

॥ज॥ शिरकी बंद-शिरकी वाला ।

शिरकी = एक प्रकार का घास जिसे चराई कुत्ते हैं ।<sup>४</sup>

शिरकीवाला = चटाई कुत्तेवाला ॥ पंजाब, हरियाणा और  
दिल्ली प्रदेश के रहनेवाले ।<sup>५</sup>

इन शब्दों में स्रोत शब्द लक्षण है । इस शब्द की आरम्भिक  
ध्वनि [ल] सभी शब्दों में सुरक्षित है । मध्य वर्ग की ध्वनि [व] का  
विकास [म] या [भ] में हुआ है । अल्प ध्वनि [ण] का विकास [न]  
में होना स्वभाविक है ।<sup>६</sup>

\* रिपोर्ट आफ जाल झिझा बन्जारा स्टडी टीम २१० बिन्दु राजस्थान  
विश्विद्यालय, दादर, बम्बई-१४, पृ. १०

२ वही

३ वही

४ वही

५ वही ।

६ यद्यपि राजस्थानी बोलियों में न ध्वनि सुरक्षित रहती है तथापि  
राजस्थान की कुछ पड़ोसी बोलियों में न न की प्रवृत्ति मिलती  
है । हो सकता है इसी का प्रभाव है ।





चन्द शब्दों में छोट शब्द "गो" से भी संबंधित है। इस शब्द की आरम्भिक ध्वनि [ग] गो वाले सभी शब्दों में सुरक्षित है। मध्य वर्ग की ध्वनि [व] का विकास [म] में हुआ है। अंत्य ध्वनि [र] है। \*

शब्दों की व्युत्पत्ति से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं :-

1। यह जाति वाणिज्य करने वाली थी / है।<sup>2</sup>

2। यह यायावर व्यापारी थे / है।<sup>3</sup>

3। यह कैलों/फण्डों पर सामान लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। बनजारों की कोटि उसके द्वारा लादने के व्यापार में काम जाने वाले फण्डों के संख्या पर आधार की जाती थी। लाख बनजारा वह होता था जिसके पास एक लाख पशु होते थे।<sup>4</sup>

4। बनजार शब्द का स्पष्टीकरण करते समय नामन्दा शब्द कोष में ऐसा लिखा है - कैलों पर जन्म लादकर जगह-जगह लेवने वाला व्यक्ति 1। व्यापारी 2। सोदागर।<sup>5</sup>

\* पंजाब की बोलियों में गौर शब्द सुरक्षित है। राजस्थान और पंजाब की कुछ पड़ोसी बोलियों में गो गड़ गवार गौरिया गौर गमालिया शब्द पाये जाते हैं।

2 वाणिज्य शब्द इसका प्रमाण है।

3 यह शक्तियाँ इसके यायावरी प्रवृत्ति के परिचायक हैं - सब ठाट पड़ा रह जायगा, जब लाद चलेगा बनजारा।

4 गौर बनजारे लोकाधा इतिहास, के. बजीराम पाटील, माछवी

5 लाख बनजारा कंक के चिह्न में कई दम्त कथार्थ प्रचलित है।

नामन्दा शब्द कोष



मुसलमानों इतिहासकारों एवं अंग्रेज विद्वानों में " बंजारा " शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में मतभेद था । इस शब्द के अन्वयार्थ द्वारा ही इसका अर्थ प्रकट हो जाता है ।

1. " बंजारा " शब्द का उद्गम संस्कृत " वाणिज्य " से हुआ है ।  
" वाणिज्य " का अर्थ है व्यापार, उससे बना वणिजः अर्थात् व्यापारी, बन्ध्या ।<sup>1</sup> बन्ध्या - संस्कृत वणिजः प्रा० वन्धि हिंदी बन्ध्या ।<sup>2</sup> व्यापार करने वालों को " बंजारा " कहा गया । ये लोग बैलों की पीठ पर माल लाद कर दौड़ा करते थे -- " जब लाद सके बंजारा । " <sup>3</sup> संस्कृत " वणिजः " से ही विभिन्न भारतीय भाषाओं में जो रूप बने हैं, उनमें बहुत समानता है । उदाहरणार्थ -- गुजराती - ॥ वन्जारा ॥, राजस्थानी ॥ बन्जारा ॥ मराठी ॥ बंजारी या वंजारी ॥ ।
2. संस्कृत " वाणिज्य " से प्राकृत " वन्जारा " अर्थात् व्यापारी बना ।
3. वनवर -- संस्कृत वन = जंगल, वर = घुमनेवाला । जंगलों में घुमने के कारण इन्हें " बंजारा " कहा गया ।<sup>4</sup>
4. वन ॥ सं० ॥ = जंगल, और ॥ सं० ॥ शब्द । अर्थात् जंगली प्राणियों का संहार करने वाला । वन खरि वंजारी ।<sup>5</sup>
5. बंजर ॥ उर्दू ॥ = रीक जमीन - जो संस्कृत " वंश्या " से निकला है ।<sup>6</sup>

- 
1. Apte, V.S. : Sanskrit - English Dictionary, p.500.
  2. कृष्णी, कृ.पा. : मराठी व्युत्पत्ति कोश, पृ. 206 ।
  3. डा० रामचंद्र शुक्ल : भाषा शब्द कोष, पृ. 1354 ।
  4. Elliot H.M., The races of north western Provinces of India, Volume I, p.52, Hassen S.S., The Castes and Tribes of Nizam's Domination, p.17.
  5. Ibid.
  6. Ibid.



6. विराजर - ॥ फारसी ॥ या बैरिंग - अरिद = वाचन का व्यापार करने वाला - इससे "बंजारो" हुआ ।<sup>1</sup>
7. बनज - ॥ पंजाबी ॥ - अर्थ व्यापार - व्यापार करने वाले "बंजारे" कहलाए ।<sup>2</sup>
8. बनजर बनजार बंजारा - प्रायः ये लोग जंगलों में ही निवास करके जीवन-यापन करते थे ।<sup>3</sup>

इन्के इस व्यवसाय का उल्लेख कर्नल टॉड, पब्लिश्टन, हेग आदि इतिहासकारों ने बड़े गौरव के साथ किया है । पुराने जमाने में मान या रसद ढोने के लालन बहुत सोमिल थे । केवल आदि पशुओं के अतिरिक्त कोई चारा न था । ऐसे समय में जवान, नमक आदि आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करके बंजारों ने समाज की अग्रपूर्व सेवा की। प्रथम ने इन्के महत्त्व को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है ।<sup>4</sup>

---

1. Shakespeare's Dictionary and Elliot's Races of N.W. P. India, p.52.

2. Temple, R.C., Indian Antiquary, Vol.IX, foot-note, p.205.

3. बंजारों की दशा का भौतिक वर्णन करने वाला एक दोहा निम्नलिखित है --

बनजारा बन में फिरे, लिए लकड़िया साथ ।

टांडा कहाँ लड गया, कोई संगी नहीं साथ ॥

4. "Banjaras associate chiefly together, seldom or never mixing with other tribes. They seem to have no home, no character but that of merchants, in which capacity they travel great distances to whatever parts are most in want of merchandise, which is the greatest part of corn."

-- Thurston, E., Castes and Tribes of Southern India, Vol. IX, Madras, 1909, p.213.



## 1.2. बलजारा : उद्भव और विकास

आधुनिक सभ्यता और संस्कृति का उद्भव और विकास इसी आदिम संस्कृति से हुआ है। विज्ञान के पक्षों पर उठने वाले प्रगतिशील चिन्तन की पृष्ठभूमि में आज भी ये आदिवासियों अपनी सभ्यता और संस्कृति के आदिम रूप को सिखे हुए दुर्गम अरण्यों एवं पर्वतों के बीच रहते हुए अखंड, पशु-पालन एवं कृषि-कर्म में लगे रहते हैं। यही कारण है कि इनकी सभ्यता और संस्कृति अपने प्रकृत रूप में वर्तमान है। संभवतः इसी तथ्य को ध्यान में रखकर एक बार राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने इन लोगों को " भगवान के निष्पाप पुत्र " की संज्ञा से अभिहित किया था।<sup>1</sup>

भारतीय सभ्यता और संस्कृति इसी आदिम सभ्यता का उन्मत्त तथा विकसित रूप है। स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही लिखा है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता जो इतिहास के उदय काल से लेकर ख्रिष्टीय युग की पार करती हुई वर्तमान काल तक चली आई है, इसके लंबे विस्तार और स्विस्त्रे का स्याल दिलचस्प और बहुत कुछ आश्चर्यजनक है। एक अर्थ में भारत के हम लोग इन हजारों वर्षों के उत्तराधिकारी हैं।<sup>2</sup>

### जन्मद, जन और जनजाति

स्मार्ट अलौक के अष्टम प्रधान शिन्नालेत में आदिवासियों का उल्लेख " जन्मद जन " के रूप में हुआ है। गोपथ ब्राह्मण में इन जनपदों का अत्यंत प्राचीन उल्लेख मिलता है। महाभारत में भी इनकी सूची प्राप्त होती है।<sup>3</sup> पाणिनी के अष्टाध्यायी में " जन्मद शब्दात् क्षत्रियाद " का उल्लेख मिलता है।

1. Unspoiled children of God.

2. नेहरू जवाहरलाल, चिन्तन इतिहास की झलक, पृ. 15

3. द्विवेदी हरिनिवास, मध्यभारत का इतिहास, प्रथम खंड, 1956, पृ. 3



जनजाति की व्याख्या ब्रेन, हटन, बोक्स,<sup>1</sup> जेक्स और स्टन तथा मुजुमदार<sup>2</sup> आदि अनेक वैद्वत् शक्तिशाली ने की है। गिल्लिन और गिल्लिन के अनुसार -- " जनजाति किसी भी ऐसे स्थानीय समुदाय के समूह को कहा जाता है, जो एक सामान्य भू भाग पर निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और सामान्य संस्कृति का व्यवहार करता हो।"<sup>3</sup>

बनजारा : जनजाति नहीं बल्कि जाति

वर्तमान बनजारा जाति एक विशिष्ट भू भाग पर निवास नहीं करती। वह भारत के विभिन्न प्रदेशों में फैली हुई है। " जाति और जनजाति के अंतर पर दृष्टिपात करते हैं तो सबसे पहला अंतर प्रतीत होता है कि जनजाति के लिए एक निश्चित भू भाग का होना अनिवार्य है, जबकि जाति के लिए यह आवश्यक नहीं है। जाति के लोग विभिन्न प्रदेशों में रहते हुए भी एक जाति के सदस्य रह सकते हैं।"<sup>4</sup> व्यक्ताय, देशांतर आदि कारणों से जनजाति का स्मांतर जाति में हो जाता है।<sup>5</sup>

1. Boss, F; General Anthropology, p.41.

2. Dr. Mujumdar, D.N. : Science and culture, p.330.

3. " Any collection of preliterate local groups which occupies a common general territory, speaks a common language and practices a common culture is a tribe." - Gillin, J.L. & Giltin, J.P. : Cultural Sociology, p.282.

4. त्रिपाठी शंभुचन्द्र : भारतीय संस्कृति और समाज, किताबद्वि, पृ. 46.

5. "Castes are of many kinds, tribal, racial, sectarian, occupational. Some are due to migration. When members of an old caste migrate to a different part of the country they become a new caste." -Dr.S.Radhakrishnan : Hindu View of Tribe, 1927, 1st Ed., p.92.



### 1.3. बनजारा : मूल निवास स्थान

बनजारों की उत्पत्ति, मूल निवास स्थान, वंश, रक्त आदि के संबंध में पर्याप्त मूल वैभिन्न पाया जाता है । इस उपेक्षित जाति पर जो कामोक्ते दृष्टिपात किया गया है, वह अंग्रेज विद्वानों के द्वारा ही । ह्यूबेत्सन के मतानुसार इनका मूल स्थान उत्तर भारत के गोरखपुर से हरिद्वार तक की उप-पर्वत क्रेणी है ।<sup>1</sup> कर्नल मैकेंजी ने राजपुताना बताया है ।<sup>2</sup> सैयद सिराज-उल हसन की राय में ये उत्तर हिंदुस्तानी हैं ।<sup>3</sup> हल्लिक्ट ने इनका मूल स्थान मुल्तान माना है ।<sup>4</sup> सिंक्लेयर ने उत्तर हिंदुस्तान माना है लेकिन उत्तर हिंदुस्तान के किसी विशिष्ट भू-प्रदेश का उल्लेख नहीं किया है ।<sup>5</sup> गौवर्धन शर्मा के शब्दों में 'ये बनजारे राजस्थान के मूल निवासी 'ये और व्यापार के सिलसिले में माल लाद कर दूर दूर पहुँचते थे ।'<sup>6</sup> कर्नल टॉड ने भी बनजारों के ताँडों का आदि वर्णन करते हुए यही मत व्यक्त किया

1. 'The origin of Banjara Caste is said to have its habital in the sub-mountain tract from Gorakhpur to Hardwar.' -Jbbetson :Punjab castes and Tribes.VI.II.p. 62-63.
2. Col. Mackenzie : Berar Census Report-1881,p.152.
3. Syed Siraj - ul - Hassan : The Castes and Tribes of H. E.H. Nizam's Domination , Vol.I, Bombay-1920, p.17.
4. 'Thus assert that they came originally from Multan and left their newly chosen country of the Deccan, under a leader called Rustamkhan.'  
-- Elliot, H.M., The races of North-Western Provinces of India, Vol.I, London - 1869, p.53.
5. Sinclair : Caste in the Dekkan, Indian Antiquary, July 1874, p.33.
6. श्री गौवर्धन शर्मा : डिग्री साहित्य, पृ. 240 ।



है ।<sup>1</sup> रोज ने पंजाब बताया है ।<sup>2</sup> श्री नर्मदेस्वर प्रसाद<sup>3</sup> और जैन<sup>4</sup> ने राजपुताना का उल्लेख किया है । अय्यप्पन<sup>5</sup> कश्यप,<sup>6</sup> कनेडी<sup>6A</sup> नन्जुन्देया<sup>7</sup> ने मारवाड़ मूलस्थान बताया है । मालवा प्रदेश की जनगणना रिपोर्ट में भी यही विधान मिलता है ।<sup>8</sup>

- 
1. Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. II, London, 1950, p.500.
  2. Rose, H.A. : Tribes and Castes of Punjab & N.W.F. Provinces, Vol. II, Lahore- 1911, p.62.
  3. Prasad Narmadeswar : People of Tribal Bihar, Ranchi, The Tribal Research Institute, 1961, p.146.
  4. Baine, Athlestone : Ethnography, 1912, p.101.
  5. Aiyappan, A : Report on the Socio-Economic Condition of the Ab-original Tribes of the Provinces of Madras, 1948 P.164.
  6. Krishna Iyer, L.A. : Anthropology in India, p.56.
  - 6A. Kennedy, M. : Criminal Classes of Bombay Presidency, p.3.
  7. Nanjundayya, H.V., The Mysore Tribes and Castes, Vol. II, p.136.
  8. 'Northern India probably Marwar/Ans their original home.' -- Census of India, 1961 : Report on the population, Estimates of India (1820-30), The provinces of Malwa and adjoining Districts, 1922, p.98, para 50.



सिकरों के सातवें गुरु गुरु हरगोविन्दसिंह ॥ ई. 1595 - 1644 ॥ से बंजारों का संबंध था । इसके उपरान्त नवम गुरु गुरु गोविन्द सिंह ॥ ई. 1676 ॥ के पास कुछ बंजारे काम मांगने आए थे । अपना परिचय देते हुए उन्होंने कहा था -- " हम मारवाड़ से आए हैं .. हम मारवाड़ के ब्रिन्जोली एवं सलम्वूर के निवासी हैं । 1. " सिकरों की फौजों में इन्हें मारवाड़ी अथवा मारवाड़ी लुहार के रूप में जाना जाता था । 2.

बंजारों के मूल निवास स्थान के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है । बंजारों का मूलस्थान निर्धारित करने के लिए उनके क्लैं एंड कुल पर ध्यान देना होगा । यदि वे राजपूत क्लैं से संबंधित हों तो इनका निवास स्थान राजस्थान अथवा मारवाड़ निर्विवादतः सिद्ध हो जाएगा । राजपूतों का राठौड़ क्लैं मारवाड़ की देन है । 3.

1. ' We have come from Marwar --- Brinjoli and Salm - boor are our native places in Marwar.'  
- Sher, S.S. : Sikligers of Punjab - p.12.

2. Ibid - page 13.

3. Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, p.602.





#### 1.4. बनजारा बोली

सन् 1961 की जनगणना रिपोर्ट में "राजस्थानी - हिंदी-की - बनजारी, गूजरी, हाडोती, जयपुरी, सीधोवाडी, मालवी, मारवाडी, मेवाती, मेवाडी, उमटवाडी, निमाडी, राजस्थानी, सियारी तथा सौंही नामक 14 उपबोलियों की गणना की गई है"।<sup>1</sup> "राजस्थान के निम्न राज्य का जो भू-भाग है, उनमें बनजारी, गूजरी ...; आदि बोलियों का उल्लेख है। ये बोलियाँ उन जनपदों की होती हैं, जहाँ इनने अपनी विशिष्टताएँ अर्जित की।"<sup>2</sup>

डा॰ ग्रिगर्सन के अनुसार राजस्थान की मेवाती, मालवी, मारवाडी, समानी और जयपुरी आदि उनके विभाधाएँ हैं।<sup>3</sup> राजस्थानी राजस्थान और मालवा की भाषा है।<sup>4</sup> "इसके बोलने वाले मुद्गर देहाती में मिले।"<sup>5</sup> "जिनमें परस्पर अंतर नहीं है।"<sup>6</sup> इसलिए बनजारा बोली भी राजस्थानी हिंदी ही सिद्ध होती है। कुछ विद्वानों ने राजस्थानी को हिंदी से पृथक् भाषा माना है।<sup>7</sup> लेकिन जिस अपभ्रंश भाषा से भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ,<sup>8</sup> उसी गुर्जरी - अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई,<sup>9</sup> और

1. Census of India, 1961, Mother Tongue, Vol.IX.

2. हरिवेदी हरिहर निवास, मध्यभारत का इतिहास, प्रथम खंड-पृ.42

3. Dr. Grierson, W : L.S. of India, Vol.I, part I, p.172. and Antiquary (Indian), Apr, 1931, Supplement, p.12.

4. Ibid, p.171.

5. विद्यालंकार जयवंद, भारतभूमि और उसके निवासी, पृ.219 ।

6. वही , पृ. 220 ।

7. डा॰ श्यामसुंदर दास : हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 86 ।

8. डा॰ माहेरचरी होरालाल : राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ.31

9. लंका. मनोहर प्रभाकर : राजस्थानी साहित्य और संस्कृति, पृ.10



इस पश्चिमी राजस्थानों का संबंध हिंदी भाषा से है ।<sup>1</sup> इसलिए  
बंजारी बोली राजस्थानी हिंदी की एक उपबोली माना जानी चाहिए ।

राजस्थानी उपबोलियों का उत्सव डा. गोवर्धन शर्मा ने इस  
प्रकार किया है -- " राजस्थान को कतिपय ओर भाषाएँ हैं, जैसे  
भोली - उपभाषा समूह, पहाड़ी का की भाषाएँ, खानाबदोश जातियों  
की बोलियाँ आदि जिन्हें राजस्थानी में गृहीत किया जाता है ।  
इनमें से ये प्रमुख हैं -- बंजारी - यह राजस्थान के बाहर रहने वाले  
बंजारों की भाषा है । स्थानानुसार इनके कई भेद हैं । ये राजस्थान  
के मूल निवासी थे और व्यापार के स्लिस्लि में माल लाकर दूर दूर  
पहुँचते थे ।<sup>2</sup> डा. भीलानाथ तिवारी भी इसे राजस्थानी मानवी  
की एक उपबोली मानते हुए लिखते हैं -- "बंजारी को लमानी, लवानी,  
लमाणी तथा लम्बाठी भी कहा जाता है ।"<sup>3</sup> अन्यत्र वे लिखते हैं --  
" बंजारी राजस्थान की एक बोली है - बंजारी संपूर्ण भारत में विविध  
नामों से कई बंजारा जातियों द्वारा बोली जाती है । इसका एक  
नाम लमानी भी है ।"<sup>4</sup>

डा. ग्रियर्सन द्वारा किए गए सर्वेक्षण में राजस्थानी उपभाषाएँ  
9 हैं । इसमें लमानी या बंजारी का क्रम 7 वाँ है । इसे ग्रियर्सन  
राजस्थानी की विभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए कहते हैं --  
" लमानी या बंजारी पूरे भारत के पश्चिमी और दक्षिणी प्रदेश में

1. Dr. Chatterji, S.K. : Origin & Development of  
Bengali Language, p.29-31.

2. डा. शर्मा गोवर्धन : डिग्न साहित्य, पृ. 128 ।

3. डा. तिवारी भीलानाथ : भाषा शब्द कोश, पृ. 206

4. - वही - , पृ. 208 ।



संवार करने वाले भ्रमशील जाति की भाषा है। ये लगान के नाम से भी जाने जाते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, जहाँ निवास करना पड़ता है, इसी प्रदेश की भाषा का प्रयोग करते हैं, लेकिन विदर्भ, बंबई, मध्यप्रति, पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्यभारत एजेन्सी में इनकी अपनी निजी भाषा है, जिसका इस स्थानीय प्रभावों के कारण बदलता रहता है।<sup>1</sup> डा. ग्रियर्सन के अनुसार इनकी बोली पर प्रादेशिक तथा स्थानीय बोली-भाषाओं का प्रभाव है, लेकिन अपनी निजी बोली इन्होंने सुरक्षित एवं परंपरागत बना रखा है। वस्तुतः बंजारी बोली पर राजस्थानी हिंदी के अतिरिक्त जरखी, फारसी, दक्खिनी-हिंदी, मराठी, गुजराती जदि भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। राजस्थानी और गुजराती में अंतर बहुत ही कम है। टैसिटोरी के मतानुसार -

"प्राकृत राजस्थानी और गुजराती एक ही भाषा थी।"<sup>2</sup> इसीलए बंजारी बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव होना स्वाभाविक ही है। मेयद हसन ने भी बंजारी को हिंदी गुजराती मिश्रित बोली माना है।<sup>3</sup>

केनेडी ने बंजारी को मारवाडी से मिलती हुई एवं हिंदुस्तानी तथा मराठी शब्दों से मुक्त बोली माना है।<sup>4</sup>

1. "Labheni or Banjeri is the language of the Banjaras, a wellknown tribe of carriers who are found all over western and southern India. They are also called Labhans. In many parts of India, they use the language of the people of the country in which they happen to dwell, but in Barar, Bombay, the Central Provinces, the Punjab, United Provinces and the Central Indian Agency, they have a language of their own, the name of which varies according to borrowings from the speech of the locality where the members of the tribe happen to be found."  
-- Dr. Grierson, W.: Linguistic Survey of India, Vol. I, part I, Calcutta, 1927, p. 172.
2. Dr. Tassitorty : Indian Antiquary, 1914-16.
3. "They speak a dialect which is a mixture of Hindi and Gujarathi" - Hassan, S.S.: The Castes and tribes of N.E.H. The Nizam's Dominion, Vol. I, p. 19.
4. "They have a peculiar dialect called 'Banjeri' which resembles Marwadi and contains some Hindustani and Marathi words".--Kennedy, M.: Criminal Classes in the Bombay Presidency, 1908, p. 65.



### 1.5. बंजारा जनसंख्या

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बंजारा समाज को सरकार ने 6 सूचियों में वर्गीकृत किया है -- 1. आदिम जाति 2. अनुसूचित जाति 3. विमुक्त जाति 4. घुमक्कड़ जाति 5. अर्ध घुमक्कड़ जाति और 6. अन्य पिछड़ी जाति । <sup>1</sup>

इन सूचियों तथा भारतीय जनगणना रिपोर्ट के अनुसार 2. पूर्व बंगाल, हिमाचल प्रदेश और गोवा में अन्य राज्यों की अपेक्षा बंजारों की आबादी अपेक्षाकृत कम है । पूरे देश में 27 उपनामों एवं 17 उपजातियों से युक्त बंजारों की संख्या करीब 50-60 लाख तक होने का अनुमान है । <sup>3</sup> यदि बंजारा और जिप्सी में कोई अंतर नहीं है तो पूरे विश्व में बंजारा जनसंख्या 20 करोड़ के करीब होगी । <sup>4</sup>

1. Govt. of India : The Scheduled Castes and Scheduled Tribes, Lists of Notification Order, 1956, and Census Report of India, 1961.

2. Ibid.

3. All India Banjara Study Team, 1966, p.49 and the Report of the Advisory Committee on the Revision of Scheduled Castes and Scheduled Tribes, 1965, by Shri B.N.Lokur.

4. "The present total population of the Gypsies in different parts of the world is 20,00000."

-- Shersing Sher : The Simligars of Punjab, p.80.



#### 1.6. बंजारों का दक्षिण-गमन

अकबर ने जब राजपूत राज्य उदयपुर पर आक्रमण किया तो परिस्थिति पुनर्स्थापित करके राजा-पुताप अपने साथियों के साथ जंगलों में चले गए। कालांतर में चित्तौड़ का पतन हुआ। राजपूतों का आसन ठाढ़ा ठोस हो गया तब बंजारे मुगलों की ताकत करने लगे। ये मुगल फौजों को रसद तथा युद्ध-सामग्री पहुंचाने का काम करने लगे।<sup>1</sup> यह काम उन्होंने सम्मानपूर्वक किया।<sup>2</sup> शाहजहाँ के काल में उनके सखीर आसफजहाँ के नेतृत्व में दक्षिण में बीजापुर को आदिनाहो पर आक्रमण करने के लिए मुगल फौजों के साथ सन् 1630 ई. के लगभग ये बंजारे दक्षिण की ओर आये और कालांतर में वहीं बस गए।<sup>3;4;5;</sup>

इस काल में बंजारों के नेता जंगी और भीम ने अपने 18 लाख केलों की सहायता से निजाम के दरबार में बड़ा कार्य किया। आसफजहाँ ने खुश होकर उन्हें ताबे के सिक्के पर स्वजाहिरों में तिली बुई अधिकार-मुद्रा दी थी।<sup>6</sup>

1. Sher Sing Sher : The Sikkligers of Panjab, p.6.
2. Baines, A.: Athnography, p.60.
3. Thurston, E.: Castes and Tribes of Southern India, Madras, 1909, Vol.IV, p.213.
4. March of India, Vol.9 No.3, 1957, p.35.
5. "निश्चय ही चारण बनजारा दक्षिण में आसफजहाँ के साथ, जो आसदखान भी कहलाता था, आए।" — इन्सिडेंट, एम.एच.
6. अधिकार पत्र पर इस आशय के वाक्य अंकित हैं -  
 \* राजन का पानी  
 छप्पर की ढास  
 दिन के तीन तिन माफ  
 और जहाँ आसफजहाँ के छोटे  
 वहाँ जंगी-भीम के केल ।



यह मुड़ा बाज भी हैदराबाद कोर्ट के प्रवेश द्वार पर " खिलात " -  
अधिकार - पत्र के रूप में मौजूद है ।<sup>1,2,3,4</sup>

विलियम<sup>5</sup> और लायल<sup>6</sup> ने वास्तविकता के बदले वास्तविकता और  
संस्तमकरण नामक सरदारों का उल्लेख किया है । कंबरलेज<sup>7</sup> के अनुसार  
मुगलों के साथ बंजारे दक्षिण में 17 वीं शताब्दी में नहीं बल्कि 7वीं  
शताब्दी में आए । किंतु 7 वीं शताब्दी में मुगलों का राज्य ही  
भारत में स्थापित नहीं हुआ था, अतएव उनका कथन वास्तविक तथा  
अतिहासिक है । मन्डेलसो<sup>8</sup> ने 1638 ई. तथा सैयद हसन<sup>9</sup>  
वेल्लेस्ली<sup>10</sup> अबदुलोज<sup>11</sup> एवं मैन्जी<sup>12</sup> आदि ने इनका दक्षिण प्रवेश  
17 वीं शताब्दी में ही माना है । टेम्पल<sup>13</sup> के अनुसार ये

- 
1. Hassan, S.S. : The Castes and Tribes of H.E.H., p.20.
  2. Nanjundayya and Iyer : The Castes and Tribes of Mysore, p.140.
  3. Briggs, J., Berar Gazetteer.
  4. Cumberlege, Monograph on Banjaras, p.40.
  5. Elliot. H.M. : The Races of the N.W.P. of India, Vol.I, p.319.
  6. Lyall, Alfred : Asiatic Studies, p.165.
  7. Cumberlege, H.R. : Monograph on Banjaras, 1802, p.42.
  8. Mandelso : Mandelso in Haris, p.130.
  9. Hassan, S.S. : The castes and Tribes of H.E.H., 1920. Vol.1. p.20.
  10. Welllesly : Note on Dekkan, p.20.
  11. Abb Dubb'eis : Abb Dubb'eis Notes, p.451.
  12. Col. Mackenzie : Berar Census Report, 1881, p.152.
  13. Sir Richard Temple : Men and Events of My time, p.67.



सन् 1803 से 1813 के बीच के काल-खंड में निजाम राज्य में आए ।<sup>1</sup>  
लेकिन यह कथन भी अग्राह्य है क्योंकि आम्सफोर्ट द्वारा दिए गए  
अधिकार पत्र में 17 वीं शताब्दी का स्पष्ट उल्लेख है ।<sup>2</sup> ब्रिग्स ने  
फरिश्ता के आधार पर सन् 1417 ई. का उल्लेख किया है ।<sup>3</sup>

बागे चक्कर मैसूर के अंग्रेज - टीपू सुल्तान के बीच के तृतीय  
॥ सन् 1789 - 1793 ई. ॥ एवं चतुर्थ ॥ सन् 1799 ई. ॥ युद्धों  
में इन बंजारों ने अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी बहादुरी दिखाई ।<sup>4,5,6,7</sup>  
दक्षिण भारत में मुगलों के साथ ही मराठों के यहां भी ये लोग काम  
करते थे ।<sup>8,9</sup>

1. कावे, यादव भास्वत : ब-हाडवा इतिहास, 1924, पृ.234 ।
2. Hassan, S.S. : The Castes and Tribes of H.E.H., p.42.
3. Briggs, J. : Monograph on Banjarrah, p.192.
4. Wilks : South of India, Vol. II. p.209.
5. Buchaman : Mysore War, Vol.1, p.180 -82.
6. Nanjundayya and Iyyer : The Castes and Tribes  
of Mysore, 1928, p.140.
7. Briggs, J., Monograph, p.193.
8. Col. Tod, J. : Letters on the Mahrattas, 1798,  
Indian Office Tracts, p.67.
9. Mr. Irvine : Army of Indian Mughals, p.192.



### 1.7. बनजारा और जिप्सी :

संसार के विभिन्न देशों में विभिन्न व्यक्तियों हेतु बिहारे हुए बोन करोड़ जिप्सी लोगों का संबंध भारतीय आर्य-का एवं बनजारों से है ।

सिद्धियों से " अपराधी जाति " का कलंक अपने माथे पर लगाए हुए उत्तर भारत तथा संसार के जिप्सी अपने परंपरागत सामाजिक, राजनैतिक, तथा वार्षिक उत्थान से क्लिप्त होकर दर दर की ठोंकें खाते रहे हैं । इन्हें निम्न से पहचानने की क्षमता ब्राह्मण काल के म्युन्से<sup>2</sup> तैमार चाण्ड<sup>3</sup> केनेडी<sup>4</sup> गुन्थ्रोप,<sup>5</sup> हल्लिन्स,<sup>6</sup> डली,<sup>7</sup> नायडू,<sup>8</sup> बोन<sup>9</sup> टोमकिन्स<sup>10</sup> और भार्गव<sup>11</sup> आदि देशी-विदेशी विद्वानों की तरह निहारता करते थे ।

- 
1. Criminal Tribes Act, 1871, by British Rulers.
  2. Mullaly, E.S.: Notes on Criminal Tribes of the Madras Presidency, Madras, 1882.
  3. Lemmarchand, A.W.M. : A guide of Criminal Tribes, Nagpur, 1908.
  4. Kennedy, M., Criminal classes of Bombay Presidency, Bombay, 1908.
  5. Gunthorpe, E.J., Notes on Criminal Tribes, Bombay 1882.
  6. Hollins, S.T. : Criminal Tribes of U.P., 1914.
  7. Daly, F.C. : Criminal classes operating in Bengal, 1916.
  8. Naidu, M.P.R., The Criminal Tribes of India, Madras, 1907.
  9. Kaul H.K. and Tomkins, L.L. : Report on the Questions relating to wandering and criminal tribes of Punjab Simla, 1914.
  10. Ibid.
  11. Bhargava, B.S., Criminal Tribes of India, Lucknow, 1949.





शेरसिंग शेर <sup>1</sup> तथा डा. मुजुन्दार <sup>2</sup> ने जिप्सियों को भारतीय जाय की से संबंधित माना है। दोनों के बीच बड़ा घनिष्ट संबंध - रक्त और मांस का संबंध है।<sup>3</sup>

शेरसिंग शेर के मतानुसार जिप्सो भारतीय जायों के बीच हैं जो प्राचीन काल में उत्तर - पश्चिम से भारत में प्रविष्ट हुए। जागे वे इस तथ्य को भी स्वीकार करते हैं कि मुसलमान आक्रमणों, पारस्परिक संबंधों तथा कालावधि के कारण पंजाब और राजस्थान से निवासित लोग भी जिप्सो बनने के लिए बाध्य हुए।<sup>4</sup> विदेशी आक्रमणकारियों के उत्थान से, विशेषतः चित्तौड़-पतन के बाद भारतीय जिप्सो बंगाल के पूर्वे देश के विविध भागों में बिखर गए।<sup>5</sup> अंग्रेज शासक भी इन बंगारों को जिप्सो का अभिधान प्रयुक्त करते रहे हैं।<sup>6</sup> नृत्य-संगीत प्रियता तथा शारीरिक सुंदरता के कारण ये विदेशियों से <sup>7</sup> विशेषतः एंग्लियन जिप्सो<sup>8</sup> से एकलव्य हो गए।<sup>9</sup>

1. Shersing Sher : The Sikligars of Punjab, p.67.
2. Dr. Mujumdar, D.N. : Races and Culture of India, Bombay, 1958, p.366.
3. Shersing Sher : The sikligars of Punjab, Preface, p.7.
4. " The Gypsies are the descendants of the Indo-Aryans, who entered North-west India in ancient times ... It also seems to be true that some of the settled Aryan people joined their wandering fold after being expelled from their homelands in the Punjab and Rajasthan, due to the Muslim invasions, mutual fights and famines." -- Shersing Sher : The Sikligars of Punjab, p.43.
5. Baignes, Athlestane : Athnography, Strassburg, 1912, p.60.
6. March of India, Vol.9, No.3, March 1957, p.35.
7. K. Iyer, L.A. & Balratnam : Anthropology in India, Bombay, 1961, p.56.
8. Ibid, quoted in Foot -note, p.56.
9. Baines, Athlestane : Athnography, Strassburg, 1912, p.60.



#### 1.8. बनजारा : कर्णदूषण :

स्मिथ का कहना है कि कर्णवाक्य " राजपूत " शब्द इतिहास में हम पहली बार आठवीं शताब्दी में देखते हैं ।<sup>1</sup>

कर्नल टॉड इन्हें सोधियन कर्ण मानते हैं । उनके मतानुसार "राजपूतों" और वैदिक क्षत्रियों में इसकी भिन्नता है कि उनमें पारस्परिक संबंध स्थापित हो नहीं कर सके ।<sup>2</sup> डा. भंडारकर इन्हें बनार्य गूरु जाति का कर्ण सिद्ध करते हैं ।<sup>3</sup> आधुनिक काल के विद्वान बी गुरु<sup>4</sup> तथा सिन्हा<sup>5</sup> ने भी इसी मत को ग्राह्य माना है । इस प्रकार कर्नल टॉड<sup>6</sup>, स्मिथ, सर विलियम कुड,<sup>7</sup> डा. भंडारकर, गुरु, सिन्हा आदि सभी विदेशी विद्वान राजपूतों को

1. " This is how this word ' Rajput ' appears only for the first time in the 8th Century A.D., ---" - Smith, V.A., India, Vol.III - p.173-74.
2. Col. Tod, James, Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, Introduction, p.31.
3. Dr. Bhandarkar, D.R., Wilson Philological lectures, p.95.
4. "The general thesis that some of the noble Rajput depts are descended from Gurjars or other gujars while others are closely connected with the autochthonous races, may be definitely proved." Gurey, G.S. : Races and Castes of India, p.97.
5. Sinha, N.K., History of India, p.176.
6. "विदेशियों की श्रुति करके राजपूत जातियों का जन्म हुआ है ।" Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, Introduction, p.31.
7. Crooke, W. : Castes and Tribes of the N.W. Provinces and Outh, Vol. IV, 1896, p.167.



विदेशी हूणों का खंजर मानते हैं, कार्य कीय सक्रिय नहीं । लेकिन यह छ दणा जागे ककर भ्रमपूर्ण सिद्ध हुई है ।

महाभारत में " राजपूत " शब्द सक्रियताक है --

" पतेस्त्वम रथा नाम राजपुत्रा महारथा ।

रथेषु जालेषु निगुणानागेषु परापते । " 1.

पाणिनी-सूत्र में भी यही बात मिलती है --

" गो वीकेलोद्धोरम् राजराजम् राजपुत्र

वत्स मनुष्याजादुम् । " 2.

सम्राट हर्षवर्धन के शिलालेख में चाहमानों ॥ चौहानों ॥ का --

" तन्मुत्कर्ष उपागती रक्षुन्ते मूर्खवर्तिस्त्वम् " 3. तथा कञ्चौज

के प्रतिहारों की खंगखी का निर्देश -- " तस्मि प्रतिहार केतन

भूति कैलोक्य रथास्पदे " 4 खूँखी में किया गया है । "पृथ्वीविजय" 5

काव्यग्रंथ में पृथ्वीराज की " खूँखीत्वम् " तथा बाणभट्टकृत "

"हर्षचरितम् " 6 में " राजपूत " का खंज " शुद्ध सक्रिय की " ही

किया गया है ।

डा. भागव 7 तथा पंडित गोरोशंकर जोषा 8 आदि विद्वानों के मतों से भी इसकी पुष्टि होती है ।

1. महाभारत

2. पाणिनि - सूत्र - 4-2-4।

3. Epic India, Vol. II, p. 119.

4. Ibid - P. 120.

5. Royal Asiatic Society's Journal, 1903.

6. हर्ष चरितम्, बाण उद्भवस ।

7. डा. भागव व्ही.एस. : मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास, पृ. 18 ।

8. जोषा, गोरोशंकर होराशंकर : राजपूतों का इतिहास, पृ. 29 ।



डा. ग्रियर्सन,<sup>1</sup> नंजुदय्या<sup>2</sup> और ज्यार<sup>3</sup> ने इन्हें क्षत्रियवर्गी राजपूतों का उत्तराधिकारी माना है। इब्बेट्सन<sup>4</sup> ने इनका उल्लेख "राजपुताना के हिंदु" के रूप में किया है। कोक्स<sup>5</sup> ने ब्राह्मण और राजपूत वर्ग का माना है। बरार की जनगणना रिपोर्ट में किल्स<sup>6</sup> ने इन्हें "क्षत्रियवर्गी" कहा है। 1961 की भारत जनगणना रिपोर्ट में भी यही बात कही गई है। एपिग्राफिका इंडिका<sup>7</sup> में इन्हें "जार्जवर्गी" कहा गया है। नर्मेश्वर प्रसाद<sup>8</sup> और शुक्ल<sup>9</sup> ने इन्हें राजपुताना के चारण या भाटवर्गी कहा है।

- 
1. Dr. Grierson, Linguistic Survey of India, Vol.I, Part I, p.169.
  2. Nanjundayya, H.V., Mysore Tribes and Castes, Vol.II, Mysore, 1928, p.136.
  3. Ibid.
  4. Ibbetson, D.J., The Punjab Castes and Tribes, Vol.II, Page 62.
  5. Cowell, Academy, 14th May 1870.
  6. "They are a race of Kshatriya Origin, belonging to the caste of Indian Kiltis, D.J., Report on the census of Bearar, 1881, p.115.
  7. Census of India, 1961, Report on the population estimate of India, p.98.
  8. Epigraphica Indica, Vol. XI, p.145.
  9. "Banjara are derived from the Charan or Bhat caste of Rajputana." Prasad Narmadeshwar : Land and people of Tribal Bihar and Ranchi, p.146.



हकिम १ ने " कश्कूमर चरितम " के आधार पर इन्हें " जार्यन " या " जार्यली " कहा है । डा. मुजुमदार २ का भी यही मत है । शेरसिंग ३ ने उन्हें " राजस्थान के राजपूत की माना है ।

कई टाड ने कंवारों को राजस्थान के कण या भाट, कहताय है किन्तु जोर जम्म ने कवि माना है ४-- Murkhia an excellent township inhabited by a community of Charans of the tribe kucholia (Kackeli), who are banjaras or Carriers by profession, though poets by birth." कवरलेम ने इस जाति को बहुत ही हकिम जाति कहा है । ५ इस प्रकार कंवारों की उत्पत्ति राजस्थान के राजपूत की से सम्बन्धित होती है, लेकिन स्पेड हसन के अनुसार उत्तर भारत की विभिन्न जातियों के मेल से इनकी उत्पत्ति हुई है । ६

1. Elliot, H.M. : The races of the N.W.P. of India, Vol.1, London, 1869, p.229.
2. Dr. Mujumdar, D.N., Races and Culture of India, Bombay, 1958, p.366.
3. " Originally they were the Rajputs of Rajasthan" -- and "They are known to be very brave people being the descendents of martial race of Rajputs and have not lost their instinctive martial spirit." -- Shersing Sher, The Sikligare of Punjab, Preface,p.9, and p.73.
4. Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol.1, (1873), p.573.
5. Cumberledge, H.R., Monograph on Banjarrah class,1882,p.8
6. "The account, ascribing to the Banjaras as a mixed parentage, appears to have been founded on fact. There can be no doubt that these people so varied in their characteristics, were recruited from different races of Northern India and bound together by ties of common occupation". --Hassan, S.S., The Castes and Tribes of H.E.H. The Nizam's Dominion,Vol.1, Bombay-1920,p.17.



इसो प्रकार सर मालकाम,<sup>1</sup> शेरिंग,<sup>1a</sup> ब्लेड लायन,<sup>2</sup> प्लोडन,<sup>3</sup> हेस्टिंग्स,<sup>4</sup> स्टुअर्ट<sup>5</sup> तथा राबर्टसन<sup>6</sup> आदि ने इन्हें मिय जातीय माना है ।

-----

1. Sir Malcolm, J., Central India, Vol.II, p.152.
- 1-a Sherring, MA.: Hindu Tribes and Castes as represented in Benjaras, Calcutta, 1872, Vol.I, p.298.
2. Sir Lyall, Alfred : Asiatic Studies, Vol.I, p.165.
3. Plowden, W.C. : Report on the Census of British India, 1881, Vol.I, p.292.
4. Hastings, Warren : Census of India, 1891, Vol.VI, Berar of Hyderabad assigned districts, Calcutta, 1892, p.6.
5. Stuart, H.A., Census of India, 1891, Vol.XIII, Madras, 1893, p.197.
6. Robertson, B. : Census of India, 1891, Vol.XI The Central Provinces and Pundatories, Part I, Calcutta 1893, p.197.



॥ यह पशु चराते/पालन करने वाली जाति थी । इन्हें "सुगाली" ज़मी आधार पर कहा गया है । \*

॥ यह लोगों में से चन्द लोग चटाई बुनने का काम करते थे,<sup>2</sup>  
चन्द लोग की बनाकर बेचने का काम करते थे ।<sup>3</sup>

..... 2 राजपूत और बनजारा गोत्र .....

॥क॥ बनजारा अपने जाय को राजपूत कहते हैं । इस बात का प्रमाण उनके गोत्रों से मिलता है । राजपूतों के ऐतिहासिक अस्तित्व का ज्ञान कई स्रोतों से होता है । इनमें से एक चारण साहित्य है । चारण अथि चन्दवरदाई ने राजपूतों के जायों का प्रमाण पृथ्वीराज रासो में दिया है ।<sup>4</sup> यह इस प्रकार है ।

॥ख॥ श्री वेङ्कटाचार ने बनजारा जाति को राजपूतों से सम्बद्ध प्रमाण बताते हुए रिपोर्ट दी :-

"बनजारा:- ये लोग जेलों की पीठ पर माल लादकर ले जाने वाले भ्रमणशील मान्य हैं । मध्य भारत के समस्त पश्चिमी राज्यों में ये बनजारे बसे हुए हैं । मालवा में इनकी मुख्य उपजातियाँ हैं - ॥१॥ लबाना

॥२॥ बामनिया भाट और ॥३॥ राजपूत बनजारा । इनके कई गोत्र -

॥कुब्जाह, राठोड, चौहान आदि॥ राजपूतों के समान हैं, अतः अतीत में

\* अच्छे गाय पालने वाली जाति ।

2 शिमाडिया

3 कागशिया

4 पृथ्वीराज रासो भाग-1 पृष्ठ संख्या - 14



ये राजपूतों के वीर्य हैं तथा जाति पंथायत का उनके उमर विशेष अनुशासन रहता है । \*

रवि सशि जादव बस ।  
 ककुरस्थ परमार सदावर ।  
 चावुवान चालुक्य ।  
 छंद सिमाट क्षत्रीयर ॥  
 दियमत्त मखवान ।  
 गरख मोहिल गोहिल पूत ।  
 चौपोखट परिहार ॥  
 राव राठोड रोसजुत ॥  
 टाक सेख बनिग भौतिक प्रतिहार छिष्ट ॥  
 कारटपाल कोटपाल हुल हरि पर गोट कलात्मबिमट ॥  
 धान्य ॥ धान्य ॥ पालक निरुभर राजपा कार्यनोसो ।  
 बसने बस छतीस ।

---

\* रिपोर्ट जनगणना भारत 1931 जिल्द 20

सेट्रल इंडिया एजेन्सी, भाग-1, पृ.सं. 226-229





[ग] कर्नल टाड के अनुसार राजपूतों के 36 का माने गये हैं ।\* वह इस प्रकार है ।

- |                                   |                                |
|-----------------------------------|--------------------------------|
| 1. सूर्य - सूर्यका                | 2. सोम या चन्द्र - चन्द्र का   |
| 3. ग्रहिलोत या गहिलोत - 24 शाखाएँ | 4. यादु - 18 शाखाएँ            |
| 5. तोवार - 17 शाखाएँ              | 6. राठौर - 13 शाखाएँ           |
| 7. काश्मा या कच्छवा               | 8. पुमारा या परमार - 35 शाखाएँ |
| 9. चहुमान या चोहान - 26 शाखाएँ    | 10. चामुङ या सोलङ - 16 शाखाएँ  |
| 11. परिहारा                       | 12. चावारा                     |
| 13. टाक या टर्का                  | 14. जिट, जेट या जाठ            |
| 15. हान या हन                     | 16. कट्टी                      |
| 17. बन्ना                         | 18. जाहला - 2 शाखाएँ           |
| 19. जेत्त या कमारी                | 20. गोहिल                      |
| 21. सरखिया                        | 22. सीमार                      |
| 23. डावी                          | 24. गोर - 5 शाखाएँ             |
| 25. डेडा या डोट                   | 26. गहरवाल                     |
| 27. बीर या गूजर - 3 शाखाएँ        | 28. सेगर                       |
| 29. सकरवाल                        | 30. लेस                        |
| 31. दाहिया                        | 32. जोह्या                     |
| 33. मोहिल                         | 34. निम्हुम्पा                 |
| 35. राजपाली                       | 36. दाहिमा                     |

\* राजस्थान भाग -1 लेखक : कर्नल टाड : पृ.सं. 80



[घ] बबीराम हीरामण पाटील के अनुसार बनजारा और राजपूत के गोत्र/को समान/अलग/ मिलते जुलते हैं। वह इस प्रकार है।\*

| बनजारा को/गोत्र | समान को/<br>गोत्र | अलग को/<br>गोत्र | मिलते-जुलते<br>को/गोत्र |
|-----------------|-------------------|------------------|-------------------------|
| 1 आबावत         | x                 | x                | ✓                       |
| 2 उधवत          | ✓                 | x                | x                       |
| 3 उठावत         | x                 | x                | ✓                       |
| 4 कान्हावत      | x                 | x                | ✓                       |
| 5 कुरावत        | x                 | x                | ✓                       |
| 6 कडावत         | x                 | x                | ✓                       |
| 7 कुंभीवत       | x                 | x                | ✓                       |
| 8 कसनावत        | ✓                 | x                | x                       |
| 9 कीतावत        | x                 | ✓                | x                       |
| 10 करठावत       | x                 | ✓                | x                       |
| 11 खेतावत       | ✓                 | x                | x                       |
| 12 खानावत       | x                 | x                | ✓                       |
| 13 खमावत        | x                 | x                | ✓                       |
| 14 खोला         | x                 | ✓                | x                       |
| 15 गागावत       | x                 | x                | ✓                       |
| 16 गामावत       | x                 | x                | ✓                       |

\* गौर-बजारे लोकविद्या श्रुतिवत्, पृ.सं.97, 98, 99, 100, 101, 102, 103

लेखक : के. बबीराम हीरामण पाटील, माछवी



|            |   |   |   |
|------------|---|---|---|
| 17 गीदावत  | ✖ | ✖ |   |
| 18 चाँडावत | ✖ | ✖ | ✖ |
| 19 चुडावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 20 चीनावत  | ✖ | ✓ | ✖ |
| 21 चीटावत  | ✖ | ✓ | ✖ |
| 22 चादावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 23 जमनावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 24 जोधावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 25 छाजावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 26 जेसावत  | ✖ | ✓ | ✖ |
| 27 जेसालोत | ✓ | ✖ | ✖ |
| 28 जाजवत   | ✖ | ✓ | ✖ |
| 29 जाडावत  | ✖ | ✖ | ✓ |
| 30 जोगावत  | ✖ | ✖ | ✓ |
| 31 झुरोत   | ✓ | ✖ | ✖ |
| 32 उहावत   | ✖ | ✖ | ✓ |
| 33 झुमावत  | ✖ | ✖ | ✓ |
| 34 देवावत  | ✖ | ✖ | ✓ |
| 35 देपावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 36 देदावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 37 देलावत  | ✖ | ✖ | ✓ |
| 38 दुधावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 39 दुजावत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 40 तारावत  | ✖ | ✓ | ✖ |
| 41 तेजावत  | ✖ | ✖ | ✓ |
| 42 धानावत  | ✖ | ✓ | ✖ |



|            |   |   |   |
|------------|---|---|---|
| 43 धावावत  | ✓ | x | x |
| 44 धारावत  | ✓ | x | x |
| 45 धीरावत  | ✓ | x | x |
| 46 नेगावत  | x | x | ✓ |
| 47 नालावत  | x | x | ✓ |
| 48 नागावत  | x | x | ✓ |
| 49 पैपावत  | x | x | ✓ |
| 50 पौवावत  | x | x | ✓ |
| 51 पीपावत  | ✓ | x | x |
| 52 पंचगावत | x | x | ✓ |
| 53 पावावत  | ✓ | x | x |
| 54 पुगावत  | ✓ | x | x |
| 55 पुनावत  | x | ✓ | x |
| 56 बालावत  | ✓ | x | x |
| 57 लधावत   | x | x | ✓ |
| 58 बाठावत  | ✓ | x | x |
| 59 कुवावत  | x | ✓ | x |
| 60 बाधावत  | x | ✓ | x |
| 61 बरमावत  | x | ✓ | x |
| 62 भोजावत  | x | x | ✓ |
| 63 भरतावत  | ✓ | x | x |
| 64 भीचावत  | x | x | ✓ |
| 65 भेगावत  | ✓ | x | x |
| 66 भागावत  | x | x | ✓ |
| 67 मूलावत  | x | ✓ | x |
| 68 मेघावत  | ✓ | x | x |



|             |   |   |   |
|-------------|---|---|---|
| 69 मोठावत   | ■ | ■ | ✓ |
| 70 मगावत    | ■ | ■ | ✓ |
| 71 मोरावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 72 माहेपावत | ✓ | ■ | ■ |
| 73 मानवत    | ✓ | ■ | ■ |
| 74 मुठावत   | ■ | ✓ | ■ |
| 75 मेठावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 76 मुठावत   | ■ | ■ | ✓ |
| 77 रातडा    | ■ | ■ | ✓ |
| 78 राणावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 79 रूपावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 80 राजाविड  | ■ | ✓ | ■ |
| 81 राजावत   | ■ | ■ | ✓ |
| 82 लामावत   | × | ■ | ✓ |
| 83 लौटावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 84 लुंवावत  | ■ | ■ | ✓ |
| 85 लगवत     | ✓ | ■ | × |
| 86 लुल्लावत | ✓ | ■ | × |
| 87 लाखावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 88 विसगावत  | ■ | ✓ | ■ |
| 89 धिंजरावत | ■ | ■ | ✓ |
| 90 सागावत   | ✓ | ■ | ■ |
| 91 सेवावत   | ■ | ✓ | ■ |
| 92 सक्तावत  | ✓ | ■ | ■ |
| 93 सोमावत   | ■ | ✓ | ■ |
| 94 सदावत    | ✓ | ■ | × |



|     |           |   |   |   |
|-----|-----------|---|---|---|
| 95  | सामावत    | ✖ | ✓ | ✖ |
| 96  | बाजावत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 97  | बापावत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 98  | बाठावत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 99  | बासावत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 100 | बाभावत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 101 | करम्सीपोत | ✓ | ✖ | ✖ |
| 102 | रम्सीपोत  | ✓ | ✖ | ✖ |
| 103 | माब्सीपोत | ✓ | ✖ | ✖ |
| 104 | छाईपोत    | ✖ | ✖ | ✓ |
| 105 | दाईपोत    | ✖ | ✓ | ✖ |
| 106 | खीमापोत   | ✖ | ✓ | ✖ |
| 107 | माण्डीपोत | ✖ | ✓ | ✖ |
| 108 | वीरापोत   | ✖ | ✓ | ✖ |
| 109 | छाटरीत    | ✖ | ✖ | ✓ |
| 110 | तांगरीत   | ✖ | ✖ | ✓ |
| 111 | भरीत      | ✖ | ✖ | ✓ |
| 112 | जारीत     | ✖ | ✖ | ✓ |
| 113 | गुजरीत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 114 | विजरीत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 115 | बारसीत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 116 | भरसीत     | ✖ | ✖ | ✓ |
| 117 | देवसीत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 118 | धर्मसीत   | ✓ | ✖ | ✖ |
| 119 | सदासीत    | ✓ | ✖ | ✖ |
| 120 | पुष्पासीत | ✖ | ✖ | ✓ |



|             |   |   |   |
|-------------|---|---|---|
| 121 पातनीत  | × | × | ✓ |
| 122 वासनीत  | × | × | ✓ |
| 123 जानीत   | ✓ | × | × |
| 124 रायमनीत | ✓ | × | × |
| 125 कादनीत  | ✓ | × | × |
| 126 घुलनीत  | ✓ | × | × |
| 127 मोड़नीत | ✓ | × | × |
| 128 मानीत   | ✓ | × | × |
| 129 माणनीत  | ✓ | × | × |
| 130 पदायनीत | ✓ | × | × |
| 131 बाबनीत  | ✓ | × | ✗ |
| 132 बौचडीत  | ✓ | × | × |
| 133 जाडीत   | ✓ | × | × |
| 134 चाडीत   | × | × | ✓ |
| 135 वाकिडीत | ✓ | × | × |
| 136 पान्नीत | ✓ | × | × |
| 137 वान्नीत | × | ✓ | × |
| 138 वान्नीत | × | ✓ | × |
| 139 नलीत    | ✓ | × | × |
| 140 जाटीत   | × | × | ✓ |
| 141 वायनीत  | × | × | ✓ |
| 142 वायनीत  | × | × | ✓ |
| 143 सीराया  | × | ✓ | × |
| 144 फुलाया  | × | ✓ | × |
| 145 भैरतीया | ✓ | × | × |
| 146 रामणीया | × | × | ✓ |



|                |   |   |   |
|----------------|---|---|---|
| 147 पालतीया    | ✓ | ■ | ■ |
| 148 नावडीया    | ■ | ■ | ✓ |
| 149 पाठीया     | ■ | ■ | ✓ |
| 150 मोतीवाणी   | ■ | ■ | ✓ |
| 151 कौतावली    | ■ | ✓ | ■ |
| 152 जीधावानी   | ✓ | ■ | ■ |
| 153 कंठीवानी   | ■ | ✓ | ■ |
| 154 जीनावाणी   | ■ | ✓ | ■ |
| 155 पतरवाड     | ■ | ■ | ✓ |
| 156 मुठाक      | × | ✓ | × |
| 157 माड्डीब्या | ■ | ■ | ✓ |
| 158 कुडरीब्या  | ✓ | ■ | ■ |
| 159 गोर        | ✓ | ■ | ■ |
| 160 सडोल       | ■ | ■ | ✓ |
| 161 चौज़ार     | ■ | ■ | ✓ |
| 162 पैराजात    | ■ | ■ | ✓ |
| 163 लाला       | × | ■ | ✓ |
| 164 सरपला      | ■ | ■ | ✓ |
| 165 गोहमि      | ■ | ✓ | ■ |
| 166 मुड        | ■ | ■ | ✓ |
| 167 कन्हा      | ■ | ■ | ✓ |
| 168 बीडा       | ■ | ✓ | ■ |
| 169 तेन्नाड    | ■ | ■ | ✓ |
| 170 बाराड      | ■ | ✓ | ■ |
| 171 धसाडी      | ■ | ■ | ✓ |
| 172 वाणी       | ■ | ■ | ✓ |





|              |   |   |   |
|--------------|---|---|---|
| 173 तरवाणी   | × | ✓ | × |
| 174 पैमाणी   | × | × | ✓ |
| 175 केसूत    | × | ✓ | × |
| 176 हरदेव    | × | × | ✓ |
| 177 बजमेरा   | × | × | ✓ |
| 178 सदारत    | ✓ | × | × |
| 179 पालासीया | × | × | ✓ |
| 180 डालवान   | × | × | ✓ |
| 181 डेवलान   | × | × | ✓ |
| 182 सकरा     | × | × | ✓ |
| 183 ठाकरान   | ✓ | × | × |
| 184 मोलान    | × | × | ✓ |
| 185 भुक्क्या | × | × | ✓ |
| 186 बाणोत    | ✓ | × | × |
| 187 वडित्या  | × | × | ✓ |
| 188 तुर      | ✓ | × | × |
| 189 चण्हाण   | ✓ | × | × |
| 190 कावावत   | × | × | ✓ |
| 191 कृपावत   | ✓ | × | × |
| 192 कमावत    | ✓ | × | × |
| 193 कणावत    | ✓ | × | × |
| 194 तेजावत   | ✓ | × | × |



### 3 गोर बनजारा

#### 3.1 जातीय स्तर :

यह छाद्य सामग्री को लादकर ले जाने वाली जाती है। सन् 1911 में मध्य भारत में इनकी संख्या लगभग 56,000 थी और बेरार में इनकी संख्या 80,000 थी, हैदराबाद में इनकी संख्या लगभग 174000 थी इस जाती के लोग दक्षिण में अधिक थे। इस जाति के नामकरण के विषय में अलग-अलग ढंग से समझाया गया है। संस्कृत क में बानीज्याकरा अर्थात् व्यापारी के रूप से बताया गया है।\* सर हेच. यम. झिलियट के कथनानुसार बनजारा नाम अधिक पुराना है।<sup>2</sup>

इनके ही बनजारा, बजारा, बनजारे, बनजारी, बिजारी, ब्रजवासी, लमान, लामानी, लम्बानी, लम्बाडा, लम्बाडी, लबान, लबाना, लभान, लभानी, लभाना, लोभाना, लदेनिया, सुगाली, गवार, गोरिया, गवारिया, गमालिया, गवरा, कागिया, कागाशिया, फनाडा,

\* वन-वन घूमा बलजारा

लेखक श्रीचन्द्र जैन

पृ. सं. 11.

2 वन वन घूमा बनजारा, लेखक श्रीचन्द्र जैन, पृ. सं. 12



शिरकीबन्द, शिरकीवाला, शिगाठे और बनजारी \* आदि नामों से अलग-अलग राज्यों में पुकारा जाता है। बनजारों में इनकी तादाद ज्यादा है। इनके टाँठे<sup>2</sup> सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों में ऊँचा जंगलों में होते हैं। वे सामान्य समाज में छुल मिलकर नहीं रहते। यही कारण इनका रहन-सहन का विशेष ढंग है। लकीराम पाटील के अनुसार इनके पाँच गोत्र हैं<sup>2</sup> ॥1॥ राठोर ॥2॥ चण्ढान ॥3॥ पवार ॥4॥ जाधव और ॥5॥ तुरी।

### 3.11 राठोर भूमिजा गोत्र :

राठोर के सात उपगोत्र हैं -

॥1॥ बाला ॥2॥ मुवाल ॥3॥ मुरहावत ॥4॥ धरमसोत  
॥5॥ जाठोठ ॥6॥ आलोद ॥7॥ बाणोद।

बाला उपगोत्र के चार उपगोत्र हो जाते हैं -

॥1॥ मेरसी ॥रात्रा॥ ॥2॥ मौलासी ॥खोला॥  
॥3॥ डेठा ॥मेघावत॥ ॥4॥ लमदर ॥खामोडोद॥

इन चारों में से प्रत्येक के अलग-अलग उपगोत्र हैं। वह यह हैं -

॥1॥ मेरसी ॥रात्रा॥ 1॥ कण्ठवत क्वावत 2॥ कुल्या 3॥ छाटोठ  
4॥ मोड्रीधा 5॥ हजावत 6॥ सख्खात  
7॥ कोकरीब्या 8॥ क्वावत 9॥ मुलावत 10॥ जेतावत

\* रिपोर्ट आफ दि आल इण्डिया बनजारा स्टडी टीम, 210

हिन्दू राजस्थान जिर्जिडी, दादर, बम्बई-14, पृ.सं. 9

2 टाँठा = बनजारों की बस्ती।



॥२॥ भोलाली ॥बोला॥ - १॥ सुदारत २॥ रामन्धा ३॥ दालवान  
४॥ जाब्बोड ।

॥३॥ ठेठा ॥मेधावत॥ - १॥ मेधावत २॥ हापावत ३॥ जोन्नी  
४॥ बोन्नी ५॥ आसलोद ६॥ जमनावत ।

॥४॥ जमदर ॥जामोडोद॥ - १॥ रामावत २॥ करमटोत ३॥ खेतावत  
४॥ घेगावत ५॥ पातलोत ६॥ नेगावत  
७॥ देक्सोत ।

बाणोत गोत्र को भुक्क्या भी कहा जाता है । इस शब्द की व्युत्पत्ति इनके किसी पूर्वज भी का के नाम से जोड़ी जाती है ।

इस गोत्र का विकास महान राठौर से हुआ है । इसके तेरह उपगोत्र माने गये हैं - १॥ पान्नाड २॥ स्पावत ३॥ भान्नावत ४॥ कुरणावत  
५॥ सदासोड ६॥ धारावत ७॥ जानावत ८॥ अब्बोड ९॥ माहोरी  
१०॥ पेपावत ११॥ द्रुमावत १२॥ कुभावत १३॥ बंदावत ।

बाणोद और भुक्क्या गोत्र ये लग्न सम्बन्ध नहीं होते हैं ।

### ३.१२ पवार गोत्र :

पवार गोत्र के अन्तर्गत बारह उ उपगोत्र माने गये हैं ।

१॥ वरपना २॥ पिशावत ३॥ गुरहाम ४॥ लोणासावत ५॥ विज्जावत  
६॥ आमगोत ७॥ चाङ्गोड ८॥ चावजड ९॥ लोकावत १०॥ लोडियत  
११॥ चाणी १२॥ तखानी ।

• बनजारे लोकाधा इतिहास, के. लक्ष्मीराम हीरामण पाटील,

धखतमाळ, पृ. सं. १३९



बान्ध प्रदेश और महाराष्ट्र के कई प्रान्तों में पवार गोत्र के लोग अधिक होते हुए हैं। अन्य राज्यों में इनकी संख्या कम है। इनके गोत्र के लोग से टाठे भी बस गये हैं। \*

### 3.13 चव्हाण गोत्र :

इस गोत्र के अन्तर्गत ७: उपगोत्र हैं।

- 1॥ कलौद 2॥ पाल्भ्या 3॥ काकटा 4॥ लावळिया 5॥ सबावर  
6॥ मूठ ।

मूठ और सबावर उपगोत्र वाले चव्हाण अधिक संख्या में पाये जाते हैं। इनके टाठों को मुंडेर टाठो, शरार टाठो, सबावटेर टाठो, कलौदेर टाठो, पाल्भ्यार टाठो के नाम से पुकारा जाता है।<sup>2</sup>

### 3.14 तुरी गोत्र :

तुरी गोत्र बनजारे बान्ध प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में कम है। इस गोत्र के टाठे भी नहीं हैं। दूसरे गोत्र के टाठों में इस गोत्र के लोग होते हुए हैं। इस गोत्र का नायक भी कहीं पर नहीं है। इस गोत्र के चार उपगोत्र हैं -

- 1॥ जसावत 2॥ राजावत 3॥ तेगावत 4॥ चिजोत।<sup>3</sup>

### 3.15 वळतिया या जाधव गोत्र :<sup>4</sup>

बान्ध प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य में इस गोत्र के बनजारे अधिक पाये जाते हैं। इस गोत्र के लोग अपने नाम के साथ जाधव शब्द को जोड़

\* बनजारे लोकाचा इतिहास, लेखक - के. लकीराम हीरामन पाटील,  
2 वही 3 वही 4 वही खलसाभा - पृ. सं. 139



लेते हैं । इसके बारह न उपगोत्र माने गये हैं -

- 1॥ बादावत 2॥ बोठी 3॥ लाखावत \* 4॥ लाखावत 5॥ तेजावत  
6॥ धारावत 7॥ घुमलोत 8॥ हालावत<sup>2</sup> 9॥ कृपासाद 10॥ माणोद  
11॥ अजमेरा 12॥ जेठोड ।

राठौर और पवार भूमिया की लडकी से शादी नहीं कर सकते और अपनी लडकी को भी नह इन्हें नहीं दे सकते । कंवरलेज कहते हैं - राठौर गोत्र की उपशाखा वाले भूमिया या बाणोद गोत्र वाले भी अपनी गोत्र वाली लडकी से विवाह नहीं कर सकते । यह नियम अन्य गोत्र वालों के लिए भी इसी प्रकार है । राठौर और वडवान गोत्र के लोग आपस में विवाह कर सकते हैं । यह नियम बनजारा जाति में कठिन सा प्रतीत होता गया ।<sup>3</sup>

### 3.2 व्यवसायिक प्रवृत्ति :

प्राचीन काल में ये साहसी बनजारे अपने बेलों के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को खाद्य सामग्री, सोना चान्दी, रत्नादि कर व्यापार करते थे ।<sup>3</sup> उनका यह - व्यापार "बनजारे की बलद" के नाम से प्रसिद्ध था । अकाल पीड़ितों को मुनाफखोरी से सामान्य जनता को बचाने वाले बनजारों की सेवाओं से प्रसन्न होकर तत्कालीन शासकों ने इन्हें छुगी कर जादि की छूट दी थी ।

- \* भीमानायक लाखावत के थे । 2 भगवानदास हालावत गोत्र के थे ॥

6

3 बन-वन घुमा बनजारा - लेखक श्रीचन्द्र जैन, पृ. सं. 11



### कर्मकांड

कर्म टांड के अनुसार इनका सम्बन्ध महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चव्वाण, जयदेव पवार आदि से मिलता-जुलता है । आसफ खाँ ने जब 17 वीं सदी में दक्कन पर हमला किया तब भगवानदास बख्तिवार [जाधव] और जंगी भुक्किया [राठौर] की सेवाओं से प्रसन्न होकर उन्हें निम्नलिखित सनद दी थी ।

रजन का पानी, छप्पर का घाम दिन के तीन घूँट माफ ।

जहाँ आसफ खाँ के छोटे, वहाँ जंगी भंगी के बेल लड़े ।।

साराश : यदि तुम्हें पानी नहीं मिला तो तुम मेरे लोगों से पानी ले सकते हो । बेलों के लिये घास नहीं मिला तो किसी भी बोपड़ी के छप्पर से घास ले सकते हो । तुम दिन में तीन घूँट करने पर भी माफ कर दिया जायगा । मेरे छोटे जहाँ पर रहते हैं वहाँ जंगी और भंगी के छोटे रह सकते ।

आन्तरिक व्यापार :

इन्टरनल ट्रेड

प्राचीन काल से चली आ रही व्यापारिक परम्परा के अनुसार केवल ही इस काल के प्रमुख व्यापारी थे । उत्तर में व्यापार गुजरातियों या मारवाड़ियों तथा दक्षिण में चेतियों के द्वारा होता था । इसके अतिरिक्त राजपूताने के बनजारे अपने बेलों के द्वारा अनाज का व्यापार करते थे ।

• मेरीनोग्राफ पृ. 14 और बेरार सेन्सेस रिपोर्ट [1881],

पृष्ठ संख्या 151, 152 लेख - कलमल मैकेनजी

2 मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति - लेखक - उमाशंकर

मेहरा - पृ.सं.97



कर्मल टाठ के अनुसार कभी-कभी इन व्यापारियों के कारिगारों में 40,000 तक कम होते थे। छोटी-छोटी वस्तुओं का व्यापार गाँव में होता था। कुछ दुकानें चलती-फिरते हुई होती थी जो कि छोटे के पीठ पर लगाई जाती थी। महत्वपूर्ण वस्तुओं का व्यापार शहर की मण्डियों में होता था। बड़े पैमाने पर व्यापार कुछ विशेष वर्ग तक ही सीमित था। भारत के महत्वपूर्ण व्यापारी बं गुजराती और मुस्तानी थे। विदेशी मुसलमान व्यापारियों को सुरासानी कहकर पुकारा जाता था। ये देश के समस्त भागों में अपना व्यापार करते थे। बड़े उद्योगों पर दलालों का प्रभाव था जिसे खत्म करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने अथक प्रयास किया। गाँवों में मण्डियाँ तथा शहर में बाजार व्यापार केन्द्र थे। कपड़ा अनाज तथा अन्य साधन-पदार्थों का वित्तीय व्यापार होता था।

#### 4. चारण बनजारे :

व्युत्पत्ति के अनुसार चारण भी क्षत्रिय जाति ही सिद्ध होती है।<sup>1</sup> दूसरा अर्थ यह भी सम्भावित होता है कि चारण जाति पशु चारण से संबंधित होने के कारण इस नाम से विख्यात हुई।<sup>2</sup> राजस्थान के

• सम्भवतः इस चर से हुआ है।

2. In the article on Bhot it has been explained how the cherans or bards, owing to their readiness to kill them selves rather than given up the property entrusted to their care, become the best safe conduct for the passage of goods in Rajasthan. The name Charan is generally held to mean 'wanderers, and in their capacity of bards the Charans were accustomed to travel from Court to Court of the different chiefs in quest of patronage. By R.V. Russell and Miralal, Tribes and Castes of the Central Province of India Page No.164





इतिहास में चारण जाति सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रही । राजपूत और चारण का संबंध चौबीस दामन का सा रहा । यह जाति किसी राज्य की भाती और परम्परा का संरक्षण - करती है ।

चारण और भाट संभवतः जातीय दृष्टि से और व्यवसायिक दृष्टि से एक ही हैं ।

#### 4.1 जातीय स्तर :

राजस्थान में निर्दिष्ट ही चारण जाति राजपूतों से अलग है । राजपूत और चारण के बीच दौटी बेटा का संबंध भी नहीं है । टांड ने राजपूत और चारण की जातिगत भिन्नता की ओर स्तुति किया है ।<sup>\*</sup> किन्तु यह अक्षय है कि शिकारों की सेवाओं में चारण जाति संलग्न हुई।<sup>2</sup>

जहाँ तक बलजारा और चारण जाति के संबंध का प्रश्न है, यह बात कही जा सकती है कि बलजारा जाति मुख्य रूप से राजपूत थी । उनके गोत्र भी राजपूत गोत्रों से मिलते-जुलते हैं । अपने व्यवसायिक दृष्टि के कारण इन चारणों की गिनती संभवतः बलजारों में भी होने लगी थी । बलजारों के साथ चारणों के दौटी बेटा का संबंध नहीं है ।

---



सार्थ ही चारणों का और बनजारों का वाज भी सब समझ दिखलाई पड़ता है जो कभी राजपूतों और चारणों का था । वाज भी चारण वाकर बनजारों के टांडों में प्रशस्त गायन और ख्यावली का व्याख्यान करते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि जब राजपूत बनजारे अपने व्यापार के कारण समूह हो गये तो उनके साथ भी कुछ चारण छुमत् होकर रहने लगे । वाज भी राजपूत बनजारों के टांडों में चारण मिल जाते हैं ।<sup>1</sup> कुछ शूद्र चारण जाति के टांडे बहुत कम ही हैं ।<sup>2</sup> इस व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि चारण और बनजारे जातीय दृष्टि से कुछ भिन्न हैं और व्यवसायिक दृष्टि से समान हो गये । इसीलिए कम्बरसेज ने बनजारों का वर्गीकरण करते समय चारण वर्ग का उल्लेख किया । संभवतः अपने को राजपूत होने के गौरव से युक्त होना चाहते हैं । इसीलिए वे भी अपने गोत्र राजपूतों के समान ही बतलाते हैं । एक विद्वान् उनके पाँच राजपूत गोत्रों का उल्लेख किया है - 1. राठोर 2. तुरी (दाना) 3. पवार 4. चौहान और 5. जाधव । किन्तु वास्तविक बात यह है कि चारण बनजारे राजपूत या गौर बनजारों से भिन्न ही हैं ।

\* आदिनाबाद जिला । बान्ध प्रदेस । की टांडों की संरचना में चारण हैं ।

2 महाराष्ट्र के गंगाछेड । नादिठ । नामक स्थान में चारणों के स्वतंत्र टांडे भी हैं किन्तु बान्ध प्रदेस में इनकी स्थिति नहीं है ।

3. The start which the Cherens then acquired they retain among Banjaras to this day, though in very much diminished splendour and position. As they themselves relate, they were originally five Bhatta brethren, Rathor, Turi, Pamer, Chauhan, and Jadon. By R.V. Russell and Nirelal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India 4 P. 166



#### 4.2 चारण और राज्याक्ष :

राजस्थान में चारण जाति को राज्याक्ष प्राप्त हुआ । राज्याक्ष चारण के प्रायः दो कार्य होते थे - राज्य प्रशस्ति का गायन और युद्ध के लिए सेना और प्रजा में वीर भाव जागृत करना । अपने वाक्यदाता के साथ चारण की स्थिति युद्धों में भी देखी जा सकती है । राज्याक्ष चारण ने प्रबोध प्रशस्तिपरक साहित्य लिखा जो आज भी उपलब्ध है ।<sup>1</sup> हिन्दी साहित्य के आदि काल का नाम ही राम-कुमार वर्मा ने चारण का नाम से अभिव्यक्त किया है ।<sup>2</sup>

चारण जाति का चरित्र सांस्कृतिक दृष्टि से महान् था । इनके उच्च चरित्र से लक्ष्मी अनेक कथाएँ राजस्थान में प्रचलित हैं । कोल, भील तथा राजपूत जाति के शासक इस जाति के चरित्र से प्रभावित थे और इस रूप में उन्हें प्रोत्साहन भी देते थे ।<sup>3</sup>

इनके चरित्र में सबसे बड़ी विशेषता ईमानदारी की थी जो शासक इनसे व्यवसायिक सेवा लेते थे, वे इस जाति पर पूर्ण विश्वास करते थे ।

- अधिकतर राजा साहित्य चारण रचित ही माना जाता है ।

#### 2 दृष्टव्य : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

The Charans and Ghats are bards and Genealogists are the chief carriers of these ~~are~~ regions (Marwar); their sacred Character overawes the lawless Rajput Chiefs and even the savage Koli and Bhil and the plundering Saharel of the desert dread, the anathema of these singular races, who conduct the carvans through the wildest and most desolate regions - Tod, Rajasthan, P.602



#### 4.3 व्यवसायिक प्रवृत्ति :

कुछ विद्वानों ने इस प्रशस्त गायक प्रशस्त जाति के व्यवसायों की ओर भी संकेत किया है। टाड ने इनकी दो व्यवसायों की ओर संकेत किया है : पशुचानन और खेलों के पीठ पर सादकर छात्र सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना।<sup>\*</sup> आरंभ में इनका लक्ष्मी का कारोबार संभवतः राजस्थान तक ही सीमित था। इनके जाने जाने पर शासकीय रूप से कोई रोक-थाम नहीं।

ऐसा भी प्रतीत होता है कि इनका परवाह-न व्यापार राजमार्ग से भी संबंधित था। एक राजा के यहाँ से दूसरे राजा के यहाँ छात्र सामग्री पहुँचाने का कार्य भी वे करते थे।<sup>2</sup> यह भी प्रतीत होता है कि जल में इनका व्यवसाय छात्र सामग्री के परिवहन तक ही सीमित नहीं रहा, अन्य मुख्यान वस्तुओं का यातायात भी इनके द्वारा होता था।

रेगिस्तान और पहाड़ी प्रदेशों में परिवहन का व्यापार लड़ी जोखिम का था। इसके लिए चारणों को अपनी जान पर भी खेलना पड़ता था। इनके अंतराष्ट्रीय व्यवसाय की ओर लेखकों ने संकेत

\* Tod, Rajasthan, P.602

2. One may suppose that the Charans having acted as carriers for the Rajput chiefs and courts, both in time of peace and in their continuous intestinal feuds, were pressed into service when the Mughal armies entered Rajputana and passed through it to Gujarat and the Deccan -

By R.V. Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India, P.166



किया है ।\* विशेष रूप से इनके व्यापार क्षेत्र में सातारा, पूना और निजाम के सुबों का उल्लेख किया गया है ।

इनकी व्यापार सेवा से शासक भी प्रसन्न थे और प्रजा भी प्रसन्न थी । प्रजा इसलिए प्रसन्न थी कि कभी-कभी दुर्भिक्ष के समय इनकी व्यवसायिक सेवाएँ भूकमरी से प्रजा की रक्षा करती थी । चारणों का दक्षिण प्रवेश का भी प्रमाण मिलता है । राहाजरा के सेना नायक वासपहान के साथ संभवतः इनका दक्षिण में प्रवेश हुआ

### 5. डाढी बन्जारे

#### 5.1 जातीय स्तर :

जिस प्रकार चारण राजपूत नहीं होते वही प्रकार डाढी भी राजपूत नहीं होते । डाढियों के तेरह गोत्र होते हैं जो इस प्रकार हैं :

- |              |           |           |             |
|--------------|-----------|-----------|-------------|
| 1 ताजनाथ     | 2 चौहाना  | 3 रत्ना   | 4 कुण्ठ     |
| 5 शारा       | 6 रक्षा   | 7 बाजी    | 8 सग्रावत   |
| 9 भ्यावत     | 10 भाणावत | 11 रामदास | 12 भीमना और |
| 13 देहावत ।* |           |           |             |

इन गोत्रों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनके गोत्र राजपूतों से मिलते-जुलते नहीं जब कि चारणों के कुछ गोत्र अत्यन्त बलनाये जाते हैं जो राजपूतों से मिलते जुलते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि मुसलिम काल में डाढी मुसलमान भी हो गये थे । इसके संबंध में एक किंवदन्ती प्रचलित है । एक बार मुगल सम्राट हुमायूँ ने इनके किसी पूर्वज की भोज

---

\* बबीराम पाटील : माछवी : महाराष्ट्र - गोर बन्जारा लोकाचा इतिहास पृ. 44



पर आभूषित किया। उस ज्ञान में वह गाय या भैंस का मांस खा गया  
फलतः वह मुसलमान हो गया। साथ ही उसको मुगल दरबार में संगीतकार  
के रूप में आकाश भी मिला।

एक और बात कही जाती है कि ढाढ़ी बनजारे का पूर्वज गुरु  
नानक का भक्त बन गया और उसने सिक्ख धर्म स्वीकार कर लिया। इस  
प्रकार इनकी जाति परिवर्तन के उपर्युक्त दो रूप मिल जाते हैं।\*

तीसरा जाति परिवर्तन का रूप यह भी है कि ढाढ़ी लोग  
चारण बनजारों के साथ भी मिल गये और उन्होंने चारण बनजारों की वृत्ति  
भी अपना ली। यह भी उल्लेख मिलता है ढाढ़ी चारणों के प्रशस्त गायक  
भी थे। जो ढाढ़ी मुसलमान भी बन गये थे वे भी कुछ हिन्दू परम्पराओं को  
अपनाये रहे। उनमें सरस्वती पूजा अब तक प्रचलित है।

कहा जाता है कि गंधा और नाजी नाम के पूर्वज मुसलमान हुए  
थे उनके लिए ये बकरे को खरी भी देते हैं। इनकी समाधियाँ के पास  
पश्तिया {प्रार्थना} पढ़ने के लिए पकीर को कुराया जाता है।

- \* देस्या ढाढ़ी, आयु 80 वर्ष, टाँडा - बोडाबडा, हेदराबाद
- 2 भीमला भाणावत, आयु 70 वर्ष, टाँडा - छम्मम, बान्धु प्रदेस।



## 5.2 गायक-वादक :

जिस प्रकार चारण जाति मुख्यतः वीर काव्य और वीर भावना से राजस्थान में सम्बद्ध रही उसी प्रकार दांडी जाति संगीत गायन से सम्बद्ध रही । \* दोनों ही जातियाँ धूम्र प्रकृति की थी किन्तु एक अन्तर प्रतीत होता है । चारण जाति राज्याक्रित होकर वीर काव्य के पुण्य में समान होती थी और कभी-कभी छोटे राज राजाओं से भी अधिक रहती थी । जनता से उनका सम्बन्ध था अथवा किन्तु बहुत कम उसके विपरीत दांडी जाति केवल राजघरानों से ही संबद्ध नहीं थी । सामान्य जनता के साथ भी इसका सम्बन्ध था । जहाँ कहीं कोई पुत्र जन्म या विवाह, समारोह होते थे प्रायः इस जाति के पुरुष और स्त्रियाँ भी वहाँ जाकर गायन वादन करते थे और पुरस्कार पाते थे । जिस प्रकार चारण जाति व्यवसायिक वृत्ति को अपनाकर जनजारों में परिगणित होने लगे थे । संभवतः ये लोग भी जनजारे बन गये थे ।

कम्बरसेज ने लिखा है कि त्यौहारों के अवसर पर वे दूधली बजाकर चारणों के टाँडों में पुरस्कार वाचना के लिए जाते थे । चारणों से हमने पर्याप्त पुरस्कार भी मिलता था-कभी पैसे के रूप में और कभी पशुओं के रूप में भी ।

जनजारों के टाँडे में पुत्र जन्म या विवाह, समारोह के अवसर पर पुरस्कार वाचना के लिए दांडी यह गीत गाता है -<sup>3</sup>

\* कम्बरसेज - मोनोग्राफ - पृ. सं. 28, 29

2 वही

3 लालसिंह, बापूजार टांडा, आयु 50 वर्ष, तहसील, डिमायतनगर, जिला वेदराबाद ।



राधा मीठी घोळी, रण मीठी तन्हार ।  
 सेज मीठी कामिनी, सुरा मीठी साग ।  
 हरदेमा वेराजो फुभु, आप क्या दे दा ।  
 छट्टे-छट्टे मा फुभु, रोवन तु वेदो ।  
 जीव जन्त तौन छाव, भोग लाग वेरा ।  
 सरी जगतीरी फुभु, आज साई वेरो हे ।  
 जगती पर मोरो, पेदा कीदोघो धरम ।  
 देका देकी लोक कर, पार करम ।  
 नर नारी छोठ दोने, लाजम सरम ।  
 मूठो देकन वाते करा, भरमा भरम ।  
 ये पोटेरी बीरे वेगी, भारी बाताजानी ।  
 घरेवाली न मारी सोटा, घाला केसर कानी ।  
 लोकोती मलाजो भादी, चलीगी से बानी ।  
 सरम लाज काई छेनी, कतारीच जानी ।  
 गोरुमा तो वेगी बापू, केसी-हुना-सस्ती ।  
 पाप कार्य कोनी कीदो, जोगमा कस्ती ।  
 सोते तो सुजागी वेगी, वो जसी रूपवती ।  
 सोते ही सुजागी वेगी, जस्सी गुणवती ।

डाढी जाति की वृत्ति का परिचय सूरदास जी के साहित्य से मिलता है । जब नंद के घर में कृष्ण का जन्मोत्सव हुआ गाने बजाने के लिए दाढी और दाडिम आई । उस अवसर पर यह पद गाये गये ।

\* दुःख गयो, सुख आयो सब निको, देख पितर भग्न मान्यो ।  
 तुम्हारे पुत्र प्रान सब हि निको, भुवन चतुर्दस जान्यो ।  
 हो तो तुम्हारे घर को दाढी, नाह सुने सब पाऊं ।  
 गिरि गोवर्धन वास हमारी, घर तजि जन्त न जाऊं ।





ढाढिन मेरी नाचे - गावे, हो हूँ दाद बजाई ।  
 हमारी चोखी भयो तुम्हारे, जो मांगो सो पाई ।  
 जब तुम मोहो कराइ जवाबो, जो कहूँ करन पसारो ।  
 दारे रहो, देख सक मंदिर, स्थाय, सुख निहारो ।  
 बसि ढाढिन दादी सो बोलो, जब तू बरनी कटारि ।  
 ये सो दियो न देखि, सुर कोउ, जसुमित हो पहिराई ॥ 36 ॥

695

दादी दान मान के भाई  
 नंद उदार भू पहिरावत, बहुत भली बनि जाई  
 जब जब नाम छरी दादी को, जन्म करम गुन गाई ।  
 अर्ध-कामना-मुक्ति-पल-करि पदाव्य पाई ।  
 ते दादिने काधन-मनि-मुक्ता, नाना लसन अनुष ।  
 होरा-रतन-परवर हमको दीन्हे ब्रज के भूष ।  
 जब तो भली भई, नारायन-दरस निरखि, निधि-पाई ।  
 जब तह बदनवार बिराजित, घर-घर बजति कटारि ।  
 भक्ति देह, पालने, जुनाऊँ, सुरदास बलिजाई ॥ 38 ॥ 656<sup>a</sup>

### 5.3 टांडा :

जिस प्रकार बनजारों के टांडे सारे भारत वर्ष में मिलते हैं उसी प्रकार दाढ़ी बनजारों के टांडे भी हैं पर संख्या में बहुत कम । अन्य बनजारों के टांडों में भी उनकी स्थिति दिखाई देती है । उदाहरण के लिए बान्ध प्रदेस के बम्भ और रंगारङ्गी जिले में बौठाबठा नामक स्थान पर दाढ़ी बनजारों के टांडे हैं ।

• सुरसागर, सुरदास, पृ. सं. 655, 656





## 6 मथुरा बनजारे

### 6.1 जातीय स्तर :

मथुरा बनजारे अपने आप को ब्राह्मण कहते हैं। ये लोग ब्राह्मणों की भाँति जेऊ भी पहनते हैं। मांस और मदिरा से भी बन्ने परहेज है। \* कम्बरलेज मथुरा बनजारों को चार भागों में विभक्त किया है - 1। पाण्डे 2। दुबे 3। चौबे और 4। तिवारी ये सब ब्राह्मणों के गोत्र हैं। इनके लिए चार वेदों का पठन करना अनिवार्य कहा जाता है।<sup>2</sup>

### 6.2 व्यवसायिक प्रकृति :

अन्य बनजारों की भाँति मथुरा बनजारे भी बेलों और गायों पर अन्न लादकर जगह-जगह बेचनेवाले व्यापारी थे। ठिन्नु बेलों और

---

\* The Mathuria Banjaras take their name from Mathura or Muttra and appear to be Brahmans. They wear the sacred thread, know the Gayatri Mantra and to the present day abstain from meat and liquor subsisting entirely on grain and vegetables. They always had a sufficiency a Charans and servants (Jangar) in their villages to perform all necessary manual work, and would not themselves work for a remuneration otherwise than by carrying grain, which was and still is their legitimate occupation. BY - R.V. Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India, P.171

2. The Mathurias are divided according to Mr. Cumberlege into four Groups called Pande, Dube, Tiwari and Chaube all of which one common titles of Hindustan Brahmans and signify a man learned in one, two, three and four vedas respectively.

By - R.V. Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India, P.171



गायों पर सामान लादना ब्राह्मणीयित कार्य नहीं है । \* मधुरा बनजारों का गाय बैल से व्यवसायिक सम्बन्ध रहा है । इस व्यवसायिकता के साथ धार्मिकता भी संबद्ध हो गई । प्रत्येक परिवार अपने जागन में कम से कम एक गाय छूटि से लड़ी देवता चाहेगा । इस जाति के लोग गो वत्सा को सबसे बड़ा पाप समझते हैं ।

### 7 मुसलमान बनजारा

उमर कुछ हिन्दू बनजारों का परिचय दिया गया है । इनके अतिरिक्त कुछ बनजारे मुसलमान भी होते हैं । इनके दो वर्ग माने जाते हैं : तुरकिया और मुजेरिया ।<sup>2</sup> मुजेरिया बनजारों का कहना है कि - उनका सम्बन्ध मक्का से है ।<sup>3</sup> दूसरी उत्पत्ति के अनुसार ये लोग "मक्का" का व्यापार करते थे, इसलिए मक्केरी हो गये । कुछ भी हो ये लोग अपने को मुसलमान ही कहते हैं । तुरकिया शब्द तो इनके मुसलमान होने को प्रमाणित करता ही है ।

शुद्ध बनजारे इनको बनजारा मानते ही नहीं किन्तु कम्हरलेज ने इनको बनजारा माना है ।<sup>4</sup>

\* Elliotts Races, quoted by Mr. Crooke, Ibidem

2 -do-

3 HINDUS Hindu's of Gujrath, P.No.214  
By - Comberlage

4. Sir H.M. Elliot's Supplemental Glossary



यह भी अनुवृत्ति है कि ये लोग औरंगजेब की सेना के साथ दक्षिण में जा गये थे। यह भी अनुमान लगाया जाता है कि ये राजपूत बनजारे ही रहे होंगे।\* परन्तु किसी दवाव में जाकर इन लोगों को बलात् मुसलमान बना लिया हो।<sup>2</sup>

### 6 सुनार बनजारा

बनजारों के लंबीने के साथ सुनार भी रहते थे। सुनार एक स्वतंत्र जाति है। बनजारों के सम्पर्क में जाने पर इन्होंने बनजारों की बोली सीख ली। इस वर्ग की कोई दूसरी बोली नहीं है।<sup>3</sup> आज भी बनजारों के सभी टांडों में सुनार का एक परिवार होता है, आज भी उनका व्यवसाय गहने बनाना ही है। इनको संस्कृत<sup>4</sup> बनजारों से मिलती-जुलती है, परन्तु वेग-भ्रूषा अलग है। किन्तु सुनारों को बनजारों का दर्जा प्राप्त नहीं होता। इनके साथ कोई रोटी बेटा का सम्बन्ध नहीं बनता।

मोतीलाल सुनार कहता है - हमारे दादा, परदादा भी बनजारों के टांडों में रहते थे, वे भी बनजारों को गहने बनाकर देते थे। हमारी औरतें साडी-बोली पहनती हैं। हमारा धर्म हिन्दू है, हम लोग बालाजी की पूजा करते हैं। हिन्दू धर्म के सभी देवी-देवताओं की पूजा भी करते हैं। टांडों से निकट वाले हाट में हम लोग बनजारों के गहनों को बेचते हैं।<sup>5</sup>

\*

2

3 इनकी अपनी एक मोर्छ कोठ भाषा भी है, जिसको केवल वे ही समझ सकते हैं।

4 यद्यपि बनजारों की अनुकरण इनके त्योहार पर्व होते हैं, फिर भी इनका कोई अपना वैशिष्ट्य रहता है।

5 मोतीलाल सुनार, आयु 70 वर्ष, बालाबताहा, खोरेडकी जिन्हा, बा.प्र.



## 9 जागड बनजारा

बनजारे कभी-कभी अपने पशुओं की देखभाल के लिए नौकर रख लेते थे। जिसने ही अधिक माघ और बेल होते थे उतने ही नौकरों की आवश्यकता होती थी। यदि कोई गरीब जादमी अपने बच्चों को खेदने पर वे लोग खरीद लेते थे। उस खरीदे हुए बच्चे को ही जागड \* कहते हैं। क्यों कि इनकी स्थिति गुलामों जैसी ही होती है, यहाँ तक कि इनका कृय-विकृय भी किया जा सकता।

जागड बनजारा के खाने-पीने के बर्तन भी अलग रहते हैं। वह बनजारों की पक्ति में बैठकर भोजन नहीं कर सकता। यदि जागड किसी काम से दूसरे टाँडे को जाता है तो उसे पानी भी उमर से डालकर पिलाया जाता है।

### 9.1. जाडडेन भेन्नो : जागड को बनजारा बनाना :

सात पीढ़ियों के पश्चात् जागड को बनजारे के रूप में मान लेते हैं।<sup>2</sup> उसका गोत्र मालिक बनजारे के साथ हो जाता है। उसे बनजारे के रूप में मानने के लिए एक अनुष्ठान होता है। इस अवसर पर जागड का पालक टाँडे के नायक और कारभारी को आमंत्रित करता है। वास-वास के टाँडों के प्रतिष्ठित नायकों को भी इस अनुष्ठान में सम्मिलित किया जाता है। टाँडे के लोग जागड के पालक के घर के सामने बैठ जाते हैं। जागड को

\* जागड का अर्थ गुलाम होता है।

2 इसको प्रमाणित करने के लिए कोई कुलग बनजारा प्रस्तुत किया जाना चाहिए।



एक उचित स्थान पर बिठाया जाता है। टांडे का नायक अन्य नायकों के सम्मुख सोना गरम करता है और गरम सोने से जागड की जीभ को दाग देता है। तब से जागड बनजारा बन जाता है। \*

इस अनुष्ठान को धूम-धाम से खान-पान के साथ मनाया जाता है। जागड की बोलो, वेश-भूषा, रहन-सहन, धर्म और देवी देवता बनजारों के समान होते हैं। इस अनुष्ठान को जागडेन भेन्नो [जागड को बनजारा बनाना] कहते हैं। तब से जागड को बनजारों की पक्ति में बैठकर भोजन करने की अनुमति प्रदान की जाती है। वह अपनी बेटो दूसरे बनजारों को दे सकता है और ले सकता है। इस प्रकार से बेटो और रोटो की अनुमति प्राप्त होती है।<sup>2</sup>

...

---

\* चन्द्रनाथ, आयु 85 वर्ष, नरसापुर टांडा, मेदक जिला, आन्ध्र प्रदेश।

2 कीसया नाथ, आयु 60 वर्ष, धारर टांडा, रंगारेड्डी जिला, आन्ध्र प्रदेश।

द्वितीय अध्याय :                      ..                      ....                      ....

बनजारा : सांस्कृतिक परिचय





## 1. टांठा :

बनजारा की बस्ती को टांठा कहते हैं। टांठों का चुनाव इस दृष्टि से किया जाता है कि वहाँ कीचड़ न हो पाये और पशु चरने के लिए सुविधाएँ हो। इनके टांड़े पर्वत की गोदी या जंगल के आँधल में, और नदियों के किनारे बस जाते हैं। प्रकृति के गोद में स्थिर टांड़े मत को सहज ही अपना और आकर्षित कर लेते हैं। वे लोग अपने मकान को झण्डा कहते हैं और महाराष्ट्र के बनजारे कुड़ कहते हैं। इनका मकान लकड़ी और छानि से बनाया जाता है। पक्के मकान बहुत कम पाये जाते हैं। मकान का आगिन पूर्व दिशा की ओर रहता है। टांड़े के सामने इनमान जी का मन्दिर रहता है जिनको बनजारे भक्ति के साथ पूजते हैं।

## 2. नायक :

टांड़े के सब मुखिया को नायक कहते हैं। नायक एक प्रतिष्ठित परिवार का व्यक्ति होता है। वह न्यायी एवं धर्मात्मा होता है। नायक की नियुक्ति का परम्परागत होती है। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके बड़े बेटे को टांड़े का नायक बना दिया जाता है। नायक के सहायक व्यक्ति यह हैं - कारभारी, डाव, सौनार, झण्डा, दास्या, नाई और डाढ़ी आदि। कारभारी और डाव दोनों कुम्हार नायक की सहायता करते रहते हैं। नायक की अध्यक्षता में टांड़े के सभी त्पोहार, अनुष्ठान, शुक्रार्थ, जन्म और मृत्यु सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होते हैं। किसी त्पोहार विशेष पर टांड़े में कोई दुर्घटना घट गई तो टांड़े वाले उस त्पोहार को मनाने या न मनाने का सुझाव



नायक से लेते हैं और नायक के निर्णय को स्वीकार करते हैं। प्राचीन काल से लेकर आज तक बें भी टांठि का सामूहिक कार्य चलता आ रहा है। आज भी बनजारा समाज में नायक को सम्मान दिया जाता है। टांठि के कुंवारी-कुंवारे के हाथ पीसे करने का कार्य नायक के द्वारा ही सम्पन्न होता है। सगाई के अवसर पर उसकी उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती है। गूड़ छाने के अनुष्ठान में नायक के बिना कार्य आगे नहीं बढ़ता। इस अवसर पर नायक को एक स्पया भेंट में देते हैं। इस स्पया को साकेर<sup>१</sup> स्पया कहते हैं। इसी प्रकार से विवाह में सगाई/लेकर कन्या की बिदाई तक नायक का घनिष्ट सम्बन्ध रहता है। टांठि में बकरा काटने पर नायक को "छुड़ीवालो हड़का" देने की प्रथा है।

### 3. नसाब बँजारों की पंचायत :

बनजारों की पंचायत<sup>२</sup> प्रथा आज भी अपना अमूठा स्थान रखती है। सामाजिक कार्यों में जब भी कोई मतभेद उड़ा हो जाता है तो टांठि से दूर वृक्ष के नीचे उनकी पंचायत बैठती है। पंचायत में प्रायः आस-पास के सभी टांठों के नायक सम्मिलित होते हैं। हर एक टांठि के नागरिक<sup>३</sup> को भी उसमें उपस्थित होने का अधिकार रहता है। वे सब अपने नायक के साथ कुमजद बैठते हैं। भिन्न-भिन्न टांठों की कतारों को लेकर एक घेरा बना लिया जाता है। तत्पश्चात् दल का नायक बात शुरू करता है। एक व्यक्ति की तदर्थ बात जब तक समाप्त नहीं

\* साक्ष

२ बनजारा जाति में पंचायत को "नसाब" कहते हैं।

३ बनजारे नागरिक को "कन्ता जादमी" कहते हैं।



हो जाती, तबतक दूसरा नहीं बोलता । जिस किसी व्यक्ति को कुछ बोला हो तो उसे नायक से पहले अनुमति लेना पड़ता है ।

यद्यपि बनजारों की पंचायत चार-पाँच दिन तक भी चलती है । वादी और प्रतिक्रियादी दल के लोग अपने घर का खाना खाते हैं । उपस्थित प्रश्न का निर्णय होने पर पंचायत समाप्त होती है । अपराधी को पंचायत दंड \* देती है । दंड के रूप में प्राप्त स्त्रियों से पंचायत को दारु पिलाई जाती है ।

#### 4. बनजारा जाति में पारिवारिक जीवन का चित्रण :

..

संसार के प्रायः सभी देशों का समाज छोटे-छोटे परिवारों में बँटा हुआ है । परन्तु इसके विपरीत भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ संयुक्त परिवार अधिक होते हैं । लोक-साहित्य समाज स्वल्प का सच्चा प्रतिनिधि होता है, यही कारण है कि पारिवारिक जीवन के जो विवाद घिरे जैसे भारतीय लोक-साहित्य में उपलब्ध होते हैं । ऐसे भारतीय भाषाओं में प्राप्त होनेवाले लोक-साहित्य की भाँति ही बनजारा लोक साहित्य में वंशित परिवारों में सदस्यों की दीर्घ सूची मिलती है ।

परिवार के सभी सदस्य परस्पर प्रेमपूर्वक सुख-दुःख दोनों में

---

\* बनजारा बोली में दंड को " दांड " कहते हैं ।



समान न्य से साथ देते हैं - एक सदस्य सुख सभी का सुख और एक का दुःख सभी का दुःख बन जाता है । साथ साथ रहने से कभी कभी परस्पर कलह का हो जाना अस्वाभाविक नहीं है । स्वभाव-भेद और अवस्था भेद से कलह के दो ही कारण होते हैं । कभी-कभी सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन भी परस्पर कलह-द्वेष उत्पन्न कर देता है । परिवार में कुछ सम्बन्ध ऐसे होते हैं जो स्नेह, प्रेम, बलिदान तथा करुणा जैसे सद्गुणों को सहज प्रकट कर देते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि स्वाभाविक घेर हो । कुछ सम्बन्ध सामान्यतः तो बादर-झड़ा से युक्त दिखनाये जाते हैं, परन्तु परिस्थिति विक्षोभ में परस्पर घृणा उत्पन्न करनेवाले हो जाते हैं । जैसे देवर-भाभी, ससुर-बहू, एवं जेठ-बहू । इन सभी सम्बन्धों को तीन उपशीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है - वात्सल्य, मित्रता और प्रेम उत्पन्न करनेवाले सम्बन्ध । वे इस प्रकार हैं -

१. ब। माता और पुत्री
- बा। पिता और पुत्री
- ब। माता और पुत्र
- ब। पुत्र और पिता
- उ। भाई और बहन
- उ। पति और पत्नी
- ए। देवर और भाभी
- ऐ। भाई-भाई
- ओ। बहन-बहन



### बनजारा की लक्ष्मी

बनजारा स्त्री के गर्भाशय के बाद जो गीत गाया जाता है, उसमें नारी सुख-आनन्द-आकांक्षा एवं हार्दिक प्रसन्नता के भाव मुखरित हो उठते हैं --

सासूजी मेरे सासूजी को कसूजी,  
 कुंआर का ठास-या मंगा दे जी ।  
 खरक तो दाँत नहीं छे ॥  
 दुध बताना पोली,  
 लागों का खन्खन री ली ।  
 खरक तो दाँत नहीं छे ॥  
 पोखर पुरी को खजना लागे,  
 जेठानी मेरे सेठजी सायर को कही है -  
 कुंआर का ठास-या मंगा दे जी ।  
 खरक तो दाँत नहीं छे ॥  
 जयपुर का गेहर छी ली,  
 खरक तो दाँत नहीं छे ॥

प्रसूति के बाद गीत गाते हुए जन्मा को प्रसूति-गृह के बाहर निकाला जाता है -

इस जन्मा ने जुलूम किया,  
 लीजी जाया शुरू किया ।  
 दाई को बुलाना छोट दिया  
 ननों को बुलाना शुरू किया । इस जन्मा ... ॥  
 सास को बुलाना छोट दिया,  
 मास को बुलाना शुरू किया ॥ इस जन्मा .. ॥



नंदन को बुलाना छोड़ दिया,  
बहन को बुलाना शुरू किया ॥ उस उच्चा... ॥

### मातृत्व भाव

पुरुषों के परचास माता अपने अपने रोम रोम से शिशु की कल्याण-कामना करती रहती है । मन्वा यदि हृष्ट-पुष्ट हो तो पीता कम रहती है, लेकिन दुर्लभ अथवा अर्ध शिशु के कारण माँ को व्याकुलता एवं बेचैनो का जोर-जोर नहीं रहता । अपनी अँधी कन्या के लिए माता को तक्षक का यह चित्र खिना महान है -

मारो आँखोंरो लड़की गमाई,  
खीरो गस्ती ब्याय बाई ।  
यमुना नदीमा किरण्णा कुण्णो,  
खीरो गस्ती खीर बाई ।  
आँखिळुडिम् नागपदमिनी...  
केशर कुडिम् दाना सुत्तेव ।  
दानान् मारन् मातो फोडो ।  
मात फोडो, मैरो काटो ...  
मैरो मिरा कण्णई कण्णारा ॥

कन्या का विवाह माता के लिए निश्चित भावनाओं का जनक है । उसे कन्या को विदा करते समय उसकी अन्तरात्मा में टीस उठती है --

बालो मातेरो गौदो छोडो बालो ।  
छाप्पिरे छेरेन दौडो जाई ।  
बापूरो मैल छोडो बालो ।  
बालो छोडो गराउला छेरे आगेल ।

..



बाली कोरण बाँझल धीरेर जाँगल ।  
बाली घाँठीन कवाकल धीरेर जाँगल ।  
बाली चौकी पुराल धीरेर जाँगल ।  
बाली कोबोण सराल धीरेर जाँगल ॥

### मौतिली माता

सौतेली माँ का व्यवहार कट्ट एत निष्ठुर रहा करता है ।  
एक बनजारा लोकगीत में पुन उस दुर्ध्वज्जार का कर्म करते हुए कहता है -  
मारो मारी मासोय तेनो कन्वासोय  
बार मिना केँ मासो चरारोयूँ मैसोय ।  
तारे बेटान छिन्नाए बैसोय ।  
बार मिना केँ मासो चरारोयो मैसोय ।  
तारे बेटान हाटेन मौसोय । बार मिना. ॥

### पितृत्व भाव

बनजारा लोकगीतों में पिता का पुत्री के प्रति असोम प्रेम दिखाई देता है । यौन्य वर की छीज की जिंता पिता के पूरे व्यक्तित्व को ग्रहण करता है । बनजारों में भी कन्या का विकास पिता के लिए एक समस्या खड़ी कर देता है --

पथ मँडोली राम रामिय जाईए ।  
हमनी जाई परमम बैसो ...  
हमारो रामोर कुंठार कन्या ।  
परकमल काचको तोरायू ...  
हमारा ते जाई देखे तुमारी ।

सप्तमवी के बाद जब कन्या पराई हो जाती है, तब माता



हो नहीं पिता का हृदय भी दुःखित हो जाता है । इस लखर का गीत इस प्रकार है --

बागो सगारो, सोखीनी, लेगी मोली में सुटाक ।  
 कोयलबाई सोद वाली, छोटी दादाजी रो जागली ॥  
 छोटी दादारी रेस, छोटी काकाजी को जागली ।  
 छोटी काकाजी को चस्, कोयलबाई सोद वाली ।

### भाई-बहन का स्नेह

बनजारा लोकगीतों में बहन भाई के लिए " वीर " शब्द का प्रयोग करती है । बहन को जाकसियों का सम्मान करते हुए उसके गौरव, स्तुति एवं मर्यादा को रक्षा के लिए सन्मदुह होकर अपनी सुदृढ़ कलाई पर " राखी " रक्षासूत्र बाँधवाकर कर्तव्य के बंधन की रक्षा का दायित्व ग्रहण करने वाले पुरुषों को "वीर" शब्द से संबोधित कर सकती हैं ।

बहन भाई के शत्रुओं की लज्जता को कामना करते हुए वह उन्हें दुत्कारती है --

छम छम गंदाच भिया केवडोर ।  
 तिसीगाम गंदाच भिया केवडोर ।  
 भियारे छे जाग केवडो रे ,  
 जीन् तोड मस लिजी ।  
 मुंदो मुंदागी भिया केवडोरे,  
 जीत तोड मस लिजी ।

भाई-बहन के संबंधों को देखकर भाभी के मन में ईर्ष्या न उत्पन्न हो, इसके लिए बहन एक मनोवैज्ञानिक उपाय काम में लाती है --

१. उपाध्याय : डा. किताबजि मासवी लोकगीत, पृ. 351.





जारो पर जारो, जारो जारो मोतो ।  
 जारो मो धु मोतो छकाई लो ।  
 खोरा लाल साईयो मोतो ।  
 हास्सैम् छालू मोतो जाकाकेई ।  
 तोसरीम् देतु मोतो छकाकेई ।  
 उखना में देतु मोतो छकासियो ।  
 रम्पामु देतु मोतो छकासियो ।

एक कहन अपने भाई को स्तुतिगत उवाचना देती है कि अब यह भाभी के पैर में हो खी जायगा --

भाया तारो बिना पटाना रो देस ।  
 मोजीरो फूल भाया ।  
 भाया तारो कानेन कन्या छरो,  
 मोजीरो फूल भाया ।  
 भाया तारो देसन ताडी - छरो,  
 कान धाडी छरो,  
 छोडे हर छवी छरो ।  
 भाया तोरो हातो छवाल छरो,  
 कितापटन देस । माजरो फूल भाया ।

ससुराल जाते समय कहन भाई के वियोग को बहना से व्यक्त हो कह उठती है --

साबूरो सनारो, छोरीरो छराया --  
 पातळोया खोरा ।  
 कागदेरो पुडी कल्ल निसेया  
 वालेर देताई भीया ।



मुहंती पातली सावली लज्जी ।  
मारे देसाई खोरा ।

### दाम्पत्य-जीवन

दाम्पत्य-जीवन की सफलता पुम एवं सहायोग की भावना पर निर्भर रहती है । आदर्श गृहस्थ-जीवन का यही रहस्य है । बनजारा लोकगीतों में दाम्पत्य जीवन को विविध मनोकामनाओं की मंदर कहा गया हुई है ।

एक गीत में दम्पति के पारस्परिक हास-पश्चिहास की मंदर अभिव्यक्ति हुई है जो इस प्रकार है -

आणाऊ ना रहो दाँठो लणकाओर ।  
लणकाओ जो मुटारे --  
पावो सोनारकी रे छोरो ।  
पकठापनारे काँके बाविरना ।  
माँठी गदों लडाँठी जल्लेमा ।

हेत में पति पत्नी मिककर हास काट रहे हैं । पति कहता है कि हास के मद्धर में बना रहा हूँ -- माँके पर दोपहर का पुईल सूर्य है । ऐसे में चार की बातें करो -

हास काटकर पुत्तिया खीरीर ।  
दिन मेरा को छिड्ये दोपेर पढी सावडी ।  
तारो काई मजों रे खनाई मुँडाई ।  
छडी बोकके साथ कलो तो ।



पति को पैसाकुन अवस्था देन पत्नी छोरे से कहती है आस पास इतने लोग हैं । पर कलौ तो मुँह को मिठाई भी दूँगी और झूला भी कुवाळी -

छर साथ कलौ तो, कग कग लाना लाती ।  
तेल चक्का, मठाई का पुडा, मका करो ।  
तेल मठाई का सारी रात ।  
छेवानी तो साथ कलौ तो कग मोना लौती ।  
गादी गल्लीवा कर्म - बिजाना -  
पत्नी कुले सारी रात ।

परकीया प्रेम के शृंगार गीत बहुत धीठे हैं । पति-पत्नी को शृंगार भावनाओं को मजुर अभिव्यक्ति से ये गीत जीत-पुँत हैं । एक पत्नी के उद्गार हैं -- खोरो को जैसे छोटी प्रिय होती है, गुदुह-भूमि पर सैनिकों को जैसे तलवार प्रिय होती है, उसी प्रकार पुरुष को अपनी कामिनी शय्या पर प्रिय होती है -

राछा मोठी डोळी,  
रण मोठी तलवार ।  
सुरा मोठी लाग  
सेज मोठी कामी ।

पति किसी बात पर पत्नी से रूठ जाता है । पत्नी पति को मनाने के लिए विभिन्न प्रयत्न करती है --

चाय करगो पैसा भरगो ।  
चाय डोणी पिदु । चाय डोणी पिदु ।  
राजवीरो वा नीगी तलवार --  
सारी को बाई ।  
सारीसु चाली बाई राजवीर वा ॥



### सास-ससू का संबंध

प्रायः सभी प्रांतों में सास का परिचय करीब, तानाशाह, कठोर एवं भयङ्कारी चित्रित किया गया है। यह धारणा इतनी बलवन्त हो गई है कि स्मृतियों जाने वाली चट्टानें आँसु से भर जाया करती हैं।

बनजारा लोकगीतों में सास कठोर, निर्दयी, लज्जानु तथा ईर्ष्यालु के रूप में चित्रित हुई है।

सासू दस गाँधी कसेला लाग ।  
 मसद प भुदवी गाँधी करेला लाग ।  
 सासुन पर छल्ल बाँधीयो हमारीच ।  
 सासरेन पर छल्ल लेल हमारीच ।  
 दाडी दस बाँधियो सोनेरी लाग ।  
 नणदे दस गाँधी करेला लाग ।  
 मस दस कसो गाँधी कसे ला लाग ।  
 देसरेन पर छल्ल बाँधीयो हमारीच ।  
 बापू दस बाँध्या सोनेरी लाग ।  
 मस दरे भुदवा गाँधी करेला लाग ।

### मन्द - भीजार्ह

लोकगीतों में मन्द की मूर्ति भी सास की तरह ही ईर्ष्या, द्रोह, कठोर, निर्दयता आदि के दुर्गुणों से समार्ह गई है। मन्द-भीजार्ह के कलहपूर्ण संबंधों की पुरातनता की पुष्टि संस्कृत



साहित्य से भी होती है ।<sup>1</sup>

मनद को जली कटी खाते सुकड़र एक तब अपनी वेदना को निम्न शब्दों में व्यक्त करती है --

जुहणी दरवाजी काई बोली लगल ।

जे टैरो मार मन लागीच ।

बीकी मारतू केरीच ।

एक हंसोठ मनद अपनी भाभी से कहती है - हे भाभी मेरा भाई रेल चलाता है जोर उस रेल में मेरे चाचा-माचो बैठे हुए हैं । उस गाडी में मेरो सोने की गठरी छूट गई है । मेरा भाई मेरी थारी भाभी को भूल जाया है --

मारो तोरा रेलगाडी दाबो मन्दबाई ।

जो गाडीम काका-काकी भूल जाई ।

सोनेरो गठरोये, मारो तोरा रेलगाडी ।

मन्द बाई भूल जाई, सोनेरो गठडी ।

जो गठरोम भाई भोजाई भूल जाई --

सोनेरो गठडी, मारो तोरा ॥

1. शत्रु पराजितं नैव पराजितं यदि भू-भी लोका मर्त्यदेव पदु  
प्रतिष्ठापनं कर्मा नूनं कान्दा ततः ॥ अथा सा मयि  
किं ब्रुवामि चरितं सृष्ट्वा मनेतिमते कान्तः स्वस्थ  
कृता विनोक्तमिति मामे तावदागः सतिः ।

-- डा. उपपाध्याय कृष्णदेव : \* भोजपुरी लोक-साहित्य  
का अध्ययन\* पृ. 272 से उद्धृत ।



### देवर भाभी

बनजारा समाज में पति-कुला दिसाह की प्रथा प्रचलित है । क्योंकि इनके पूर्वज सुग्रीव ने अपनी भाभी तारा के साथ विवाह कर लिया था, लेकिन अब यह प्रथा कुछ कम हो रही है ।

बनजारा समाज में देवर-भाभी पारस्परिक हास-परिहास से दिन भर की ध्वनि को दूर करते हैं । राम-सीता की जीवन गाथाओं का जाग्रद नींद देवर-भाभी अपने हृदय की भावनाओं को सामूहिक रूप से झुंझकर प्रकट करते हैं -

राम बाबू होजी, लक्ष्मण काठी दाँडोर ।  
 हनुमान बुला मारोरे तुमरो, राजा करध भाई भाईर ।  
 रामेर हातेमा रंगो कीरी दीकिया ।  
 काई सीतारे हारेमा ताक्येदोरो जोगिरे ।  
 जामा तारीर ....

एक गीत में राधा-कृष्ण के माध्यम से देवर भाभी के निम्नलिखित प्रेम को अभिव्यक्ति हुई है -

चाट जरा मारो फोड़कन छाडर मारो फोडो राम ।  
 लोकी रो बाबा, लोकी में रोगा,  
 मन भू दोष राम ॥ चाट जरा ...  
 तू राधा गोरी मे कादु छिन्न,  
 तारो मारो जोडा छेनीराम ॥ चाट जरा...

देवर-भाभी के पारिवारिक निम्नलिखित प्रेम की सरल, सरस और स्वाभाविक अभिव्यक्ति देखते ही लगती है -

कंठे पर बाँडे कौरी वीथ ।  
 कंठे पर बाँडे जाई दे वीथ ।



घाठेन फाटा कसेरो लीय ।  
 घाठेन फाटा जाईर लीय ।  
 फाटान फूल कसेरो लीय ।  
 फाटान फूल जाईर लीय ।

### देवरानी और जैठानी

जंजारों के संयुक्त परिवार में सब भाई एवं परिवार के अन्य लोग एक साथ निक्कर रहते हैं । सामान्यतः उनमें कैल-जोल रहता है । कभी-कभी स्वार्थकां कलह का वातावरण भी उत्पन्न होता है । ऐसे कलहों का कर्म जंजारा लोका गैतों में किया गया है । देवरानी और जैठानी के बीच प्रेम की कलक सदा दिखाई देती है -

वाल जूटाजीवाई हाटेन जामा,  
 रकीयानी पतडीया भरोल ।  
 जामा कचि कुडी लामा,  
 छर हाई पामलोरो जोडी ।  
 चाटलाई बल जारो छीडी,  
 जामन वाकदोन कोडी ।

दोनों में कभी-कभी हास - परिहास भी होता है जो निम्न प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम है --

नको नको करतातु कंगानी लिजती  
 राजारो राजी पाजी लोटा लाई ।  
 राजारो राजी फिकी भाई वेटा वेटी ।  
 नको नको करतातु --  
 राजारो राजी डोला भाई वेटी ।

**banjara hills  
not for them**







2. स्वाभाविक बरवाले सम्बन्ध

3. सामाजिक मर्यादा के उल्लंघन होने पर धृष्ट उत्पन्न करनेवाले सम्बन्ध इस प्रकार है -

सोत और सोत, सास और बहू, ननद और भाभी  
ससुर और बहू, जेठ और छोटे भाई की पत्नी १ बोडो १

5. बनजारों की वेश-भूषा :

..

..

..

86

315784

बनजारों की वेश-भूषा में राजस्थान की संस्कृति झलकती है ।

राज के युग में भी भारत के सभी बनजारे एक ही प्रकार के कपड़े पहनते हैं । वेश-भूषा की दृष्टि से पुरुष धोती, कुरता \* और फेंटा बाँधते हैं । वे सिर पर साठ हाथ की पगड़ी <sup>2</sup> पहनते हैं । पगड़ी प्रायः लाल या केसरिया रंग की होती है ।

बनजारा स्त्रियों की वेश-भूषा विशेष आकर्षक होती है । वे बारह हाथ का छाछरा <sup>3</sup> पहनती है जिस पर कंधे के टुकड़े टके हुए होते हैं और रंग बिरंगे धागों की कशीदाकारी होती है । इनके खोदनी <sup>4</sup> लाल, पीली, हरी या नीले रंग की होती हैं जिसके छोर पर छोटे-छोटे छूँचू टके रहते हैं । खोदनी के बीच में छूँचू <sup>5</sup> रहता है । छूँचू का नमूना आकर्षित और सुंदर होता है । वे स्त्रियाँ

\* छगला

2. पगडी

3. फेंटिया

4. छोटिया या पामडी 5. छूँचू





झूट में काँच टाँकी है। विधवा स्त्री की जोड़नी में झूट नहीं रहता। इनकी चोली \* भी सुन्दर ढंग से बनी होती है, जिस पर काँच<sup>2</sup> टकी होती है।

म्हुरा बनजारों की स्त्रियाँ छेदेदार रंगीन छाछरे को पहनती हैं। विवाहित महिला के सिर पर छः छँच सम्बो छेर की लकड़ी<sup>3</sup> रहती है उस पर रंगीन जोड़नी झूमती हुई बड़ी सुहावनी लगती है। इन महिलाओं को दूर से देखने से ऐसा लगता है कि चलते फिरते छेरे हैं। विधवा स्त्री के लिए लकड़ी का उपयोग वर्जित है।

6. बनजारों के आभूषण : .. .

प्राचीन काल से वास्तव बनजारों के आभूषण नहीं बदले। वे सोना, चाँदी, पीतल और ताम्बे के आभूषण पहनते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

#### 1. पुरुष के आभूषण :

पुरुष कानों में सोने की बालियाँ, हाथ में चाँदी का कड़ा, उंगली में सोना, चाँदी और ताम्बे की अँगुठियाँ, कमर में चाँदी की करछनी और पुराने चाँदी के सिक्कों से बनी हार को पहनते हैं।

=====

\* कायछी

2. काँच

3. इस लकड़ी को सिगेड़ी कहते हैं



## 2. स्त्रियों के आभूषण :

### {क} कुंवारी लड़कियों के आभूषण :

1. चाँदी के : माथे पर बिबिदिया और बाठ काट, कान में कन्या, गले में हंसली, उंगलियों में अंगूठियाँ, हाथ में कड़ा, पायल, कानों तक लूके हुए टोपली आदि चाँदी के गहने पहनती हैं।
2. पीतल के आभूषण : नुबुर और अंगूठियाँ आदि पीतल के आभूषण पहनती हैं।

### {ख} विवाहित स्त्रियों के आभूषण :

1. चाँदी के आभूषण - माथे पर बिबिदिया और बाठ काट, कान में कन्या, गले में हंसली, चाँदी के सिक्के का हार, उंगलियों में फूला और अंगूठियाँ, हाथ में कड़ा, पैर में पायल, बालों में कानों तक लूके हुए गुच्छेदार टोपली आदि चाँदी के गहने पहनती हैं।
2. सोने के आभूषण - नाक की नथ, फुल्ली और छुहरी मुख्य हैं।
3. पीतल के आभूषण - हाथ में गजरा, पैरों में वाकडी और कल, पैर के अंगूठे में अंगूठका आदि पीतल के आभूषण मुख्य हैं।
4. वे स्त्रियाँ उक्त आभूषणों के अतिरिक्त हाथी दाँत की चुड़ियाँ, भुजा पर काँच का बेगर और चुड़ियों के आगे लकड़ी की चुड़ी {बोदल} भी पहनती हैं।

विधवा स्त्री हाथ में चुड़ियाँ और बालों में टोपली पहन सकती



है । वह अन्य आभूषण नहीं पहन सकती ।

उक्त आभूषणों के अतिरिक्त बनजारे शीश और सिको के भी कई प्रकार के गहने पहनते हैं । कोड़ी, मूंगा और नक्की मोती इन महिलाओं के लिए आकर्षक सजावट हैं । इनकी जोड़नों के छोर पर चांदी के छोटे छोटे छेद रुटके होते हैं ।

#### 7. बनजारों के लोक विश्वास :

बनजारों के लोक विश्वास विविध हैं । इनके यात्रा सम्बन्धी लोक विश्वास अपेक्षाकृत अधिक हैं । कहा जाता है कि वे लोग यात्रा से पूर्व बलि दिया करते थे । कभी-कभी वे अपने पुत्र को घर ही में गर्दत तक गाड़कर उस पर से बैलों को लदणी चलाते थे । उनका विश्वास था कि इस प्रकार मरा हुआ उनका पुत्र भूत बनकर सहायक बनेगा । अब यह पुरा नहीं है ।

इनका विश्वास है कि गाय, बैल, कुत्ता, बिल्ली, और गिलहरी को मारनेवाला व्यक्ति कई हजार वर्षों तक नरकवासी हो जाता है । आत्म हत्या करनेवाला व्यक्ति भूत बनकर भटकता है और स्त्री भूतड़ी बनकर बच्चों को सताती है । इनका कहना है कि भूत और भूतड़ी के हाथ, पैर उल्टे होते हैं । इनको भगाने के लिए बाग में लाल मिर्च डाला जाता है । उनका विश्वास है कि मिर्च के धूर से भूत भाग जाते हैं ।

प्राचीन काल में बनजारे व्यापार को जाते समय कुल देवता के सामने दीपक जलाते, दीपक की लौ जिस दिशा में झुक्ती वे उसी दिशा में ~~मार्गदर्शक~~ व्यापार के लिए जाते थे ।



बनजारे किसी भी अनुष्ठान में पानी से भरा घर घूटने पर जूम मानते हैं। वे लोग मंगलवार और शनिवार के दिन किसी भी शुभ कार्य का आरम्भ नहीं करते हैं।

प्रथम वर्षा ऋतु में यधु का माबके में जाना शुभ माना जाता है। बनजारों का विश्वास है कि वर्षा धरती को फसलों से अन्नपूर्णा बना देती है उसी प्रकार से गर्भवती कन्या माता का आशीर्वाद पाकर पुरुषवती बनती है।

कहा जाता है कि पूर्वकाल में व्यापारी बनजारे लुटेरों के भय से धन को धरती में गाड़ देते थे और उसी स्थान पर नर बलि देकर सम्यक देवता को प्रसन्न करते थे। इनका विश्वास था कि बलि के रूप में समर्पित मनुष्य दानों<sup>१</sup> बनकर धन की रक्षा करेगा। आज के युग में यह प्रथा समाप्त हो गई है।

सिर के बाल मुण्डाना जूम माना जाता है। बाश्वा के समक लूटे बाल वाली स्त्री सामने जाने पर, पानी का छाली छड़ा लेकर सामने से जाने पर, बिल्ली के सामने जाने पर, कुत्ते का कान पकड़ फड़ाने पर, ठीके पर, लपि का दाईं ओर से दाईं ओर जाना, बच्चों का बोमड़ी मारना, बाये पैर को ठोकरे लगना, जूम माना जाता है। बनजारे गौदड़ या सोबार को आवाज को शुभ मानते हैं।

जिस व्यक्ति की छाती पर बाल नहीं होते उसे वे कुटिल मानते हैं। उन्नत लमाटवाला व्यक्ति ईमानदार और धनवाला होता है।



इनका विश्वास है कि गंजा व्यक्ति दरिद्र और कपटी होता है । मटक-मटक कर चलनेवाली का चरित्र ठीक नहीं रहता । नुकीले अंगूठे वाला व्यक्ति चतुर और निपुण खाना जाता है । ज्यादा हँसनेवाला और षोठ पर धनेबाल रहनेवाला मनुष्य कुटिल माना जाता है । लम्बी नाक वाले चरित्र उज्ज्वल होते हैं और बिब्ली की जैसे आँखें वाला व्यक्ति माझावी समझा जाता है । इनका विश्वास है कि बिब्ली जैसे आँखवाले व्यक्ति को भूत पिशाच दिखाई देते हैं ।

बनजारे अपने कल्याण के लिए नदी-नालों की, पीपल के पेड़ की, भूत प्रेतों की, पौराणिक देवताओं की, कुल गुरुओं की, और सट्टियों की पूजा करते हैं । टाँटेवाले उनकी रक्षा के लिए हर वर्ष सकरे की बली देते हैं । सकरे की बलि भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न नामों से पुकारा जाता है - खोरी, समनकर बकरा, गेट आदि ।

..



## 8. बनजारा लोककलाएँ

मानव जीवन के साथ ही कला का जन्म हुआ है। स्मार की सृष्टि ही कलामय है। मानव है। मानव हृदय भावों से प्रेरित होकर इन भावों को दूसरे तक पहुँचाना चाहता है। यही अंगुष्ठा कला है।

### 8.1. बनजारा लोक कला के विविध पक्ष

बनजारा लोक कला को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है - §1§ लोक संगीत §2§ लोक नृत्य और §3§ लोक चित्रकला।

लोककला के यह तीन पक्ष लोकमानव के जीवन के अंग हैं।

इनके माध्यम से वह गाता है, नाचता है और रंग-विरंग सपने देखता है।

### 8.1.1. बनजारा लोक संगीत

बनजारा गीतों के भावों में सख्त सरलता, जीवन की गहराई है। इन गीतों में जादू भरा हुआ है। बेटी को विदाई पर नयनों से आँसू उमड़ पड़ते हैं। गीत इस प्रकार है -

याडी ऐ जे - या - हिया

मारे बापूरो जे मडगी या - हिया

मारे नागळ बापूरो नगरी छूट चाली-या -हिया

याडी ऐ जे - या - हिया

मारो मोक्कसूरो नगरी छूट चाली - या - हिया

### 8.1.1.1. स्वर रचना

बनजारा गीतों में ताल का कोई नियम नहीं है। गीतों की लय ही उसकी आत्मा है। बनजारा गीतों में ताल के नियम







कमि की धाली, बाधर, टोल्ह, टोल, उप, नगारा आदि वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

बनजारा लोकगीतों में निम्न तालों का प्रयोग होता है -

दादरा - 6 मात्राएँ - धा धिन ना । धा तिन ना

वाचर - 7 मात्राएँ - धाक धिन धा धिन ।

धाक तिन धा तिन

कहरवा - 8 मात्राएँ - धा तिन तिन कपिता

#### 8.1.2 बनजारा लोक नृत्य

बनजारे पर्वोत्सवों के अवसर पर विविध प्रकार के नृत्यों का आयोजन करते हैं । पुरुषों के नृत्यों में खुद प्रेम, पौरुष तथा वीरत्व का परिचय मिलता है और नारियों के नृत्य में कोमलता, शृंगारिकता भाव भिम्बित रहता है ।

#### 8.1.2.1 बनजारा लोक नृत्यों की विशेषताएँ

बनजारा लोक नृत्यों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं ।

1. बनजारा लोकनृत्यों में शरिररोंक प्रक्षिप्त की प्रधानता रहती है।
2. यह नृत्य शृंगारिकता प्रधान होते हैं ।
3. पुरुषों के नृत्य जोशीले होते हैं ।
4. नृत्य के समय इनकी वेश-भूषा कलापूर्ण होती है ।
5. बनजारा लोकनृत्य को विविध छटाएँ मुख्यतः पर्वोत्सव पर देखी जा सकती है ।

#### 8.1.2.2 बनजारा लोकनृत्यों की विविध छटाएँ

बनजारा जाति के 16 लोक नृत्य गारे भारत में प्रचलित है ।

लोक नृत्य अपनी संस्कृति का परिचय कराते हैं । इनका परिचय



इस प्रकार  
कराते हैं । जैसे -- तलवार नृत्य, लड़ी नाच, लाठी नृत्य,  
उपरेरो नृत्य, झोंडो नारा नृत्य, मजोरा नृत्य, पोर नृत्य,  
चिवाह नृत्य, राधा नृत्य, पन्किहारिन नृत्य, लंडी पायो नृत्य,  
रास नृत्य, कंठारो कन्धार नृत्य, मटकी नृत्य, लंडा जोडेरी  
नृत्य और टिपरो पायो नृत्य आदि ।

तलवार नृत्य - इस नृत्य में एक तलवार लेकर दोनों के स्तरों के  
अनुसार क्षणात्मक ढंग से तलवारों को घुमाते हुए युद्ध का दृश्य  
उपस्थित करते हैं । वृत्ताकार में खड़े हुए एक सहजा दो पंक्तियों  
में विभक्त होकर नाचते हुए आक्रमण के स्वर को दिखाते हैं । नृत्य  
करने वाले घोर रस पूर्ण गीत भी गाते हैं ।

अरे सब - सब सज्जा मार तलवार ।

कहाँ मैं तो पर तार ।

एक छोटे माँ तार गुदड़ी पार ।

एक लारे माँ पड़ो तम तार ।

हासो तार सिपाहो तार ।

लड़ी नाच - इस नृत्य में स्त्रियाँ गोलाकार लड़ियाँ बनाकर नाचती  
हैं । यह नृत्य तोज-र्योंहार के उत्सव पर होता है । कुंवारों  
कन्धारों के साथ अन्य टोळी की स्त्रियाँ इस नाच में भाग लेती हैं ।  
इसमें चार - चार के समूह बन जाते हैं । समूह बनने के पश्चात्  
नृत्य किया जाता है । इस उत्सव पर तोज र्योंहार के गीत गाये  
जाते हैं । गीत इस प्रकार है --

बाई ये तोज खोई हम देवोज वासु ।

देवोज वासु गंगा देवोज वासु ।

लड़ीम लड़ी कण्णो बाई देवोज वासु ।



देवोज वासू गंगा देवोज वासू ।

आज गाते लाल बाई हम देवोज वासू ।

देवोज वासू गंगा देवोज वासू ।

लाठीनृत्य - ठोल के या छप के स्वरों के अनुसार यह नृत्य किया जाता है । गुच्छ लाठियों को लेकर धरे में नाचते हैं । धीरे-धीरे गीत को गाते हुए नर्तक जोड़े में बंट जाते हैं । उनके परवात् लाठी को जोड़ रूपों में कुमाकर गुरु पर टूट पड़ते हैं ।

फर रा - रा - फर - रा - रा ।

लाठी फर - रा - रा ।

सम्पन्न तोह चौट हमारा ।

धाम चीह चौट हमारा ।

उपरेरो नृत्य - इस नृत्य में भी छप या नगारे की ताब पर टाँके की नर्तकीया झूम-झूम कर नृत्य करती हैं । यह नृत्य होली और तीज त्योहार के अवसर पर होता है । इस नृत्य का गीत इस प्रकार है --

नाच बाई नाच, ऊपरेरो नाच ।

काँके कौडी वालन उपरेरो नाच ।

ककड़ी पड़ी बाई गोदेना नाच ।

नाच बाई नाच, ऊपरेरा नाच ।

ठोड़ी नगारा नृत्य - इस नृत्य में केवल पाँच नर्तकीया भाग लेती हैं । यह नृत्य होली और तीज त्योहार के अवसर पर होता है । नर्तकीयों के सिर पर एक के उपर एक कलश पात्र रखे जाते हैं । नर्तकीया लकड़ी के पट्टों पर लड़ी होकर नृत्य का आरम्भ करती हैं । वे नर्तकीया सिर पर के कलश को गिरने से बचाते हुए गीत गाती



हुई नृत्य करती हैं । नृत्य करते समय स्त्रियाँ हस्त - संगीतन के साथ पट्टे बदलती हैं । इस नृत्य का जागोजन चाँदनी रात में होता है । इस उत्सव का गीत इस प्रकार है -

देखेमाँ मीरों ओरों ।

हमार मीर बोले ।

हम नाचारे भाषा तारे देखेमाँ ।

तारे देखेमाँ , गादी तारे देखेमाँ ।

मंजीरा नृत्य - यह निमाड़ में रहने वाले बनजारों का लोकप्रिय नृत्य है । नर्तक छेरे में छड़े हो जाते हैं । सभी नर्तकों के हाथों में लम्बी रंगीन पतली फुन्दीयों से अंकुश मंजीरों को जोड़ी होती है । बीच में गड़ा हुआ वादक नगाड़े को बजाता है और एक नर्तक गीत को गाने लगता है ।

टप - टपोयार - हमार मंजीरिया ।

नाच - नाचिया - हमार मंजीरिया ।

बाज - बाजिया - हमार मंजीरिया ।

बोल - बोसियार - हमार मंजीरिया ।

पीर नृत्य - इस नृत्य में तीन या चार स्त्रियाँ भाग लेती हैं ।

नगारा या ड्रम के ताल पर भाव भोगीमाओं के साथ इस नृत्य को करती हैं । यह नृत्य विविध त्योहारों के अवसर पर किया जाता है । इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

छक - छक सब्की पागडोर फूलिया ।

फण - फण बाजा हातेर खलिया ।

हमनाचा बाई पीर नाच बाज ।

हम नाचा बाई मस्तीमाँ बाज ।



### विवाह नृत्य

बनजारे विवाह के अवसर पर मस्तो में झूमकर गाते हैं और नाचते भी हैं। वह तर-चढ़ के सम्वंधी उत्साह में इतने तत्त्वीन हो जाते हैं कि उनके पांखल नाचने लगते हैं। टांडे की स्त्रियाँ मण्डप के नीचे बैठे तर-चढ़ को आशीर्वाद देती हुई, हाथ धुमा-धुमा कर नाचती हैं। नाचते समय टांझिया ॥ डूप बजाने वाला ॥ ताल के साथ डूप बजाता है। टांडे के गुरु भी नृत्य में सम्मिलित होते हैं। विवाह नृत्य के अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

चान्दीजी माँ चाँद बीरारोये ।

आज हमार लालीरो मंडिछे पर ।

लालीर मंडिछे पर - हमार बाईर मंडिछे पर ।

नादकैयाँ तारा चक्करोये ।

आज हार बाईर मंडिछे पर ।

बाईर मंडि छे पर, हमार बाईर मंडिछे पर ।

राधा नृत्य - स्त्रियाँ टांडे के मैदान में गोलाकार घेरा बनाकर आगे-आगे दो-दो को जोड़ियों में खड़ी हो जाती हैं। घेरे के बीच में से मिलाकर नर्तकियाँ नृत्य करती हैं। बीच-बीच में जवारा की टोकलियों को छेत्तियों पर रखकर भी वे नृत्य करती हैं। यह नृत्य तीज के अवसर पर किया जाता है। इस अवसर का गीत इस प्रकार है --

कसना - कसना कीया गो कसना ।

राधा दूँदरो तार वासु कसना ।



भूमाड़ी पड़ानी , राधा अड़बोनी ।  
दुखीनारे जौन, भंगवान कसना ।

### पनिहारिन नृत्य

टाँडि को स्त्रियाँ सिर पर टोकरों ॥ विशेष प्रकार का छड़ा ॥  
पनछट की ओर ठुमक-ठुमक कर जाती हैं । पनछट पर एक छेरे में  
छड़ी होकर पानी भरने का अभिनय करती हुई नाचती है । नाचते  
समय गीत भी गाती है । गीत इस प्रकार है --

ताइये वाली पाणी भरेना हम ।  
पाणी भरेना , त्तावडीर पाणी भरेना ।  
सौखल्य हमार स्वार जायताक छ ।  
जाज गंगायाड़ी जौन जाज देदा बासीस ।  
सौखल्य बाई म्म भूल हमारी ताटे ।

लंगड़ी - पायो नृत्य - इस नृत्य में टाँडे की युक्तियाँ एक क्षार  
में खड़ी हो जाती है, नर्तकियाँ ऊँ के चाल से पद गति साँछकर आगे  
बढ़ती है और आगे से पीछे हटती हुई नृत्य करती है । इस नृत्य  
में कई स्त्रियाँ भाग ले सकती है । विविध स्थानों के अक्सर पर  
इस नृत्य का आयोजन किया जाता है । इस नृत्य का गीत इस  
प्रकार है -

नाच बाई नाच लंगड़ी नाच ।  
दुबना - दू - दुबना - दू ।  
जोव टोली छोड़न नाच ।  
दुबना दू - दुबना दू ।  
केरी मारन नाच, दुबना दू - दुबना दू ।



### रास नृत्य -

इस नृत्य में टाँडे की स्त्रियाँ एक छेरे में लड़ी हो जाती है। रमणियों के बीच में एक युक्ती कृष्ण बनकर मुरली बजाती है। दूल्ह बजते ही रमणियों का छद्म झूमे लगता है। नर्तकियाँ कभी छरती की ओर झुक्तो है तो कभी मुँह की गगन की ओर करने लगती है। नर्तकियाँ या शरीर को घुमाती हुई कृष्ण की ओर हाँकती है। इस नृत्य के अक्सर पर राधा-कृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं। गीत इस प्रकार है -

छरती याडी हमेन दोनीच जनम ।  
दोनी जनम की दो हमेन मोट ।  
आसमान बापू दोनी हमेन आसोस ।  
दोनी हमेन आसोस बापू ।  
हातो जोडो रामो रामो करलये ।  
छरती याडीन ।  
हाता जोडो रामो रामो करलये ।  
आसमान बापून ।

कतार कम्पार नृत्य - दीवाली के अक्सर पर इस नृत्य का आयोजन होता है। टाँडे की अतिवाहित लड़कियों द्वारा यह नृत्य किया जाता है। लड़कियाँ हथेलियों में दीपक लेकर एक कतार में लड़ी हो जाती है। दीपावली के गीत गाती हुई नृत्य करती है। इस अक्सर का गीत इस प्रकार है --

कोट दाढ़ेरो दवाबी याडो, मेरा ।  
कोट दाढ़ेरो आमी याडो देवा आसोस ।  
कोट दाढ़ेरो हमारो याडो सोच रकाड़ु हमार भौरीन ।  
कोट दाढ़ेरो दवाबी याडो हमेन आस रकाड ।





**मटकी नृत्य** - टांडे को मस्किंग रंग-बिरंगे वस्त्रों से सुसज्जित होकर एक पंक्ति में खड़ी हो जाती हैं। वे मिर पर पोतल का टोछणी। पोतल का बड़ा बड़ा। रक्कर सुमहूर स्वरों से गीत गाती हैं। द्रोक्क या डूप के ताल के साथ मोरनियों की तरह नाचती है। इस नाचने में स्किंग टोछणों को धमा कर झुमती है। इस नृत्य का गीत इस प्रकार है -

तुड - तुड तुडकी टोछणी ।

झन - झन वाजो मार वाकंडी ।

छन-छन वाजा मार झूरा ।

तट-तट वाजा मार बोटी अतुलबा ।

धमको बोला बाई बकिया ।

**डंडा -जोडेरी नृत्य** -

इस नृत्य में केवल पुरुष भाग लेते हैं। इस नृत्य का आयोजन होली के अवसर पर होता है। पुरुष हाथों में दो-दो डंडे लेकर घेरा बना लेते हैं। डूप के साथ ताल मिलाकर डंडे कड़ाकर नृत्य करते हैं। इस नृत्य में झूगर से पूर्ण गीत गाये जाते हैं। इस अवसर पर नर्तक को भांग या मदिरा पिलाई जाती है। इस नृत्य के अवसर पर गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है --

जसो धरती पर रामन, लछमन तैलागे ।

उन्के बोच तैलारा सब दनिया ।

डूक वाकैदा, भाई - भाई ह ।

डूक वाकैदा, मतरैती ।

डूक वाकै दा, धमकैती ।



॥टिपरो॥

छिरी -पार्ह नृत्य - इस नृत्य में चार पुरुष हाथ में डंडा लेकर डफ की धाल के अनुसार उछल - उछलकर नृत्य करते हैं। नृत्य में डंडा की मिलाकर और बजाकर श्रृंगारिक गीत गाये जाते हैं। यह नृत्य होली के अवसर पर होता है। इस अवसर का गीत इस प्रकार है --

हसे डफे ताकैरी लाम्हे - लाम्हे जागिया  
खोर जागिया न देख लाम्हे भौसडी  
डफ चाले दा, भाई - भाई र  
डफ चालेदा, मारेती  
डफे चालेदा, ठमैलो

#### 8.12.3 लोक वाद्य

बनजारा लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों में ढोल डफ, नगारा, धौलक, बाँस, कसि की धाली, डाँड आदि प्रमुख वाद्य हैं। भजन गाते समय करताल, नगारा, ढाँडी और एक तार का प्रयोग करते हैं।

#### 8.1.3 चित्रकला

पुस्तक रखोहार तथा उत्सव के अवसर पर मैहदो लगाई जाती है। मैहदो के कई नमूने वाले चित्र बनाये जाते हैं। बनजारा समाज में लोक पुरने की प्रथा है। इसके अतिरिक्त पशुओं के पीठ पर पत्तों का छापा मारते हैं। पशुओं के सोंग को रंग या गेहूँ से रंग देते हैं। लोक कला में पशुओं का चित्रण मार्गनिक दृष्टि से किया गया है।

#### 8.1.3.1 कलीदाकारी कला

बनजारा स्त्रियाँ अपने कपड़ों को कलात्मक ढंग से कलीदाकारी



से तैयार करतो है । काच के टुकड़ों को, कोड़ियों को रंग-बिरंगे धागों से मोकर कपड़ों को सजातो है । फेटिया ॥ धाघरा ॥, काचकी ॥ लोकी ॥, पामडी ॥ चुनरो ॥, धूँटी ॥ धूँट ॥ की कशीदाकारी कला महत्वपूर्ण होती है ।

#### ४.१.३.२ गोदाना कृतियाँ

संसार को सभी जन-जातियों में गोदने को प्रथा है । बनजारा जाति में भी यह प्रथा है । बनजारा स्त्रियाँ और कम्यार निम्नलिखित चीजों पर यह गोदनाकर्म करतो है --

१. कम्यटी के दोनों और पाँच बिंदु
२. नाक के दाएँ बाजू पर एक बिंदु
३. ऊपरी पर एक बिन्दु
४. ठोड़ी पर पाँच बिन्दु
५. भुजा पर तीन रेखाएँ
६. कलाई पर केन
७. टाँगों को पिण्डलियों पर पैरु के चिन्ह
८. हाथ को तंगलियों पर और चन्दु , लई चन्दु आदि ।

द्वितीय खण्ड :

..

..

भाषा

તુલ્ય ગ્રંથાલોક :

..

....

.....

દર્શન વિચાર



..

..

..

..

### ध्वनि-विचार

भाषा की उप व्यवस्थाओं में ध्वनि व्यवस्था का ध्यान आधारभूत है । बनजारी बोली मूलतः हिन्दी की राजस्थानी बोलियों में से ही एक है । किन्तु बनजारों की यायावरी प्रकृति के कारण इस बोली का सम्पर्क हिन्दी क्षेत्र की अन्य बोलियों और हिन्दीतर क्षेत्र की अन्य भाषाओं के साथ हुआ है । फलतः इसकी संरचना में जागत तत्वों का सहज समावेश हुआ है । किन्तु इस बोली की ध्वनि व्यवस्था अपेक्षाकृत अप्रभावित रही । बनजारी की ध्वनि व्यवस्था का प्रस्तुत अध्याय में विचार किया गया है ।



0. पुस्तिका : .. .. .

इस अवस्था में बनजारी बोली की ध्वनियों, ध्वनिग्रामों, संस्वरों और ध्वनि संयोगों का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

## 1. बनजारी के ध्वनिग्राम :

### 1.1. स्वर ध्वनिग्राम

अ वा इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

स्वर दो वर्गों में विभक्त किये जा सकते हैं : दीर्घ तथा ह्रस्व । इन दोनों वर्गों के स्वरों की कुछ सामान्य विशेषताएँ हैं । उच्चारण के आरंभ में प्रयुक्त स्वरों के पूर्व स्वर यंत्रीय-स्पर्श [GLOTTAL CATCH] का स्वल्पाभास मिलता है । साथ ही मूर्धन्य व्यंजनों से पूर्व प्रयुक्त होने पर कुछ मूर्धन्य-भाव [RETROFLEXION] भी उत्पन्न होता है, जो स्वरों के उच्चारण के उत्तरार्ध के रूप में संलग्न रहता है । नासिक्य व्यंजनों, विशेषतः [म] तथा नासिक्य व्यंजन द्वित्वों से पूर्व और दो नासिक्य ध्वनियों के मध्यवर्ती होने पर स्वरों का कुछ नासिक्यीभवन [NASALIZATION] हो जाता है । यह नासिक्यीभवन सस्वनात्मक है जो ध्वनिग्रामात्मक अनुनासिक / ˙ / से दुर्जनित होता है । नीचे दीर्घ तथा ह्रस्व स्वरों के स्वल्पान्तर युग्म दिये गये हैं :

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| अ   | आ   | इ   | ई   | उ   | ऊ   | ए   | ऐ   | ओ   | औ   |
| अत  | आत  | इत  | ईत  | उत  | ऊत  | एत  | ऐत  | ओत  | औत  |
| अन  | आन  | इन  | ईन  | उन  | ऊन  | एन  | ऐन  | ओन  | औन  |
| अत् | आत् | इत् | ईत् | उत् | ऊत् | एत् | ऐत् | ओत् | औत् |
| अव  | आव  | इव  | ईव  | उव  | ऊव  | एव  | ऐव  | ओव  | औव  |
| अक  | आक  | इक  | ईक  | उक  | ऊक  | एक  | ऐक  | ओक  | औक  |



|     |         |             |         |        |                             |
|-----|---------|-------------|---------|--------|-----------------------------|
| ॥ब॥ | ॥सिंठी॥ | सीढी        | ॥ई॥     | ॥सीठी॥ | सिंताई की                   |
|     | ॥पित्त॥ | पित्त       |         | ॥पीत॥  | पीला                        |
|     | ॥नित्त॥ | प्रतिदिन    |         | ॥नीत॥  | पेशाब                       |
| ॥उ॥ | ॥मुई॥   | गिल्ली      | ॥मूई॥   |        | मरी हुई                     |
|     | ॥पुन॥   | पुल         | ॥पूल॥   |        | पुल                         |
|     | ॥पुच॥   | गीला        | ॥पुच॥   |        | पूछना                       |
|     | ॥चूँचा॥ | लूना        | ॥चूँचा॥ |        | कान पकड़कर<br>छींचने का छेन |
| ॥ए॥ | ॥ए या॥  | हे माँ      | ॥ऐ॥     | ॥ऐया॥  | आई माँ                      |
|     | ॥मेल॥   | मैला        |         | ॥मेल॥  | मील                         |
|     | ॥जेठ॥   | जेठ         |         | ॥जेठ॥  | ज्येष्ठ मास                 |
|     | ॥पेट॥   | पेट         |         | ॥पेट॥  | चुनरी                       |
| ॥ओ॥ |         |             | ॥ओ॥     |        |                             |
|     | ॥ओर॥    | उसका        | ॥ओर॥    |        | ओर                          |
|     | ॥मोठ॥   | मोड़        | ॥मोठी॥  |        | मोहवे का कूँ                |
|     | ॥कोड़ी॥ | कुठ रोगवाली | ॥कोठी॥  |        | कोठी                        |
|     | ॥गोर॥   | बनजारा      | ॥गौर॥   |        | ध्यान से                    |





### 1.1.1. संस्वनात्मक विवरण :

#### 1.1.1.1. ह्रस्व स्वर :

ह्रस्व स्वर तीन है /इ/, /ए/, /उ/, इनके संस्वनात्मक वैविध्य और उसके आधारों का विवरण नीचे प्रस्तुत किया गया है -

क- दीर्घता के आधार पर - इन ह्रस्व स्वरों को दो संस्वनात्मक कोटियाँ प्राप्त होती हैं - सामान्य दीर्घतायुक्त तथा क्षीण दीर्घतायुक्त । पहली कोटि को इस विवरण में किसी चिह्न विशेष से चिह्नित नहीं किया गया है । दूसरी दीर्घता - वाले संस्वनों को इस प्रकार लिखा गया है -

॥इ॥ ॥ए॥ ॥उ॥

ख- दोष के आधार पर - उक्त स्वर लघोष और जघोष - दोनों ही स्थों में प्राप्त होते हैं । लघोषता का आधार प्रयोग की व्यंजनात्मक परिस्थिति और बोलने की गति है ।

ग- अर्धस्वर - अर्धस्वर ॥ य ॥ ॥ व ॥ के स्वतन्त्र ध्वनिग्राम नहीं माना गया है । उनको क्रमशः ॥इ॥ तथा ॥उ॥ के संस्वनों के रूप में ही स्वीकार किया गया है । इसके दो कारण हैं - ध्वन्यात्मक तथा दूसरा पद वैज्ञानिक । ध्वनि-वैज्ञानिक दृष्टि से दोनों के प्रयोग की परिस्थितियों में बृहत् अंतर मिलता है ।



दूसरा कारण यह वैज्ञानिक विवरण की सरलता और सुविधा है। इस प्रकार दो ध्वनिग्रामों के सूची से बटा देना सुविधाजनक रहता है।

1.1.1.1.1.1. दुस्व स्वरों का संस्वनात्मक विवरण -

/ इ / - निम्नतर उच्च अग्र अगोलीकृत स्वर है।

= ॥ इ ॥ ॥ इ<sup>य</sup> ॥, ॥ य ॥

॥ इ ॥ अघोष व्यंजन के पश्चात् पदान्त प्रयुक्त होने पर यह अघोष संस्वर प्राप्त होता है -

जैसे -

|         |   |            |          |
|---------|---|------------|----------|
| / गति / | = | ॥ गूजतइ ॥  | कुछ नवों |
| / लाइ / | = | ॥ लूजाइ ॥  | से जाई   |
| / काइ / | = | ॥ कू जाइ ॥ | क्या     |
| / साइ / | = | ॥ सू जाइ ॥ | सत्य     |

॥ इ<sup>य</sup> ॥ इस संस्वन का प्रयोग व्यंजन तथा दीर्घ स्वरों के पूर्व होता है :  
जैसे -

/ हाइया / = ॥ हू जाइ य जा ॥ दुःख

॥ य ॥ -का प्रयोग -न, जो तथा दो दीर्घ स्वरों के बीच मिलता है।

जैसे - / माया / = ॥ मू जा य जा ॥ " माया "

/ अ / मध्य अगोलीकृत स्वर है।



॥ब॥ अपनी प्रकृत दीर्घता से युक्त इस संस्वन का प्रयोग पद के आरंभ में तथा पद के मध्य में होता है ।

जैसे -

/ अत् / = ॥ अत् अ ॥ चर  
/ अत्तरा / = ॥ अत्तरवा ॥ हतना  
/ अक्कल / = ॥ अक्कल्ल ॥ अक्कल

॥उ॥ निम्नतर - उच्च पक्ष गोलीकृत स्वर है ।

= ॥ उ ॥ ॥उ<sup>म</sup> ॥ ॥व ॥

= ॥उ॥ - अपनी प्रकृत दीर्घता से युक्त इस संस्वन का प्रयोग पद के आदि में अथवा पद के अंत में मिलता है ।

जैसे -

/ उगडी / = ॥ उगूह ॥ चरिक्कीन जोरत  
/ गउ / = ॥ गूउ ॥ गाय

= ॥ उ व ॥ - वृत्त-युक्त इस संस्वन का प्रयोग, व्यंजन तथा अगदीर्घ स्वरों के बीच में होता है । जैसे -

/ सुई / = ॥ सु उ<sup>म</sup> ई ॥ सुई

= ॥ व ॥ - का प्रयोग व्यंजन तथा / वा / के बीच में होता है जैसे -

/ कुवार / = ॥ कुवाँ रव ॥ कुवारा



## 1.112 दीर्घता पर आधारित संस्वन -

॥ ई ॥, ॥ ए ॥, ॥ ऐ ॥, ॥ ऊ ॥, ॥ ओ ॥ तथा ॥ औ ॥ दीर्घ स्वर है। इन स्वरों की दीर्घता में ध्वन्यात्मक परिस्थितिजन्य संस्वनात्मक वैविध्य प्राप्त होता है। ॥ ओ ॥ तथा ॥ ऐ ॥ के उच्चारण में स्वतंत्र वैविध्य मिलता है। कभी ये मूल स्वर के रूप में सुनाई देते हैं और कभी संयुक्त स्वर के रूप में ॥ अ उ ॥ ॥ अ इ ॥।

॥ ई ॥ = यह दीर्घतम संस्वन है। इसका प्रयोग ॥ इ ॥, ॥ अ ॥, ॥ उ ॥ अर्थात् इन पर आधारित अक्षरों से पूर्व होता है। जैसे

॥ ईडा ॥ = " अडा "

॥ ए ॥ = उच्चतर मध्य, अगु, अगोलीकृत स्वर है। इसका प्रयोग ह्रस्व स्वरों से अर्थात् अनेक रचित अक्षरों से पूर्व होता है।

जैसे -

॥ एक ॥ = ॥ एक ॥ " एक "

॥ एवडी ॥ = ॥ एवडई ॥ " एधर "

॥ एडी ॥ = ॥ एडई ॥

/ वा / - निम्न, मध्य अगोलीकृत स्वर है।

॥ वा ॥ = इस दीर्घतम स्वनग्राम का प्रयोग ह्रस्व स्वर तथा इन पर आधारित अक्षरों से पूर्व होता है। जैसे -

॥ अम्बा ॥ = ॥ अमम्बा ॥ " अम "

॥ वाट ॥ = ॥ वाट्वा ॥ " वावाज "

॥ वारसी ॥ = ॥ वारव्सी ॥ " दर्पण "



॥बामलो॥ = ॥बामूलई॥ "बमरो"

॥बादमी॥ = ॥बदलमूह॥ "बादमी"

॥ऊ॥ - उच्चतर पञ्च, गोलोक्त स्वर है ।

इस दीर्घतम संस्वन का प्रयोग द्रुस्व स्वरों या द्रुस्व स्वरों पर आधारित अक्षरों से पूर्व होता है -

जैसे -

/उट/ = ॥ उन्टु ॥ "उट"

/पूर/ = ॥ ए ऊ र उ ॥ "पूर्ण"

/कू/ = ॥ क इ ए उ ॥ "कूना"

/पूटो/ = ॥ ए इ ए ओ ॥ "पोट"

/सू/ = ॥ स इ इ उ ॥ "सुवर"

/ओ/ = ॥ उच्चतर मध्य पञ्च गोलोक्त स्वर है । /इ/ से कुछ अधिक दूर है ॥

/ओ/ = दीर्घतम संस्वन है । इसका प्रयोग द्रुस्व स्वरों या उनके बने अक्षरों से पूर्व होता है ।

जैसे -

/ओझा/ = ॥ ओ स उ इ वा ॥ "टोकरी"

/ओरी/ = ॥ ओ रु ई ॥ "बकरा काटना"

/ओर/ = ॥ ओ र उ ॥ "उसका"

/ओस/ = ॥ ओसु ॥ "श्वनम"

/ओरपो/ = ॥ ओ र उ प ओ ॥ "बारिश कम होना"



### 1.113 वृत्त पर आधारित संस्वन :

जब /ई/ तथा /ए/ अन्य स्वरों के पूर्व व प्रयुक्त होते हैं, तो संस्वनात्मक ध्वनि कुछ कुम्भाः [य] तथा [व] उत्पन्न होते हैं। इनको कुम्भाः /ई/ /र/ /ओ/ के उच्चारण का उत्तरांश ही माना गया है। इस प्रकार [यई] [वउ] [वओव] संस्वन प्राप्त होते हैं।

जैसे -

- /बाईय/ = [बा ई य ए] "बहन"
- /घोया/ = [घो ई य आ] "घो"
- /भीया/ = [भ ई य आ] "बड़ा भाई"
- /सुवा/ = [सू इ व आ] "सोधा"
- /सुवो/ = [सू इ व ओ] "बोरे सीने को बड़ो सुई"
- /बकुवा/ = [बू क उ व आ] "बकवाज"

[व] का एक स्थल और है जहाँ इसकी मृदुरता यद्यपि कम रहती है, फिर भी अस्तित्व अवश्य रहता है। /ओ/ का प्रयोग जब /आ/ से पूर्व होता है, तो [ओ व] संस्वन प्राप्त होता है।

जैसे -

- /धोया/ = [धू ओ व आ] "धोकर आओ"
- /सोया/ = [सू ओ व आ] "सोकर आओ"
- /बोया/ = [बू ओ व आ] "बगाकर आओ"
- /दोया/ = [दू ओ व आ] "दोकर आओ"
- /गोया/ = [गू ओ व आ] "गुमाकर आओ"



#### 1.114 नासिकीकरण-जन्य संस्वन :

{क} ध्वनिग्राभात्मक /' / से युक्त होने पर निम्नतर मध्य-अग्र-अगोलीकृत /ऐ/ तथा निम्नतर मध्य-पश्च-गोलीकृत /ओ/, निम्नतर स्थिति से कुछ ऊपर उठ जाते हैं । इन संस्वनों को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है - /ऐ/ तथा /ओ/

जैसे -

/लौग/ = { लू जां गू जा } "लौग"  
/पौया/ = { ऐं यू जा } "पौमा"

#### {ख} संस्वनात्मक नासिकीकरण -

1 { दो नासिक्य व्यन्जनों के बीच प्रयुक्त होने पर, दीर्घ स्वरों के साथ ङङ्गुवुर नासिकीकरण अव्य होता है । यह स्वर के सम्पूर्ण उच्चारण पर नहीं, उसके उत्तरार्ध पर रहता है ।

2 { उच्चारान्त या पदान्त नासिक्य व्यन्जन के पश्चात् आने वाले दीर्घस्वर भी संस्वनात्मक नासिकीकरण ग्रहण करता है ।

जैसे -

/मीना/ = { मू ई नू जा } "मीनीना"  
/नानी/ = { तू जा नू ई } "नानी"  
/पाणी/ = { पू जा नू ई } "पानी"



3। नासिक्य दीर्घ स्वरों के पूर्व प्रयुक्त होने पर भी उक्त नासिक्यीकरण अव्य होता है ।

जैसे -

/साई/ = । सु वा ई । "भना"

/धूवा/ = । धू व वा । "धूवा"

/वई/ = । व ई । "जंगना"

#### 1.1.1.5 अनुनासिक्य :

स्वर ध्वनि ग्रामों के पूर्ण उच्चारण पर स्थित पूर्ण मुहुर अनुनासिकता छाई रहती है । इसकी स्थिति ध्वनिग्रामात्मक है । इसको सिद्ध करने के लिए नीचे कुछ स्वन्यास्तर युग्म दिए जा रहे हैं :-

।ई।

।ई।

/कूडो/ "कड़वी"

/कूडो/ "लड़की"

/मूडो/ "वीटो"

/मूडो/ "सिट"

/दूडो/ "दूटो"

/दूडो/ "लूलो"

/धाजी/ "भाजी"

/भाजी/ "भजी"

।ए।

।ऐ।

/पेपरा/ "एक प्रकार का -  
जंगली फल"

/पेपरा/ "पेसड़ा"

/तेड़ा/ "टेड़ा"

/तेड़ा/ "धूक"





।आ।

/बाक/ "जंगली पोधा"

/बाट/ "बाठ"

/गाट/ "गाठ"

/वाट/ "रास्ता"

।वा।

/वाक/ "वाखि"

/वाटि/ "कूदामणि"

/गाटि/ "सिलाई"

/वाटि/ "घीसना"

।ऊ।

/उमर/ "वो-दूर"

।ई।

/उमर/ "उपर"

।उ।

/ऊरो/ "उठरवी है"

।ई।

/ऊरो/ "पीसरवी है"

दीर्घ अनुनासिक स्वर पद के आरम्भ, मध्य, तथा अन्त में आ सकते हैं - /वाँ/ का प्रयोग आरम्भ और अन्त में अन्य अनुनासिक दीर्घ व्यंजनों की अपेक्षा कम होता है ।

#### 1.1.1.6 स्वर संयोग :

बनजारा बोली में दो और तीन स्वरों का संयोग मिलता है । दो स्वरों का संयोग इस प्रकार है :-



|   | अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ |   |   |   |   |   | X |   |   |   |   |
| आ |   |   |   | X |   |   | X |   | X |   |
| इ |   | X |   |   |   |   |   |   |   |   |
| ई |   |   | X | X |   |   |   |   |   |   |
| उ |   |   | X | X |   |   |   |   |   |   |
| ऊ |   |   |   |   |   |   | X |   |   |   |
| ए |   |   |   |   |   |   |   |   | X |   |
| ऐ |   | X |   |   |   |   |   |   |   |   |
| ओ |   |   |   | X |   |   |   |   |   |   |
| औ |   |   |   |   | X |   |   |   |   |   |

क - दो स्वरों का संयोग :

|       |         |             |
|-------|---------|-------------|
| /अ उ/ | /अ उ ओ/ | "इतनी"      |
| /आ ई/ | /आ ई/   | "सीता माता" |
| /आ ए/ | /आ ए/   | "आये है"    |
| /आ ओ/ | /आ ओ/   | "आ ओ"       |
| /इ आ/ | /इ आ ओ/ | "मा"        |
| /ई ई/ | /ई ई उ/ | "यही"       |
| /उ इ/ | /सुइ/   | "सुई"       |



|       |         |           |
|-------|---------|-----------|
| /उ ई/ | /मुह/   | "मरी हुई" |
| /इ ऐ/ | /ऊ ऐ/   | "हाय"     |
| /ए ओ/ | /ए ओ ओ/ | "धर"      |
| /ओ ई/ | /ओ ई/   | "अरे"     |
| /ओ उ/ | /ओउडा   | "कतना"    |

छ - तीन स्वरों का संयोग :

|         |          |            |
|---------|----------|------------|
| /आ इ ए/ | /आ इ ए/  | "आई"       |
| /आ इ उ/ | /आ इ उ/  | "वह आई"    |
| /आ इ आ/ | /आ इ आ/  | "आयेगे"    |
| /ई इ ए/ | /पी इ ए/ | "पीओ"      |
| /ई इ आ/ | /पी इ आ/ | "पीले"     |
| /ई इ उ/ | /पी इ उ/ | "पीयेगे"   |
| /उ इ ए/ | /मू इ ए/ | "मे पीछे"  |
| /ऊ इ उ/ | /मूइउ/   | "वह पीछे - |
| /इ इ आ/ | /लू इ आ/ | "पीछेडाली" |
| /ओ इ ए/ | /सो इ ए/ | "सो गई"    |
| /ओ इ उ/ | /सो इ उ/ | "वह सो गई" |
| /ओ ई ओ/ | /सो यो/  | "सो गया"   |
| /ओ इ उ/ | /सो या/  | "सोयेगे"   |

...



अप्यन्तर्ध्वनिग्राम को सिद्ध करने के लिए बंजारी भाषा के स्वस्थान्तर यन्त्र नीचे दिये गये हैं :-

॥क॥

/कोटा/ "जानवर बाँधने की जगह"  
/काड़/ "निकालना"  
/कोर/ "लकीर"  
/कान/ "कान"

॥ख॥

/खोटा/ "खोटा"  
/खाड़/ "खड़ा"  
/खोर/ "खोर"  
/खान/ "खाकर"

॥ग॥

/गरली/ "गलहरी"  
/गोड़ी/ "घुना"  
/गोट/ "खिवाह का एक अनुष्ठान"  
/गी/ "गई"

॥घ॥

/घरली/ "घर के पास ली"  
/घोड़ी/ "घोड़ी"  
/घोट/ "पीसना"  
/घो/ "घी"

॥ट॥

/लट/ "लैला"  
/पोटी/ "चिड़िया"  
/पेट/ "पैट"  
/कट/ "कटना"

॥ड॥

/लड/ "लड़ना"  
/पीड़ी/ "पैला"  
/पेड़/ "लोटाना"  
/कड़/ "कमर"

॥फ॥

/गटला/ "पहाड़"

॥ब॥

/गजला/ "एक प्रकार की जड़ जिसे उबाल कर"



| / कौटिया/ | "एक प्रकार का जंगली फल | /कौटिया/ | "पुरुष का नाम"               |
|-----------|------------------------|----------|------------------------------|
| / टाट /   | " कोढ़ "               | /ठाट/    | " रोब "                      |
| / टकरी /  | " रख रखो हे "          | /ऊकरी/   | "बनजारों की एक देवी          |
| /उ/       |                        | /ट/      |                              |
| /गड़/     | "गाड़ना"               | /गड़/    | "किला"                       |
| / डाढी/   | "ठुड़डी"               | /डाढी /  | भाट जाति का व्यक्ति          |
| /डाव/     | "बजुरग "               | / डाव /  | "बिदाई या मिलन के समय रोना " |
| / डाकण /  | " जादूवाली             | / दाकण / | " एकड़न "                    |
| /व/       |                        | /व/      |                              |
| /तीन/     | "तीत"                  | /दोन/    | "दोको"                       |
| /ताना/    | "डोटा "                | /दाना/   | "दाना"                       |
| /मतरा/    | "नहीं/                 | /मदरा/   | "नाल कपड़ा"                  |
| /सात/     | "सात"                  | /साद/    | "सम्पासो"                    |
| /व/       |                        | /व/      |                              |
| /सरी/     | "तेरना"                | /थरी/    | "मलाई "                      |
| / तम /    | "तुम"                  | /थम/     | "रुक "                       |
| / तन/     | "शरीर"                 | /थन/     | "स्तन"                       |
| /तोता/    | "तोता"                 | /थोता/   | " धोधा "                     |



/द/

/दास/      "भक्त"  
/दरसन/      "दर्शन"  
/दोरा/      "धागा"  
/दोई/      "दोनों"

/ध/

/धास/      "भाग"  
/धरसन/      "धुस्तर"  
/धोरा/      "धोता"  
/धोई/      "धो डालो"

/प/

/परी/      "परी"  
/पड़नो/      "पड़ना"  
/पोटी/      "उदर का भाग"  
/पाली/      "बार सेर"

/ब/

/बरो/      "विमुक्त"  
बड़नो/      "जागे कलना"  
/बोटी/      "मांस"  
/बाली /      "कान की बाली"

/फ/

/फाड़नो/      "उठाना"  
/फाक/      "पवित्र"  
/फीका/      "रिश्तु"  
/फाट/      "रेशम"

/फ/

/फाड़नो/      "फाड़ना"  
/ फाक/      "होली में रंग छेना"  
/फेका/      "फेका"  
/फाट/      "फटी हुई"

/ब/

/बारी/      "बारी"  
/बाग/      "बगीचा"  
/बाट/      "तौलने का ढट"  
/बाडो/      "तिरछा देखनेवाला"

/भ/

/भारी/      "वजन"  
/भाग/      "भाग"  
/भाट/      "भाट जाति का व्यक्ति"  
/भाड़ो/      "किराया"



|          |                         |          |                       |
|----------|-------------------------|----------|-----------------------|
| /फ/      |                         | /भ/      |                       |
| /फ ड/    | "फल "                   | /भड/     | "मिलो "               |
| /फराणो/  | "फिरना "                | /भरणो/   | "भरना "               |
| /फरक/    | "ढोली में<br>रंग छेना " | /भाग/    | "भाग "                |
| /ध/      |                         | /घ/      |                       |
| /धान/    | "धान "                  | /धान/    | "पका हुआ चावल "       |
| /धन/     | "स्तन "                 | /धन/     | "धन "                 |
| /धूक/    | "धूक "                  | /धूक/    | "लोहार की<br>धोक्नी " |
| /धट/     | "कम्पन "                | /घर/     | " दे दो "             |
| /ढ/      |                         | /ढ/      |                       |
| /ढाल/    | "छाली "                 | /ढाल/    | "ढाल "                |
| /ढोर/    | "घुष "                  | /ढोर/    | "पशु "                |
| /ढाकणी/  | "पडी की हड्डी "         | /ढाकणी/  | "ढक्कन "              |
| /ढक्को/  | "घुपके से "             | /ढक्को/  | "ध्वनि के साथ "       |
| /ब/      |                         | /घ/      |                       |
| /बड/     | "बास "                  | /घड/     | "बनाना "              |
| /बोडी/   | "बटनी "                 | /बोडी/   | "बोडी "               |
| /बोड/    | "दाग "                  | / बोड /  | "बोडे "               |
| /बोब्या/ | "बोलकर लड़को "          | /बोब्या/ | "बाँध "               |



/घ/

/च/

/घणा/

"घना"

/जणा/

"लोग"

/घोर/

"घोर"

/जोर/

"ताकत"

/घोड़ी/

"घोड़ी"

/जोड़ी/

"जोड़ी"

/घरा/

"घराजो"

/जरा/

"धोड़ा"

/ख/

/ख/

/खाल/

"खलन"

/खाल/

"पेड़ की खाल"

/खटी/

"खोमकुण्ड"

/खटी/

"छुरी"

/खणा/

"बना"

/खणा/

"गोबर की उपली"

/खाटिया/

"खाटकर बाजो"

/खाटिया/

"एक प्रकार की चुनरी"

/ख/

/ख/

/खल/

"पानी"

/खल/

"पकड़"

/खारी/

"जा रही"

/खारी/

"लोटा"

/खट/

"सन्ध्यासी के केश"

/खट/

"जन्दी"

/खड़/

"बड़"

/खड़/

"बड़ना"

/ख/

/ख/

/खाल/

"पेड़ की खाल"

/खाल/

"पकड़"

/खोल/

"छिलना"

/खोल/

"ताड़ी के पेड़ों  
का बगीचा"

/खसको/

"तुरन्त"

/खसको/

"भयानक"





/म/

/मानी/ "मान गई"  
/माता/ "मा"  
/मासी/ "मासी"  
/मातो/ "सिर"

/न/

/नानी/ "नानी"  
/नाता/ "नाता"  
/नासी/ "छराब"  
/नातो/ "रिस्ता"

/र/

/राडी/ "भाऊलो"  
/रोई/ "रक्त"  
/पाली/ "चार सेर"  
/रपटी/ "सीट"

/र/

/राडी/ "रस्सी"  
/रोई/ "रोई"  
/पारी/ "पारा"  
/रपटी/ "फिसल गई"

/ह/

/हाडो/ "शरीरी"  
/हात/ "हाथ"  
/हक/ "अछार"  
/हटो/ "हटो"

/स/

/साडो/ "साड़ी"  
/सात/ "सात"  
/सक/ "सुझ"  
/सरी/ "सत्यवान"



## 1.21. व्यंजन ध्वनिग्राम तथा उनके संस्वन -

॥क॥ स्पर्श व्यंजन :

/प/ - द्वयोच्छ्रय, अशोष, अस्पृष्टाण, स्पर्श व्यंजन । इसके रेचन पर महाप्राण का अस्यन्व रंजन बड़े रहता है ।

= ॥ प ॥, ॥प०॥, ॥प०॥

= ॥प॥ - अपने स्वाभाविक रेचन और स्पष्ट से युक्त यह - स्वनग्राम पद के आरम्भ में प्रयुक्त होता है ।

जैसे - /पीला/ "लज्जा"

/पाट/ "पार"

/पातलो/ "पत्ला"

= ॥प०॥ - अन्त्य अशोष ॥अ॥ से पूर्व प्रयुक्त होने पर अन्त्य ह्रस्व स्वरों तथा /अ/ के पूर्व अन्त्य प्रयुक्त होने से, /प/ अधिक वातित होता है ॥प०॥ जैसे -

॥म आ प अ॥ /मपि/ "नाप"

॥स आ प अ॥ /सपि/ "सपि"

= ॥प०॥ - यह /प/ का अनेक संस्वन है । जोष्ठ दृढ़ता से बन्द होते हैं, पर रेचन नहीं होता । इसका प्रयोग उच्चारान्त होता है जैसे

/चप/ = ॥चअप॥ "चप"



- इयोष्ठ्य, अघोष, महाप्राण, स्पर्श व्यंजन ।

= ॥ फ ॥ ॥ फ ॥

= स्वाभाविक महाप्राणत्व से युक्त है और जोष्ठ स्वाभाविक दृढ़ता से बन्द होते हैं । इसका प्रयोग पद के आरम्भ में होता है । जैसे -

/ फन / = ॥ फ न ठ ॥ \* फन

= ॥ फन ॥ - स्वर मध्यवर्ती होने पर / फ / में दो विकार उत्पन्न हो जाते हैं, जोष्ठ पूर्ण होकर बन्द नहीं होते, फनतः कुछ छर्का श्रव्य होता है । दूसरे महाप्राणत्व की मात्रा कम हो जाती है अथवा यह अघोष महाप्राणत्व से युक्त होता है ।

जैसे - ॥ गो फ न ॥ ॥ ग ओ फ न ण ख ॥ \* किसान के द्वारा  
चिड़िया उड़ाने की रस्सी से लगी एक गिलोम

/ तोफ / ॥ त ओ फ ख ॥ \* तोष \*

/ व / - इयोष्ठ्य, सघोष, अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन है । यह / व / की अपेक्षा शिथिल है । इसका स्फोट या रेचन भू / व / के समान महाप्राण रिक्त नहीं है ।

= ॥ व ॥ ॥ व ॥

= ॥ व ॥ पद के आरम्भ में, स्वर मध्यवर्ती होने पर जोष्ठ दृढ़ता से स्पर्श की स्थिति में रहते हैं । इन स्थितियों में / व / अपने स्वाभाविक रूप में रहता है । जैसे -

/ वाती / = ॥ व आ त व ॥ \* बत्ती \*

/ कुबड़ी / = ॥ क ठ व ठ ओ ॥ \* कुबड़ा \*

/ लाम्बा / = ॥ ल आ म् व ओ ॥ \* लम्बा \*



- **॥ व ॥** उमर के स्थितियों के अतिरिक्त स्वर मध्यवर्ती होने पर  
/ व / अपने हल्कीकृत, छर्जनयुक्त संस्वन **॥ व ॥** के स्वर में रहता है ।  
जैसे -

/ सवर / = **॥ स व र व ॥** " बदारी "   
/ जाव / = **॥ जा व व ॥** " मान "

/ भ / दृयोच्छ्रय, सद्योष, महाप्राण स्पर्श व्यंजन है ।

= **॥ भ ॥**, **॥ भु ॥**

- = **॥ भु ॥** का प्रयोग पद के प्रारंभ में तथा / व / के पश्चात् होता है,  
जब कि जोड़ठ दृढ़ता के साथ बन्द होकर स्पृष्ट रहते हैं ।  
इसका महाप्राणत्व सद्योष ओर दृढ़ होता है ।  
जैसे -

/ भूत / = **॥ भ ऊ त व ॥** " भूत "   
/ जीभ जीभ / = **॥ ज ई भ व ॥** " जिह्वा "

- = **॥ भु ॥** अन्य परिस्थितियों में स्पर्श पूर्ण नहीं होता । फलतः ऊष्मी  
भवन तथा छर्जन दृश्य होता है, पर इसकी मात्रा **॥ व ॥** की अपेक्षा कम  
रहती है ।

जैसे - / गोभी / = **॥ ग् ओ भ ई ॥** " गोभी "

इसका महाप्राणत्व शि धिल होता हुआ अद्योषत्व सा हो जाता है ।

- / त / यह जिह्वानोकीय, दन्त्य, अद्योष, अल्पप्राण व्यंजन है । इसका  
रचन भी कुछ महाप्राण रजित है । जैसा कि उमर देखा जा चुका  
है, पद के आदि में प्रयुक्त होने पर इसका तनाव, स्वर मध्यवर्ती  
स्थिति से अधिक होता है ।

= **॥ त ॥**, **॥ त ॥**, **॥ त ॥**



- = । त । यह / त / का अग्र दन्तीय संस्वन है । इसके उच्चारण में जीभ ऊपर के दाँतों की नोक का इस प्रकार स्पर्श करती है कि कुछ भाग उससे जागे भी निकल जाता है । इस स्थिति में रहने के कारण जीभ दाँतों के पृष्ठ भाग को पूर्णतः आवृत नहीं करती । इस संस्वन का प्रयोग स्वर मध्यवर्ती / त् / के दिव्य में तथा / ध / के संयुक्त होने पर होता है । जैसे -

/ पत्तो / = । प त त्त जो / " पत्ता "   
 / कात्तो / = । क ता त्त जो । " कत्ता "

- = । त । यह / त / का पृष्ठदन्त्य या पृष्ठमुख संस्वन है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक दाँतों के पृष्ठभाग को पूर्णतः आवृत नहीं करती ही है, मसूठों के कुछ भाग पर भी जीभ की नोक का दाबव अनुभूत किया जा सकता है । इन संस्वन के प्रयोग स्थितियाँ इस प्रकार हैं -

|        |  |   |  |       |
|--------|--|---|--|-------|
| / ता / |  | - |  | / उ / |
| / ता / |  |   |  | / इ / |
| / ता / |  |   |  | / औ / |
|        |  |   |  | / आ / |

- जैसे - / तात्तु / = । त ता त्त उ । " तुम ताकर "   
 / तात्ति / = । त ता त्त इ । " शान्ति "   
 / मात्त / । म ता त्त अ । " मृत्यु "   
 / कोत्ति = । क ता त्त इ । " नहीं "



॥ व ॥ अपने सामान्य रूप में ॥ त ॥ ऊट की स्थितियों से भिन्न स्थितियों में प्रयुक्त होता है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक सामान्य जल से मसूड़ों से ऊपर के दातों की नोकों तक दातों के पृष्ठभाष को ढकती धुई स्पर्श करती है । जैसे -

/ तलावडी / = ॥ त ल आ व ड ई ॥ " तालाव "

/ तेर / = ॥ त र ड ॥ " रथ "

/ द / यह जिह्वा नोकीय दन्त्य ॥ APICO DENTAL ॥ लघोच, अल्पगुण स्पर्श व्यञ्जन है । इसका समस्त विवरण तथा संस्वनात्मक वैविध्य ॥ तु ॥ के समान है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

= ॥ द ॥ ॥ द ॥ ॥ द ॥

= ॥ द ॥ अगुदन्तीय संस्वन है : प्रयोग स्थितियाँ ॥ ॥ के समान हैं जैसे -

/ गद्दा / = ॥ ग द द आ ॥ " गद्धा "

/ लाद्दा / = ॥ ल आ द द आ ॥ " लाददी "

= ॥ द ॥ पश्च दन्त्य संस्वन है । इसकी प्रयोग स्थितियाँ भी ॥ तु ॥ के समान हैं । जैसे -

/ लादु / = ॥ ल आ द उ ॥ " लाकर दू "

/ चादि / = ॥ च आ द इ ॥ " चादी "

/ छादी / = ॥ छ आ द ओ ॥ " छाया "

/ पादी / = ॥ प आ, द ओ ॥ " पादा "

/ कान्दा / = ॥ क आ न, द आ ॥ " कान्दा "

/ चान्दा / = ॥ च आ च, द आ ॥ " चादि "

/ बादा / = ॥ ब आ द आ ॥ " कण्ठी "



॥ द ॥ का प्रयोग अव्यय होता है । जैसे -

/ दब / = ॥ द ब ब ब ॥ " दबना "

/ देस / = ॥ द ए स ब ॥ " देस "

/ ध / और / छ / क्रमशः अघोष और सघोष जिह्वात्मकीय दन्त्य महाप्राण स्पर्श ध्वनियाँ हैं । / त / एवं / द / की भाँति अग्र, पश्च तथा सामान्य संस्वन हैं । पर / त् /, / द् / के संस्वनों से इन संस्वनों की प्रयोग स्थितियाँ कुछ भिन्न हैं । / ध / और / ध् / के अग्रदन्त्य संस्वनों ॥ ध ॥, ॥ छ ॥ का प्रयोग / त् /, / द् / तथा / न् / के पश्चात् / वा / के पूर्व होता है । पर जैसा कि पहले देखा जा चुका है, / न् / के पश्चात् / त /, / द् / के पश्च-दन्त्य संस्वनों ॥ त् ॥, ॥ द् ॥ द का प्रयोग होता है, न कि अग्र संस्वनों का । पश्च संस्वनों का प्रयोग / वा /, / वौ / के पश्चात् / वा /, / उ / के पूर्व होता है ।

|        |                                                                                                                                                                                    |        |
|--------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| / वा / | <div style="position: absolute; left: 0; top: -10px; bottom: -10px; width: 10px;"></div> <div style="position: absolute; right: 0; top: -10px; bottom: -10px; width: 10px;"></div> | / वा / |
| / वौ / |                                                                                                                                                                                    | / उ /  |

अव्यय सामान्य संस्वन प्रयुक्त होते हैं । इन संस्वनों की प्रयोग स्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये गये हैं -

= ॥ ध ॥ - ॥ ध् ॥ ॥ ध् ॥ तथा ॥, ध ॥

= ॥ ध ॥ का प्रयोग / त् /, तथा / न् / के पश्चात् / वा / के पूर्व होता है। जैसे -

/ सत्था / = ॥ स् त ध् वा ॥ " कपड़े "   
 / कम्था / = ॥ क् त् न् ध् वा ॥ " लोह "

= / क्ष / का प्रयोग / वा /, / वौ / - / वा /, / उ / परिस्थिति में होता है। जैसे -



/धीधा/ = ॥ धूँ खौ ध डा ॥ "धेना"

/धीधु/ = ॥ धूँ खौ ध डू ॥ "धीधा"

= ॥ ध ॥ का प्रयोग अव्यय होता है।

जैसे -

/धीतो/ = ॥ धूँ खौ तू खौ ॥ "धीता"

/दाध/ = ॥ दूँ जा ध व ॥ "दाध"

/घ/ = ॥ घ ॥ ॥ घ ॥ ॥ घ ॥

= ॥ धूँ ॥ का प्रयोग /द/ तथा /तू/ के पश्चात्, /वा/ के पूर्व होता है। जैसे -

/जिद्ध/ = ॥ दूँ द द ध उ ॥ "जिद्ध"

/कान्धो/ = ॥ क जा न ध खौ ॥ "कान्धा"

= ॥ धूँ ॥ का प्रयोग ॥ जा ॥, /खौ/ - /खौ/, /उ/ परित्स्थितियों में होता है।

जैसे -

/सौधा/ = ॥ स खौ, ध डा ॥ "सुगन्धवाला", "सौधा"

/खौधो/ = ॥ द खौ ध खौ ॥ "रोकर धोखो"

/खौधु/ = ॥ दूँ खौ ध ठ ॥ "मोद"

/बाधु/ = ॥ दूँ जा ध उ ॥ "बाधिता ई"





जिं और जी के बीच । छ । का प्रयोग नहीं मिलता । साथ ही / जिं / और / जा / के बीच । छ । प्रयोग का उदाहरण नहीं मिलता ।

= । छ । का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे -

/ छि / = । छ छ । " छुट्टी "

/ दुधारी / = । द उ छ आ र ई । " दूध देनेवाली "

/ तिथी / = । छ छ छ छ । " ताड़ी "

/ ट / यह जिह्वानोकीय, पञ्चवर्त्य, अघोष, अन्यप्राण स्वर्य ध्वनि है । APICOPOSTAL <sup>LARYNGEAL</sup> इस स्प्रेट या रेचन महाप्राण रजित होता है । पद के आरम्भ में यह विशेष अतः TENSE । प्रव्य होता है । स्वर मध्यवर्ती होने पर कुछ शिथिल हो जाता है । अन्यत्र अघोष स्वर के पूर्व यह कुछ अधिक कठोर सुन पड़ता है । इसके तीन संस्वन हैं -

= । ट ।, । ट ।, । ट ।

। ट । इस संस्वन के उच्चारण में जीभ की नोक उमर के दान्तों के मूल संलग्न अग्रवर्त्य का स्पर्श करती है । अतः इसे अग्रीभूत । संस्वन कहना चाहिए । इसका प्रयोग / ट्ट / के पश्चात् होता है । जैसे -

= / कस्टी / = । क अ ट्ट ई । " मेहनती "



॥ ट ॥ यह परचीभूत ॥ BACKED ॥ संस्वन है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक ऊपर की ओर मुड़ती है और प्रायः मूढ़ा के अग्र भाग का स्पर्श करती है । अतः इसे मूढ़न्म्य संस्वन कहना उचित होगा । इसका प्रयोग पद के आरम्भ में ॥ डा ॥ के पूर्व, अनुनासिक स्वरों और / ण / के परचात् तथा द्वित्व होने पर होता है ।

- जैसे - / कटि / = ॥ क डाट डा ॥ " कटि "
- / वाट / = ॥ व डाट व ॥ " कुट्टा "
- / छाटी / = ॥ छ डाट जो ॥ " भागी "
- / गटि / = ॥ ग डाट ग ॥ " गाठ "
- / बाटी / = ॥ ब डाट ब ॥ " एक गाली "
- / बाटि / = ॥ ब डाट उ ॥ " एक गाली "
- / वाटे / = ॥ व डाट ऐ ॥ " कूट "
- / खटा / = ॥ ख डाट डा ॥ " ख खटा "
- / छे / = ॥ छ डाट छ ॥ " बिना पत्तों का सूजा पैठ "
- / छोट / = ॥ छ डाट छ ॥ " एक प्रकार का रंगीन कपडा "
- / टूटी / = ॥ टूटा, टूटी ॥ " औरत जिसका हाथ टूटा हो "
- / छेटी / = ॥ छ डाट डा ॥ " छेटी "
- / बाटी / = ॥ बा डाट डा ॥ " बेगी की रस्ती "

॥ ट ॥ - यह ॥ ट ॥ का सामान्य रूप है । इसका प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे -

- / टोटी / = ॥ ट डाट डा ॥ " लोहे की टोकरी "
- / टोपली / = ॥ ट डाट प डाट डा ॥ " पैगो में पहनने का गहना "



॥ ठ ॥ - यह जिह्वालोकीय पश्चवत्स्य अक्षीय अल्पप्राण स्पर्श है । इसके दो प्रमुख संस्वन हैं । एक पश्चोभूत मूर्धन्य ॥ ठ ॥ जिसके उच्चारण में जीभ की नोक पीछे की मुड़ी रहती है तथा एक पश्च-धत्स्य संस्वन जिसके उच्चारण में जीभ मुड़ती नहीं है ॥ ठ ॥

॥ ठ ॥ का प्रयोग नासिक्य स्वरों के पश्चात् होता है

जैसे - ग्राठ / = ॥ ग्रा.ठ.कु ॥ " गाठ "  
 / साठा / = ॥ स.ठा.वा ॥ " सँठ "  
 / सूठ / = ॥ स.ई.ठ.कु ॥ " सौठ "

॥ द ॥ का प्रयोग अन्यत्र होता है :

जैसे - / ठीक / = ॥ ठ.ई.क.कु ॥ " ठीक "  
 / जठाणी / = ॥ ज.ठ.व.ण.ई ॥ " जेठानी "

॥ द ॥ - यह जिह्वालोकीय पश्चवत्स्य, अक्षीय, अल्पप्राण स्पर्श है । इसके प्रमुख तीन संस्वन हैं - पहला, पश्चोभूत मूर्धन्य पश्चवत्स्य स्पर्श, दूसरी सीधी जिह्वा नोक के साथ सामान्य पश्चवत्स्य स्पर्श, तथा तीसरा, उत्क्षिप्त - ॥ ठ ॥ ॥ ठ ॥ ॥ ठ ॥ उत्क्षिप्त ॥ ॥ ठ ॥ को इसका संस्वन मानना ही ठीक है । ॥ द ॥ का प्रयोग ॥ ण ॥ के पश्चात् होता है ।

जैसे - / कूठ / = ॥ क.व.ण.ठ.वा ॥ जनजारेतर लठका  
 / कँठा / = ॥ ई.ण.ठ.वा ॥ " कण्ठा "  
 / कण्ठा / = ॥ क.ई.ण.ठ.वा ॥ " मासि-वैश्या "  
 / गण्ठा / = ॥ ग.ई.ण.ठ.वा ॥ " पैसे "  
 / ठाण्डी / = ॥ ठ.वा.ण.ठ.ई ॥  
 यह प्रयोग केवल पद के मध्य में होता है ।



॥ ड ॥ का प्रयोग आरम्भ में द्वित्य स्थ में तथा / ड / के पूर्व होता है ।

जैसे -

/ डी / = ॥ ड अ ल ई ॥ " डोटी "

/ लड्डु / = ॥ ल अ ड ड डू ॥ " लड्डु "

/ लड्डु / = ॥ ल अ ड ड ड ॥ " मूर्छा "

इस संस्वन का प्रयोग पद के आरम्भ में तथा पद के मध्य में द्वित्य, संयुक्त या कलाघात से युक्त होने पर ही हो सकता है ।

॥ ड ॥ का प्रयोग ॥ ड ॥ या ॥ ड ॥ को प्रयोग स्थितियों में कभी नहीं होता । अर्थात् इसका प्रयोग केवल पद के मध्य या अन्त में ही होता है । मध्य में प्रयुक्त होने पर यह कलाघात युक्त कभी नहीं हो सकता ।

जैसे :

/ लड्ड / = ॥ ल अ ड ड ॥ " लड्ड "

/ रड्ड / = ॥ र अ ड ड ॥ " रड्डा "

/ लड्डो / = ॥ ल अ ड ड ई ॥ " लड्डो "

/ लड्ड / = ॥ ल अ ड ड ॥ " लड्डा "

/ ड / - जिह्वानोकीय पञ्चवर्त्य, सघोष महाप्राण स्पर्श ध्वनि है । इसके

दो प्रमुख संस्वन हैं - एक सामान्य ॥ ड ॥ तथा दूसरा -

उत्क्रांति ॥ ड ॥ इसके प्रयोग स्थितियाँ इस प्रकार हैं -

॥ ड ॥ का प्रयोग पद के आरम्भ में, / ड / के पश्चात् तथा कलाघात युक्त होने पर पद की मध्य में होता है ।

जैसे - / डाल / = ॥ ड अ ल अ ॥ " डाल "



/ टोर / = ॥ ट ओ र ॥ " पशु "

/ डेगा / = ॥ ड ए ड ड ड ग वा ॥ " डेगा "

॥ द ॥ का प्रयोग पद के मध्य में क्लृप्ताघात रहित रूप में होता है ।

जैसे -

/ डूओ / = ॥ ड ड ड ओ ॥ " डूडा "

/ क / जिह्वा पश्च - कंठस्थ  $\text{[DORSORELAD]}$  अघोष, जल्पप्राण, स्पर्श ध्वनि है । इसका स्प्रेट कुछ महाप्राण रजित रहता है । अघोष स्वरों के पूर्व, अन्त में प्रयुक्त होने पर महाप्राणत्व की मात्रा कुछ खट जाती है । इस संस्वनात्मक वैविध्य के अतिरिक्त दो संस्वन और हैं -- पद के आरम्भ में प्रयुक्त होने पर यह अधिक वातत रहता है और ऊपर मध्यवर्ती होने पर तनाव कुछ कम हो जाता है । इनके अतिरिक्त और कोई वैविध्य प्राप्त नहीं होता । इस प्रकार ॥ क ॥ सामान्य महाप्राण स्प्रेटवाला, ॥ क ॥ क्षिब्ध महाप्राण स्प्रेटयुक्त, ये दो संस्वन हो सकते हैं ---

॥ क ॥ - का यह पद के आरम्भ में होता है ।

जैसे -

/ कायो / = ॥ क वा य ओ ॥ " कया "

/ काल / = ॥ क् वा ल् वा ॥ " कल "

यह अतल होता है ।

॥ क\* ॥ - का प्रयोग पद के अन्त में अघोष स्वरों से पूर्व होता है ।

जैसे -

/ ताकली / = ॥ त वा क ल् ई ॥ " तौली पर का एक वा "

/ ताकडी / = ॥ त वा क ड ई ॥ " तौली की डडी "



/ फाँक / = ॥ फ. आँ क अ ॥ "मिर्झ जलने की वृ "

॥ छ / - " जिह्वापरच कंठ्य, अघोष, महाप्राण स्पर्शध्वनि है । पद के आरम्भ स्वर मध्यवर्ती तथा अन्त में इसका प्रयोग होता है । अन्त दोष अथवा अघोष व्यंजनों से पूर्व उसका प्रयोग होता है ।

जैसे :

/ खरो / = ॥ ख अ र ओ ॥ " सन्धा "

/ दख / = ॥ द अ ख अ ॥ " दुःख "

/ सख / = ॥ स अ ख अ ॥ " सुख "

/ ग / - जिह्वा परच कंठ्य, अघोष, महाप्राण, स्पर्श ध्वनि है । इसका प्रयोग पद के आदि, मध्य, अन्त में होता है ।

जैसे -

/ गीत / = ॥ ग ओ त तु ॥ " गीत "

/ खगल / = ॥ ख ग ख ल अ ॥ " बाजु "

/ बाग ट = ॥ ब आ ग अ ॥ " बाग "

/ छ / - जिह्वा परच कंठ्य, सघोष, महाप्राण, स्पर्श ध्वनि है । इसका प्रयोग पद के आदि और मध्य में हो सकता है ।

जैसे -

/ छोड़ो / = ॥ छ ओ ड ओ ॥ " छाड़ा "

/ छोटा / = ॥ छ ओ ट आ ॥ " विवाह का एक अनुष्ठान "

/ बाघ / = ॥ ब आ घ अ ॥ " बाघ "



॥ छ ॥ स्पर्श संधर्षी - च, छ, ज, झ तथा ञ अघोष तथा सघोष ,  
अल्पप्राण तथा महाप्राण जिह्वागु - तालव्य ॥  
ध्वनियर्षी है । / च / तथा / ज / द्वित्य होने पर तथा / छ /  
तथा / झ / के पूर्व प्रयुक्त होने पर प्रथमांश स्पर्श ध्वनि स्व में -  
उच्चारित होते हैं । जिह्वागु - तालव्य स्पर्श ध्वनियों में परिवर्तन  
हो जाते हैं । अन्यत्र इनके स्पर्शों में अन्तर उपस्थित नहीं होता ।

/ च / = / च / / च /

= ॥ च ॥ जिह्वागु - तालव्य स्पर्श है जिसका प्रयोग / च / अथवा  
/ छ / के पूर्व होता है ।

जैसे - / बच्चा / = ॥ ब अ च च आ ॥ " बच्चा "

= ॥ च ॥ का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे :

/ चार / = ॥ च आ र अ ॥ " चार "

/ चोर / = ॥ च ओ र अ ॥ " चोर "

/ कीच / = ॥ क ई च अ ॥ " कीचड "

/ ज / - = ॥ ज ॥ ॥ ज ॥

= ॥ ज ॥ का प्रयोग ॥ ज ॥ तथा ॥ झ ॥ से पूर्व होता है

जैसे -

/ झज्जा / = ॥ झ अ ज झ आ ॥ " एक नाम "

= ॥ ज ॥ का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे -

/ जाडो / = ॥ ज आ ठ ओ ॥ " मोटा "

/ गाजर / = ॥ ग आ ज र अ ॥ " गाजर "



/ उ / - इसका प्रयोग केवल पद के आदि और मध्य में होता है ।

जैसे -

/ उँडी / = ॥ उ ँ ड ई ॥ " छाया "

/ पाछा / = ॥ प ा छ ा ॥ " पीछे "

/ ष / - का प्रयोग भी पद के आदि और मध्य में होता है ।

जैसे -

/ षोल / = ॥ ष ओ ल ॥ " ताडी के के पेठ "

/ साँझ / = ॥ स ा ष ञ ॥ " संध्या "

/ भाँझ / = ॥ भ ा ष ञ ॥ " तीठ "

/ ग / ऊँचम व्यंजन :

/ स / - यह जिह्वाग्रीय, पश्य - दन्त्य ऊँचम व्यंजन है । जीभ का अग्रभाग ऊपर के मसूड़े के पिरुठ चिप्याशील रहती है । इसका प्रयोग पद के आदि में स्वर और व्यंजन के मध्य में, दो स्वरों के बीच तथा एक ही शब्द के पृथक् उच्चारण में, क्लृप्ताघात होन रूप में पद के अन्त में होता है ।

जैसे -

/ साँझी / = ॥ स ा क ई ॥ " कथा "

/ फसगी / = ॥ फ ष स ग ई ॥ " फस गई "

/ मस्ती / = ॥ म ष स त ई ॥ " मस्ती "





/ ह / - यह कंठकारीय संघोषी ध्वनि है । इसके दो संस्वनात्मक वैकल्प पाए जाते हैं । अपने संघोषी रूप में यह पद के आदि में और स्वर मध्यवर्ती होने पर प्रयुक्त होता है - और उच्चारान्त होने पर इसका छोषत्व ह्रासित होकर अघोष हो जाता है । =

॥ ह ॥ ॥ ह ॥

॥ ह ॥ यह कंठकारीय अघोषी स्वनग्राम उच्चारान्त प्रयुक्त होता है ।

जैसे -

/ काह / = ॥ क् आ ह ॥ " कपो "

॥ ह ॥ यह कंठकारीय संघोषी स्वनग्राम - पद के आदि या स्वर मध्यवर्ती होने पर होता है ।

जैसे -

/ हाती / = ॥ ह आ त ई ॥ " हाथी "

/ साह / = ॥ स आ ह उ ॥ " निदेशी "

॥ छ ॥ नासिक्य व्यंजन :

/ म / यह द्वयोक्त्य नासिक्य व्यंजन है । यह पद के आदि और मध्य में प्रयुक्त हो सकता है ।

जैसे -

/ मैला / = ॥ म् ऐ ल आ ॥ " मेल "

/ माल / = ॥ म् आ ल् अ ॥ " माल "

/ नाम / = ॥ न् आ म् अ ॥ " नाम "



१ नू / यह दन्त्य नासिक्य है । इसके चार संस्वनात्मक वैविध्य माने जा सकते हैं - ॥ न ॥ दन्त्य नासिक्य है । इसके उच्चारण में जिह्व की क्रिया और स्थिति / त / के समान रहती है । १ ण / पश्च - दन्त्य नासिक्य है । जीव की स्थिति / ट / के ट के उच्चारण जैसी रहती है । ॥ अ ॥ तालव्य - नासिक्य है । ॥ ठ. कण्ठ्य नासिक्य है । इनका प्रयोग इस प्रकार है ।

॥ न ॥ का प्रयोग पद के आरम्भ में, स्वर मध्यवर्ती होने पर तथा स्वर के पश्चात् / ट /, / द /, / थ /, / घ / के पूर्व होता है ।  
जैसे -

/ नर / = ॥ न ञ र ञ ॥ " जादमी "  
/ नारु / = ॥ न ञा रु रु ॥ " एक प्रकार का रोग "  
/ तणका / = ॥ त ञ ग क ञा ॥ " तिन्का "  
/ चान्दर / = ॥ च ञ न द र ञ ॥ " चन्दर "  
/ कान्धो / = ॥ क ञा घ ञो ॥ " कन्धा "

॥ ण ॥ का प्रयोग केवल स्वर और मूर्धन्य व्यंजनों के पूर्व होता है ।  
जैसे -

/ काण्टा / = ॥ क ञा ण ट ञा ॥ " कैा में पहनने का एक गहना "

॥ ॥ का प्रयोग स्वर और तालव्य स्पर्श संघर्षों के बीच में होता है ।  
जैसे -

/ च चला / = ॥ च र् च ल ञा ॥ " चैव जाति का "

॥ ठ. ॥ का प्रयोग स्वर और कण्ठ्य स्पर्श व्यंजनों के बीच में होता है ।



॥ण॥ का प्रयोग केवल स्वर और मूर्धन्य व्यन्जनों को के पूर्व होता है ।

जैसे -

/काण्टा/ = ॥ क् वा ण ट् ता ॥ "को में पहनने का एक गहना"

॥ ॥ का प्रयोग स्वर और तालव्य स्पर्श संधिस्थितियों के बीच में होता है ।

जैसे -

/चम्बल/ = ॥ च र् च र् वा ॥ "चैव जाति का"

॥ङ॥ का प्रयोग स्वर और कण्ठ्य स्पर्श व्यन्जनों के बीच में होता है ।

जैसे -

/गंगा/ = ॥ ग् र् ज ग् वा ॥

/म्ह/ तथा /म्ह/ महाप्राण रूप है ।

जैसे -

/कम्ह/ = ॥ क् उ क् म्ह र् ॥ "पास"

/तम्हारी/ = ॥ त् उ क् म्ह आ र जो ॥ "तुम्हारा"

...



### 1.23 व्यन्जन संयोग :

| /पत/  | /लृती/      | "सीडी"          |
|-------|-------------|-----------------|
| /षट्/ | /कृडा/      | "क्यडा"         |
| /पन/  | सपूनी /     | "सपना "         |
| /पल/  | / वेपलू /   | " चप्पल "       |
| /पर/  | / टोपरी /   | " खोपरा "       |
| /पय/  | / रप्या /   | " रुब या "      |
| /टप/  | / धटपट /    | " तुरन्त "      |
| /टट/  | / कट्ट /    | " दाल का पानी " |
| /तत/  | / सस्ती /   | " सती "         |
| /टक/  | / बतझडी /   | " हाथकडी "      |
| /टड़/ | / वेतड़ /   | " दुग्धा "      |
| /तम/  | / अत्मार /  | " बधर मारी "    |
| /तन/  | / जीतनी /   | " जीतना "       |
| /टल/  | / कौत्ली /  | " धेली "        |
| /टरी/ | / कट्टा /   | " मछली "        |
| /तल/  | / दीक्षार / | " रक्खार "      |
| /तप/  | / क्षार /   | " तैयार "       |
| /टत/  | / कट्टनो /  | " कटना "        |
| /टल/  | / गल्ला /   | " पचाठ "        |
| /चत/  | / सोवताणी / | " सोवकर "       |
| /चच/  | / क्ययी /   | " छाती "        |
| /चक/  | / चक्कड़ /  | " उछलना "       |



|         |             |                        |
|---------|-------------|------------------------|
| / चढ /  | / पृवडी /   | "पूछ "                 |
| / चम /  | / लचमण /    | " लक्ष्मण "            |
| / चन /  | / लेवणो /   | " लेवना "              |
| / चक /  | / कचोछी /   | " कटोरी "              |
| / चय /  | / मुज्या /  | " लदमाझ "              |
| / कत /  | / लकत /     | " समय "                |
| / चल /  | / काचली /   | " नारियल का बाधा भाग " |
| / कफ /  | / मक्का /   | " मक्का "              |
| / कड़ / | / वेकेडाह / | " गर्व "               |
| / कस /  | / नुक्ताच / | " " नकट "              |
| / कल /  | / एकलो /    | " अकेला "              |
| / नड /  | / मनक्या /  | " जादमी "              |
| / कण /  | / टोळणी /   | " गगरी "               |
| / कठ /  | / साकळी /   | " " जीर "              |
| / कर /  | / ठोकरी /   | " कुडी "               |
| / कय /  | / लक्या /   | " लक्याच "             |
| / कय /  | / भूक्या /  | " भूक्या गोत्र "       |
| / कत /  | / चाकताणी / | " चाककर "              |
| / कूक / | / लाडूकी /  | " तेल डालने का फुल "   |
| / कुन / | / गाड़णो /  | " गढ़ना "              |
| / ठर /  | / कठरो /    | " निकालना "            |
| / जत /  | / भीजतो /   | " भीगता "              |
| / जम /  | / अज्जो /   | " अजवान "              |
| / जय /  | / वज्जो /   | " जोर "                |



|          |                |                        |
|----------|----------------|------------------------|
| / गट /   | / छुटो /       | • छुट •                |
| / गल /   | / कागला /      | • कोडा •               |
| / टैगर / | / टुङ्गी /     | • चुनरी •              |
| / गव /   | / भगवान /      | • भगवान •              |
| / गय /   | / अम्भारबूटा / | • जुगु •               |
| / सट /   | / कस्टा /      | • कष्ट •               |
| / सक /   | / मस्करी /     | • मझाक •               |
| / सस /   | / कस्ती /      | • केसी •               |
| / सम /   | / किस्मत /     | • किस्मत •             |
| / सन /   | / भिसुनी /     | • भवीन •               |
| / सल /   | / पेसला /      | • फे सला •             |
| / नठ /   | / तानुडो /     | • बनजारों की बस्ती •   |
| / णग /   | / गोण्णी /     | • पत्नी •              |
| / नग /   | / अंगार /      | • अंगार •              |
| / लत /   | / गलती /       | • गलती •               |
| / लद /   | / जल्दी /      | • तुरन्त •             |
| / लम /   | / गल्ला /      | • च्छार •              |
| / लग /   | / जल्लु /      | • जोपड़े की एक लकड़ी • |
| / लन /   | / लासुनो /     | • परोसना •             |
| / लल /   | / तन्फी /      | • तिल •                |
| / लर /   | / बोसुरो /     | • बोलना •              |
| / लक्ष / | / लक्ष्पा /    | • पत्ला पत्थर •        |
| / लत /   | / छासुताणी /   | • डालकर •              |



/ भट /

/ भव /

/ छड़ /

/ भल /

/ छन /

/ कर /

/ क्य /

/ रघ /

/ रक /

/ रब /

/ रद /

/ रज /

/ रग /

/ रस /

/ रम /

/ रन /

/ रल /

/ रर /

/ रत /

/ रड़ /

/ रण /

/ र्य /

/ रय /

/ रक /

/ वल्लो /

/ ऊँची /

/ पछड़ /

/ छल्ला /

/ चकड़नो /

/ बकरो /

/ तल्ला /

/ बरघो /

/ / परखो /

/ कारबारी /

/ मूदा /

/ मरजी /

/ कड़गो /

/ बारसो /

/ गरमी /

/ ओरनाई /

/ गल्ली /

/ गररो /

/ पावती /

/ तावडो /

/ बावणो /

/ नव्यद /

/ व्यापार /

/ नायक /

"उल्ला" \*

" रोटो बाधने का कपड़ा "

" साप "

" अंगूठी "

" चुगना "

" जलना "

" तल्ला "

" बर्दो "

" पारको "

" कार्य करनेवाला "

" रस "

" बज्जा "

" कर दिया "

" दर्पण "

" गमी "

" उसके जेसा "

" गिलहरी "

" गलरवा "

" प्रमाण-पत्र "

" धुल "

" जाना "

" बब्बो "

" व्यापार "

" मुखिया "



|               |               |               |
|---------------|---------------|---------------|
| ✓ सह /        | ✓ क्खरो /     | • कोसना •     |
| ✓ सव /        | ✓ परसवाठी /   | • पस्ली •     |
| ✓ सय /        | ✓ कसया /      | • केसी •      |
| ✓ मत /        | ✓ क्खत्ताणी / | • दरदाश करे • |
| ✓ मव /        | ✓ वग्गवा /    | • वग्गवा •    |
| ✓ मक /        | ✓ वग्गक /     | • वग्गकदार •  |
| ✓ मद /        | ✓ नाम्दार /   | • नामवाला •   |
| ✓ मक्कवा मव / | ✓ वग्गवा /    | • वग्ग •      |
| ✓ मङ्ग /      | ✓ गुम्मी /    | • गुम्मी •    |
| ✓ मज्ज /      | ✓ सम्जात /    | • समजाकर •    |
| ✓ मस /        | ✓ सम्भार /    | • गृहस्थी •   |
| ✓ मन /        | ✓ सम्भार /    | • सामने •     |
| ✓ मल /        | ✓ हेम्मा /    | • एक नाम •    |
| ✓ मर /        | ✓ धम्मा /     | • धुप •       |
| ✓ मय /        | ✓ रम्मा /     | • छेले •      |
| ✓ नत /        | ✓ आन्तर /     | • अंतरी •     |
| ✓ नद /        | ✓ उन्तर /     | • चूवा •      |
| ✓ नज /        | ✓ पोन्ना /    | • पायल •      |
| ✓ नन /        | ✓ कन्ना /     | • कन्न •      |
| ✓ नय /        | ✓ चीन्ना /    | • एक नाम •    |
| ✓ नक /        | ✓ जान्नी /    | • जांले •     |
| ✓ तद /        | ✓ कन्दोरी •   | • करछती •     |
| ✓ यय /        | ✓ पय्या /     | • चङ्ग •      |
| ✓ णङ्ग /      | ✓ तण्डवा /    | • भीरु •      |
| ✓ मयक /       | ✓ पीम्पेरी /  | • पोपल का •   |





|                      |              |                            |
|----------------------|--------------|----------------------------|
| / नतर /              | / सन्तारा /  | • संतरा •                  |
| / तड़र /             | / तान्दरी /  | • औरत •                    |
| / नक्य /             | / मन्ख्या /  | • आदमी •                   |
| / नक्य / / गूँछिया / |              | • अन्य जाति का व्यक्ति •   |
| / पठ्य /             | / चोपड़्या / | • लगाना •                  |
| / टक्य /             | / छटक्या /   | • बकरा या बकरी काटनेवाला • |
| / छम्य /             | / पट्ठ्या /  | • गाँव का मुखिया •         |
| / कक्य /             | / टोक्या /   | • एक प्रकार की मछली •      |
| / रसर /              | / चट्ठरो /   | • बरदाश कर रहा है •        |

ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट होता है कि परिनिष्ठित हिन्दी के निम्नलिखित ध्वनि ग्राम नहीं मिलते ।

॥ ड ॥ ॥ ॥ ॥ श ॥ ॥ ष ॥

कुछ ऐसे ध्वनिग्राम हैं जो परिनिष्ठित हिन्दी में नहीं मिलते :

॥ ड ॥ ॥ ष ॥ ॥ रड ॥ शेष ध्वनिग्राम हिन्दी के समान ही हैं ।

॥ ड ॥ ध्वनि राजस्थानी के समान हैं । महाप्राण ध्वनिग्राम बनावारी में दुर्लभ है ।

::

चतुर्थ अध्याय :

..

..

..

...

पद दिवार



0. पद-विचार :                      ....                      .....                      .....

प्रस्तुत अध्याय में "नाम" की संरचना और उसके व्युत्पादन पर विचार किया गया है। व्याकरणिक दृष्टि से बनजारा बोली के "नाम" के अन्तर्गत संज्ञा, विशेषण, कृदन्त सम्मिलित किये जा सकते हैं। संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनामों तथा क्रियार्थक संज्ञा पर भी यहाँ विचार किया गया है। अध्याय के अन्त में परसगों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय में पदगुमात्मक लेख के लिए                      तथा मौन के लिए  
चिह्न का प्रयोग किया गया है।    =व्यंजन;    =स्वर। अन्य  
शब्द स्थानापन्न स्वतन्त्र वैविध्य।

1. संज्ञा की प्रत्यायात्मक संरचना :

संज्ञा की संरचना में पूर्व प्रत्यय अन्त्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है।



### 1.1. पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग :

पूर्व प्रत्ययों का प्रयोग केवल संज्ञा के साथ होता है । संज्ञा के साथ प्रयुक्त होनेवाले पूर्व प्रत्यय अर्थ की दृष्टि से हीनार्थक, श्लाघार्थक, निरोधार्थक, स्वार्थक, परार्थक और संख्यार्थक हो सकते हैं ।

#### 1.1.1. हीनार्थक पूर्व प्रत्यय ये हैं - { -अ } { -बे }

|           |            |
|-----------|------------|
| /अकार/    | अकाल       |
| /अपचार/   | अपशकुन     |
| /बेदाह/   | बुरे दिन   |
| /बेटेम/   | बुरा टाकम  |
| /बेजाग/   | बुरा स्थान |
| /बेगण/    | बुरा गुण   |
| /बे हेवा/ | बुरी आदत   |

#### 1.1.2. श्लाघार्थक पूर्व प्रत्यय - { स- }

|          |           |
|----------|-----------|
| /सपुत्र/ | सुपुत्र   |
| /सकरम/   | सकर्म     |
| /सकाक/   | अच्छा समय |

#### 1.1.3. निरोधार्थक पूर्व प्रत्यय - { अ- }

|          |        |
|----------|--------|
| /अधरम/   | अधर्म  |
| /अन्याय/ | अन्याय |

#### 1.1.4. स्वार्थक पूर्व प्रत्यय - { अप- }

|         |            |
|---------|------------|
| /अपकाज/ | "स्वकार्य" |
| /अपहृर/ | आत्म-हानि  |



|         |            |
|---------|------------|
| /अपघात/ | स्वघात     |
| /अपघात/ | आत्म हत्या |

1.1.5. परार्थक पूर्व पुत्थ्य - { घर- }

|         |                  |
|---------|------------------|
| /परलो/  | "दूसरे का"       |
| /परदेस/ | "पराया देश"      |
| /परकाज/ | "दूसरों का घर"   |
| /परजोर/ | "दूसरे की ज़ोरत" |
| /परधन/  | "दूसरे का धन"    |
| /परबात/ | "दूसरे की बात"   |

1.1.6 संख्यार्थक पूर्व पुत्थ्य :

ये पुत्थ्य संख्यावाचक शब्दों के ही विकृत रूप हैं :

/अक/, /द/, /ति/, /घो/, /पध/, /सत/ । उदाहरण इस प्रकार है -

|          |                                                  |
|----------|--------------------------------------------------|
| /अक्कोस/ | "एककोस"                                          |
| /दुगुणा/ | "दुगुना"                                         |
| /तिगुणा/ | "तिगुना"                                         |
| /चोगुणा/ | "चोगुना"                                         |
| /पधमेक/  | "पाँच प्रकार के अम्बाइयों अनाजों का मिश्रित रूप" |
| /सतरंग/  | "सात रंग"                                        |
| /सत्खात/ | "सत्य वचन"                                       |

उ: और नौ शब्द ज्यों के त्यों पुत्थ्य के रूप में आते हैं ।

जैसे -



/छोक्णा/ "छः गुना"

/नोक्णा/ "नौ गुना"

### 1.2. अन्त्य प्रत्यय :

इनमें प्रमुख लिंग और वचन के प्रत्यय हैं । इनका प्रयोग संज्ञा, विशेषण, तथा कृदन्त के साथ होता है । कुछ प्रत्यय शुरु लिंग या जातिबोधक हैं तथा कुछ शुरु वचन । कुछ प्रत्यय उभयार्थ बोधक हैं, जिनमें लिंग और वचन दोनों की ही सूचना मिलती है । इनके अतिरिक्त अन्य प्रत्यय हैं, जिनसे विभिन्न कर्तों का बोध होता है ।

#### 1.2.1. लिंग प्रत्यय :

संज्ञा और विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर ये लिंग का ही बोध करते हैं और कृदन्त के साथ प्रयुक्त होने पर स्त्री लिंग की सूचना देते हैं । तथापि वचन दोतक प्रत्यय भी इनके पश्चात् संयुक्त हो जाते हैं ।

#### 1.2.1.1 पुलिंग अन्त्य प्रत्यय :

/-अ/, /-आ/, /-ऊ/, /-ओ/, /-ई/, /-वाङ्किया/, /-दार/, /-ओर/ । इनके प्रयोग के उदाहरण निम्नलिखित हैं :-

क - अन्त्य प्रत्यय : 1-अ।

/राज्-अ/ + 1-अ। = /राज/ "राजा" सं.पु. एक. ।

/वाग्-अ/ + 1-आ। = /वाग/ "बाघ" सं. पु. एक. ।

/जेठ्-अ/ + 1-अ। = /जेठ/ "जेठ" सं.पु. एक. ।

/पकड़्-अ/ + 1-अ। = /पकड़/ "साँप" सं.पु.एक. ।



- /रौघ-/ + । -वा । = /रौघ/ "भातू" सं.पु.एक. ।  
 /वाँदर-/ + । -वा । = /वाँदर/ "बंदर" सं.पु.एक. ।  
 /वणूत्-/ + । -वा । = /वणूत्/ "लंगूर" सं.पु.एक. ।  
 /वदर-/ + । -वा । = /वदर/ "बूढ़ा" सं.पु.एक. ।

ख अन्त्य प्रत्यय । -वा । -

- /काक्-/ + । -वा । = /काका/ "चाचा" सं.पु.एक. ।  
 /छोट-/ + । -वा । = /छोटा/ "लकड़ा" सं.पु.एक. ।  
 /सस्य-/ + । -वा । = /ससया/ "खरगोश" सं.पु.एक. ।  
 /केम्ब-/ + । -वा । = /केम्बा/ "बछड़ा" सं.पु.एक. ।  
 /मिटक्-/ + । -वा । = /मिटका/ "मैटक" सं.पु.एक. ।  
 /पीम्-/ + । -वा । = /पीला/ "बच्चा" सं.पु.एक. ।  
 /माम्-/ + । -वा । = /मामा/ "मामा" सं.पु.एक. ।  
 /राम्-/ + । -वा । = /रामा/ "राम" सं.पु.एक. ।  
 /भीम-/ + । -वा । = /भीमा/ "भीमा" सं.पु.एक. ।

ग अन्त्य प्रत्यय । -ई ।

- /साध-/ + । -ई । = /साधी/ "साधी" सं.पु.एक. ।  
 /पुजार-/ + । -ई । = /पुजारी/ "पुजारी" सं.पु.एक. ।  
 /धोक्-/ + । -ई । = /धोबी/ "धोबी" सं.पु.एक. ।  
 /मोक्-/ + । -ई । = /मोची/ "मोची" सं.पु.एक. ।  
 /पाप्-/ + । -ई । = /पापी/ "पापी" सं.पु.एक. ।  
 /धरम्-/ + । -ई । = /धरमी/ "दानी" सं.पु.एक. ।  
 /नाक्-/ + । -ई । = /नाची/ "नाई" सं.पु.एक. ।  
 /दरक्-/ + । -ई । = /दरजी/ "दजी" सं.पु.एक. ।



छ- वन्त्य प्रत्यय । -ऊ ।

- /बासु- / + । -ऊ । = / बासु / " बासु " सं.पु.एक. ।  
 /चाव्- / + । -ऊ । = / चाव् / " चाव् " सं.पु.एक. ।  
 /बद्- / + । -ऊ । = / बद् / " बगुठी " सं.पु.एक. ।  
 /साध्- / + । -ऊ । = / साध् / "साध्" सं.पु. एक. ।  
 /राम्- / + । -ऊ । = / राम् / " राम " सं.पु.एक. ।  
 /लान्- / + । -ऊ । = / लान् / " लान् " सं.पु.एक. ।  
 /काव्- / + । -ऊ । = / काव् / " कान् " सं.पु.एक. ।  
 /साव्- / + । -ऊ । = / साव् / " साव् " सं.पु.एक. ।

ऊ. वन्त्य प्रत्यय । -वो ।

- /ब्यान्- / + । -वाङ्ग्या । = / ब्यान् वाङ्ग्या / "बाजेवाला सं.पु.एक।  
 /मेहतर- / + । -वाङ्ग्या । = / मेहतरवाङ्ग्या / "भंगी" सं.पु.एक. ।  
 /मोघो- / + । -वाङ्ग्या । = / मोघो वाङ्ग्या / "बमार" सं.पु.एक. ।  
 /गाम्- / + । -वाङ्ग्या । = / गाम्वाङ्ग्या / " गविवाला" सं.पु.एक.  
 /पोल्लि- / + । -वाङ्ग्या । = / पोल्लि वाङ्ग्या / "पुल्लिवाला" सं.पु.एक.  
 /गोला- / + । -वाङ्ग्या । = / गोलावाङ्ग्या / "गङ्गिरिया" सं.पु.एक. ।

ठ. वन्त्य प्रत्यय । -दार ।

- /काम- / + । -दार । = / कामदार / "कामवाला" सं.पु. एक. ।  
 /दोस्ती- / + । -दार । = / दोस्तीदार / "मित्र" सं.पु.एक. ।  
 /दोकी- / + । -दार । = / दकानदार / "दुकानवाला" सं.पु.एक. ।  
 /दकान- /





/चोकी-/ + । -दार । = /चोकीदार/ "पहरेदार" सं.पु. एक. ।

/नेकी-/ + । -दार । = /नेकीदार/ "बच्चा बादमी" सं.पु. एक. ।

ज वन्त्य प्रत्यय । -ओर ।

/जादू-/ + । -ओर । = /जादूओर/ "जादूवाला"

/हराम-इ + । -ओर । = /हरामओर/ "हरामओर"

1.212 स्त्री लिंग वन्त्य प्रत्यय :

स्त्रीलिंग वन्त्य प्रत्यय छः हैं । वे इस प्रकार हैं -

/-ई/, /-जी/, /-ण/, /-डी/, /-टो/,

पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में परिवर्तन करने के लिए उपयुक्त प्रत्ययों को काम में लाया जाता है। इसके उदाहरण इस प्रकार हैं -

वन्त्य प्रत्यय । -ई ।

/छोरे-/ + । -ई । = /छोरी/ "लकड़ी" सं. स्त्री. एक. ।

/काकू-/ + । -ई । = /काकी/ "चाची" सं. स्त्री. एक. ।

/माम-/ + । -ई । = /मामी/ "मामो" सं. स्त्री. एक. ।

/गोरलू-/ + । -ई । = /गोरली/ "भेड़" सं. स्त्री. एक. ।

/वांदर-/ + । -ई । = /वांदरी/ "बंदीरिया" सं. स्त्री. एक. ।

/कू-/ + । -ई । = /कूनी/ "कुतिया" सं. स्त्री. एक. ।

/कूकड़-/ + । -ई । = /कूकड़ी/ "मुंगी" सं. स्त्री. एक. ।



- /मिट्ठ्-/ + 1-ई। = /मिट्ठो/ "मिट्ठ" सं. स्त्री. एक. ।  
 /कचोच्-/ + 1-ई। = /कचोळी/ "कचोली" सं. स्त्री. एक. ।  
 /लूण्ड्-/ + 1-ई। = /लूण्डो/ "लूण्ड" सं. स्त्री. एक. ।  
 /सोस्-/ + 1-ई। = /सोसो/ "सोशा" सं. स्त्री. एक. ।  
 /वुड्-/ + 1-ई। = /वुडो/ "वुडो" सं. स्त्री. एक. ।

छ. अन्त्य प्रत्यय । -आणि । :

- /जेद्- / + 1-आणि। = /जेठाणी/ "जेठाणी" सं. स्त्री. एक. ।  
 /देवर्- / + 1-आणि। = /देवराणी/ "देवराणी" सं. स्त्री. एक. ।

अन्त्य प्रत्यय । -णी ।

- /बामण- / + 1-णी। = /बामणी/ "बामणी" सं. स्त्री. एक. ।  
 /सनार- / + 1-णी। = /सनारणी/ "सनारणी" सं. स्त्री. एक. ।  
 /चोर- / + 1-णी। = /चोरणी/ "चोरणी" सं. स्त्री. एक. ।  
 /पाप- / + 2-णी। = /पापणी/ "पापी" सं. स्त्री. एक. ।

ग. अन्त्य प्रत्यय । -ण । :

- /मोच- / + 1-ण। = /मोचण/ "मोचिन" सं. स्त्री. एक. ।  
 /छोब- / + 1-ण। = "छोबिन" सं. स्त्री. एक. ।  
 /नाच- / + 1-ण। = ३ /नाचण/ "नाचिन" सं. स्त्री. एक. ।  
 /सबत- / + 1-ण। = /सोबतण/ "सहेनी" सं. स्त्री. एक. ।  
 /कोमट- / + 1-ण। = /कोमटण/ "बनिया की औरत" सं. स्त्री. एक.

घ अन्त्य प्रत्यय । -डो । :

- /रोच- / + 1-डो। = /रोचडो/ "रोचनी" सं. स्त्री. एक. ।



/भूत-/ + 1-डी । = /भूतड़ी/ "भूतनी" सं. स्त्री. एक. ।

क. अन्त्य प्रत्यय । -री । :

/ताड़-/ + 1-री । = /ताड़री/ "जोरत" सं. स्त्री. एक. ।

/पाद-/ + 1-री । = /पादरी/ "पल बेचनेवाली" स्त्री" सं. स्त्री. एक. ।

प्रयोग स्थितियाँ : उक्त स्त्री लिंग प्रत्ययों में । -जाणी ।,

। -णी ।, । -ण ।, । -ड़ी । तथा । -री ।

वाले रूपों का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषणों तक सीमित है । कृदन्तों के साथ केवल । -ई । का प्रयोग होता है । जो विशेषण या संज्ञाएँ इन स्त्री लिंग प्रत्ययों से रहित होने के कारण जाति का बोध नहीं कराते उनको जाति कृदन्त की स्थिति पर जाने पर ही हो सकता है ।

2. वचन प्रत्यय :

वचन प्रत्यय की दृष्टि से शब्दों को दो भागों में बाँटा जा सकता है । एक तो वे शब्द जिनका मूल रूपों में भी बहुवचन प्रत्ययों का प्रयोग होता है और दूसरे वे जिनके साथ बहुवचन प्रत्यय केवल तिर्यक रूपों के साथ प्रयुक्त होता है ।

2.1। मूल रूपों के साथ बहुवचन प्रत्यय :

यदि संज्ञा शब्द - ओ प्रत्यय है तो उसका मूल बहुवचन -ए प्रत्यय से युक्त होगा । जैसे :- / चीतों/ एक /चीते/



बहुवचन - जो प्रत्यय पुल्लिंग एक वचन का होता है । इस प्रकार  
- ए प्रत्यय पुल्लिंग बहुवचन का द्योतक हो जाता है ।

यह प्रत्यय व्यवस्था क्रिया के साथी मिलती है जैसे / गो /  
" गया " तथा / गे / " गये " इसपर यथा स्थान विचार किया  
गया है । तिर्थक बहुवचन संरचना में जोकारान्त शब्द एकारान्त  
ही हो जाते हैं । इस रूप रचना को इस प्रकार स्पष्ट किया जा  
सकता है । केवल तिर्थक रूपों के साथ प्रयुक्त बहुवचन प्रत्यय संज्ञा के  
तिर्थक रूप वे हैं जो कारक विहनों के पहले प्रयुक्त होते हैं ।

2.112 केवल तिर्थक रूपों में बहुवचन प्रत्यय है - जो प्रत्यान्त संज्ञा पदों  
के अतिरिक्त जितनी भी संज्ञाएँ हैं सभी के मूल एकवचन और मूल बहुवचन  
रूप रूप समान रहते हैं । केवल तिर्थक रूपों के साथ । - ऊँ । प्रत्यय  
जोड़कर बहुवचन रूपों की रचना की जाती है । साथ ही तिर्थक बहुवचन  
प्रत्यय । -ऊँ । स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों ही के साथ प्रयुक्त होता  
है । नीचे के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो सकती है ।

| <u>मूल एक.</u>    | <u>मूल बहु.</u> | <u>तिर्थक एक.</u> | <u>तिर्थक बहु.</u> |
|-------------------|-----------------|-------------------|--------------------|
| /राज/ "संज्ञा"    | /राज/           | /राज/             | /राजु/             |
| / गद्दा / "गद्दा" | /गद्दा/         | /गद्दा/           | /गद्दु/            |

। - ऊँ । प्रत्यय एकारान्त पुल्लिंग और स्त्री लिंग शब्दों के साथ यूँ  
हो जाता है ।



### 3. कारक और विभक्ति :

बनजारा कारकों का विवरण इस प्रकार है :

कर्ता - न \* ने \*

कर्म : न - एक \* को \*

करण : ती ~ एती - \* से \*

सम्प्रदान - न ~ वास्ता को, के लिए \*

अपादान तो ~ एती \* में \* - पर \* पर \* ।-एक पर।

अधिकरण म ~ एम ~ \* में \* - पर - पर ।-ए पर।

सम्बन्ध र ~ एर \* का \*

उमर की मूची से यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्ध कारक की रचना विभक्ति मूलक है। जैसे -

/ काकार घर / \* काका का घर \*, / घरेर बादमी / \* घर का बादमी, / हातोर पूछडी / हाथो को पूछ, / साधू - चिमटा / \* साधू का चिमटा, / छोडेर टांग / \* छोडे के पेर \* इस विभक्ति की रचना में एक संक्षिप्त नियम दृष्टव्य है :

।-र। = /-र/, /-इर /

= / एर / का प्रयोग अकारान्त और - ओ प्रत्ययवाति संज्ञा शब्दों के साथ होता है। इस रचना में - ओ प्रत्यय का लोप हो जाता है।

= /-र/ का प्रयोग अन्यत्र होता है।



अन्य कारकों के प्रयोग से पूर्व संज्ञा शब्द अविकृत रहता है ।  
केवल अकारान्त और - ओ प्रत्ययान्त संज्ञा शब्द कारकों के पहले  
एकारान्त हो जाते हैं । जैसे -

- ४ राज + - न = राजेन " राजाने " ॥ कर्ता ॥  
८ राज + - न = राजेन " राजा को " ॥ कर्म ॥  
राज + - ती = राजेती " राजा से " ॥ करण ॥  
राज + - न = राजेन " राजा को - ॥ सम्प्रदान ॥  
राज + - ती = राजेती " राजा से ॥ अपादान ॥  
घर + - ती = घरेती " घर से ॥ अपादान ॥  
घर + - म = घरेम " घर में ॥ अधिकरण ॥  
घर + - पर = घरे पर " घर पर ॥ अधिकरण ॥  
छोड़ो + - न = छोडेन " छोड़े ने " ॥ कर्ता ॥  
छोड़ो + - न = छोडेन " छोड़े ने " ॥ कर्म ॥  
छोड़ो + - ती = छोड़ैती " छोड़े से " ॥ करण ॥  
छोड़ो + - त = छोड़ैत " छोड़े का ॥ सम्प्रदान ॥  
छोड़ो + - ती = छोड़ैती " छोड़े से ॥ अपादान ॥  
छोड़ो + - म = छोड़ैम " छोड़े में " ॥ अधिकरण ॥  
छोड़ो + - पर = छोड़ै पर " छोड़े पर " ॥ अधिकरण ॥

कर्ता, कर्म और सम्प्रदान में कारक चिह्न ध्वन्यात्मक रूप से समान  
हैं । अर्थात् इन सबमें / -न / का ही प्रयोग होता है । अर्थ का स्पष्टीकरण  
संदर्भ के अनुसार ही होता है ।



#### 4 सर्वनाम

यह वर्ग नाम के स्थानापन्न पदग्रामों का वर्ग है । " नाम " लिंग द्योतक प्रत्ययों से द्योतक होता है । सर्वनाम लिंग द्योतक में उदात्तीन रहता है । प्रयोग विवरण की दृष्टि से सर्वनाम दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं । संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनाम तथा विशेषण के स्थानापन्न सर्वनाम ।

संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनामों की रूप रचना की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - एक /  $cv$  / तथा दो /  $cvc$  /

एकवचन संज्ञा का स्थानापन्न है तथा द्वितीय वर्ग बहुवचन संज्ञा का /  $क- / cv /$  - के दो उपविभाग हो सकते हैं -  $मू - +$  स्वर तथा  $तू - +$  स्वर । इनमें से सर्वनामिक अंग  $मू -$  उत्तम पुरुष ,  $तू$  मध्यम पुरुष का द्योतन करता है । इनके साथ संयुक्त स्वर ये हैं -

$मू - +$  आ

$तू - +$  आ, ऊ, ओ

इस प्रकार  $मू -$  के साथ एक तथा  $तू$  के साथ तीन स्वरों का संयोग होता है । अतः सुझा के लिए  $म$  के साथ एक शून्य की कल्पना करना समीचीन होगा । उनकी रूप रचना इस प्रकार होगी ।

$। मू - । + / - ह / - / म /$

$/ आ / - / मा /$



। - व - । + / - ई / - / वृ /  
/ - ओ / - / तो /

। - व - । + / क / तथा । व - । + / - ऊ / संज्ञा के मूल कारक के एक लक्षण रूप के स्थानापन्न है । इनकी स्थिति यह हो सकती है -  
/ 4 / गो : जैसे

/ मा गो /      "भे गया"  
/ व गो /      "वृ गया"

रोज रूप संज्ञाओं के तिर्यक रूपों के स्थानापन्न हैं । इनका प्रयोग क्रम इस प्रकार है -

- 4.1. । म- ।, : - / + तो / : / मातो / "मैने"  
। व - ।, + :- / + तो / : / वृ तो / "तूने"  
। म् - । + अ : / + म् / : / मम् / "मुझे"  
। व - । + ओ : / + म् / : / तोम् / "तुझे"  
। म् - । + अ :- / + म्ज / : / मम्ज / "मुझको"  
। व - । + ओ :- / + म्ज / : / तोम्ज / "तुझको"  
। म् - । + ओ :- / - मां / : / मोमां / "मुझमें"  
। व - । + ओ :- / + मां / : / तोमां / "तुझमें"  
। म् - । + ओ :- / + ती / : / मोती / "मुझसे"  
। व - । + ओ : / - तो / : / तोतो / "तुझसे"  
। म् - । + आ :- / - रो / : / मांरो / "मेरा"  
३ । व - । + आ : / - रो / : / तारो / "तेरा"

इनमें से ॥१॥ कर्ता परस्मै - तो ॥२॥, ॥३॥, ॥४॥, ॥५॥ कर्म सम्प्रदान  
- म् म्ज पूर्व, अधिकरण - मां तथा करण-अपादान - ती से पूर्व





पूर्व और {6} सम्बन्ध प्रत्यय - रो - के मूल पूर्व प्रयुक्त होते हैं ।

सम्बन्ध सूचक प्रत्यय "नामक" के साथ प्रयुक्त होनेवाले लिंग वचन प्रत्यय ओ, ए तथा ई से युक्त होते हैं । अतः इन - रो, - रे, - रो मिश्र विशेषणात्मक प्रत्ययों से युक्त, उक्त सार्वनामिक अंग विशेषणों के स्थानापन्न हो जाते हैं ।

छ - /cvc/ - इस दाहि में प्रथम व्यन्जन ह - तथा त् - है ।

ह - के साथ - अ, तथा त् के साथ ख स्वरों का प्रयोग होता है ।

अन्तिम व्यन्जन उभयनिष्ठ है : - म् । इस विशेषण के आधार पर

ह - वाला रूप उत्तम पुरुष तथा त् - वाला रूप मध्यम पुरुष का

वाचक माना जा सकता है । -म् बहुवचन का प्रतीक हो सकता है ।

पुरुष वाचक अंग के अंग माने जा सकते हैं । इन दोनों का अविकृत

रूप से मूल तथा तिर्यक "नाम" के स्थानापन्न के रूप में प्रयोग होता

है । पर सम्बन्ध सूचक - र से पूर्व इनके साथ वा का योग हो जाता

है :

/हमा-/, /तमा-/ ड : जे

/हमारो/ "हमारा"

/तमारो/ "तुम्हारी" आदि ।

इस रूप में यह वर्ग विशेषणों का स्थानापन्न हो जाता है ।

बन्ध सभी रूपों में इनके प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार है -

/हमतो/ "हमने"

/तुतो/ "तुमने"

/हमेन/ "हमको"

/तमने/ "तुमको"



|         |            |
|---------|------------|
| /हमेती/ | "हमसे"     |
| /तमेती/ | "तुमसे"    |
| /हमूमा/ | "हममें"    |
| /तमूमा/ | "ह"तुममें" |
| /हमपर/  | "हम पर"    |
| /तम/    | "तुम पर"   |

आदराधिक एकवचन में भी + "तम और हम का प्रयोग होता है ।

4.2. विशेषणों के स्थानापन्न - इस वर्ग के अन्तर्गत दो प्रकार के सर्वनाम मिलते हैं : प्रथम वर्ग उनका है जो वचन प्रत्ययों से संयुक्त होता है और दूसरे वर्ग में वे हैं जो वचन प्रत्यय से मुक्त रहते हैं ।

4.2.1. वचन प्रत्यय युक्त - वचन प्रत्यययुक्त सर्वनामों की रूप तालिका इस प्रकार है -

|     |                                           |                    |          |
|-----|-------------------------------------------|--------------------|----------|
| क - | इ - + - इ = /ज/                           | : समीपवर्ती एकवचन  | ॥मूल॥    |
|     | इ - + - ए = /जे/                          | : समीपवर्ती बहुवचन | ॥मूल॥    |
|     | इ - + + - आ = /जा/                        | : समीपवर्ती एकवचन  | ॥तिर्यक॥ |
|     | इ - + - इ इ + - न = /जिन्-/               | : समीपवर्ती बहुवचन | ॥तिर्यक॥ |
| ख - | व - + - उ = /वु/                          | : दूरवर्ती एकवचन   | ॥मूल॥    |
|     | व - + - ए = /वे/                          | : दूरवर्ती बहुवचन  | ॥मूल॥    |
|     | व - + - उ + आ = /वुआ/ = । व्या ।          | : दूरवर्ती एकवचन   | ॥मूल॥    |
|     | व - + - उ + न उ - + इ + न = /विन-/ , /उन/ | : दूरवर्ती एकवचन   | ॥तिर्यक॥ |



विवरणात्मक विकलेषण की दृष्टि से । ३ - । समीपता और । ४ । दूरत्व बोधक हैं । । ज- । के साथ /-ई/ मूल एक. तथा /-ए/ मूल बहु. प्रत्ययों का योग होता है । । ५ - । के साथ हन्वीं अर्थों के ह्योतन क्रमः /-उ/ तथा /-ए/ प्रयुक्त होते हैं । ये प्रत्यय तिर्यक एक. प्रत्यय /-उत्/ तथा बहु. /-न्/ के योग के समय सार्वनामिक अंगों के साथ संयुक्त रहकर प्रातपदिक बनाते हैं । केवल /-वा/ से पूर्व शुभ्य और /-न्/ से पूर्व - उ ७ - इ मिलता है । एक स्वतन्त्र वैविध्य /-उन्/ मिलता है । इस स्वतन्त्र वैविध्य की व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है :-

+ - उ + न् : । ५ - ४ ।

उ + + न् : १ - उ ७ ।

सुष्मात्त्व की दृष्टि से यहाँ द्वितीय व्याख्या को ही अपनाया गया है । प्रयोग की दृष्टि से उक्त रूप संज्ञा के स्थानापन्न होने पर अन्य पुरुष एक. तथा बहु. का बोध कराते हैं । अन्य पुरुष के लिए बोली में अलावा सर्वनाम नहीं है । इस दृष्टि से इनका प्रयोग - गो की स्थिति में हो सकता है । विकेष्णों के स्थानापन्न होने पर इनका प्रयोग संज्ञा से पूर्व विकेष्णत् हो सकता है : छोटा गो । इस स्थिति में "जाचो" तथा /-वु./ जादि दोनों ही प्रयुक्त हो सकते हैं । विकेष्णों के समान संज्ञावत भी ये प्रयुक्त हो सकते हैं । जादरार्थक रूप में बहुवचन रूप प्रयुक्त होकर एकवचन जादरार्थक का बोध कराते हैं । तिर्यक रूपों का प्रयोग परसगों तथा कर्म - सम्प्रदान प्रत्यय इ से पूर्व होता है । जैसे - /व्याइ/ "उसको" /जाइ/ "इसको" /व्यनै/ "उसने", /जातै/ "इसने" जादि ।



15.2.2 वचन प्रत्यय युक्त - इनके भी दो वर्ग हो सकते हैं :

पूर्व प्रत्यय / क्- / से युक्त तथा अन्य । /क्-/ से युक्त  
स्वों की तालिका इस प्रकार है -

वः /क्- / + - /इ- / + /-ण् / = /कृण्व- / "कौन"

/क्- / + - /ए- / + /-न् / = /केन- / "किस"

वाः /क्- / + /वा / + /ई / = /कौई / "क्या"

/क्- / + /ए / + /न् / = केन "किस"

उक्त दोनों स्व स्व संरचना में समान है । दोनों का एक  
मूल स्व है तथा दूसरा तिर्थक स्व । दोनों में एक वेताद्वय है :

॥वः॥ के साथ /लो से ली / ॥ स् - /+ / उसे ए ई / ॥  
संयुक्त होकर इस षट् ग्राम को विशेषण बना सकते हैं, पर इस प्रकार  
की रचना ॥वाः॥ की सम्भव नहीं है । दूसरा अन्तर की दृष्टि से है -

॥वः॥ का प्रयोग व्यक्ति या सजीव के लिए होता है; केवल /-स्- / -  
प्रत्यय से युक्त होकर सजीव तथा निजीव दोनों के लिए प्रयुक्त हो  
सकता है । ॥वाः॥ का प्रयोग व्यक्ति या सजीव के लिए नहीं हो सकता :  
किन्ती वस्तु या निजीव तक इसका प्रयोग सीमित है ।

वर्ण छौतन की दृष्टि से । इ - । प्रश्नवाचक /-जो / "व्यक्ति सूचक  
है जो /-ण् / से पूर्व /-जो- / हो जाता है । /-ण् / तिर्थक विधायक  
पदांश है । ॥वाः॥ में प्रश्नवाचक पदांश समान है । वस्तुवाचक /-वहा /  
है जो तिर्थक विधायक /-ए / से पूर्व /-वा / हो जाता है । इसके साथ  
तिर्थक विधायक /-ए / प्रयुक्त होता है । तिर्थक स्वों का प्रयोग  
परसगों से पूर्व होता है । /कृण्व / "कौन", /केन / "किसको", /केती /  
"किससे", /के पर / "किस पर", आदि । इसी प्रकार /कृण्वतो / "किसने"



/केना/ "किस्को", /केती/ "किस्ने", /के मां/ "किस्में" आदि ।

वचन प्रत्यय युक्त अन्य सर्वनामों को रूप रचना की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - मूल तथा तिर्यक दो रूप ग्रहण करनेवाले तथा अव्यय रहने वाले । अव्यय सर्वनामों का प्रयोग इस स्थिति में होता है : जो - तो /बु-/ इस स्थिति में प्रथम वर्ग के सर्वनाम प्रयुक्त नहीं हो सकते । यह द्वितीय वर्ग सम्बन्धी या नित्य सम्बन्धी स्व है । । जो । तथा । तो । का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण दोनों के स्थानापन्न के रूप में हो सकता है :

जैसे - जादमी की स्थिति में विशेषण और । - जो । एक दूसरे के स्थानापन्न हैं : /बाबो जादमी/ "बूछा जादमी" /जो जादमी/ "जो जादमी" । इसके अतिरिक्त - गो की स्थिति में प्रयुक्त होकर संज्ञा का स्थानापन्न हो सकता है :

/जादमी गो/ "जादमी गया था"

/जो गो/ "जो गया था"

/तो / तथा /बु/ में स्वतन्त्र वैविध्य मिलता है ।

दो रूप ग्रहण करनेवाले सर्वनाम ध्वन्यात्मक रूप से दो विभागों में विभक्त हो सकते हैं । /बु-/ पर आधारित रूप और /बु-/ पर आधारित रूप । /बु-/ पर आधारित सर्वनामों का गठन दो प्रकार का है : §1§ /CVV/ तथा §2§ /CVCV/ । /CVV/ की स्व-तालिका इस प्रकार है -

/कोई/ मूल कारक रूप "कोई"

/के / तिर्यक रूप "किसी"

तिर्यक रूप का प्रयोग परसर्ग के पूर्व होता है : /केन/ "किसी को"



/केती/ "किस से", /के मां/ "किस में", /के पर/ "किस पर" ।

प्रयोग वितरण की दृष्टि से यह रूप व्यक्ति वाचक संज्ञा का स्थानापन्न हो सकता है :- बौजो की स्थिति में /बादमी/ तथा /कोई/ दोनों ही जा सकते हैं । /बादमी बोली/ "बादमी बोला" /कोई बोली/ "कोई बोला" । बादमी की स्थिति में प्रयुक्त होने से यह विशेषण का स्थानापन्न हो सकता है । अर्थ की दृष्टि से यह सर्वनाम अन्विष्ट के द्वे चोतक है । अर्थ की दृष्टि से एक बात विशेष रूप से दृष्टव्य है : /कोई/ का प्रयोग जब संज्ञा के स्थान पर होता है, तो एक. तथा बहु. दोनों में हो सकता है : /कोई बोली/ "कोई बोला" /कोई बोले/ "कोई बोले"

विशेषण के स्थान पर यह सर्वनाम केवल एक वचन के रूप में प्रयुक्त हो सकता है :

/कोई बादमी बोली/ "कोई बादमी बोला"

बहुवचन के चोतन के लिए /थोड़ा/ का प्रयोग किया जाता है, जिसका विवरण बागे दिया जा रहा है । तिर्यक रूप सदा ही एक वचन है । /कोई/ के स्थान पर /कोई न/ बहु., /कोई/ एक., तथा /के ती/ तिर्यक बहु. का भी प्रयोग हो सकता है । यह रूप व्यक्ति सूचक संज्ञा के एक. तथा बहु. दोनों स्थों में प्रयुक्त हो सकते हैं । /<v<v/ की रूप रचना क एक वचन तथा बहु वचन की है । यह पदग्राम /छोड़ा/ "कुड़" है । इसका बहुवचन रूप /-सेक/ बहुवचन प्रत्यय के योग से सम्पन्न होता है : /थोड़ सेक/ "कुड़ लोग" । पदग्राम का मूल रूप का प्रयोग एक वचन रूप में भी हो सकता है और बहुवचन के रूप में भी । पर एक वचन में यह व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का स्थानापन्न न होकर वस्तु या निजीय पदार्थ वाचक संज्ञाओं का ही स्थानापन्न हो सकता है । बहुवचन रूप में यह व्यक्तिवाचक संज्ञा के



बहुवचन रूप का ही स्थानापन्न हो सकता है। जैसे - /ओठा बोले/  
 /उनमें से/ "कुठ बोले"। तिर्यक बहुवचन रूप /ओठसेक/ पदार्थवाची  
 संज्ञाओं का स्थानापन्न होता है; कभी व्यक्तिवाचक का बोध द्रो  
 कराता है: /ओठ सेक बोले/ "कुठ ने कहा"। /ओठा/ के स्थान पर  
 /ओठास/ "कुठ" तथा /ओठाससेक/ "कुठ" तिर्यक बहुवचन का  
 प्रयोग भी होता है। इन बहुवचन मूल और तिर्यक रूपों का प्रयोग  
 व्यक्तिवाचक बहुवचन तथा वस्तुवाचक बहुवचन दोनों के लिए सम्भव  
 है: /ओठास बोले/ "कुठ बोले" /ओठास ई छटे मां मेले चा/ "कुठ  
 इस घर में रक्खे हैं"। पर /-स/ से युक्त एकवचन रूप /ओठास/ "कुठ"  
 केवल वस्तुवाची संज्ञा का स्थानापन्न हो सकता है। अर्ध की दृष्टि से  
 यह भी अनिश्चयार्थक ही है। इन अनिश्चयार्थक सर्वनामों की रूप रचना  
 की संक्षिप्ति नीचे दी जा रही है।

। कोई १ - व्यक्ति. एक. मूल. ।

। के । - व्यक्ति. वस्तु. एक. तिर्यक.

। कोई - । + /-व्- / + /-वो / = /कोई तो/ व्यक्ति.

वस्तु. एक. पृ. मूल.

+ /-प / = /कोई ते/ व्यक्ति. वस्तु. बहु. पृ. मूल.

+ /-व / = / कोई तो/ व्यक्ति. वस्तु. \* स्त्री. मूल.

। के - । + /स् / + /शी / = /केतो / व्यक्ति. वस्तु. एक. पृ. तिर्यक

+ /प / = /केते/ व्यक्ति. वस्तु. बहु. पृ. तिर्यक

+ /ई / = /केती/ व्यक्ति. वस्तु. एक. स्त्री. तिर्यक ।

।ओठा । - वस्तु. मूल. {वचन कर चोतन नहीं }।

१ ओठा । - व्यक्ति. बहु. मूल. ।

। ओठा- । + /-स् / = /ओठास- / - वस्तु. व्यक्ति. बहु.

तिर्यक ।



। धोडा- । + /-स-/ + /-हो/ /धोडा सेक/ -वस्तु. एक.पु.मूल.  
+ /-घ-/ + /-क/ = /धोडा सेक/ - वस्तु. व्यक्ति.  
बहु.पु. मूल.।

+ /-ई/ = /धोडासी/ - वस्तु. व्यक्ति.  
स्त्री. मूल. ।

। धोडा - । + /-स-/ + /-घ/ + /-क/ = /धोडा सेक/  
व्यक्ति. वस्तु बहु. पु. तिर्यक ।  
+ /-ई-/ + /-क/ = /धोडासीक/ - व्यक्ति.  
वस्तु. बहु. स्त्री. तिर्यक.

/स/ पर आधारित सर्वनाम /से/ है । इसके केवल दो रूप प्रयुक्त होते हैं : मूल रूप एक. बहु. /से/ मूल. तथा /स-/ तिर्यक. । तिर्यक का एक स्वतन्त्र वैविध्य बहुवचन प्रत्यय /-नृ/ से युक्त होकर {सेनृ-} भी तिर्यक रूप में प्रयुक्त होता है । प्रयोग वितरण की दृष्टि से यह संज्ञा तथा विशेष्य दोनों का स्थानापन्न हो सकता है । यह अपने मूल एकवचन रूप में वस्तुवाची संज्ञा तथा वस्तुवाची विशेष्य के विशेष्य के स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है : /से गो/ "सररा गया", {सारा गया} /से धन गो/ "सारा धन गया" । बहुवचन रूप में यह व्यक्तिवाची तथा वस्तुवाची संज्ञाओं के बहुवचन रूपों का स्थानापन्न हो सकता है: /से गे/ "सब गये", /से जादमी गे/ "सब जादमी गये", /से रपया गे/ "से रुपये गये" । इसका प्रयोग अधिकृत रूप से दोनों लिंगों के साथ हो सकता है ।

तिर्यक रूप /से-/ /सेतो/ का प्रयोग केवल बहुवचन में होता है । इस सर्वनाम का तिर्यक एकवचन प्राप्त नहीं होता । तिर्यक बहुवचन रूप व्यक्ति तथा वस्तु दोनों के लिए प्रयुक्त हो सकता है: /सेतो/ "सबने" /सेमा/ "सब में" आदि । अर्थ की दृष्टि से यह सर्ववाची है ।





5. परसर्ग - बनजारा बोली के परसर्ग दो भागों में विभाजित किए

जा सकते हैं - एक स्व वाले तथा एक से अधिक स्व वाला ।

एक स्व वाले परसर्ग ये हैं - कर्तृवाचक परसर्ग /तो/ "ने" कर्म सम्प्रदाय /-न/ अधिष्करण /-म/, /पर/, /बेट/, /ताणी/, /जू/ करण-वपादान /-तो/ - "से" । इन सबका प्रयोग संज्ञा अथवा उसके स्थानापन्नों के तिर्यक स्पर्श के साथ होता है । सम्बन्धवाचक परसर्ग स्थान्तरित होता है ।

5.1. /तो/ इसका प्रयोग सकारक भूतकालिक कृदन्तों के कर्ताओं के साथ होता है । उदाहरण ये हैं :-

/वृत्तो बात को/ "उसने बात कही" ।

/म तो बाटो खा दो/ "मैंने रोटी खाई" ।

/गोपाल तो काम बिगाड़ो/ "गोपाल ने काम बिगाड़ा" ।

/छोटो तो काम की दो/ "लडकी तो काम की"

/छेनी तो पान खादी/ "बकरी ने पत्ते खाई" ।

5.2. /-न/ कर्म और सम्प्रदान दोनों के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है । इस अर्थ में कर्म सम्प्रदान-प्रत्यय का स्थानापन्न :

/रामेंर बलाखो/ "राम को बुलाखो" के स्थान पर -

/रामेन बलाखो/ भी हो सकता है । ये दोनों स्व ही चल रहे हैं;

पर प्रमुक्ता प्रत्यय - युक्त संरचना को है । कर्म सम्प्रदाय अर्थ में इसके प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं -

कर्म - /भीमलान बलाखो/ "भीमला को बुलाखो" । [एक.]

/छोटारुन बलाखो/ "लड़कों को बुलाखो" । [बहु.]

/वृत्तो छोटारुन न बलायो । "उसने लड़कों को बुलाया" ।

/वृ छोटारुन न बलायो/ "वह लड़कों को बुलाया" ।



सम्प्रदान - /बादमी न परसाद दो/ "बादमी को प्रसाद दो" ।

/ बादमीयून परसाद देदो / "बादमियों को प्रसाद दे दो" ।

स्थानवाचक कर्म के साथ भी इसका प्रयोग होता है :

/वू घर न गो / "वह घर को गया" पर इस स्थान पर बिना प्रिक्त/ परसर्ग का रूप भी चलता है : /वू घर गो/ इस स्थिति में कर्म रूप संज्ञा तिर्यक रूप में हो रहती है । बहुवचन कर्म के साथ /न/ का प्रयोग अनिवार्य है । स्थानवाचक कर्म के साथ भी इसका प्रयोग होता है । /राते न गो / "रात को गया" । उद्देश्य सूचक सम्प्रदान के अर्थ में यह क्रियाधर्म संज्ञाओं के तिर्यक रूप के साथ प्रयुक्त होता है : /वू छेयेन गो/ "वह छाते के लिए गया" । इस स्थिति में भी परसर्ग रहित रूप प्रचलित है । /वू छायेवासु गो/ "वह छाने गया" ।

5.3. /मं/, /पर/, /हेट/, /ताणी/, /जूं - संज्ञाओं के साथ इन सभी का प्रयोग हो सकता है । संज्ञा के अतिरिक्त स्थानवाचक क्रियाक्रियाओं के साथ /ताणी/, /जूं का तथा कालवाचकों के साथ /मं/, /ताणी/, /~~मं~~ का प्रयोग सामान्यतः पाया जाता है । इनके उदाहरण इस प्रकार हैं -

/घरे मं बेहो ऐ/ "घर में बैठा है" ।

/हाटेम पररो ऐ/ "हाट में घूम रहा है" ।

/बाडेर हेट बेसेस / "पेड़ के नीचे बैठना" ।

/घरेताणीजो/ "घर तक जा"

स्थानवाचक क्रिया - क्रियाओं के पश्चात् - केवल /-ताणी/, /-जूं का प्रयोग होता है । जैसे -



/वताणी गो/ "वहाँ तक गया" ।

/येताणी जायो/ "यहाँ तक जाया" ।

/उमर जू धोळो कर/ "उमर तक सपेद कर" ।

/बेट जू मत जो / "नीचे तक मत जा" ।

कालवाचक क्रिया विशेषणों के साथ - केवल /-गं/ तथा

/-ताणी/, /जू/ का प्रयोग होता है । जैसे -

/खेळा मं जायूं / "समय से जाऊंगा" ।

/सवारे ताणी- / / सवारे जू जाजायूं / "कल तक जा जाऊंगा"

/वाज सवारे मं तमार रषया दे दिदूं/ "वाज कब मैं तुम्हारे रुपये  
दे दूँगा ।

कुछ विशिष्ट अर्थों में भी ये चिन्ह प्रयुक्त होते हैं :

/घरेमं/ "घर के भीतर" ।

/मां बेटो मं परेस छ / "मां बेटो में घुस है" ।

/एक अपना मं दो आम्बा/ "एक जाने में दो आम" ।

/एक छटा मं पर जायूं / "एक छटा में फिर जाऊँगा ।

इसी प्रकार /पर/ के भी कुछ विशिष्टार्थक प्रयोग मिलते हैं ।

जैसे -

/घर पर/ "घर पर" ।

/ये वाते पर/ "इस बात पर" ।

/अतरा काम करे पर भी लड़ेबी/ "इतना काम करने पर भी  
लड़ती है" ।



5.4. /-ती/ "से" का प्रयोग करण के रूप में संज्ञाओं के साथ तथा  
व्यपदान के रूप में संज्ञा तथा क्रिया विशेषण के साथ होता है ।

उदाहरण :-

/मैं ई काम मार हाते ती कीदो/ "मैंने यह कार्य अपने हाथ से  
किया" ।

/मैं हाटेती निक्का/ "मैं हाट से निक्का" ।

/तू तार गामे ती बायेस/ "तू तेरे गाँव से जाना" ।

/तू बागी ती पाच जा/ "तू बागे की से पीछे जा" ।

/तू उमरे ती हेट जा/ "तू उमर से नीचे जा" ।

/वू हेटेती उमर गो/ "वह नीचे से उमर गया" ।

/बोते ती येते ताणी चाल/ "वहाँ से वहाँ तक चल" ।

/येती ती बोते ताणी जो/ "वहाँ से वहाँ तक जा" ।

अर्थ की दृष्टि से यह क्रिया विशेषणात्मक परसर्ग है । इसके  
कुछ विशिष्टार्थक प्रयोग भी हैं :

/मैं तो ई काम मने ही कीदो/ "मैंने यह कार्य मन से किया" ।

/वू उमरे ती बायो छ, पण माई ती काजो छ/ "वह उमर से  
अच्छा है, पर भीतर से काला  
है" ।

बायो  
/वू दलेती/छ/ "वह दृढ़ से अच्छा है ।

/ई छोटी बोती बाय छ/ "यह लड़की उससे अच्छी है" ।

लुलनात्मक विशेषणों के साथ प्रयुक्त।

/मोती पूछ/ "गुल से पूछो" ।

/से ती बायो रेल/ "सब से अच्छा रेली" [साध] ।



/छा ढ़े दाढ़े ती/ "बहुत दिनों से" ।

/मन क्लायेती काच परयदो/ "मुझे कुताने से क्या परयदा" ।

कुछ क्रियाओं के कर्म के साथ यह कर्मवाचक रूप में भी प्रयुक्त होता है । /तू तो मँती को, मँ समझी/ "तू तो मुझ से कही, मैंने समझी" । संज्ञा कृता सर्वनाम के बीच में प्रयुक्त होकर यह तुलनात्मक विशेषण घटित करता है :

/वू माती जायो छ/ "वह मुझ से अच्छा है" ।

/-से/ तथा विशेषण के बीच जाकर समवन्त विशेषण बनाता है ।  
/छेतो जायो/ "सब से अच्छा" ।

5.5. /-र-/ सम्बन्धवाचक परस्मै का चिह्न है । यह लिंग-वचन प्रत्ययों से युक्त होता है । इसकी रूप रचना इस प्रकार है :-

। -र- । + /-ओ/ = /रो/ "पु. एक. ।

+ /व-ए/ = /रे/ "पु. बहु.; तिर्यक एक. ।

+ /-ई/ = /री/ स्त्री. एक. बहु. ।

उदाहरण :

/रामे रो बन्द/ "राम का बंद" ।

/बोरो घर/ "उसका घर" ।

/तारो छेत/ "तेरा छेत" ।

/बो रे घर/ "उसके घर" ।

/सीता री सीछ/ "सीता की सीछ" ।

इसका लिंग भेद सम्बन्धित वस्तु के लिंग पर निर्भर करता है । अर्थात् की दृष्टि से यह विशेषणात्मक परस्मै है । यह विशेषण के स्थानापन्नों की



संरचना कर सकता है :- छोटा इस स्थिति में विशेषण तथा सम्बन्धवाचक परस्पर से विरचित संज्ञा रूप आ सकते हैं । जैसे - /आधो छोरा/ तथा /सोमला रो छोरा/ "बच्चा लड़का तथा राम का लड़का" । सम्बन्धवाचक परस्पर से अनेक अर्थों का स्रोतन होता है । कतिपय उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायेगी : /लोयेरो बब्द/ "लोहे का केन"   
 ॥विशेषणात्मक॥ ।

प्रत्यय /तलगाणिया रो आदमी/ "तैलगाना का आदमी"

॥निवास का स्रोतन॥

सजीव वस्तुओं के साथ प्रयुक्त होकर यह "अधिकार" का स्रोतन करता है :

प्रत्यय / गावडी रो केल्डा/ "गाय का बड़ड़ा" ।

मृत्यात्मक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति भी होती है :

/दो टकर रो आदमी/ "दो टके का आदमी" ।

कालात्मक सम्बन्ध x दो दांठे रो पामण / "दो दिन का मेहमान।/

करणार्थक प्रयोग भी मिलता है :

/ कूटा रो मारो / " कूट का माटर "

अवस्था का स्रोतन : / चार बरसे रो / " चार वर्ष का "



### 6.5 विशेषण :

विशेषण और संज्ञा की रचना और प्रयोग में कोई विशेष अन्त नहीं मिलता । जिस प्रकार ओकारान्त संज्ञा की रचना विविध व्याकरणिक स्थितियों में बदलती है उसी प्रकार ओकारान्त विशेषणों की भी रचना बदलती है । नीचे जाचो \* बच्छा \* तथा मोटो \* बड़ा \* की रूप रचना दी गई है ।

#### क. मूल रूप पुल्लिंग :

एक वचन : मोटो छोड़ो \* बड़ा छोड़ा \*  
जाचो गाभ \* बच्छा गाधि \*

बहुवचन : जाच छोड \* बच्छे छोडे \*  
जाच गाम \* बच्छे गाधि \*

#### ख. मूल रूप स्त्री लिंग :

एकवचन मोट छोडी \* बड़ी छोड़ी \*  
जाच छोरी \* बच्छी छोरी \*

बहुवचन जाच छोरी \* बच्छी लड़कियाँ \*  
मोट छोड़ी \* बड़ी छोड़ियाँ \*



ग. तिर्यक पुल्लिंग रूप :

|        |   |              |   |                |
|--------|---|--------------|---|----------------|
| एक वचन | : | जाचे घर में  | : | जच्छे घर में   |
| बहुवचन | : | मोटे छोटे पर | : | बड़े छोटे पर   |
|        | : | जाच घरमा     | : | जच्छे घरों में |
|        | : | मोट छोड़ पर  | : | बड़े छोड़ों पर |

घ. तिर्यक स्त्रीलिंग :

|        |   |             |   |                  |
|--------|---|-------------|---|------------------|
| एकवचन  | : | जाच छोटीन   | : | जच्छी लछकी ने    |
|        | : | मोट छोरीन   | : | बड़ी लछकी ने     |
| बहुवचन | : | जाच छोरीयून | : | जच्छी लछकियों ने |
|        | : | मोट छोयून   | : | बड़ी लछकियों ने  |

उपर के उदाहरणों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :

1. पुल्लिंग एकवचन ओकारान्त विशेषण मूलरूप में प्रयुक्त होते हैं ।
2. पुल्लिंग बहुवचन मूलरूप में "ए" अकारान्त विशेषण एकारान्त हो जाते हैं ।
3. पुल्लिंग एकवचन तिर्यक रूप में ओकारान्त विशेषण एकारान्त हो जाते हैं ।
4. तिर्यक पुल्लिंग बहुवचन भी अकारान्त होते हैं ।





5. स्त्रीलिंग मूल और तिर्यक एकवचन और बहुवचन तिर्यक एक वचन और बहुवचन में निर्विवाद रूप से अकारान्त रूप रचना ही रहती है ।

अन्य प्रकार के विशेषणों में इस प्रकार की रूप रचना नहीं रहती । सभी रूप समान होते हैं । उदाहरण के लिए सुन्दर और गरीब जैसे अकारान्त विशेषणों को लिखा जा सकता है । इनकी रचना में लिंग वचन के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता ।

પ્રથમ અધ્યાય :    ..    ..    ..    ..    ..

ક્રિયા વિચાર



०. क्रिया : ..... .

बनजारा बोली में क्रिया की धातुओं, उनके साथ प्रत्ययों के क्रम, इस क्रम से विभिन्न रूपों की संरचना, संयुक्त क्रिया रूपों, तथा अन्य पदग्रामों से क्रिया की व्युत्पत्ति पर विचार किया गया है ।

१. धातु :

क्रिया की धातु का प्रयोग वर्त. कृ. पदसंज्ञा ।-त। से अथवा क्रियार्थक संज्ञा प्रत्यय । - इ । अथवा । -ण । से पूर्व होता है । रूप गठन के अनुसार बनजारा बोली की मूल क्रिया-धातुओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है ।



### 1.1. एकक्षरात्मक धातुएँ :

|        |            |
|--------|------------|
| ✓आ     | "बाना"     |
| ✓छा -  | "छाना"     |
| ✓पी -  | "पीना"     |
| ✓बू -  | "बूना"     |
| ✓छो -  | "छोना"     |
| ✓उठ -  | "उठाना"    |
| ✓बोद - | "बोदना"    |
| ✓बोट - | "लुट्टकना" |
| ✓त्स - | "देखना"    |
| ✓लख -  | "लिखना"    |

### 1.2. द्व्यक्षरात्मक धातुएँ :

ह ब /ब/ पड़ - "घूमना"

|         |          |
|---------|----------|
| ✓उखड़ - | "उखड़ना" |
| ✓पछल -  | "पिछलना" |
| ✓मुकट - | "मुकटना" |

### 1.3. स्व रचना :

मूलतः बनजारा बोली की धातुएँ द्व्यक्षरात्मक से अधिक नहीं होती । इनमें तीन प्रकार के विकार किये जा सकते हैं -

क. स्वर परिवर्तन



स. व्यञ्जन परिवर्तन

ग. प्रेरणार्थक प्रत्यय

### 1.3.1. स्वर परिवर्तन :

कुछ मूल एकाक्षरात्मक धातुओं के मूल द्वस्व स्वर को दीर्घ करके तथा द्व्यक्षरात्मक धातुओं के द्वितीय द्वस्व स्वर को दीर्घ करके नवीन धातु-रूप प्राप्त किये जाते हैं। अर्थ की दृष्टि से इस परिवर्तन के कारण दो अन्तर उपस्थित हो जाते हैं।

1. मूल कर्मवाच्य धातु भाववाच्य हो जाते हैं और

2. मूल सकर्मक धातु सकर्मक हो जाती है।

### क - एकाक्षरात्मक धातुओं का स्वर परिवर्तन :

|   |   |                   |                    |
|---|---|-------------------|--------------------|
| अ | आ | ✓ गद् - "गदना"    | ✓ गाद् - "गादना"   |
|   |   | ✓ धम - "स्कना"    | ✓ धाम - "रोकना"    |
|   |   | ✓ दब - "दबना"     | ✓ दाब - "दबाना"    |
|   |   | ✓ पळ - "पलना"     | ✓ पाळ - "पालना"    |
|   |   | ✓ पड़ - "परना"    | ✓ पाड़ - "पाड़ना"  |
|   |   | ✓ टळ - "जलग होना" | ✓ टाळ - "जलग करना" |

|   |   |                 |                     |
|---|---|-----------------|---------------------|
| ऊ | औ | ✓ पूट - "फूटना" | ✓ फोड़ - "फोड़ना"   |
|   |   | ✓ लूट - "दूरना" | ✓ तोड़ -            |
|   |   | ✓ छूट - "छूटना" | ✓ छोड़ना - "छोड़ना" |

|   |   |    |                  |                   |
|---|---|----|------------------|-------------------|
| उ | ऊ | ऊँ | ✓ फूँ - "फूँटना" | ✓ फूँ - "फूँटना"  |
|   |   |    | ✓ पूर - "पूरना"  | ✓ पूरना - "पूरना" |



इ ए /सिक - "सिकना"      /सेक - "सेकना"

/चिर - "चिरना"      /चोर - "चोरना"

उ ओ /ठूक - "ठूकना"      /ठोक - "ठोकना"

/छट - "पिसना"      /छोट - "छोटना"

इ ई /लिष - "लिषना"      /लीष - "लीषना"

/पिस - "पिसना"      /पीस - "पीसना"

द्रुस्व स्वर के दीर्घकरण के अतिरिक्त एक और परिवर्तन मिलता है। उच्च स्वर /ई/ निम्नस्वर /ए/ में परिवर्तित हो जाता है और उच्च /ए/ निम्नस्वर ओ में परिवर्तित हो जाता है।

जैसे -

इ ए /दोख - "दोखना"      /देख - "देखना"

छ. द्व्यक्षरात्मक धातुओं का स्वर परिवर्तन :

बनजारा बोली में मूलतः द्व्यक्षरात्मक धातुओं में दोनों स्वर द्रुस्व हो जाते हैं। इनमें से प्रथम स्वर सुरक्षित रहता है। केवल द्वितीय स्वर दीर्घ कर दिया जाता है। द्वितीय स्वर सदा ही - अ- होता है। प्रथम स्वर कोई द्रुस्व स्वर हो सकता है।

-अ- वा - के उदाहरण ये हैं -

/निकल - "निकलना"      - /निकाळ - "निकालना"

/बिगाड़ - "बिगाड़ना"      - /बिगाळ - "बिगाड़ना"



✓ सम्हर - काटना - ✓ सम्हार - "कटवाना"

✓ सम्भर - संभलना - ✓ सम्भार - "संभालना"

### 1.3.2. व्यन्जन परिवर्तन :

व्यन्जन परिवर्तन में केवल एक प्रवृत्ति मिलती है - ट - ड र ।  
इस परिवर्तन के साथ - ऊ - -वो - संलग्न रहता है । उदाहरण -

✓ दट - "दटना" + [ - वो ऊ - ] + [ ड - ट ] =

✓ तोड़ - "तोड़ना"

✓ छट - "छटना" + [ -वो ह ] + [ -ड ट ] = छोड़ -

"छोड़ना"

✓ फट - "फटना" + [ -वो ह ] + [ -ड ट ] ✓ फोड़ -

"फोड़ना"

इस प्रकार स्वर परिवर्तन के साथ व्यन्जन परिवर्तन भी उक्त धातुओं की रूप रचना में सहायक होता है ।

एक व्यन्जन परिवर्तन जोर मिलता है, जिसका कारण पद वैज्ञानिक परिस्थितियाँ हैं ।

✓ जा - "जाना" ग-

इनमें से द्वितीय का प्रयोग भूतकालीन कृत्य प्रत्यय के साथ होता है और प्रथम का अन्यत्र होता है ।

### 1.4. धातुओं के साथ प्रत्ययों का योग :

धातुओं के साथ प्रत्ययों का योग करके प्रेरणार्थक, क्रियार्थक संज्ञाओं, वर्त. कृदन्ती, भूतकालीन कृदन्तों, पूर्वकालीन कृदन्तों, आवाधक



तथा मूल कालों की संरचना होती है । इन पर नीचे विचार किया गया है -

#### 4.1. प्रेरणार्थक रूपों की संरचना :

बनजारा बोली में दो प्रेरणार्थक प्रत्यय मिलते हैं :

प्रथम प्रेरणार्थक : [ -वा ] तथा द्वितीय प्रेरणार्थक [ -वा ] ।

इन प्रत्ययों का संयोग धातुओं के साथ होता है :  $\sqrt{\text{क}} + [ -वा ] = \text{प्रथम प्रेरणार्थक}$   $\sqrt{\text{क}} + [ -वा ] = \text{द्वितीय प्रेरणार्थक}$  । इनसे रचित रूपों के उदाहरण -

क - एकाक्षरात्मक धातुएँ

$\sqrt{\text{क}} - \text{"बनना"} / \text{क} + [ -वा ] = \sqrt{\text{क}}\text{वा} - \text{"बनाना"}$

$\sqrt{\text{बन}} + [ -वा ] = \sqrt{\text{बन}}\text{वा} - \text{"बनवाना"}$

$\sqrt{\text{पेन}} - \text{"पैसना"} / \text{पेन} + [ -वा ] = \sqrt{\text{पेन}}\text{वा} - \text{"पैसाना"}$

$\sqrt{\text{पेन}} + [ -वा ] = \sqrt{\text{पेन}}\text{वा} - \text{"पैसाना"}$

ख - द्वाक्षरात्मक धातुएँ :

$\sqrt{\text{लटक}} - \text{"लटकना"} / \text{लटक} + [ -वा ] = \sqrt{\text{लटक}}\text{वा} - \text{"लटकाना"}$

$\sqrt{\text{लटक}} + [ -वा ] = \sqrt{\text{लटक}}\text{वा} - \text{"लटकना"}$

$\sqrt{\text{पिछल}} - \text{"पिछलना"} / \text{पिछल} + [ -वा ] = \sqrt{\text{पिछल}}\text{वा} -$

$\text{"पिछलना"} / \text{पिछल} + [ -वा ] = \text{पिछलवा},$

$\text{"पिछलना"}$

एकाक्षरात्मक धातुएँ व्यन्जनान्त होने पर उमर वाले स्वर गुण करती हैं । इस द्वाक्षरात्मक रूपों में द्वितीय प्रेरणार्थक प्रत्यय के साथ प्रथम प्रेरणार्थक का संज्ञित रूप विषका रहता है ।





जैसे -

/परधम्वा/ = √ + व + [ -वा ] ।

कुछ क्रियाओं की धातुओं के तीसरे स्वर भी प्राप्त होते हैं ।

जैसे - विशेष -

√ दीख - + 1 -ए - ई - √ = √ देख - "देखना"

√ दीख - + 2 -जा ] = दिखा - ] "दिखाना"

दीख - + [ वाइ ]

एक तीसरा स्वर और मिलता है । दीर्घ स्वरान्त एकाक्षरात्मक धातुओं के प्रथम प्रेरणार्थक स्वर नहीं मिलते, केवल द्वितीय प्रेरणार्थक स्वर ही प्राप्त होते हैं । जैसे -

/ गा - "गाता" + √-व- - जा- √ + [ -वा ] =

√ गवा - "गवाना"

#### 1.4.2. वर्तमान कालीन कृदन्त :

क्रि. धा. + [ -त- 1 = व. कृ. ] इसके पश्चात् - लि.वच. प्रत्ययों का योग किया जाता है : [ -जा ] = पृ. एक., [ -ए ] = पृ. बहु.; । -ई ] = स्त्री एक. [ ई ] = स्त्री. बहु. इस प्रकार है -

क्रि. धा. + [ -त- ] + [ -जो ] = पृ. एक.

[ -ए ] = पृ. बहु.

[ - ई ] = स्त्री. एक.

[ - ई ] = स्त्री. बहु.



उदाहरण - / देखता / ✓ देख + [ -त- ] + [ -ओ ] "देखता"  
 / देखते / ✓ देख + [ -त- ] + [ -ए ] "देखते"  
 / देखती / ✓ देख + [ -त- ] + [ -ई ] "देखती"  
 / देखती / ✓ देख + [ -त- ] + [ -ई ]

जब बहुवचन स्त्रीलिंग का प्रयोग सामान्यतः काल रचना में नहीं होता। इसी प्रकार अन्य क्रियाओं के रूप छिटित हो सकते हैं।

#### 1.4.3. भूत कृदन्त :

धातु के साथ लिंगवचन प्रत्ययों की जोर से भूतकालीन कृदन्त की रचना की जाती है। लिंग वचन प्रत्यय ये ये हैं :-

पु. एक. = [ ओ ], पु. बहु. = [ ए ],

स्त्री. एक. = [ ई ], स्त्री. बहु. = [ ई ]

। -ओ। प्रत्यय ग्रहण करने से पूर्व एकाक्षरात्मक धातु प्रातपदिक् के साथ -इ जुड़ जाता है और ओ प्रत्यय संधि नियम से यो हो जाता है : जैसे -

✓ आ - आयो

✓ पी - पीयो

✓ से - लीयो

✓ छो - छोयो

द्व्यक्षरात्मक धातु इस प्रत्यय से ग्रहण कर लेने से पूर्व अविकृत रहती है।  
 जैसे -

पकड़ + ओ = पकड़ो, जकड़ + ओ = जकड़ो।

अन्य प्रत्ययों के पूर्व भी धातु अविकृत ही रहती है। जैसे -



### एकाक्षरात्मक :

|              |   |                              |
|--------------|---|------------------------------|
| ✓ + [ -ए ]   | = | पु. बहु. / चले / "चले"       |
| + [ -ई ]     | = | स्त्री. एक/चली / "चली"       |
| + [ -ई ] + - | = | स्त्री. बहु. / चलीं / "चलीं" |

- ए और [ -ई ] के संयोग से पूर्व धातु अविकृत भी रहता है ।

### 1.4.4. पूर्व कालिक कृदन्त :

इसकी रचना धातु के साथ प्रत्यय रूप का योग करके होती है । यह प्रत्यय [ - न ] है । इसका एक स्थान्तर । लेन । है । पहले रूप का प्रयोग स्वरान्त धातुओं के साथ होता है । जैसे -

|          |            |
|----------|------------|
| / जाना / | "जाकर गया" |
| / खाना / | "खाकर गया" |
| / पीना / | "पीकर गया" |

दूसरे रूप । - लेन । का प्रयोग व्यन्जनान्त धातुओं के साथ होता है । जैसे / कर लेन गो / "कर कर गया", / देख लेन गो / "देखकर गया" ।

### 1.4.5. आज्ञार्थक :

धातुओं के साथ आज्ञार्थक प्रत्ययों का योग करके आज्ञार्थक रूपों की रचना की जाती है । मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के आज्ञार्थक रूप ही मिलते हैं । -

क्रि. छा. + [ आज्ञा. ] = आज्ञार्थक



- ङि. धा. + [ - इ ] = मध्य. एक. / तू देखा /  
 + [ औ ] = मध्य. बहु. / तम देखो /  
 + [ -ए ] = अन्य. एक. / राम देखे /  
 + [ -ऐ ] = अन्य. बहु. । देखे ।

उत्तम पुरुष का वाचार्थक रूप नहीं होता । केवल अभिप्राय भाव होता है । इसका प्रत्यय । - इ । उत्तम. एक. बहु. । -ऐ । तथा पुरुष के द्योतक नहीं है; केवल वचन के द्योतक है ।

#### 1.4.6. भविष्य वाचार्थक रूप :

मध्यम पुरुष = एक. बहु. के भविष्य वाचार्थक रूप होते हैं । इस प्रकार हैं -

✓ + [ -न- ] + [ औ ] = एक वचन

/ -न / = क्रियार्थक संज्ञा

/ - वा / = वाचार्थक

उदाहरण :

/ तू सवार करना / " तू कल करना "

/ तम सवार जाने / " तम कल जाना "

#### 1.4.7. अभिप्रायार्थक रूप :

उत्तम पुरुष एक. बहु. के अभिप्रायार्थक रूप क्रमाः /ऊँ/ तथा /ए/ के संयोग से सम्पादित किये जाते हैं । इनमें से [ -इ ] उत्तम पुरुष एक. प्रत्यय है । क्योंकि इसका प्रयोग अन्य पुरुष बहुवचन में भी होता है ।



उदाहरण :-

/ बेस - / बेसू / "बटू"      / बेसे / "बेठे"

/ लख - / लखू / "लिया" / लखे / "लिये"

इनमें /-ई/ वर्त. उत्तम. एक. तथा /ऐ/ वर्त. बहु. सहायक  
क्रियाएँ हैं ।



### 1.5. काल रचना :

#### 1.5.1. निश्चयार्थ :

1.5.1.1. वर्त. निश्चयार्थ रूप इस प्रकार घटित होता है :

॥क॥ ✓ + पुरुष वच. प्रत्यय = वर्तमान निश्चयार्थ

जैसे :- ✓ चान् + [-ओ] = /चानो/ "चलो" ॥मध्यम/बहु॥ ॥उत्तम.एक॥  
एक.

✓चान् + 2-ओ ] = /चालो/ "चलो" ॥ मध्य. बहु॥

॥ख॥ ✓ + वचन प्रत्यय = वर्तमान निश्चयार्थ

जैसे :- ✓चान् + [-ए] = /चाले/ "चले" ॥मध्य.अन्य.एक॥

✓चान् + [-ए] ] = /चालें/ "चलें" ॥मध्य.अन्य.बहु॥

यह प्रत्ययों के आधार पर घटित काल है ।

1.5.1.2. भविष्य निश्चयार्थक - भविष्य निश्चयार्थ की रचना का सूत्र

इस प्रकार है :- ✓ + [-इ-] + [ उं ] उत्तम. एक.

[ -आ ] उत्तम.बहु.

[-स ] मध्यम.एक., [ -ओ ] मध्यम.बहु., [-ये ] अन्य. एक. तथा बहु.

उदाहरण :

मै/म चान् / "मै चहुंगा", /हम चान् / "हम चलेंगे", /तु चालीस/ "तु चलेंगा",  
/तम चान् / "तु चलेंगे", /वु चान् / "वह चलेंगा",  
/वे चान् / "वे चलेंगे",

इस रचना में विशेष रूप से ध्यान देना है कि ॥1॥ लिंग का द्योतन नहीं होता है ॥2॥ वचन का द्योतन केवल अन्य पुरुष की रचना में नहीं होता है । ॥3॥ भविष्य भावक प्रत्यय 1-इ-1 हैं, जो सभी कृ रूपों में मिलता है ।



1.5.1.3. भूतनिश्चयार्थ की रचना : इसका सूत्र इस प्रकार है ।

✓ + [-बो-] पृ. एक., [-ए-] पृ.बहु., [-ई-] स्त्री.एक.  
[-ई-] स्त्री.बहु.

उदाहरण :

/मं चालो/ /"मैं चला"/ /हम चाले/ /"हम चले"/  
/तु चलो/ /"तु चला"/ /"तू=चला"/ /तम चाले/ /"तुम चले"/  
/वु चाले/ /"वह चले"/ /वे चाले/ /"वे चाले"/  
/मं चाली/ /"मैं चली"/ /हम चालीं/ /"हम चले"/  
/तु चाली/ /"तु चली"/ /तम चालीं/ /"तुम चली"/  
/वु चाली/ /"वह चली"/

इस सम्बन्ध में यह बातें द्रष्टव्य हैं :- ॥1॥ पुरुष का चोतन किसी रूप में नहीं होता । ॥2॥ केवल वचन और लिंग का चोतन होता है । ॥3॥ लिंगवचन प्रत्यय धातु के साथ संलग्न किये जाते हैं ।

1.6. कृदन्तीय रचना :

1.6.1 वर्तमान कालीक रचना : इसका सूत्र यह है :-

/+ लिंग वचन या पुरुष प्रत्यय + वर्तमानकालीक सहायक क्रियाएँ =  
वर्त. कृदन्तीय रचना

✓ चाल + ऊँ + चूँ = /चालूँ/ ॥मैं॥ चलता हूँ"  
✓ चाल + ओ + चाँ = /चालायाँ/ ॥हम॥ "चलते हैं"  
✓ चाल + ए + ची = /चाले ची/ ॥तु॥ "चलता है"  
✓ चालू + ओ + चा = /चालाचो/ ॥तुम॥ "चलते हो"  
✓ चाल + वा + ची = /चालाचे/ ॥वह॥ "चलता है" ।



/घाल + जा + चे = /घालाचे/ [वे] "चले है" ।

द्रष्टव्य यह है कि सहायक क्रियायें भी लिंग वचन प्रत्यय द्वे से युक्त होती हैं ।

1.6.2. भूतकालीक कृदन्त रचना : इसकी <sup>सूत्र</sup>रचना प्रकार है :-

✓ + लिंग वचन प्रत्यय + भूतकालीक सहायक क्रिया = भूत.कृदन्तीय रचना  
उदाहरण इस प्रकार है :-

✓घाल + जो + तो = /घालोतो/ [मैं, तू, वह] "चला था" ।

✓घाल + ए + ते = /घालेते/ [हम, तुम, वे] "चले थे" ।

✓घाल + ई + ती = /घलीधी/ [मैं, तू, वे] "चली थी" ।

✓घाल + ई + ती = /घली थी/ [मैं हम, तुम, वे] "चली थी" ।

द्रष्टव्य यह है कि सहायक क्रियाएँ भी लिंग वचन प्रत्ययों से युक्त होती हैं ।

1.7. वर्तमान पूर्ण निश्चयार्थ : इसकी सूत्र रचना इस प्रकार है :-

✓ + भूतकालीक कृदन्तीय रचना + सहायक क्रिया

जैसे :- ✓मैं चालोचु/ "मैं चला हूँ", /हम चाले चा/ "हम चले हैं"

/तुम चाले चो/ "तुम चले हैं" /वू चाले चा/ "वह चला है"

/वे चाले धा/ "वे चले हैं"/

1.8 भूतकालीक पूर्ण निश्चयार्थ : संरचना का सूत्र इस प्रकार है :-

भूतकालीक कृदन्तीय रचना + सहायक क्रिया उदाहरण इस प्रकार है:-

/मैं चालोतो/ "मैं चला था" /, /हम चालेते/ "हम चले थे"/

/तुम चालेते/ "तुम चले थे"/, /वू चालोतो/ "वह चला था"/

/वे चालेते/ "वे चले थे"/





### 1.9 क्रियाधर्म संज्ञा के साथ साथ रचना :

क्रियाधर्म संज्ञा की रचना इस प्रकार होती है -

/ + ण् व्यञ्जनान्त धातुओं के साथ ऊष्मा वण {केवल स्वरान्त धातुओं के साथ} + । -बों । = क्रियाधर्म संज्ञा जैसे - /करणो/ "करना",  
/जावणो/ "जावना"

इस क्रियाधर्म संज्ञा रूप के साथ वर्तमान कालीक सहायक क्रिया जोड़ कर वर्तमान रूप की और भूतकालीक सहायक क्रिया जोड़कर भूतकालीक की रचना की जाती है । जैसे -

/मन करणो छ/ "मुझे करना है"

/हमेन रणो छा/ "हमे करना है"

/तोन पदनो छ/ "तुम्हको पदना है"

/तोन पदना छ/

/बोन जावणो छ/ "उसको जाना है"

/उदेन जावणो छ/ "उनको जाना है"

### भूतकालीक रचना :

/मन लखणो वेतोतो/ "मुझको लिखना था"

/हमेन लखणो वेतोतो/ "हमेन लख"

/तोन छावणो वेतोतो/ "तुम्हको खाना था"

/तोन छावणो वेतोतो/ "तुम को खाना था"

/तोन सोवणो वेतोतो/ "उसको सोना था"

/बोन सोवणो वेतोतो/ "उनको सोना था"

जब यह रूप रचना सक्मक धातुओं के साथ होती है तो क्रियाधर्म



संज्ञा की संरचना बदल पाती है जैसे :-  $\sqrt{\text{घर}} + [\text{घर}]$  । इसके साथ सहायक क्रियाओं का संयोग होता है । उदाहरण के लिए :-

/मन एक गीदलोलेर वेतोतो/ "मन को एक गाना गाना था"  
/हमेन तीन पत्ररखल लखेर वेतोतो/ "हमको तीन पत्र लिखने थे"  
/तीन दो जाम्बा छायेर वेतोतो/ "तुम्हको दो जाम खाने थे"  
/तोन एक साकीकेर वेतीती/ "तुम को एक कहानी कहनी थी"  
/घोन एक घर क्वायेर वेतोतो / "उसको एक घर बनाना था"  
/जोन चार कोल जायेर वेतोतो/ "उसको चार कोल जाना था"

## 2. संयुक्त क्रियाएँ : दो प्रधान क्रियाएँ :

संयुक्त क्रिया एक से अधिक क्रियाओं के संयोग से व्युत्पन्न होती है । यह संयोग एक मुख्य क्रिया तथा दूसरी सहायक क्रिया का भी हो सकता है और दो मुख्य क्रियाओं का भी हो सकता है । सहायक क्रियाओं के साथ रहनेवाले रूपों के पर पहले विचार किया जा चुका है । यहाँ दो मुख्य क्रियाओं के संयुक्त रूपों पर विचार किया जा रहा है ।

एक प्रधान क्रिया के पूर्वकालिक कृदन्तों वर्तमान कालिक कृदन्तों, भूतकालिक कृदन्तों, तथा क्रियाार्थ संज्ञाओं के साथ अन्य क्रियाओं का संयोग करके विभिन्न अर्थों को व्यक्त किया जाता है । क्रिया धातु के साथ अन्य क्रिया का संयोग नहीं होता । सन्धि नियम के अनुसार किसी प्रत्यय के लुप्त होने पर ही धातु और संयुक्त क्रिया निकट आ सकती है । सहायक क्रियाओं का अन्त में योग हो सकता है ।

### 2.1. पूर्वकालिक कृदन्तों के साथ अन्य क्रियाओं का संयोग :

पूर्वकालिक कृदन्त प्रत्यय । -इ । है । इस प्रत्यय रूप के साथ



दूसरी मुख्य क्रिया जुड़ती है ।

॥क॥ पूर्वकालिक कृदन्त + /जा - पूर्णता द्योतन । इसमें / जा- के वर्त. भूत.

तथा भविष्य तीनों रूपों का संयोग हो सकता है ।

/देखा/ "देखा" = /दृ + इ + /जा -

/लखा/ "लिखा" = /लृ + इ + /जा -

/छाया/ "छाऊ" = /छा + ई + /जा -

/पीया/ "पीया" = /पी + इ + /जा -

/दिवा/ "देवा" = /दे + इ + /जा -

/लिखा/ "लेखा" = /ले + इ + /जा -

अन्य कातों के उदाहरण यह हैं - /तु देखावेच/ "वह देख जाता है"  
/तु देखायोतो/ "वह देख जाया था", /तु लखावेच/ "वह लिख जायेगा" ।

॥ख॥ पूर्वकालिक कृदन्त + ए + लाग + लिंगसचन प्रत्यय । इसमें लिंग का  
अर्थ अवानक कार्य होता है ।

/वु अब दारु पीय लाग / "वह अब दारु पीने लगा है"

/वु जोन मर मारे लागो/ "वह उसे मारने लगा"

/म छोरा र वडी देखे लागो/ "मे लड़के की ओर देखने लगा हूँ"

॥ग॥ पूर्व. कृद. + उतर - "उतरना" कठिनाई के साथ कार्य की पूर्णता ।

/वु के उतरा / "वह कइ उतरा" /तु तार काम कर उतर/

"तु तेरे काम को कर उतर"

इसके प्रयोग अत्यन्त विरल हैं ।

॥घ॥ पूर्व. कृद. + /छा "छाना" छाने की पूर्णता का भाव होता है । जैसे -

/कुत्रा छोरीन पवड़ छादो/ "कुत्ते ने लड़की पवड़ छीई" ।



/दकाने भावती वू काथि ले छाया/ "दुकान में से वह कुछ ले लावेगी।

/वू सारी जार पीस छाब/ "उसने सारी ज्वार पीस छाई"

॥ड॥ पूर्व. कूद. + १/चद - उमर जाकर सवार हो जाने का भाव इस रूप से व्यक्त होता है -

/वू मार उमर वाचदो / "वह मेरे उमर वा चदा"।

/ई छोरा मार उमर वा चदो/ "यह लड़का मेरे उमर वा चदा"

/वू तावेर नाई मापर वा चदो/ "वह भुड़ार सा मेरे उमर चद लाया"

॥च॥ पूर्व. कूद. + १/चाल - पूर्णता वाचन - जैसे -

/बाटी छा चालो/ "रोटी छा चला" /मन क्त छोड़ चालो/ "मुझे कहा"

/पाणी पी चाल/ "पानी पी चला" छोड़ चला,

/दुध पी चालो/ "दुध पी चला", /मर चालो/ "मर चला"

॥छ॥ पूर्व. कूद. + १/चल - "कलाना" कलपूर्वक कार्य-सम्पन्नता व्यक्त होती है। जैसे -

/वू मोरर चालो/ "वह मोटर चला", /तू रपया दे, चल/ "तू रपया दे चला"

/मैं का कर चालो/ "मैं काम कर चला"

॥ज॥ पूर्व. कूद. + १/नाक : पूर्ण वाचन। जैसे -

/मैं मार काम कर नाको/ "मैं अपना काम कर चुका"

/मैं लकड़ी काट नाको/ "मैं लकड़ी काट चुका"

/वू एक दाड़े मां काम कर नाको/ "वह एक दिन में काम कर चुका"

/काट नाक/ "काट डाल"

॥झ॥ पूर्व. कू. + १/जो = पूर्णता वाचन :/ काम कर जो/ "काम कर जा"

/बाटी छाई जो/ "रोटी छाई जा", /मत एक रपया दे जो/ "मुझे एक

रपया दे जा"



/समाजो/ "समा जा"

॥व॥ पूर्व. कृ. + १/द=पूर्णता- वाचन - जैसे -

/मार वासु इसली लाद/ "मेरे लिए इसली ला दे"

/मार वासु एक जाम्बा लाद/ "मेरे लिए एक जाम लादे"

/तू जाबोसो एक गीद बोलद/ "तू एक जब्बा सा गीत गादे"

/पामड़ी रंग दा/ "घुनरी रंग दे", /छोसे माइती रपया काइदा/

"जेब में हथ से रुपया निकाल दे", /मन ले से दा/ "मुझे बैठने दे"

॥ट॥ पूर्व. कृ. भक ४/ पड़ - "पड़ना" = पूर्णता वाचन तथा अवानक घटना ।

/घोडे पर खी उतर पड़ो/ "घोडे पर से उतर पड़ा" ।

/वू वाचडी माँ उतर पड़ो/ "वह कुवाँ में उतर पड़ा" ।

/वू छोरीन दकन इस पड़ो/ "वह लड़की को देखकर इस पड़ा ।"

/वू वोपर पड़ो/ "वह उस पर गिर पड़ा" ।

॥ठ॥ पूर्व. कृ. + १/पी : - इसका प्रयोग क्रिया विशेषणरूप में होता है ।

/तार तू भरन पी/ "तपने आप पत्नी भर कर पी"

/सातुर टाँग घोन पी/ "सास के पैरों को धोकर पी"

/गुरुर टाँग घोन पी/ "गुरु के वरण धोकर पी"

इस रूप का प्रयोग भी विरल है ।

॥ड॥ पूर्व. कृ. + १/पूँ : ~~बहुलक~~ "पहुँचना" किसी बात पर जल देने के लिए

कतका प्रयोग होता है । प्रयोग क्रिया विशेषणरूप में है ।

/म घर जातेई वू घर आ पूँघरे/ में घर जाते ही वल आ पहुँचा ।

/वू दाड़ी मटाई छायेन जा पूँघ / "वह रोज मिठाई छाने आ पहुँचता है ।



॥८॥ पूर्व. कृ. + १/पसी - क्रिया विशेषणात्मक प्रयोग ।

/ एक कत जान पसी / "यहाँ कहाँ जा पसी"

/ हण्णी जाके माँ जा पसी / "धिरण कम जाल में जा पसी"

॥९॥ पूर्व. कृ. + १/बेट - ब्रह्मत्यागित कार्य-पूर्णता । जैसे -

/ तु भिया माँद काम कर बेटो / "तु भाई बुरा काम कर बेटा"

/ तु मार घर जा बेटो / "वह मेरे घर जा बेटा"

॥१०॥ पूर्व. कृ. + /मर - क्रिया विशेषणात्मक प्रयोग । घृणा या क्रोध कर भाव इसमें सम्मिलित रहता है । जैसे -

/ कीत जान मर / "क्यों और जा मर"

/ धेत क्सेन जामरो / "यहाँ क्यों जा मरा"

/ तार बाड़ी रो मरिया / "तेरी माँ रो मरेगी"

/ बादा छो मरो / "ज्यादा खा मरा"

॥११॥ पूर्व. कृ. + १/मेल "रखना" पूर्णता वाचन होता है ।

/ भं जालुं केतुणी काम कर मेल / "हैं वालुं जब तक काम को कर रखना"

/ मं तीन बाँण के मेली / "मैंने तुझे से पहले ही कह रखी थी"

॥१२॥ पूर्व. कृ. + १/ला "साना" इसमें भी कार्य की पूर्णता का भाव निहित रहता है । जैसे -

/ ई काम करला / "इस काम को कर ला" / लड़-बड़ करला / "जल्दी कर ले"

/ छह के सी पानी भरना / "घटनी पीतकर ला"

/ बाटी कर ला / "रोटी बनाकर ला"

॥१३॥ पूर्व. कृ. + १/सज् = "सकना" क्षमता वाचक

/ ये जा सकी / "ये जा सका", / ये जा सकी / "ये जा सकता"



/तू जाती रुपया कोनी ले सको/ "तू उससे रुपया नहीं ले सका" ।

उक्त सभी उदाहरणोंमें मूल क्रिया पहले जाती है और विशेषता दोतक क्रिया पीछे ।

2.2. वर्त. कृद. के साथ अन्य मुख्य क्रियाओं का संयोग - वर्त. कृद.

के साथ मुख्य क्रिया तथा किसी सहायक क्रिया का योग होता है ;

2.2.1. वर्त. कृद. + / जा - "जाना" इसमें निरन्तरता का भाव निहित रहता है । जैसे -

/काम करतो जा/ "काम को करता जा"

/बाणी पीतो जा/ "पानी पीते जा"

/गावडी चरातो जा/ "गाय को चराते जा"

/बसतो जा/ "बसता जा"

/बाँकी मीचन जा/ "बाँछ बन्द कर जा"

2.2.2. वर्त. कृद. + 1/छा 2 इसका प्रयोग क्रिया विशेषात्मक है ।

जैसे - /बू हनूज मारव छावच/ "वह तो ऐसे ही मारता जाता है ।

इसके आशार्थक और भूतकालिक रूप नहीं बनते ।

2.2.3. वर्त.कृद.+ 1/ चालू - इसमें निरन्तरता और पूर्णता का भाव निहित रहता है । क्रिया विशेषात्मक रूप में भी इसका प्रयोग होता है । जैसे - /ई कामेन करतो चाल/ "इस काम को करता चल"

॥पूर्णता॥

/बू वाटे पर आम्बा छातो चालो/ "वह रास्ते में आम खाता चलता है

॥क्रिया विशेषात्मक॥

/बू बाटी खाती चालेवी, वजी वाते क्ती चालेवी/ "तू रोटी खाती चलती है और बात करती चलती है । ॥निरन्तरता॥



2.2.4. वर्त. कृद. + / जो - "जा" - पूर्णता, निरन्तरता का भाव  
निहित रहता है क्रिया विशेषणार्थक प्रयोग भी होता है । जैसे -

/बाटी वाटे परज खान जो/ "रोटी रास्ते में ही खाता जा"  
/तू हँ लोटा भिन्नर घर वेतो जो/ "तू यह लोटा भाई के घर देते जाना"  
/तू बचारतो जो/ "तू बोलता जा", /तू तार काम करतो जो/ "तू अपना  
काम करता जा"

2.2.5 वर्त. कृद. + / पर "पिर" - इसमें निरन्तरता का भाव  
निहित रहता है । जैसे - /तू केतो पर, तार केणेली काय वीया/  
"तू कबता पिर तेरे" कहने से क्या होता है"

/काम काई करेलनी, वेवडी -वोवडी पर करेचो/ काम कुछ करता नवीं,  
छह-उधर घूमता पिरता है"।

/एक धापडेती रौतो फरीस/ "एक धप्पड़ के मारे रौता पिरैगा"  
/रौतो पर काय करलोस/ "रौता पिर क्या कर लेगा"

2.2.6 वर्त. कृद. + / रह - इसमें निरन्तरता का भाव निहित रहता है ।  
जैसे -

/तू बापणो काम करतो रह / "तू अपना काम करता रहे"  
/तू जातो रह / "तू जाता रहे" /वूनहमेसा जातो रह/ वह अपनी बात  
कहता रहता है ।

/तू जा रहोच/ "वह जा रहा है"

2.3. भूतकालिक कृदन्तों के साथ क्रियाओं का संयोग :

निम्नलिखित धातुओं के भूतकालिक कृदन्तों के साथ / जा-क्रिया का  
संयोग हो सकता है ।





2.3.1. भू. कृ. + १/ चल

/हं बाम्बा छायेन चलो जायो/ "मैं बाम छाने चला जाया"  
 /म बाम्बतेई चलो जायो/ "मैं सुनते ही चला जाया"  
 /तू मार दाई कसेन चलो जायो/ "तुम मेरे पास क्यों चला जाया"  
 /वू तार दाई दाड़ी चली जाय/ "वह तुम्हारे पास रोज चली जायेगी"  
 यह प्रयोग भी क्रिया-विशेषणात्मक है ।

2.3.2. भू. कृ. + १/लाग "लग" :

/मार लारज लागन जावच/ "मेरे साथ ही लगा जाता है"  
 /छोरी तार लारज लागन जाई/ "लड़की तेरे साथ ही लगी जाई"  
 /वू जोर भाईर लार लागन जाई/ "वह उसके भाई के साथ लगी जाई"

2.3.3. भू. कृ. + १/ फास "दौड़"

/दुतार नाम सामकन घासन जाय/ "वह तो तेरा नाम सुनकर दौड़कर  
 जायेगा ।  
 /पीसा लेकतो घासन जा/ "पैसे लेना हो तो दौड़ा जा"

इ=उ=क= प्रयोग क्रिया विशेषणात्मक है ।

2.3.4. भू. कृ. + १/ बंध "बांधना" -

/बकद राडी=बैठ म बंध जायो/ "कैल रस्से में बांध जाया"  
 /वू वेतड़र लार बंध जायो/ "वह दुल्हा के साथ बांध जायो"

2.3.5. भू. कृ. + १/ दब "दबना" -

/हं कुडडी कतेती दब जाई छ/ "वह मुर्गी कुहीं से दब जाई है"  
 /हं छोरी बोझा ती दबगी च/ "वह लड़की बोझ से दब गई है"  
 यह प्रयोग अत्यन्त विरल है ।



2.3.6. प्रत्येक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त के साथ / कर का संयोग किया जा सकता है। इसमें संयुक्त रूप में निरन्तरता का भाव निहित रहता है। जैसे - /तू दाढ़ी ईज वाते ना करच/ "वह रोजाना इसी बात को कहता है" /तू हमेसा मादी वातेज करेवी/ "तू हमेशा बुरी बात ही कहा करता है।

2.3.7 प्रत्येक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त के साथ / क जा का संयोग करके क्षमता सूचक कर्मवाच्य रूप बनाए जाते हैं। जैसे - /वोपर बाटी छाव जायेनी/ "उस पर रोटी नहीं खाई जायेगी",

2.3.8. भूतकालिक कृदन्त + / रह - "रहना" : इसमें भी निरन्तरता का भाव निहित रहता है। जैसे -

/ते इतेज बिसन रह/ "तू यहीं बैठा रह"

/तू वापण छो कामेस लागी रह/ "तू अपने काम में लगा रह"

✽

2.4. क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ क्रियाओं का संयोग :

2.4.1. क्रियार्थक संज्ञा + / चाह - "हम चाह" इन रूपों में क्रियार्थक संज्ञा कर्म रूप में रहती है। अर्थ में इच्छा वाचकता रहती है। जैसे - /मं जाविणो चाउध/ "मैं जाना चाहता हूँ" /हम बाटी छानो चावरेच/ "हम रोटी छाना चाहते हैं" 2

2.4.2. क्रियार्थक संज्ञा + / दा: "दो" ये रूप अनुसर्त्यक होते हैं। जैसे - /मन जावदा/ "मुझे जाने दो", /वोन चाले दा/ "उसे चलने दो" /येन बोलैदा/ "इसे बोलने दो"

2.4.3. क्रियार्थक संज्ञा + / पड़ - "पड़ना"। इसमें क्तात् या अनिवार्य का भाव निहित रहता है। जैसे - /मन ई काम करनो पड़ो/ "मुझे यह काम करना पड़ा", /तोन वाया मां जाणो पड़्या/ "तुझे ब्याह में जाना पड़ेगा।



उपर के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बनजारा क्रियाओं की संरचना प्रायः हिन्दी की राजस्थानी और ब्रजो दो बोलियों के समान ही होती है । ब्रजो की भान्ति ~~अरे/अर/उ~~ अकारान्त प्रत्यय भी काम में आते हैं और राजस्थानी की भान्ति अकारान्त प्रत्यय भी । ब्रजो और राजस्थानी के भान्ति बनजारा बोली में भी संयुक्त क्रियाओं को बहुविध प्रयोग होता है । किसी अन्य भाषा का प्रभाव क्रिया की संरचना पर नहीं पड़ा है । बनजारी क्रियाओं की रचना में अपना कुछ वैशिष्ट्य मिलता है ।

....

तृतीय खण्ड :                      ..                      ..                      ..

लोक साहित्य

ଅନ୍ତରାଳ ଉପାଦାନ :

.. .. ..

ଲୋକ ଶାସ୍ତ୍ର : ସାମାନ୍ୟ ବିଷୟ

.....



## ० लोक :

"लोक", संस्कृत की लोक-कर्म धातु में " छ " प्रत्यय लगाने से बना है। इस धातु का अर्थ है देना और " लोक " शब्द का अर्थ है देखने वाला, अतः वह समस्त जन समुदाय जो इस कार्य को करता है, "लोक" कहलाता है।<sup>1</sup>

"लोक" शब्द अनेक रूपों एवं अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसकी परंपरा अत्यंत प्राचीन है। जन सामान्य के अर्थ में 2<sup>2</sup> तथा लोक-व्यवहार, जीव तथा स्थान के अर्थ में अनेक स्थानों पर ऋग्वेद में इसका प्रयोग हुआ है।<sup>3</sup> वेदों से लेकर उपनिषदों, महाभारत, गीता आदि ग्रंथों में लोक शब्द उपलब्ध है। ऐतरेयोपनिषद में भी इसका प्रयोग भूतन के अर्थ में हुआ है।<sup>4</sup>

आर्यों में " लोक " शब्द का प्रयोग " वैदिक " अथवा " शास्त्रिक " के अर्थ में होता था, किंतु आगे चलकर लोक शब्द वैदिक संस्कृति की संकुचित सीमा तोड़कर ऊँचा उठ गया। गीता में लोकशास्त्र तथा लौकिक नियमाचारों के संबंध में इसका उल्लेख हुआ है।<sup>5</sup>

1. सिद्धांत कौमुदी, पृ. 417, 'वैदिक' प्रस, संस्कृत ।

2. ऋग्वेद, 3-33-12 ।

3. " नाम्ना आसोदंतरिहं शीष्णी घोः सम्कृत ।

पद्व्या भूमिर्धियाः बीजातथा लोकाः कवच्यन् ।। "

-- ऋग्वेद - 10-90-14 ।

4. ऐतरेयोपनिषद - 1-1-2 ।

5. " अतोऽस्मि लोके वैदे च प्रथितः पूज्योत्तमः । "

-- श्रीमद्भगवद्गीता -- 15-18 ।



सम्राट अंगिक के शिलालेखों में लोक का प्रयोग समस्त प्रजाजनों के लिए हुआ है ।<sup>1</sup> बौद्धों के धर्म विकास में लोक शब्द मानवीय भावों का बोझ बन गया । प्राकृत एवं अपभ्रंश में प्रयुक्त "लोकजता" "लोक यात्रा" पर्व "लोकप्लवक" "लोक प्रवाद" शब्द लौकिक जागरणों का भाव प्रकट करने के रूप में प्रयुक्त हुए । आगे चलकर हिंदी में तुलसीदास जी ने भी लोक और वेद की विरोधात्मक स्थिति प्रकट की है ।<sup>2</sup> लेकिन उपनिषद् काल में वेद और वेदतर संस्कृति की वैदात्मक स्थिति सुप्त हो गई तथा दोनों के सम्मुख से एक विशद सांस्कृतिक चेतना प्रकट हुई ।<sup>3</sup> लोक की परंपरा का अनुगीतन मनुष्य को सर्वदर्शी बनाने की सामर्थ्य रखता है ।<sup>4</sup> अतः लोक शब्द संसार के अनेक रूपों, मानव-समूहों, मानवीय क्रिया कलापों तथा विचार परंपराओं को अपने आप में समाहित करता है ।

"लोक" की व्यापकता व्यक्त करने के लिए भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के चौदहवें अध्याय में अनेक नाट्यकर्मों, लोककर्मों प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है । महर्षि व्यास ने अपनी शतसहस्री संहिता की विशेषताओं का वर्णन करते हुए यह लिखा है कि यह महाभारत ग्रंथ अज्ञान रूपा अंधकार से अंध एवं व्यथित लोक की आँखों को ज्ञानरूपी

1. "अनुवत रासः लोकहिताय गिरिनारः कस्तुर्यत

हि मे सर्वलोकहितं ।" -- अंगिक के शिलालेख, पृ. 174

2. "लोक कि वेद बढेरो ।"

-- तुलसीदास, विनय-पत्रिका, पद 172 ।

3. "बहु कथितो वा अर्थ बहुतो लोकः ।

क एतद् अस्य पुनरी क्ता अपाद् ॥"

-- जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण -3-28 ।

4. "प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः ।"

-- महाभारत - आदि पर्व -1-101 ।



जवन की शक्ताका लगाकर खोल देता है ।<sup>1</sup>

लोक का अभिव्यक्त स्वरूप सामान्य जनसमूह है । डा. कुंज बिहारीदास ने लोकगीतों की परिभाषा बतलाते हुए " लोक " शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है -- " लोकगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसम्य प्रवाहों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप से आदिम अवस्था में निवास करते हैं ।"<sup>2</sup> इस प्रकार लोक का अर्थ सरल, स्वाभाविक मानव समाज है, जिसकी भावनाओं, परंपराओं, क्रियाओं, मान्यताओं एवं विचारों से लोक कल्याणकारी संस्कृति का अविर्भाव सिद्ध होता है ।

आधुनिक साहित्य की नवोन प्रवृत्तियों में " लोक " का प्रयोग गीत, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन-समाज के रूप में होता है, जिसमें पूर्व सन्धि परंपराएँ, भावनार्थ, निवास और आदर्श सुरक्षित हैं ।<sup>3</sup>

वर्तमान काल में लोक शब्द की व्याख्या विविध रूपों में की गई है । पारंपारिक भाषाओं में लोक शब्द का समानार्थी " फोक " शब्द प्रचलित है । सर्व प्रथम थॉमसन ने सन् 1846 ई. में फोकलोर

1. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, चौथा भाग,

प्रस्तावना पृ. 2 ।

2. 'The people that live in more or less primitive conditions outside the sphere of sophisticated influences.'  
Dr. Kunj Bihari Das; A study of Orissan Folklore,  
Introduction, page 1.

3. श्री श्याम परमार : भारतीय लोक-साहित्य, पृ. 11 ।





शब्द का प्रयोग सार्वजनिक पुरावृत्त (Public antiquities) के लिए किया था ।<sup>1</sup> जागे चलकर यही शब्द सर्वमान्य हुआ । धामसन का मत है कि प्राचीन असभ्य और पिछड़ी जातियों के अछिक्किवास, उनके रीतिरिवाज, उनकी पृथार्ण आदि के अवशिष्ट ही जागे सभ्य कहलाने वाली जातियों में प्राप्त हैं ।<sup>2</sup>

अंग्रेजी के फोक शब्द की व्युत्पत्ति जर्मन भाषा के वोक शब्द से हुई है, जो एक ओर अस्तस्कृत जाति और समाज के लिए प्रयुक्त किया गया है तो दूसरी ओर सर्वसाधारण के लिए भी प्रचलित है । इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में " फोक " से आरम्भ आदिम जातियों के कार्य व्यापारों से है । व्यापक अर्थ में यह शब्द सभ्य राष्ट्रों सम्म जनसंख्या के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है । इसका साधारण अर्थ ॥ फोक लोर, फोक म्यूजिक, फोक सांग ॥ लोक-कथा, लोक-गीत तथा लोकगीत आदि के संश्लिष्ट रूप में उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है, जो नागर संस्कृति तथा शिक्षा के बाहर पड़ जाते हैं, जो निरक्षर हैं अथवा जो ग्रामों और जंगलों में निवास करते हैं ।<sup>3</sup>

" लोर " शब्द की उत्पत्ति एंग्लो सेक्सन शब्द Lare से हुई है, जिसका अर्थ है -- " जो सीखा जाय । " अतः "फोकलोर" का शाब्दिक अर्थ " अस्तस्कृत लोगों का ज्ञान " हुआ । इस प्रकार निम्न वर्ग के व्यक्तियों से संबंधित समस्त विचार व्यापारों को "फोकलोर " शब्द में समाहित किया गया है ।

1. Leach Maria : Dictionary of Folklore, Vol.I, p.403.
2. Encyclopedia of Social Sciences, Vol.5, p.288.
3. Encyclopedia Britanica, Vol.9, p.512.



## 1. ग्राम, जन तथा लोक

हिंदी में ग्राम, जन तथा लोक "लोक" के पर्यायवाची हैं।  
 पं. राम नरेश त्रिपाठी "लोक" के लिए "ग्राम" शब्द को उचित मानते हैं। इसी आधार पर उन्होंने "ग्राम-गीत" को "लोक गीत" का पर्यायवाची बनाया है। उनका कथन है -- "मेरे गीतों का नामकरण ग्रामगीत शब्द से किया है क्योंकि गीत तो ग्रामों की सम्पत्ति हैं। शहरों में तो ये गए हैं, जन्में नहीं, इससे मैं उचित समझता हूँ कि ग्रामों की यह यादगार ग्रामगीत शब्द द्वारा रखी हो जाय।" 1.

"जन" शब्द "जनि" धातु से निकलता है, जिसका अर्थ है -- "उत्पन्न होना।" अतः "जन" शब्द में "लोक" शब्द की व्यापकता समाविष्ट नहीं होती। डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी को लोक शब्द की व्याख्या दृष्टव्य है -- "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं बल्कि नगरों और गावों में फैली हुई समूची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पौरुष नहीं है।" 2.  
 जन साहित्य के पीछे प्रायः व्यक्ति की कार्य-प्रेरणा होती है। जनसाहित्य और लोक-साहित्य में फर्क बताते हुए डा. नामवर सिंह का कथन है कि -- "जन साहित्य औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न समाज-व्यवस्था की भूमिका में प्रकाश करने वाले सामान्य जन का साहित्य है। लोक साहित्य जनता के लिए जनता द्वारा रचित साहित्य है।" 3.

1. पं. त्रिपाठी रामनरेश : जनपद, अंक 1, पृ. 11

2. डा. द्विवेदी हजारीप्रसाद : जनपद - वैमासिक, अंक 1, पृ. 66

3. डा. नामवर सिंह : जनपद वैमासिक, अंक-1, अंक 2, पृ. 63-64



इस प्रकार समस्त भारतवासियों को ग्रामों या जनपदों की सीमा में बाँटना उचित नहीं है। लोक को सीमा बड़ी व्यापक है, उसमें ग्राम, नगर और जनपद का अधिष्ठान समन्वय है। कतः "लोक" शब्द ही "फोक" का सम्बन्ध पर्यायवाची शब्द ही सकता है।

डा. सत्येन्द्र लोक को व्याख्या करते हुए कहते हैं -- "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पाठित्य को केतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।" वस्तुतः "लोक" मानव जीवन का विशाल सागर है। मानव संस्कृति का उत्स भी लोक ही है।

डा. वासुदेवकारण अग्रवाल के शब्दों में -- "लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है। उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वप्न है। लोक कूरु, ज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है। अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक, लोक की छात्री सर्व भूत माता, पृथ्वी और लोक का व्यक्त का मानव - यही हमारे नए जीवन का अध्यात्मशास्त्र है।"<sup>2</sup>

हिंदी में सर्वप्रथम ग्रामीत की अपेक्षा लोकांगीत शब्द का प्रयोग करने में स्वर्गीय सूर्यकरण पारोड का उदार दृष्टिकोण ही व्यक्त होता है।<sup>3</sup> इस प्रकार "लोक" में सर्व समाहित है। "लोक" में "लोकें लेदे च" से लेकर "लोक कि लैद लठैरी" तक शुद्ध फोक की भावना मिलती है।<sup>4</sup>

1. डा. सत्येन्द्र : लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 3

2. डा. अग्रवाल वासुदेवकारण : सम्मेलन पत्रिका [लोक संस्कृति विज्ञान] सं. 2010, पृ. 65 ।

3. पारोड सूर्यकरण : राजस्थानी लोकांगीत, पृ. 1, पाद टिप्पणी

4. डा. वासुदेव शंकरलाल : हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य, पृ. 25 ।



## 2. लोक-संस्कृति, लोक-वार्ता तथा लोक लीर

लोक संस्कृति को यूरोप के देशों में " फोक लीर " का नाम दिया गया है। सौफिया बर्न ने इसकी वैज्ञानिक व्याख्या देते हुए लिखा है -- " यह एक जातिबोद्धक शब्द को भाँति प्रतिष्ठित हो गया है, जिसके अंतर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित अथवा अपेक्षित सम्पन्न जातियों के संस्कृत समुदायों में अवशिष्ट विकास, रीतिरिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावतें आती हैं। प्रकृति के जैन तथा जड़-जगत के संबंध में, मानवी स्वभाव तथा मनुष्य कृत पदार्थों के संबंध में, भूत प्रेतों की दुनिया तथा उनके साथ मनुष्यों के संबंध के विषय में जादू, टोना, सम्बोधन, खीकरण, तावीज, भाँस्य, शङ्खन, रोग तथा मृत्यु के संबंध में आदिम तथा अस्थायी विकास इसके क्षेत्र में आते हैं। ... इसमें विवाह, उत्तराधिकार, वास्तविक तथा प्रौढ जीवन के रीतिरिवाज, अनुष्ठान और त्योहार, युद्ध आदि, मरस्य-व्यवसाय, पशुपालन आदि विषयों के भी रीतिरिवाज और अनुष्ठान इसमें आते हैं। डमगाथाएँ, लोक कथाएँ, लोकगीत, किंवदंतियाँ, पहेलियों तथा लीरियाँ भी इसके विषय हैं। स्वीय में, लोक को मानसिक स्थिरता के अंतर्गत जो भी वस्तु आ सकती है, वह सभी इसके क्षेत्र में है।"

हिंदी में " फोक लीर " के पर्यायवाची शब्द के संबंध में विद्वानों में बड़ा मतभेद रहा है। फोक्लोर के पर्यायवाचक "लोक वार्ता" शब्द के अतिरिक्त कतिपय अन्य नवीनतम संज्ञाओं का भी आतिर्भाव हुआ है। " फोक्लोर " के वाच्यार्थ को लेकर किसी ने " लोकविद्या " शब्द सुझाया तो किसी ने " लोकायन "।

- 
1. डा. सत्येन्द्र : कुछ लोक साहित्य का अध्ययन, पृ. 4-5 से  
 सार्वेष्ट सौफिया बर्न के विचार उद्धृत।



डा. भोलानाथ तिवारी ने " लोक लोर " के लिए " लोकशास्त्र ", " लोक-विज्ञान ", " लोक परंपरा ", " लोक - प्रतीका ", " लोक प्रवाहः " लोक पथ ", " लोक विज्ञान ", " लोक संग्रह " " लोक कथन " आदि शब्दों को खोर मिला किया है ।<sup>1</sup>

लोकवाक्ता को ग्रहण करने में उनके आपत्तिका उपस्थित हुई हैं ।

डा. कृष्णदेव उपाध्याय ने " लोक वाक्ता " शब्द को अव्यक्त तथा अव्यक्ति दोनों से ग्रस्त होने के कारण " लोक लोर " के पर्यायवाची के रूप में रखना अव्योहार किया है । लोक वाक्ता शब्द के अन्दर अधिक से अधिक गाथा या लोक चर्चा का भाव वहन करने की क्षमता है । उनके अनुसार लोक वाक्ता की अपेक्षा लोक - संस्कृति शब्द अधिक उपयुक्त एवं समीचीन है ।<sup>2</sup> डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी भी " लोकलोर " के अर्थ में " लोक संस्कृति " शब्द के पक्ष में हैं ।<sup>3</sup>

डा. भोलानाथ तिवारी ने " लोक वाक्ता " शब्द को अव्योहार करते हुए कहा है कि लोकवाक्ता में अधिक से अधिक लोककथा का भाव वहन करने की क्षमता है । डिग्री में " वारता " या " वारता " का प्रयोग कथा के अर्थ में हो होता है । उन्होंने " लोकयान " शब्द में लोक जीवन की कुछ विकास-शीलता का निरूपण करते हुए उसे सर्वथा " लोकलोर " के लिए उपयुक्त बताया है और " लोकयान " से सहमत होते हुए भी व्यक्तिगत रूप से " लोकयान " शब्द का सुझाव उपस्थित किया है ।<sup>4</sup> डा. सुनीलकुमार चटर्जी ने भी

1. डा. भोलानाथ तिवारी : भारतीय लोक -साहित्य, पृ. 15 ।

2. हिंदी साहित्य का इतिहास, चौथा भाग, पुस्तकालय, पृ. 11 ।

3. डा. द्विवेदी हजारीप्रसाद : समीक्षण पत्रिका : लोक संस्कृति अंक ।



“ लोकायन ” शब्द के पल में मत व्यक्त करते हुए उसे “ फोक्लोर ” का समानार्थी बताया है ।<sup>1</sup> डा. सत्येन्द्र ने “ लोकाभिव्यक्ति ” और “ लोक सत्त्व ” ऐसे दो शब्द प्रस्तुत किए हैं, किंतु इनमें संकीर्णार्थ को व्यक्त करने के कारण इनको “ फोक्लोर ” के समान रखना उपयुक्त नहीं है । लोकाभिव्यक्ति केवल लोकता और साहित्य का बोध दे और लोकसत्त्व “ फोक एन्सिमेंट ” के लिए प्रयुक्त होना चाहिए ।<sup>2</sup>

यद्यपि “ फोक ” के लिए “ लोक ” शब्द के ग्रहण के समान ही “ लोर ” के पर्यायवाची हिंदी शब्द के ग्रहण के लिए विद्वानों में मतभेद नहीं है और निरन्तर नवीन शब्दों की उद्भावना की जा रही है, तथापि भाषा शास्त्र की दृष्टि से यह प्रयोगों द्वारा विशिष्ट अर्थ एवं महत्त्व प्राप्त कर लेने के कारण “ लोकतार्ता ” को “ फोक्लोर ” की समानार्थक महत्ता प्राप्त हो गई तथा हिंदी में उसका प्रयोग स्वीकृत हो गया ।<sup>3</sup> अतः “ फोक्लोर ” के असीम अर्थ को व्यक्त करने के लिए “ लोकतार्ता ” शब्द का प्रयोग ही उपयुक्त है ।

लोक जीवन में परिवर्तमान समस्त विचार-वाचार, रीति रिवाज, रहन सहन, राग द्वेष, विश्वास - मनोभावों आदि का समन्वित अध्ययन लोक तार्ता शास्त्र का उद्देश्य है । लोक जीवन की गंगा की लहरों से इस लोक तार्ता के सत्त्व उद्भूत होते हैं और अपने वैतन अस्तित्व का आभास अर्पित करते हैं । इसी सत्त्व को

1. डा. लट्जी सुनीतिकुमार : राजस्थानी कथाओं - भाग I - भूमिका ।

2. डा. तिवारी भोलानाथ : “ लोकायन और लोक साहित्य ” शीर्षक निबंध, समेलन पत्रिका ॥ लोक संस्कृति अंक ॥ पृ. 436 ।

3. श्री अलखी सत्यकुमार : लोक साहित्य की भूमिका, पृ. 8



ध्यान में रखते हुए बैटकिन ने कहा है कि लोकवाता दूर और अत्यंत प्राचीन जैसी कोई वस्तु नहीं है। यह तो हमारे बीच सत्य और स्वीय है।<sup>1</sup> पारवात्य विद्वानों के परस्पर विरोधी मतों के बावजूद लोकवाता संबंधी एक सामान्य धारणा निर्मित होती है, जिसके प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं -- साहित्य, मौखिक आधार अनुभवजन्य संस्कृति, परंपरा तथा सौंदर्यात्मकता।

बेयार्ड ने धारणायों के आधार पर लोकवाता के अंतर्गत जूमांड, जीव की उत्पत्ति, प्रकृति और नियमन संबंधी धारणायें, देवी तथा अपौरुषेय (Super-natural) शक्तियों का मनुष्य से संबंध आदि की धारणायें, जाति के बौद्धिक विकास और उनके मूल स्रोत की धारणायें, पराक्रम, सौंदर्य, सामाजिक व्यवहार संबंधी समस्त स्वच्छ एवं भद्दी धारणायें समाविष्ट कर दी हैं।<sup>2</sup> डा. वामदेव शरण अग्रवाल ने भी लोकवाता के इसी तत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि -- "लोक वाता एक जीवित शास्त्र है। लोक का जितना, जीवन है, उतना ही लोकवाता का विस्तार है। लोक में बसनेवाला जन, जन की भूमि और मौखिक जीवन तथा तोसरे स्थान में उस जीवन की संस्कृति इन तीन क्षेत्रों में लोक के पूरे ज्ञान का अंतर्भाव होता है और लोकवाता का संबंध भी इन्हीं के साथ है।"<sup>3</sup>

- 
1. 'Folklore is not something for away and long ago, but real and living among us.' - Batkin, B.A., Introduction to American Folklore, p.8.
  2. Bayard Samuel P. : The Materials of Folklore, p.8.
  3. डा. अग्रवाल वामदेव शरण : पृथिवीपुत्र, पृ. 82 ।



लोक वार्ता का क्षेत्र व्यापक होने के कारण उसे किसी बंधी बंधाई लोक से कहना या उसे किन्हीं सोमावों से बाँटना असम्भव है। सोफिया बर्न के मतानुसार लोकवार्ता एक जातिबोद्धक परिभाषिक रूप में अस्तित्व में है, जिसके अंतर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित या उन्मत्त जातियों के अल्पवर्गों में अवशिष्ट विश्वास, रीतिरिवाज, कहानियाँ, गीत और कहावतें आदि आती हैं।<sup>1</sup>

यद्यपि लोक वार्ता का दायरा विस्तृत है तथापि सोफिया बर्न द्वारा किए गए विश्व विभाजन की तालिका डा. सत्येन्द्र ने इस प्रकार की है — 2

1. से विश्वास और आचरण - अभ्यास जो संबंधित हैं — पृथ्वी और आकाश से, वनस्पति जगत से, पशु जगत से, मानव से, मनुष्य निर्मित वस्तुओं से, आत्मा और दूसरे जीवन से, परामानवी व्यक्तियों से, शत्रुन अपशत्रुन भविष्यवाणियों और जाकाशवाणियों से, जादू टोना से और रोगों तथा स्थानों की कला से।

2. रीतिरिवाज

सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाएँ, व्यक्तिगत जीवन के अधिकार, व्यवसाय छिद्र तथा उद्योग, तिथियाँ व्रत तथा त्यौहार, खेल कूद तथा मनोरंजन।

3. कहानियाँ

॥अ॥ जो सच्ची मानकर कही जाती हैं।

॥का॥ जो मनोरंजन के लिए होती हैं, सभी प्रकार के गीत, कहावतें तथा पहेलियाँ, पद्यबद्ध कहावतें तथा स्थानीय कहावतें।

1. "It has established itself as the generic term under which the traditional beliefs, customs, stories, songs and sayings current among backward peoples or retained by the uncultured classes of more advanced peoples, are comprehended and included." -Sophia Burn : A handbook of Folklore, p.1-2.

2. डा.सत्येन्द्र : इस लोक साहित्य का अध्ययन, पृ. 5।





उपर्युक्त विषय साक्षिका से यह स्पष्ट है कि "लोकवाता" शब्द "फोक्लोर" के व्यापक एवं विस्तृत अर्थ को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। लोकवाता के पक्ष में "लोक संस्कृति" शब्द का प्रचलन हो जाय तो लोकसंस्कृति शब्द "फोक कल्चर" का पर्यायवाची शब्द हो सकता है। वस्तुतः फोक कल्चर और फोक्लोर में कोई विशेष अंतर नहीं है। दोनों की सीमाएँ एक दूसरे के छोर की छूती हुई दिखाई पड़ती हैं।<sup>1</sup>

### 3. लोक साहित्य

"लोक" और "लोक वाता" का स्वयं स्पष्ट होने के पश्चात् अब लोक साहित्य पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा। लोक साहित्य लोकवाता का ही एक महत्वपूर्ण अंग है। लोकवाता वर्ग द्वारा प्रस्तुत लोकवाता सामग्री के उपर्युक्त तीन वर्गों में से तीसरे वर्ग की सामग्री लोक साहित्य है। जैसे तो लोक साहित्य और लोकवाता में अभिन्न संबंध है, जैसे फूल और उसकी सुगंध का।

लोक साहित्य का लोकवाता - लोक संस्कृति से जुड़ एवं अभिन्न संबंध दिखाते हुए डा. कृष्णदेव उपाध्याय लिखते हैं कि — "लोक साहित्य लोक संस्कृति का एक भाग है, उसका एक अंग है, यदि लोक संस्कृति की उपमा किसी विज्ञान वस्तु से दी जाय तो लोक साहित्य को उसकी एक शाखा मात्र समझना चाहिए। यदि लोक-संस्कृति शरीर है तो लोक साहित्य उसका एक अवयव है। लोक संस्कृति का क्षेत्र-विस्तार अत्यंत व्यापक है, परंतु लोक साहित्य का विस्तार संकुचित है। लोक-संस्कृति को व्यापकता जन-जीवन के समस्त व्यापारों में उपलब्ध होती है, परंतु लोक-साहित्य जनता



के गीतों, कथाओं, गाथाओं, मुहावरों और कथावस्तु तक ही सीमित है। एक का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है तो दूसरे का सीमित तथा संकुचित। लोक साहित्य अंग है तो लोक संस्कृति अंगी है। लोक संस्कृति में लोक साहित्य का अन्तर्भाव होता है परंतु लोक साहित्य में लोक संस्कृति का समावेश होना संभव नहीं है।<sup>1</sup>

**वस्तुतः** लोक साहित्य की क्षेत्र परिधि अत्यंत विस्तृत है। यदि लोकवाता लोक-संस्कृति महासागर है तो लोक साहित्य उसमें समाहित होने वाला एक महानद। लोक साहित्य की व्यापकता मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक है। मनुष्य के शारदायुग का स्पष्ट प्रतिबिम्ब लोक साहित्य में प्राप्त होता है। विश्व लोक साहित्य का प्रवाह इसी ओर से प्रवहमान है। देश-विदेश की विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न समाज, विभिन्न संस्कृतियाँ अनेक शहरों की तरह हैं, उनकी आत्मा एक है। शास्त्र अनेक मूल एक है। इसकी अन्तर्वास्य कृति भी स्वाभाविक और सरल है। \* मुसलमान मनुष्य का साहित्य अनेक छंदियों से जकड़ा हुआ है। कविता पिंगल शास्त्र की नयी नवी नामियों से प्रवाहित होती है, अक्षरों के भार से शिथिलता को ध्यान में रखना पड़ता है। नाटकों की रचना में अनेक नाटकीय नियमों का पालन करना पड़ता है। इसके विपरीत लोक साहित्य का महान और पृष्ठान गुण है स्वाभाविकता, स्वच्छंदता तथा सरलता। यह साहित्य उतना ही स्वाभाविक है, जितना आकाश में उड़नेवाला पक्षी। सभ्यता के प्रवाह से दूर रहने वाली अपनी सहजावस्था में वर्तमान जो निरक्षर जनता है, उसकी आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ हानि, सुख-दुख आदि की अभिव्यंजना लोक साहित्य में प्राप्त होती है।

1. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, चौथा भाग, पृ. 14.



इस प्रकार लोक साहित्य वह साहित्य है जो जनता द्वारा जनता के लिए रचा गया हो ।<sup>1</sup>

लोक-साहित्य की परिभाषा देते हुए डा. सत्येन्द्र ने कहा है कि लोक साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है, जिसमें —

॥क॥ आदिम मानस के अव्यक्त उपलब्ध हों ।

॥ख॥ परंपरागत मौखिक रूप से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो, जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे कृति ही माना जाता हो और जो लोकमानस की पुष्टि में समाई हुई हो ।

॥ग॥ कृतित्व हो, किंतु वह लोक मानस के सामान्य अ तत्वों से युक्त हो, कि उसके किसी व्यक्तित्व के साक सम्बंध न रहते हुए भी, लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करें ।<sup>2</sup>

लोक साहित्य लोक की मौखिक परंपरा का ही अनुसरण करता है जिसमें विषयों का समावेश कृति को सोमा में ही समाहित होता है । वैदिकन ने भी लोक की मौखिक भाषाभिव्यक्ति को लोक-साहित्य का आकरक तत्त्व प्रतिपादित किया है ।<sup>3</sup> अतः लोक साहित्य मौखिक होता है तथा परंपरा गत रूप से चला आता है । यह साहित्य जब तक मौखिक रहता है, सभी तक इसमें ताजगी और जीवन पाया जाता है, लिपि की धारा में जाते ही इसकी संजीवनी शक्ति नष्ट हो जाती है ।

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : चौथा भाग, पृ. 15 ।

2. डा. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृष्ठ 4.

3. वैदिकन, ए.बी. : फोल्कोर डिक्शनरी, पृ. 399.



#### 4. परंपरा

भारत में लोक-साहित्य की परंपरा बहुत प्राचीन है। लोक-साहित्य की विधा - लोकगीतों का बीज प्राचीन ऋग्वेद में पाया जाता है। गीत के अर्थ में "गाथा" शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में प्राप्त होता है।<sup>1</sup> वेदों में आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ मौखिक विषयों से सम्बद्ध ऐसे अनेक सुक्त हैं, जिनमें विविध लोक व्यवहार स्फासित हुआ है। वैदिक साहित्य तत्कालीन जनसाधारण की भाषा का साहित्य - लोकसाहित्य है। वह प्राकृतिक शक्तियों से सम्बद्ध दिव्य साहित्य है। वह आर्यों के उस सामाजिक जीवन का साहित्य है, जब वे मुख्यतः पशु पालन कर जीवन-यापन करते थे, पर कुम्भकडपन छोड़ ग्राम्य सभ्यता की ओर बढ़ चले थे। पशु चारण वृत्ति के साथ कृषि का विकास हो चला था। वैदिक साहित्य लोक गीतों-सा स्वामाजिक साहित्य है।<sup>2</sup>

वैदिक गाथाओं की परंपरा रामायण - महाभारत काल में भी अक्षुण्ण दिखाई पड़ती है। रामायण - महाभारत में तत्कालीन समाज की मौखिक भावभूमि अंकित हुई है, जिसमें लोक-मानव का यथार्थ रूप प्राप्त होता है। महाभारत में युद्ध के साथ लोक-संस्कृति को सजीव अभिव्यक्ति हुई है। राजा द्रुपद द्वारा रचित "गाथा सप्तमती" से पता चलता है कि उस समय लोकगीत बनाने तथा गाने की बहुत बड़ी प्रथा थी। लोक संस्कृति का पाली जातकों में भी सजीव चित्रण मिलता है। बाविस - जातक में तत्कालीन व्यापारिक क्षा का पता चलता है तो अन्य जातकों से तत्कालीन साधारण जनता के रहन सहन, शान्ति और रीतिरिवाजों का

1. "प्रकृत्यान्वृजोक्तः कृता इन्द्रस्य गायथा।" -- ऋग्वेद 8-32-1

2. डा. पांडेय राजकमारी ॥ संज्ञा ॥ हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास प्रथम भाग. पृ. 196।



पता चलता है । 1.

जातक कथाएँ भारतीय कथा-साहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं, जिन्हें विष्णु पूर्व तीसरी शताब्दी से चौथी शताब्दी तक के भारत की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक अवस्था का पता चलता है । जैन पुराणों में भी लोक साहित्य के विपुल खोज वर्तमान है । लोक साहित्य की कतिपय प्रकृतियों का आभास विद्वानों के व्यापारों में भी प्राप्त होता है ।<sup>2</sup> इन सिद्धियों को धर्म साधना जनसाधारण में व्याप्त थी । इस प्रकार लोक साहित्य का अक्षुण्ण प्रवाह अत्यंत प्राचीन काल से लेकर आज तक अवाच्छिन्न गति से प्रवहमान है ।

#### 5. साहित्य और लोक साहित्य

जीवन का सार सौंदर्य लोक साहित्य में विभिन्न रूपों में प्रस्तुत होता है । मानव की हंसी-भुक्कान, जाह-कराहट, अवि-रुदन लोक साहित्य में प्रकट होते हैं । लोकसाहित्य मूलतः मानव की कहानी है और मानव का संगीत है । लोक साहित्य मानव का ही मूर्त अभिव्यक्त रूप है । लोक साहित्यकार की यह अभिव्यक्ति सज्ज, सरल एवं निरुद्ध होती है । डा. नौट्ट के मतानुसार - " अभिव्यक्ति की निरुद्धता ही साहित्य का पहला और अनिवार्य लक्षण है ।"<sup>3</sup>

इसी तरह साहित्य और लोकसाहित्य में मौलिक भेद है । लोक साहित्य नाम से ही स्पष्ट है - लोक का, साधारण अशिक्षित जनता का साहित्य होता है । साहित्य सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत जनता की कृति होता है । " पोष्य, तोषण और मोदन की लोक अभिव्यक्तियों का वाणी रूप लोक साहित्य के अन्तर्गत आता है ।

1. प्रो. शर्मा बटुकनाथ : पानि जातकावली, पृ. 17

2. डा. भारती धर्मवीर, : सिद्ध साहित्य, पृ. 237 ।

3. अग्रवाल भारतभूषण [संभा.] डा. नौट्ट के सविष्ट निबंध, पृ. 48 ।



... इस साहित्य की ऊँची सोमा शिष्ट साहित्य की स्पर्श करती है और निम्नी सोमा जंगली अभिव्यक्ति को । 1: एक में लोक जीवन के विविध चित्र मिलते हैं, तो दूसरा सोमिष्ठ शिष्ट समाज का दर्पण है किंतु जहाँ साहित्य अपने क्षेत्र की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, वहाँ लोकसाहित्य भी अपने वातावरण और अपने सोमा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है ।

यद्यपि साहित्य और लोक - साहित्य दोनों ही लोकानुकीर्ण हैं, तथापि दोनों में मौखिक मंद एवं लेख्य साहित्य अंतर है । साहित्य अपने मौखिक से लोक जीवन के धरातल से ऊँचा उठता है तो लोक साहित्य इस धरातल को ऊँची छौड़ नहीं पाता । लोक जीवन के सांस्कृतिक तत्त्व साहित्य में गूँथे होते हैं किंतु लोक साहित्य में वे समाहित रहते हैं । लोक साहित्य का स्वर और कलात्मक पक्ष भावों की कोमलता और प्राणों का स्पंदन है जबकि साहित्य का तकनिष्ठ मौखिक और मेधाशक्ति । लोक साहित्य की अंतरंग अनुभूतियाँ उन्मुक्त होती हैं, जबकि साहित्य में वे सोमाबद्ध होती हैं । लोक साहित्य नित्य नूतन जीवन का अमृत्य प्रतिबिम्ब है तो साहित्य में वैयक्तिकता का प्राधान्य रहता है । व्यक्ति का विकसित आत्म तत्त्व और व्यक्ति द्वारा प्रकट होने वाली सामाजिक अभिव्यक्ति साहित्य में होती है । लोक साहित्य समाज की ही व्यापक अभिव्यक्ति है ।

#### 6. लोक साहित्य की विधाएँ

लोक गीत, लोकगाथा, लोक कथा, लोककौतुक, लोककौतल, लोकनृत्य तथा लोककला आदि लोकसाहित्य की विभिन्न विधाएँ हैं ।



## 6.1. लोकगीत

लोकगीत " लोक " के भावुक तथा सौन्दर्यात्मक हृदय के स्वाभाविक उद्गार हैं। लोकगीत का मूल स्रोत लोक-मानस है। यह लोकमानस अनुभूत बहुकुल ज्ञान की परंपरा को अपनाकर मनोभावों की स्वर-सरिता बहा देता है।

लोकगीतों में लोक जीवन की सच्ची जाँची निहित है और भारतीय संस्कृति का सजीव इतिहास संग्रहित है। " लोक गीत किसी संस्कृति के मुहबोने चित्र हैं। " 1' अतः " लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, नदियाँ गाती हैं, फलें गाती हैं, उल्हास, मेले, क्षुब्ध एवं परम्पराएँ गाती हैं। " 2' लोकगीतों की यह परंपरा अत्यंत प्राचीन है। पंडितों की बंछी-बंछाई प्रणाली पर चलने वाली काव्यधारा के साथ-साथ सामान्य जनसदृश जनता के बीच एक स्वयंसी और प्राकृतिक भावधारा भी गीतों के रूप में धमकी रहती है। 3' लोकगीतों को यह भावधारा अखंडित प्रवहमान है। वस्तुतः " लोकगीत न तो पुराना होता है न नया। यह एक जंगली वृक्ष की भाँति है जिसकी जड़ें सुदूर अतीत की गहराई में दृढ़ हैं, किंतु जिससे निरंतर नई शाखाएँ - प्रशाखाएँ धत्ते और नए फल विकसित होते रहते हैं। 4' सामान्य जनभाषा में अक्षय परिवर्तन होता जाता है, गीतों की भाषा भी बदलती जाती है, पर इनके प्राणत्व में कोई अंतर नहीं आता क्योंकि लोकगीत यदि मानव का उत्साहमय संगीत है। यह संगीत की अपरिवर्तनीय छोर युगों से प्रवहमान है। "

1. सत्याधी देवेंद्र : अजस्र, सं. 7, नवम्बर, 1951।

2. सीता देवी : 'सुनि सुसरित मणिषा', भूमिका में उद्धृत गांधीजी के उद्गार।

3. पं. शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 724

4. 'A Folksong is neither new nor old, it is like a forest tree, with its roots deeply buried in the past but which continually puts forth new branches, new leaves, new fruits'-P. Williams,



छेतों में, नदियों, पहाड़ों, मैदानों, रास्तों या घरों में, विरह, वेदना, हंसी मजाक में यह संगीत गीत बनकर जनकों से फूट पड़ता है। नए गीतों के साथ पुराने गीत छुन जाते हैं। नई पीढ़ी, नए भाव, यही गीतों की परंपरा है। गीतों की यह परंपरा तब तक विद्यमान रहेगी जब तक मानव का अस्तित्व रहेगा। मानव मन की विभिन्न स्थितियों ने इसमें अपने ताने बाने बुने हैं। स्त्री - पुरुषों ने धमकर इसके माधुर्य में अपनी झकान मिटाई है। इसकी ध्वनि में बालक सोए हैं, जवानों में प्रेम की मस्ती जाई है, बुढ़ों ने मन बहलाए हैं, वैरागियों ने उपदेश पान किया है। विरहो-युवकों ने मन की कसक मिटाई है, विधवाओं ने अपने एकांगी जीवन में रस पाया है, पक्षियों ने धकाधक दूर को है, किसानों ने अपने छेत जोते हैं। \* 1.

लोकगीतों की मूल प्रेरणा मानव हृदय की रसात्मक अनुभूति है, अतः लोकगीतों को 'मानव हृदय का उद्बेलित एवं स्वयंस्फूर्त संगीत' कहा गया है। 2. ये गीत किसी कवि की नहीं, व्यक्ति विशेष की नहीं, अपितु सामान्य जन मानस की जगत् सृष्टि हैं। \* कहां से आते हैं इतने गीत। स्मरण विस्मरण की आँखमिखौनी से, कुछ अट्टाहास में और कुछ उदास हृदय से। जीवन के छेत में ये गीत उगते हैं -- कल्याण भी अपना काम करती है, राग वृत्ति भी, भावना भी और नृत्य का हिलोरा भी। \* 3. लोकगीतों के उद्गम जगत् हैं। \* जैसे कोई नदी किसी छौर अछारमयों गुफा से बहकर आती हो और किसी की उसके उद्गम का पता न हो, ठीक यही

1. डा. परमार श्याम : भारतीय लोक साहित्य, पृ. 52-53 ।

2. 'The primitive spontaneous music has been called folk songs,' : Encyclopedia Britanica, Vol.9, p.447.

3. सत्याधीन वैदिक : छरती गाती है, पृ. 178 ।





दशा गीतों की है । " 1. लोकगीतों को उत्पत्ति किसी व्यक्ति विशेष की काव्य-प्रतिभा से नहीं हुई, बल्कि इनके निर्माण का श्रेय एक समुदाय को है । 2. समूह का मानव हृदय जब कभी भी सहानुभूति से परिचित मूक-स्तिब्धनाओं से आन्दोलित हुआ होगा, गीतों के अज्ञात स्वर मनुष्य के अंतरों पर गूँज उठेंगे । मानव-हृदय की रसात्मक आन्दोलनशीलता का उद्गमन हृदय को संकुचित सोमा में न समाकर जब वाणी द्वारा मुक्तिरहित होने की स्थिति में पहुँच जाता है, तभी लोकगीतों का झोत उमड़ पड़ता है । 3. समय के छात-प्रतिघातों में उनका बाह्यरूप बदलता रहता है किन्तु गीतों की परंपरा कभी छिन्न नहीं होती । इनकी परंपरा पूर्णतः मौखिक होने से केवल श्रुति के माध्यम से प्रत्येक नवीन पीढ़ी अपनी प्राचीन पीढ़ी से गीतों की निधि प्राप्त कर लेती है । इसी आधार पर डा. हजारोप्रसाद द्विवेदी ने इन्हें " सभ्यता के छेद " 4. की श्रेणी से अभिहित किया है ।

लोकगीतों का सौंदर्य अमिट है । इनमें जीवन का सरल एवं कैसगिक आनंद अन्तर्निहित है । जटिलता, दुस्वप्ता, आडम्बरहीनता, वैभव की चमक दमक और कृत्रिम समाज-सज्जा का लोकगीतों में निरन्तर अभाव रहता है । ये कंठ से गाने के लिए और हृदय से आनंद लेने के लिए होते हैं । " इनमें अलंकार नहीं केवल रस है । छंद नहीं केवल सत्य है, साहित्य नहीं, केवल मार्थ्य है । " 5. अलंकारहीन होते

1. पं. विद्याधी रामनरेश : कविता कोमूदी, भाग 5, पृ. 11,  
स्व. कुबेरचंद मेघावी के गुजराती विचारों का हिंदी भावानुवाद ।
2. English and popular Ballads, Introduction, p.18.
3. डा. उपाध्याय, चिन्तामणि : लोकायन, पृ. 6 ।
4. डा. दुबे श्यामाचरण कृत " उत्तीर्णपदी लोकगीतों का परिचय " की भूमिका में, पृ. 5
5. पं. विद्याधी रामनरेश : कविता कोमूदी, भाग 5, प्रस्तावना, पृ. 1-2



हुए भी लोकगीत अपने आप में परिपूर्ण एवं रसमय होते हैं। इसी गुण पर मुग्ध होकर डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि "लोकगीतों की एक एक लहर के चित्रण पर रीतिकाल की सो सो मुग्धार्ण, अडिस्तार्ण और धीरार्ण न्योछावर की जा सकती हैं।"<sup>1</sup>

लोकगीत साहित्य की अमूल्य एवं अनूपम निधि है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। मानव जीवन का वास्तविक चित्रण जितना इन गीतों में मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं। प्रकृति के इन उद्गारों की प्रस्तुति करने में और सजाने में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों ने अधिक हाथ डेटाया है। नारी हृदय की विज्ञासता, पिता का वात्सल्य, प्रिय का प्रेम, नववधू की सङ्गम, कन्या की दुःख विदाई, पति पत्नी के मिलन विरह की कथा-कथा सब हमें इन गीतों में उपलब्ध होते हैं।

लोकगीतों में संगीत तथा मय के साथ रस-सृष्टि का भी अपार वैभव है। उनमें रस की मात्रा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति तथा तुलसीदास, सुरदास से भी अधिक है।<sup>2</sup>

## 6.2. लोकगाथा

लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगीतों में पाई जाने वाली दीर्घ कथावस्तु की अभिव्यक्ति लोकगाथा कहलाती है। लोकगीतों में केवल गेयत्व प्रधान होता है और कथानक गौण, लेकिन लोकगाथाओं में गेयत्व के साथ-साथ प्रदीर्घ कथानक भी होता है। अँग्रेजी में इन गीतों को "बैलेड्स" कहा गया है। डा० सत्येन्द्र इन्हें लोकगाथा की अपेक्षा वीर गाथाएँ मानते हैं।<sup>3</sup> संस्कृत साहित्य में "गाथा" शब्द का प्रयोग "गेयत्व" के अर्थ में प्राचीन काल से होता चला आया है और इस अर्थ में इसका व्यवहार "श्रुत्येद" के अनेक मंत्रों में पाया

1. डा० द्विवेदी, हजारी प्रसाद : हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ० 130

2. पं० त्रिपाठी रामनरेश, ग्रामगीत, पृ० 31 ।

3. डा० सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ० 381 ।



जाता है। गाथा शब्द में गेयता और कथात्मकता के तत्त्व विद्यमान हैं। अतः इन्हें अन्य संबोधन की अपेक्षा लोकगाथा कहना ही समीचीन है।<sup>1</sup>

विभिन्न विद्वानों ने लोकगाथा की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं — बिद्वरौज के अनुसार लोकगाथा कथात्मक गीत है।<sup>2</sup> डा. मरे ने कहा है कि छोटे छोटे पदों में रचित सोधा सादा जोक्तिक काव्य खेलेछ है, जिसमें कोई लोकप्रिय कथा चित्रात्मक रूप में कही गई हो।<sup>3</sup> सिस्त्रिक ने लोकगाथा को वह सरल कर्नात्मक गीत माना है, जो लोकमात्र की स्मृति होता है और उसका प्रसार मौखिक रूप से होता है।<sup>4</sup>

इन परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लोकगाथा में गेयता, कथात्मक, लोकप्रियता एवं मौखिक आधार होता है

1. डा. उपर्याय कृष्णदेव : हिंदी साहित्य का वृद्ध इतिहास, चौथा भाग, प्रस्तावना, पृ. 73+3=76
2. 'Ballad is a song that tells a story or to take the other point of view, a story told in song.'  
--Kitteredge, G.L. (Edited) F.J. Child's English & Scottish Popular Ballads, Introduction, p.11.
3. Murry, M.A. (Robert Graves Edited) The English Ballads, Introduction, p.8.
4. 'Simple narrative songs that belong to the people and handed on by word of mouth' - Sidgwick Frank : Old Ballads, p.3.



लोकगाथाओं का भारतीय उद्गम प्राचीन है किंतु उनके निमार्ण के संबंध में पारंपारिक विद्वानों में बड़ा मतभेद है। ग्रिम का समुदायवाद, एलेग्न का व्यक्तिवाद, स्टेथल का जातिवाद, विलियम डॉर्न का नरणावाद, वाइल्ड का व्यक्तित्वहीन व्यक्तिवाद, डा. कृष्णदत्त उपाध्याय का समन्वयवाद आदि विभिन्न सिद्धांत प्रचलित हैं। इन सिद्धांतों में अतिशय सत्य हो विद्यमान है।

इन पथबद्ध लोकगाथाओं को लिखने को परंपरा गुणादय की "बहुत कथा मंजरी" से प्रारंभ होती है।<sup>1</sup> किंतु मोक्षिक परंपरा में जन सामान्य की गैर लोकगाथाएँ प्रत्येक युग की छाप लेकर इतिहास को कल्पना के छुंछले प्रस्तावरण में छिपाकर न जाने कितने युगों से कल-कल में प्रवाहित होती चली जा रही हैं। इन गीत-कथाओं में युग का प्रभाव अवश्य व्यजित होता है किंतु उनकी मूल प्रवृत्तियों में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं आने वाला।<sup>2</sup> इनमें जीवन-यापन करने की विविध एवं गौरवमय जीवन का निमार्ण कर जोखित रहने का दिशा निर्देश भी रहता है।<sup>3</sup> लोकगाथाएँ लोक संस्कृति के प्रहरी हैं।

### 6.3. लोकगाथा

लोक साहित्य के अंतर्गत लोक कथाओं का विशेष महत्त्व है। मानव मन की भावभूमि हमें लोक कथाओं के रूप में ही प्राप्त होती है। मानव एवं प्रकृति को खिन्नता का अनुभूत चित्र भी लोकगाथाओं में हमें मिलता है।

1. डा. द्विवेदी हजारोपुसाद : हिंदी साहित्य का आदि काल, पृ. 56

2. डा. उपाध्याय चिंतामणि : मानव लोकगीत, पृ. 229 ।

3. Botkin : 'A Treasury of Western Folklore' Introduction, p.23.



भारत में लोककथा का उद्गम बहुत प्राचीन माना जाता है । लोक कथाओं के बीच सर्वप्रथम वेदों में प्राप्त होते हैं । विष्व के कथा - साहित्य का मूलभार भारतीय लोककथा है । ऋग्वेद में शुनः शेष का प्रसिद्ध आख्यान मिलता है ।<sup>1</sup> व्याला - जात्रियों की कथा<sup>2</sup> और अयन-सुकन्या<sup>3</sup> की कथा भी इसमें वर्णित है । ब्राह्मण ग्रंथों में भी अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं ।<sup>4</sup> उपनिषदों में अनेक कथाओं का समावेश है । संस्कृत साहित्य में लोक कथाओं का सर्वाधिक प्राचीन तथा विज्ञान कथा संग्रह गुणादय का " बृहत्कथा " साहित्य है । इसके पश्चात् द्वितीय महत्त्वपूर्ण कथा संग्रह विष्णु शर्मा रचित " पंच तंत्र " है । संसार के समस्त कथा - साहित्य पर इसने अत्यधिक प्रभाव डाला है और इसका अनुवाद यूरोप की अनेक भाषाओं में हो चुका है ।

#### C.4. लोकोक्ति

लोकोक्तियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन है । वेदों और उपनिषदों में अनेक स्थलों पर इनकी उपलब्धि होती है ।<sup>5</sup> त्रिपिटक तथा जातक कथाओं में भी इनका प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है । संस्कृत साहित्य में तो लोकोक्तियों का अनुपम भंडार भरा पड़ा है । हिंदी साहित्य में लोकोक्तियों का व्यापक प्रसार हुआ है ।

1. ऋग्वेद, । 24-30 ।

2. -तही- , 8-9-1 ।

3. -तही- 10<sup>39</sup>-4 ।

4. ऐतरेय ब्राह्मण - 7-3

शाटयायन ब्राह्मण, 13 -3-1 ।

5. " कृतं मे दक्षिणे हस्ते जगो मे सत्यं जाहितः । "

-- अथर्ववेद - 7-52-8 ।

अदोनाः स्याम शरदः शतम् - रघुर्वेद - 36-24 ।



### 6-5. लोककला

लोक-संगीत, लोक-नृत्य तथा लोक-चित्र कला ये लोक कला के तीन प्रमुख पहलू हैं। साथ ही साथ ये तीनों एक दूसरे से परस्पर संबंधित हैं।

#### 6-5.1. लोक संगीत

भारतीय मान्यता के अनुसार संगीत के अंतर्गत गीत (Vocal Music) वाद्य (Instrumental music) एवं नृत्य (Dance) तीनों का समावेश होता है।<sup>1</sup> संगीत शास्त्र की दृष्टि से लोकगीतों का महत्त्व अत्यधिक है। यद्यपि लोकगीतों में संगीत का सर्वांगपूर्ण शास्त्रीय रूप नहीं पाया जाता परंतु लोकसंगीत शास्त्रीय संगीत से स्थायी पृथक् नहीं है।

मानव-हृदय के स्वाभाविक स्वर लयबद्ध भावाभिव्यक्ति से ही एक निश्चित एवं विशेष धुन का निर्माण होता है, जिसे लोकधुन कहते हैं। इन धुनों की संख्या असीमित है। भारत के जन्मदों में प्रचलित लोकगीतों की विशेष धुनें हैं। इन्हीं लोकधुनों में भारतीय संगीत के सभी राग छिपे हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि शास्त्रीय संगीत का विकास निश्चित रूप से लोकगीतों पर आधारित है। शास्त्रीय संगीत का आधार लोक-संगीत ही है।<sup>2</sup> शास्त्रीय संगीत के अनेक रागों का जन्म लोकधुनों से हुआ है। ये लोकधुनें बहुत ही सरल होती हैं।

1. " गीत वाद्य नृत्य त्रय संगीतमुच्यते । " - संगीत रत्नाकर, 7-26

2. डा. उपपाध्याय चिन्तामणि : मालवी लोकगीत, पृ. 361 ।



### 6.5.2. लोक नृत्य :

जागिक चेष्टाओं द्वारा हृदयगत भावनाओं को अभिव्यक्ति करना नृत्य है। जागिक चेष्टा मात्र से ही भाव को व्यक्त करने की क्रिया के लिए संस्कृत में "नृत्" धातु का प्रयोग किया गया है।<sup>1</sup> नृत्य जनतामान्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति का सूक्ष्म है।<sup>2</sup>

विवाहादि मार्गिक प्रसंगों पर तिनोद आदि हृदय रंजन के प्रसंगों पर, नृत्य की प्रवृत्ति सहज ही जाग्रत हो जाती है। प्राचीन भारत में नृत्य मनोरंजन का प्रमुख साधन था। नृत्य एवं नृक्रियाओं का उत्कृष्ट ज्ञान में भी हुआ है।<sup>3</sup> नृत्य अभिनय प्रधान है एवं उसकी अभिव्यक्ति ताल और रस पर अवलम्बित है।<sup>4</sup>

### 6.5.3. लोक-चित्रकला :

आदिम मानव अपने जीवन के संघर्ष में जाने वाले वस्तुओं और जीवित प्राणियों की रक्षाकृतिओं को अपने घर की दीवारों पर उतारने की चेष्टा करता था। यही चेष्टा उस खाने की कला का प्रारम्भिक स्वरूप है, जो चित्रकला के रूप में विकसित हुई।

यह सौंदर्य भावना शरीर की विभिन्न स्थायों में सजाने में भी दिखलाई देती है। हमारे कारण गोदना गुदाने की प्रथा प्रारम्भ हुई।

1. "गात्र त्रिलोच मार्च तु स्वामिन्य वर्जितम् ।

आगिकोक्तप्रकारेण नृत् नृत्य विदोविदुः ॥

- संगीत रत्नाकर - 7-29 ।

2. "प्रायेण सर्वलोकोत्थ नृत्तमिष्ट स्वभावाः ।"

-- भरतमुनि : नाट्यशास्त्र - 4-244 ॥ निर्यासागर प्रेस ॥

3. ज्ञानेद - 10-18-3 तथा 10-29-2 ।

4. "भावाक्यं तु नृत्तं नृत्यं तालसंस्थाभ्याम् ।"

- प्रतापसूत्राय, पृ. 100-101 ।

सप्तम अध्याय :

.. .. .

बनजारा लोकीत





बनजारा लोकगीत : ....

०. प्रस्तावना

बनजारा बायावर जाति है । बायावर जाति के पास शिष्ट या परिनिष्ठित साहित्य प्रायः नहीं होता । ऐसे बनजारे की जीवन में साहित्य का प्रमुख स्थान है । जीवन के सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर उनका जीवन साहित्यमय ही हो जाता है । किन्तु यह साहित्य लोकसाहित्य के ही श्रेणी में आता है । यद्यपि लोक साहित्य के सभी पक्ष बनजारों मानस से निःकृत होते हैं, तथापि इन सभी पक्षों में गीत का प्रमुख स्थान है । जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीत उपलब्ध होते हैं । प्रस्तुत अध्याय में बनजारा गीत का ही अध्ययन किया गया है और इसके पीछे यह मान्यता है कि बनजारा जीवन उसके गीतों में समग्र रूप में प्रतिबिम्बित है । साहित्य के अन्य रूप प्रायः गौण है । इसीलिए केवल गीतों का ही विवेचन किया गया है ।



लोकगीतों की विशेषताएँ :      ....      ....

गीतों और लोक गीतों का तुलनात्मक अध्ययन करके ऐसी विशेषताओं का परिचय देना आवश्यक होता है, जिनके आधार पर लोक गीतों को शिष्ट या परिनिष्ठित गीतियों से पृथक् रूप में जाना जा सके। लोकगीतों को इनकी वैशिष्ट्यता के लिए जाना जाता है, ऐसी मान्यता है। डा. श्याम परमार के अनुसार -

“गीतों में विज्ञान की तराश नहीं, मानव संस्कृति का सारतम्य और व्यापक भावों का उभार है। भावों की लठियाँ लम्बे-लम्बे सेतों से स्रज, पेठों की लगी ठाणों से अगद और मिट्टी की भाँति सत्य है।” \*

लोक कवि के कण्ठ से सृज्य रूप में स्फुटित होने के कारण छन्द, जलकार, चक्रोक्ति, चमत्कार आदि के लिए लोकगीतों में कोई स्थान नहीं होता। इस सम्बन्ध में रामनरेश त्रिवाठी के निम्न वाक्य देखे जा सकते हैं -

“ग्राम गीत प्रकृति के उद्गार है। इनमें जलकार नहीं, केवल रस है। छन्द नहीं, केवल लय है। ललितत्व नहीं, केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के, स्त्री पुरुषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही गान ग्राम गीत हैं।”<sup>2</sup>

\* मालवी लोक साहित्य । हिन्दुस्तानी एकाडेमी, इलाहाबाद 1969 ।



उपर्युक्त काल में प्रयुक्त "ग्रामगीत" शब्द लोकगीत प्रयोग में ही गृहीत है। डा. वामदेव शरण अग्रवाल ने भी लोकगीतों में प्राप्त रस कला की ओर मुग्ध होकर निम्न विचार व्यक्त किये हैं -

"गीत मानो कभी न छोड़ने वाले रस के सोते हैं।" \*

लोकगीतों में लोक संस्कृति का चित्रण भी अव्ययभावी होता है। संस्कृति का उचित अध्ययन करने की इसी प्रधान विद्यता पर कम देते हुए भी देवेन्द्र सत्याधी ने लोकगीतों के विषय में यह सरगर्भित वाक्य लिखा है - "लोक गीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं।"<sup>2</sup>

लोकगीतों के रचयिता का पता नहीं होता। यह वह एक व्यक्ति की कृति न होकर सामुदायिक कृति होती है। डा. श्याम परमार ने इस सम्बन्ध में निम्न विचार व्यक्त किये हैं -

लोकगीतों का सृजन संगीत के माध्यम से लोकरजक होकर परम्परा में सम्मिलित होने के क्रम में व्यक्ति और समष्टि के भेद को नष्ट कर देता है। किसी व्यक्ति विशेष द्वारा निर्मित कोई गीत जन मानस को आन्दोलित कर उसके स्पन्दन के स्वरा में मेल खाने लगे और कालान्तर में उसी भावित्ति अथवा धोंके परिवर्तन के साथ जीवित रहे तथा निरन्तर प्रयोग में जाता रहे तो वह बड़े गीत लोकगीत ही कहलाएगा। उसे लोकगीत की संज्ञा अतिदास और प्रयोग के सहारे प्राप्त

\* धीरे बहो ब गंगा । ने. देवेन्द्र सत्याधी, भूमिका भाग । पृ. 1

2 वाजकल । संख्या - 7, नवम्बर 1951 । सम्पादकीय



होगी । मूल में कोई गीत लोकगीत नहीं कहा जायेगा । परिस्थितिवश समाज में अनुष्ठानिक तथा औपचारिक मूल्य पाकर विशेष संस्कृति की पृष्ठभूमि में ही वह लोकगीत बनता है । \*

लोकगीतों में निजिजन तो होता है परन्तु लोकमानस की पतन्य जानेवाले विषय के साथ सम्बन्धित होने के कारण उनमें साधारणीकरण की भावना साहित्यिक गीतों की अपेक्षा अधिक होती है ।<sup>2</sup>

लोकगीत ग्रामीण जगत की फुलवाड़ी है, इनका क्षेत्र इतना विस्तृत होता चला जाता है कि वह समान भाषा और संस्कृति वाले शहरों को भी अपने में संजो लेता है ! डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लोकगीतों को आर्येत्तर सभ्यता के वेद मानते हैं ।<sup>3</sup>

लोकप्रियता लोकगीत का आवश्यक गुण है ।<sup>4</sup>

डा. कुन्ज बिहारीदास का यह कथन है कि "लोकगीत संस्कृत तथा सभ्य प्रभावों से बाहर रहनेवाले लोगों की प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है, सर्वथा निराधार नहीं है"।<sup>5</sup> यह देखा जाता है कि अपेक्षाकृत आदिम जातियों में लोक नाट्यों तथा लोकगीतों का उच्च जातियों की अपेक्षा बाहुल्य रहता है तथा जाति का प्रायः प्रत्येक सदस्य उनमें सक्रिय सहयोग देता है । लोक गीतों के प्रचलन में लातावरण

\* मानवी लोक साहित्य : पृ. 41-42

2 गुलाबराय - काव्य के रूप : पृ. 123 |

3 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का परिचय, भूमिका - पृ. 51



का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जहाँ मनोरंजन के अन्य साधन कम प्रचलित हों वहाँ के समाज में मनुष्य अधिक स्वभाविक अवस्था में देखा जा सकता है।

इन सभी बातों पर विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि -

- 1 लोकगीत अज्ञात कवि की रचना होती है। \*
- 2 लोकगीत में साधारणीकरण की क्षमता होती है।
- 3 लोकगीत की लय तथा धून समाज को प्रिय लगनेवाली होती है।
- 4 लोकगीत में सामुहिकता की भावना अधिक होती है।
- 5 लोकगीतों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है।
- 6 आदिम जातियों में लोकगीतों की संख्या अधिक है पाई जाती है।
- 7 लोकगीत सरल और सुबोध्य भाषा में होते हैं।
- 8 लोकगीतों का प्रचार क्षेत्र किसी बोली या भाषा के बोलनेवालों पर निर्भर करता है।

### 1.3 लोकगीतों का वर्गीकरण : ....

लोकगीतों के वर्गीकरण अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से किये हैं। § आरम्भ में "पञ्च सांग" को ग्राम गीत ही माना गया था। बाद में लोकगीत शब्द का प्रचलन हुआ। §<sup>2</sup> डा. सत्येन्द्र ने अपने

---

\* डा. सत्येन्द्र - लोकसाहित्य विज्ञान, पृ. 390

2 लोक साहित्य विज्ञान - डा. सत्येन्द्र - पृ. 393



प्रसिद्ध ग्रंथ लोकसाहित्य विज्ञान<sup>1</sup> में लोकगीतों के अनेक भेद बताये हैं, जिनमें क्षेत्र की दृष्टि से, जातीय दृष्टि से, अवस्था भेद से, यौगिन भेद से, उपयोगिता की दृष्टि से, वस्तु भेद से, रूप भेद से और प्रकृति भेद से लोकगीतों के वर्गीकरण का सुझाव दिया गया है। उन्होंने लोकगीतों को दो प्रमुख भागों में बाँटा है -

- 1॥ अनुष्ठान-आधार सम्बन्धी तथा
- 2॥ मनोरंजन सम्बन्धी।<sup>2</sup>

लोकगीतों का वे निम्नलिखित रूप से भी वर्गीकरण प्रस्तुत करते हैं -

- 1 जन्म के गीत 2 विवाह के गीत 3 मृत्यु के गीत
- 4 त्थावार-छूत और देवी आदि के गीत
- 5 अन्य विविध गीत
- 6 प्रबन्ध गीत।<sup>3</sup>

डा. रामनरेश त्रिपाठी<sup>4</sup> ने ग्रामगीतों का विभाजन निम्न प्रकार से किया है :-

- 1 संस्कार सम्बन्धी गीत 2 चक्की व चरखे के गीत
- 3 धर्म गीत 4 श्रुत सम्बन्धी गीत 5-7 छेती, भिक्षांगी तथा मेले के गीत।
- 8 जाति गीत 9 चौर गाथा 10 गीत कथा तथा
- 11 अनुभव के वचन।

\* लोक साहित्य विज्ञान, डा. सत्येन्द्र - पृ. 393, 414 ।

2 ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन - पृ. 106

3 वही - पृ. 106-345 ।

4 कविता कोमूदी, भाग-3, पृ. 45 तथा लोक साहित्य विज्ञान - पृ. 397



बलजारा जाति के गीतों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है -

- 1 जन्म के गीत    2 विवाह के गीत
- 3 पर्व त्यौहारों के गीत
- 4 देवी-देवताओं के गीत,
- 5 क्षम तथा मृत्यु गीत ।

इन्हीं पर आगे विचार किया गया है -

..



## 1. जन्म के गीत : .. ...

### 1.1 गर्भती का खाना-पीना :

अनुष्ठान को हर सामग्री और अनुष्ठान का प्रत्येक क्षण गीत के द्वारा अभिषिक्त किया जाता है। चाहे वह सामग्री और चाहे धर्म से सम्बन्धित, कोई भी सामग्री गीत से अछूती नहीं रहती। जन्म के गीतों का आरम्भ गर्भ से होने के कुछ ही दिनों बाद हो जाता है। ह्द परम्परा के अनुसार भावी जननी विविध प्रकार की साध सामग्री मांगती है। उसने इस मनोविज्ञान का परिचय निम्नलिखित गीत से पाया जाता है -

बाईय कसो को देरोच मोर जीवडा ना, काई खान शामू बाई  
जीवडान ।

मटार् वासू जीवन बिचारी बाईय, आमनी बाम्बा ला देनी  
बाईय ।

बाईय कसो को देरोच मारे जीवडा ना, काई खान शामू बाई  
जीवडान ।

मटार् वासू जीवन छिंवाव बाईय, गोळ-सकर ला देनी बाईय ।  
बाईय कसो को देरोच मारे जीवडान, काई खान शामू बाई  
जीवडान ।

नीचू वासू जीव छिंवाव बाईय, बागेती नीम्बू तोडला बाईय ।  
बाईय कसो को देरोच मारे जीवडाना, काई खान शामू बाई  
जीवडान ।

नारेके वासू जीव छिंवाव बाईय, बाडेती नारेक तोडाला बाईय ।





बाई कसोक बेरोच मारे जीवडा ना, काई छान याम् बाई जीवडान  
 नारेंगी वासु जीव छिंवावा बाई, मोटी नारेंगी तोडाना बाई ।  
 बाई कसोक बेरोच मारे जीवडाना, काई छान याम् बाई जीवडा ना ।  
 मक्का वासु जीव छिंवाव बाई, तरमो मक्का भुजाला बाई ।  
 बाई कसोक बेरोच मारे जीवडान, काई छान याम् बाई जीवडाना ।  
 सकोई वासु जीव छिंवाव बाई, तात-तात सकोई रादना - बाई ।  
 बाई कसोक बेरोच मारे जीवडाना, काई छान याम् बाई ।

जीवडाना ।

माके वासु जीव छिंवाव बाई, वाखे माईसी माक खोणदा बाई ।  
 बाई कसोक बेरोच मारे जीवडाना, काई छान याम् बाई जीवडाना ।  
 लापसी वासु जीव छिंवाव बाई, लापसी रादन सरादा बाई  
 बाई कसोक बेरोच नारे जीवडाना, काई छान याम् बाई जीवडाना ।

एक अन्य गीत में गर्भवती स्त्री द्वारा विविध प्रकार की  
 साथ सामग्री मांगने का और उसकी मानसिक एवं शारीरिक स्थितियों  
 का वर्णन है । गीत इस प्रकार है -

ओरो एके मिना जाये धुरो माचको  
 ओहो घरे घारे पर चित जाये धुरो माचको  
 ओरो दिवो मिना जाये धुरो माचको  
 ओरो सगर-कगर जीव करा धुरो माचको  
 ओरो तीब मोना लागे धुरो माचको  
 ओरो बाकोन नौद जाय धुरो माचको  
 ओरो चार मो मोना लागे धुरो माचको  
 ओरो बाम्बा पर मन जाय धुरो माचको  
 ओरो पाधो मोना लागे धुरो माचको



जोरो लापसी पर मन जाय धतुरो माचको  
 जोरो ठामो मोना लागे धतुरो माचको  
 जोरो खोर पोनी पर मन जाय धतुरो माचको  
 जोरो सातमो मोना लागे धतुरो माचको  
 जोरो जीवेन जानन्द लाग्या धतुरो माचको  
 जोरो बाळो मोना लागे धतुरो माचको  
 जोरो धरे दारेन जानन्द लाग्या - धतुरो माचको  
 जोरो नवमी मोना लागे धतुरो माचको  
 जोर धर डावा जमो धतुरो माचको

उक्त गीत के अनुसार धात्री जननी का चित्त प्रथम मास में धर में -  
 रमने लगता है, दूसरे मास में जी छूटाता है, तीसरे मास में नींद  
 जाती है, चौथे मास में उसका मन झम्ली या कच्चे आम पर जाता है,  
 पाचवें मास में हलवा चाहता, छठे में खीर पूरी की इच्छा होती है,  
 सातवें में शिशु की प्रतीक्षा करती है, बाळो में पुत्रिण पति या  
 घरवालों से खुश रहती है तथा नवें महीने में शिशु का जन्म होता है ।

#### 1.2. प्रसवगीत : जोर गीत :

प्रसव षोड़ा से विकल्प बनजारिन की मनोस्थिति का व्यंजक  
 "सोहर" गीत इस प्रकार है । सभी परिजनों का यह षोड़ा से मुक्त  
 करने के लिए आश्वासन करती हैं -

भोजार्थ जे धामावा मारो जीवडाना, वड़े मां सूडा वळे नाग

भोजईडा-दिया ।

वेटेमा दुकाजना जीवडा धमलावा भोजईडा-दिया ।



भाडीएजे ताकेज गोरेमा सवारलेन मना बचालेनी भाडिय - िया ।  
 भीडीएजे धामला मारे जीवठाना, कडेमा सूडा छे लाग भाडीए-िया ।  
 दादोएजे मन कनेसी लेलेनी, बकडीमा भर लेनी दादोए-िया  
 बन्न बानीएजे तारेज पोटीन बन्वठ ला नानिया-िया ।  
 नाजिए जे धामला मारे जीवडा ना, कडे मा सूडा छे लाग  
 नानिया-िया ।

एक अन्य प्रसव गीत में दाई की छोड़े पर या केनगाड़ो  
 में प्रसूती के लिए घर तक लाने का वर्णन है ।

दाई तू मार बाडी चाल छपको छरेन  
 दोन स्वेर हासिनी छडादियूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको छोड़े पर  
 तीन स्वेर सांझी छडा दियूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको बड़ी पर  
 तीन सोनेर भुरिया छडा दियूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको  
 तीन स्वेर पो'ज्ज छडा दि' दीयूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको नीडिया पर  
 तीन स्वेर छुररा मठा दीयूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको छरेन  
 तीन केटिया सोडा दीयूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको छरेन  
 तीन बा'च बालो दाणा मया दियूं  
 दाई तू मार बाडी चाल छपको छरेन  
 तीन मोठीर टिकली मठा दीयूं



दाई तू मार याडो चाल छपको छरेन  
 तीन छुंटाओ छोटिया वराडियूं  
 दाई तू मार याडो चाल छपको छरेन  
 तीन कावेवाळ काँचको सीठा दूदूं  
 दाई तुमार याडो चाल छपको छरेन  
 तीन पामडी उठादियूं  
 दाई तू मार याडो चाल छपको छरेने

उक्त प्रसव लोकांगीत में दाई को छोटे घर या बैलगाड़ी पर बैठकर प्रसूति के लिए घर तक चलने के लिये अनुरोध किया जाता है। सुख प्रसूति करवा देने पर उसे वस्त्र, आभूषण और धान्य दान देने का वादा किया जाता है। इस गीत में दाई को मातर के रूप में सम्बोधित किया गया है।

### 1.3. पुत्र जन्म :

पुत्र जन्म टाँडे की एक विशेष घटना है। बनजारा मानस अपनी जाति की वृद्धि देखकर नाच उठता है। टाँडे का सारा वातावरण मादक और मुहूर्त हो उठता है। टाँडे की नारियाँ उमड़ती हुई जब्बा के आस-पास घिर जाती है। जन्म सम्बन्धी प्रधाजों के साथ ये सम्पन्न करती है। जब्बा और होनेवाले शिशु का पिता गर्व से उभर उठते हैं और टाँडे की सभी बनजारे उन पर शुभ कामनाओं की वर्षा कर देते हैं। ऐसे तो औपचारिक रूप से पुत्री के जन्म को शुभ माना जाता है पर पुत्र जन्म के समान उसका उत्सव नहीं मनाया जाता है। इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है -



बाइए गरु बाबारी असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए वालाजीरो असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए रागेरो असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए किस्तेरो असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए हनुमानेरो असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए गौ बाडीर असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए सत्ती बाडीर असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए मिठु भुक्कियार असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए सोमादेशे असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए बड़-बूडेर असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए दानियार असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए चान्दा-सूरजेर असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए ठकरो धनकीर असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए चौकली बाडीर असीस छ तारे बाबा पर  
 बाइए काकूराम बाबा असीस छ तारे बाबा पर

पुत्र जन्म पर कहा गया है कि अंधेरे कमरे में कृष्ण का जन्म हुआ है । इस अवसर पर वासुदेव-देवकी सोच-विचार कर रहे हैं । उनके द्वार पर चार द्वारपाल पहरा दे रहे हैं । गीत इस प्रकार है -

बाइए कसना जन्मोच अंधारी कोठड़ीमा  
 बाइए जोरो बाबा वासुदेव विचार माँ पड़्यो  
 बाइए भगवान जन्मोच अंधारी कोठड़ीमा  
 बाइए जोर माता देवकी विचारे काँ पड़्यो  
 बाइए रामेर अवतार जन्मोच अंधारी कोठड़ीमा  
 बाइए जोरो बाबा वासुदेव विचारे माँ पड़्यो



बाइए काको बाबा जनमोच अंधारी कोठड़ीमा  
 बाइए ओर माता देवकी विचारे मा पड़्यो  
 बाइए वाम्बोवाको जनमोच अंधारी कोठड़ीम  
 बाइए ओरो बाबा वासुदेव विचारे मा पड़्यो  
 बाइए दाना न मारेन कसना जन्मोच अंधारी कोठड़ीया  
 बाइए ओर माता देवकी विचारे मा पड़्यो  
 बाइए नंदबाबा घर जायेन कसना जनमोच अंधारी कोठड़ीमा  
 बाइए ओरो बाबा वासुदेव विचार मा पड़्यो  
 बाइए गावडी घरायेन कसना जनमोच अंधारी कोठड़ीम  
 बाइए ओर माता देवकी विचारे मा पड़्यो  
 बाइए लूणी छायेन कसना जनमोच काको कोठड़ीम  
 बाइए ओरो बाबा विचारे मा पड़्यो  
 बाइए पापीन मारेन कसना जनमोच अंधारी कोठड़ीम  
 बाइए ओर मातर देवकी विचारे मा पड़्यो  
 बाइए गलमा पर चार सिपाई हुकेव  
 बाइए ओरो बाबा, माता विचारे मा पड़्यो

#### १.४. काढ़ा :

पुस्तक के पष्ठचात् जन्मा को एक विशेष प्रकार का पिय पदार्थ दिया जाता है उसे "काढ़ा" \* कहते हैं । काढ़े को पिलाया जाना भी गीत की गूँथ के साथ सम्बन्ध होता है । गीत इस प्रकार है -

- \* लूठ, जीरा, मोड़ो, दालचीन, जायफल, पीपलो, गुड़ और अम्ली छी से काढ़ा बनाया जाता है ।



काड़ी पीलाप मार लाङ्गी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार नाजूक बेटो  
 काड़ी पीलाप मार नायक बेटो  
 काड़ी पीलाप मार हुंसा बेटो  
 काड़ी पीलाप मार सुवाड़ी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार सेराब बेटो  
 काड़ी पीलाप मार चरमटड़ी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार मारवाड़ी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार धरमणी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार दुख बेटो  
 काड़ी पीलाप मार राणी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार देसमुखी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार राजपूतणी ब्रे बेटो  
 काड़ी पीलाप मार बेपारी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार धालीने बेटो  
 काड़ी पीलाप मार नामदारणी बेटो  
 काड़ी पीलाप मार भक्त बेटो  
 काड़ी पीलाप मार कलावणी बेटो

#### 1.5. भूमालापसी : ॥ हलवा ॥ :

प्रसव के दूसरे दिन जन्मा को "भूमालापसी" \* छिवाया जाता है। हलवा को गुठ, लसली घी, गेहूँ का आटा और काजू डालकर बनाया जाता है। इस अवसर पर गीत इस प्रकार है -

---

छिछोह प्रकार का हलवा ।



बाइए भूझमा क लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए गहूर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए गोबेर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए धोएर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए टोपटेर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए बादामेर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए चाक़ेर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए चारोबोर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए मुन्कार भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए काजूर भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए छार भूझमा लापसी छोट देनी बाइन  
 बाइए मौवडार भूझमा लापसी छोट देनी बाइन

#### 1.6. छटी :

शिशु जन्म के पश्चात् छटा दिन विशेष महत्वपूर्ण होता है ।  
 इस दिन जन्मा को "माधो धोणो - स्नान" \* कराया जाता है -  
 जैसे प्रसव कालीन अशुद्धता को धो डालने के लिए ही यह स्नान कराया  
 जाता है । गीत स्नान के छण को म्मुरित कर देता है । गीत इस प्रकार  
 है -

बाइए सुवाड़ी पर पाणी रेड़ोए बाइए ।  
 बाइए सुवाड़ी पर समेबीर पाणी रेड़ोए बाइए ।  
 बाइए सुवाड़ी पर नीमेर पाणी रेड़ोए बाइए ।  
 बाइए सुवाड़ी पर बाड़ेर पाणी रेड़ोए बाइए ।

---

\* विशेष प्रकार का स्नान





बाह्य सूवाड़ी पर कौकनी पाणो रेड़ोए बाह्य ।

बाह्य सूवाड़ी पर मौडोर पाणो रेड़ोए बाह्य ।

1.7. जलपूजन और कौमरी बाटना :

॥ छुहरी बैठनी ॥

उत्तर प्रदेश और राजस्थान में मुख्य रूप से यह दोनों पुराण जन्म के अनुष्ठान के मुख्य भाग हैं । जिसको बनजारों में जल का पूजन कहा जाता है । वहीं इन क्षेत्रों में कृष्ण का पूजा है । "छुहरी" बाटने के समय का गीत भी बनजारों के गीत के समान हैं । इस गीत में पूज्य की जन्म देनेवाली जम्बा के अहंकार को अभिव्यक्ति हुई है साथ ही नन्द और भावज के सम्बन्ध की कटुता को भी प्रकट किया गया है । विवाह के उपरान्त नन्द भावज को तंग करते हैं । पूज्यधी जम्बा उसी का बदला लेती है । इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है -

बादी टांठे माँ छुहरी बैठिया  
बादी डाय सणौ छुहरी बैठिया  
बादी नायकेन छुहरी बैठिया  
बादी नायकेन छुहरी बैठिया  
बादी सोबतगून छुहरी बैठिया  
बादी नाना-नानीन छुहरी बैठिया  
बादी दादा-दादीन छुहरी बैठिया  
बादी मामा-मामीन छुहरी बैठिया  
बादी काका-काकीन छुहरी बैठिया  
बादी भाईन छुहरी बैठिया

\* कौमरी



**बाँदी**

बाँदी बाँदी-बापेन छुट्टी वेंटिया  
बाँदी फरपी- फुमन छुट्टी वेंटिया  
बाँदी नन्दोहन छुट्टी वेंटिया  
बाँदी नन्देन ठाल धाकी वताया  
बाँदी नन्देर जाँकी बाक्या

### 1.8. नामकरण : छुंड :

बनजारा समाज में नामकरण संस्कार पुत्र जन्म के दसवें दिन या होली के त्यौहार के दिन होता है। कन्या का नामकरण जन्म से बारहवें दिन पर सम्पन्न होता है। नामकरण संस्कार को बनजारा समाज में "छुंड" कहते हैं। इस अनुष्ठान में टाँडे का नायक, होली का गेरिया तथा टाँडे के सभी लोग भाग लेते हैं। इस संस्कार के लिए हरी-भरी डालियों से मंडप बनाया जाता है। नामकरणवाले लड़के को वस्त्राभूषणों से अलंकृत कराया जाता है। उसे मंडप के नीचे पट्टे पर बिठाया जाता है। मंडप के नीचे एक क बर्तन में नारियल, केला, मोसम्बी तथा अन्य फल रखे जाते हैं।

इस अनुष्ठान के अन्तर पर नाच करनेवाले लड़के की माँ अनेक वस्त्राभूषणों से दुहन की तरह अलंकृत होती है। टाँडे की स्त्रियाँ उसके शृंगार का वर्णन करती हुई गीत गाती हैं। गीत इस प्रकार है -

बीरे बाबारी छ तेवार, मोड़-मोड़ कीदी सज्जार  
हास छाली हवेली छाली, छाल लोदी नखेरी हार  
छछरी छो काँई मसराईरी पेरी, खजी लोचडी ती सज्गी नार  
लोचडीती जोदी रेमेरी, खजी छूटे हो सज्गी नार



काखनी तो पेटी कोत्कीरी, खजी पाराती सज्जी नार  
छुसरी तो छानी सोनेरी, खजी टोपलीती सज्जी नार  
पाटनी तो छानी चान्दी केही, खजी बलियाती सज्जी नार  
चोटोतो छानी अगिणी मो, खजी कूलियाती सज्जी नार  
खाँकडी तो छानी पगेभा, कस छामन सज्जी नार,  
खरकी तो छानी अगिणीमा, खजी अंगूठा ती सज्जी नार  
औरी बाबारी छ तेधार, मोड़-मोड़ कीदी लगार

लड़के की माँ अनेक वस्त्राभूषणों से अलंकृत होती है। उक्त लोकगीत में उसका हो नख-रिख कर्ण है।

इस दिन जम्मा और बच्चा को लूँ और बाँधों के द्वारा उपहार दिये जाते हैं। नाई की सहायता से लड़के के पिता द्वारा लड़के के केश काटे जाते हैं। तत्पश्चात् पुरोहित ज्योतिष के अनुसार जन्म की छड़ी का अध्ययन करके नामकरण कर देता है। होनी का गेरिया बरतन में से छाछ-पदाधों को जोर-जबरी से उठाकर अपने साथियों को बाँटता है और स्वयं भी खाता है। इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर निम्नलिखित गीत गाया जाता है -

पेनी तो नाम स्वामी रो ले - स्वा !  
स्वामीरो जायो जानंद वदायो ।  
दूसरीतो नाम महन्दा पाणीरो लेस्वा ।  
महन्दा रो जायो जानंद वदायो ।  
तीरसी तो नाम धरतीरो ले स्वा ।  
धरतीरो जायो जानंद वदायो ।  
तु भनी जम्मी ये गेरिया के रजपुत ।  
तार अगिण नकरस अगिणे ।



तु भनो जल्मी ये अजुन सरीके वीरा ।

तु भनो जल्मी ये राक्या के रज्जुत ।

### 7.9. अन्न प्राशन : ॥ लपटी चटाणों ॥ :

बनजारा जाति में अन्नप्राशन को "लपटी चटाणों" कहते हैं ।  
 शिशु का छः मास का हो जाने के बाद और एक वर्ष का होने तक  
 "अन्नप्राशन" संस्कार किया जाता है । शिशु की दादी उसे गोद में  
 लेकर खीर ॥लपटी॥ या ॥लपटी॥ चटाती है । इस अनुष्ठान के बहुत  
 कम गीत पाये जाते हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

रामेरो स्पड़ा चादिरों टुकड़ा चाटला लपटी चाट ।

किसनेरो ब स्पड़ा चादिरों टुकड़ा चाटला लपटी चाट ।

बालाजीरो स्पड़ा चादिरों टुकड़ा चाटला लपटी चाट ।

सेधारो स्पड़ा चादिरों टुकड़ा चाटला लपटी चाट ।

गादीवाको स्पड़ा चादिरों टुकड़ा चाटला लपटी चाट ।

### 1.10 कर्ण छेदन : ॥ काने माँ बाकली घालनों ॥ :

लड़की और लड़के दोनों ही के कर्ण छेदे जाते हैं किन्तु उत्सव  
 लड़के के ही कर्ण छेदन का मनाया जाता है । कर्ण छेदन घर की बूढ़ा स्त्री  
 की गोद में बिठाकर कराया जाता है । सोनार बाकी बनाकर लाता  
 है और उस बाकी को ही पहना देता है । इस अवसर पर गाये जानेवाले  
 गीतों में से एक प्रकार का गीत देखिय -

बाका सोनेर बाकली पेटला, याडोर जसीस लेला ।

बाका सोनेर बाकली पेटला, बाधेर जसीस लेला ।



बाबा सोनेर बाबली पेटला, दादोर ज्सीस लेला  
बाबा सोनेर बाबली पेटला, दादोर ज्सीस लेला  
बाबा सोनेर बाबली पेटला, काकीर ज्सीस लेला  
बाबा सोनेर बाबली पेटला, काकार ज्सीस लेला  
बाबा सोनेर बाबली पेटला, नायकेर ज्सीस लेला  
बाबा सोनेर बाबली पेटला, नायकेर ज्सीस लेला  
बाबा सोनेर बाबली पेटला, तनारेर ज्सीस लेला

....



## 2. विवाह गीत :        ....        .....

### 2.1. सगाई :

बनजारा जाति में विवाह का आरम्भ सगाई से होता है । सगाई के समय लेन-देन की बात पक्की होती है । वर के पिता से कन्या का पिता पाँच बछड़े लेता है । इसे केन्डार (बछड़े की) सगाई भी कहते हैं जिस वर के पिता के पास बछड़े उपलब्ध न हों तो पाँच बछड़ों का मूल्य हो दे दिया जाता है । जिस सगाई में बछड़ों के स्थान पर बैसे दिये जाते हैं उसको "वान्सबोर" सगाई कहते हैं । बनजारों में दहेज प्रथा नहीं है ।

### 2.1.1. पचार (कुल लेम) :

पचार जमुठान में जाति के प्रमुख लोग पंचायत की मददता की छौछणा करते हैं । राजा भोजन विजुमादित्य की सभा से उस पंचायत को उपमित किया जाता है । पुरुष पंच इस समय पहेली द्वारा कुल लेम पूछते हैं । पहले इस प्रकार है :

पंच पंचायत राजा भोजेर सभार भिया ।  
 भेट भिया भाइन सगा, पचारे जगत ।  
 दमतो दिद्यो, विद्यामला उयाव ।  
 ताटेर धौकणी, जमेर लोटार छिया  
 तब कसक, जक कसकर भिया  
 कसक उ भमियारी घाटर भिया  
 हात घटाणी डोर  
 कटवा केटे चार, सगा केटे चार र भिया ।



कट्टा तो कोनि घोबर भिया  
छा घोरेर पच भोखार भिया  
वेवार जापणी कसक घोबर भिया  
बाल बच्चा, गायडी दूर कसक घोबर भिया  
भमियार वाटेन छोडन, हमार वाटेन कायेर भिया  
तो वरसेर जोडा करेन कायेर भिया  
कसाव कसलेती जायो कायेर भिया ।  
आज राजा भोजेर दरसन केगीर भिया  
आख्या संपाकी जगिन केला बी कायेर भिया  
जापण से आईजात छ भिया  
आज भजे लोगूर दरसन केगीर भिया  
जापण से कसक छोडर कायेर भिया ।

उक्त पहेली के अनुसार - सगे-संबंधियों की जमछट राजभोज की सभा के समान सुगोष्ठि है । इस सभा में सभी बनजारे बंधु बैठे हैं । सभी लोग धन धान्य से संपन्न हैं । संसार में मर्यादा होने के कारण हमारी कमावली भी सुखिलयात है । जहाँ भी जाये वहाँ मान की ताटेर भिखी [आसन] तथा वादों की जारी बानी पाने की भिमती है । जिस तरह जल तल पर सरल सरल बला जाता है उसी तरह व हमराज के पास पहुँचने की सरल मार्ग है । काल की डोर एम्बुतों के हाथ में भी है जो चारों ओर से संकट से छिड़ी है । इस सभा के सभी भाइयों के परिवार कुल लेन तो है । इस समय अन्य व्यक्ति प्रत्युत्तर देता है कि ईश्वर की दया से सभी भाइयों का काम प्राप्त हुआ है ।

कुल लेन के पश्चात् सम्बन्धियों का स्वागत किया जाता



है । स्वागत के समय बहेली गार्ह जाती है । बहेली इस प्रकार है -

पंच पंचायत राजा भोजेर सभा  
 साखन सवा साख भाईर, जानंद समेर कस  
 भाई बापण जानंद, सगा बापण सग, तब्यो पातळ ध्यान  
 है तो कोटी छोळू जान, नहों तो पंचों में भगवान  
 तब्यो है संतार में, भात-भोरेर लोग  
 सेत हल-मल बाभिया तो नंदी नाम संयोग  
 मेवा सगान मेवा करिया येवा नंदी नीर  
 छापी जापसिंग सिया जु दूर बढ़े सीत  
 मेवा सगान येवा न जाये येवाच सिंगड़ा टीका लोग  
 परमबना प्याले दुधाका सूह - सुकरा सुपारिया रंग -  
 कसूब होय

भाई बगर रंग दूजो होय  
 सुह सुकटा सुपारिया रंग कगा बगर दूजो न होय  
 सुह सुकटा गंगन मन नड़ी डोर  
 तम समंदर हम माछा तम सिया हलोस  
 पापी भाई करा कलोक  
 छोको छोड़ी हासलो, छुटी टको सगान  
 सनीतो सगा मळो, दस दाडू करांचा मकाम  
 डंगर थे जब दूर थे, अब पडी जाण पछाण  
 सगाती सगा मळो, होरा निपजे खान  
 लठ-लछती परवाना भेलु, भेलु वो कस्तूरी  
 छोळू तो कस्तूरी तोळू तो बनजे पुरीच पुरी  
 सोनेर धाजी स्पेर वाटी





सगाती सगा मन्गो, शीक लेगी छाती  
 राजा बाबसाहार भीषाकेर गढ़वी  
 अब बापण सकल मेम छव  
 भूष्यार छोरी, चढ़त्यार छोरा साब्या पदो रंग  
 पदो नेम छरम दुखो, कौटरी चाढ़ भूगी मढ़रीचाढ़ हेच ।

उक्त पहेली के अनुसार पदों की पदावत राजा भोज की सभा है । हम लोग इस सभा के साज-सजा-साज की पूँजीवाने प्रतिनिधि हैं । बाप सब कुल तो हैं न? सत्य यह है कि पद ही परमेश्वर होते हैं । बापस में रहते जोड़ने से हमारी जाति की उन्नति होगी । हमारे रहते नदी के संगम के समान निर्मल होंगे । हमारे रहते किसी मुकुट के हीरे के समान होंगे । समझी तथा सम्बन्धों के समान दूसरी शोभा नहीं । हम एक दूसरे की सहायता से समाज में उन्नति करें । सागर में मछलियाँ जिस प्रकार मिल कर रहती हैं उसी प्रकार हम भी रहेंगे । बाप हमारे गौरवनीय सम्बन्धी है । इसी प्रकार इसीलिये छोड़े की लगाम छूटि से बांध दीजिए और बाराम कीजिए । हम लोग यहाँ पर कुछ समय तक रहेंगे । हमारे टाँठों के बीच जंगल, पर्वत होने से हम लोग आज तक एक दूसरे कलम थे । साज इस रहित ने हमें मिलया है । आज हमें पीरे की छान मिल गई है । बाप का यहा कस्तुरी के समान पैसा हुआ है । इसलिये हम बाप को यहाँ पत्र भेजकर बुलाया है । हमारा संयोग सोने की धाली में चाँदी के कटोरे के समान है । बाप के मिलने से हमारा मन पुलक है । बाबसाह ने हमसे भीषणमद् भूषासम्पद् छीन लिया है । आज से यही स्थान हमारा राज्य है और यह हमारा सिंहासन है । भूष्या की लड़की से चढत्या का लड़का सगाई कर रहा है । इसलिये यह सगाई पक्की हुई । इसे कोई तोड़ नहीं सकता ।



### 2.1.3. गोक छाणी । गूड़ छाना । :

सगाई की बात सभी पक्की होती है जब की गूड़ छाने की रस्म भी उदा हो जाती है । घर-घर कच्चा के दोनों पक्ष के लोग किसी बाग में एकट्ठे हो जाते हैं वहाँ पर गूड़ छाने का कार्यक्रम सम्पन्न हो जाता है । घर का पिता गूड़ की पाँच भेरी साथ में ले जाता है । तैरिया " गूड़ की भेरी से मुट्ठी भर गूड़ लेकर पंखों की पंक्ति में छुमता है । पहले गूड़ देने का मान भूँकिया गौश्रवाले व्यक्ति को दिया जाता है । अन्य गौत्र के व्यक्ति को यह मान-सम्मान नहीं मिलता । "तैरिया" हाथ में गूड़ लेकर पंखों की पंक्ति में छुमता है । इसके बाद गूड़ देने का मान नायक को दिया जाता है । उसके पश्चात् सभी सदस्यों की दो-दो मुट्ठी बाँटा दिया जाता है ।

गूड़ छाने के कार्यक्रम से पहले ही घर पक्ष के लोग रास्ते में चोरी से "बामन्या गोक" । ब्राह्मण का गूड़ । जाकर बाते हैं । यह कहा जाता है कि ब्राह्मण के लड़के ने बनजारों की लड़की से प्रेम किया था उस समय ब्राह्मण के लड़के का गूड़ चोरी से रास्ते में ही छाया गया था ।

गोक छाणी कार्य में घर का पिता तीन नारियल ले जाता है । तीन में से एक को कुल गुरू के नाम पर, दूसरे को नारियल दोनों पक्ष के नायकों को दे दिये जाते हैं । ये नारियल मानके प्रतीक होते हैं । इस अवसर पर गीत नहीं गाये जाते ।

---

• घर के साथ रहनेवाला व्यक्ति ।



#### 2.1.4 साक्यार रपया : ॥ = भेंट का रपया ॥ :

वर का पिता भेरिया के द्वारा एक रपया कन्या के पक्ष के नायक को भेंट देता है। इस रपया को "साक्यार रपया" कहते हैं। इस रपया का संकेत नायक को साक्ष बनाना है। यदि लड़की का पिता कन्या को कहीं दूसरी जगह ब्याह देता है तो उसकी पूरी जिम्मेदारी उस नायक पर होती है। इसलिए "साक्यार रपया" विशेष महत्व रखता है। कन्या के पिता पर नायक का भरोसा न हो तो वह "साक्यार रपया" स्वीकार नहीं करता।

#### 2.1.5 कोतकीर रपया : ॥ = धेनी का रपया ॥ :

केतहु ॥ वर ॥ का पिता वैसे की धेनी में पाँच रुपये छानकर भेरिया के द्वारा पंचों को दिखाता है। इस धेनी को "करारेर कोतकी" ॥ वादे की धेनी ॥ कहा जाता है।

यह करार या वादे का प्रतीक माना जाता है। करार की धेनी को खोचूड व्यक्ति को सौंप दी जाती है। कुछ पाँच पंचों के समक्ष धेनी में निहित पाँच रुपयों की ही पाँच सौ रुपये होने की घोषणा करता है। वे पाँच रुपये कन्या के पिता को दे दिये जाते हैं। पाँच पंच मिलकर जैसे वर पक्ष की ओर से जारीभक्त शुल्क के प्रतीक के रूप में ही पाँच रुपये देते हैं। यह शुल्क इस बात का प्रतीक है कि वर पक्ष का खिवाह-पुस्ताय कन्या के पक्ष के लोगों को स्वीकार है। अन्त में वर का भावी साला अपने भावी बहनोई को दो रुपये पंचों के समक्ष भेंट करता है। यह इस बात का प्रतीक है कि कन्या के पिता को ही नहीं उसके भाई को भी सगाई स्वीकृत है।



## 2.1.6 रंगिर रपया :

एक मोटे में गुलाबी रंग छोला जाता है। घर का भावी साला उस मोटे को वहनोई के सम्मन रखता है। घर उस मोटे में एक रपया छामता है। इस रपये की "रंगिर रपया" रंगा हुआ रपया कहते हैं। सर्व प्रथम भावी साला वहनोई के कपड़ों पर रंग छिड़कता है। उसके पड़वात् पंचों पर रंग छिड़का जाता है। रंग छिड़कना भी प्रेम की प्रवृत्ति का एक प्रतीक है। दूसरी ओर नव-सम्बन्ध की भूमिका के उत्साह और उत्साह को अभी यह प्रकट करता है। मोटे का रपया सामे की दी दे दिया जाता है। इसके बाद सगाई का गीत ब गाया जाता है।

गीत इस प्रकार है -

जाम्बहार जागे मां खेटे पंच मेडू  
जाम्बहार जागे मां कीदेर सगाई  
जाम्बारी जागे मां खेटे पंच मेडू  
जाम्बारी जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां खेटे पंच मेडू  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई  
मोसंबीरे जागे मां कीदेर सगाई



नारेकेर बागे मां छादेर छीया पोकी  
 नारेकेर बागे मां जोठेर सगाई  
 नारेगीर बागे मां बेटेर पंच मेड़  
 नारेगीर बागे मां कीदेर सगाई  
 नारेगीर बागे मां छादेर मटाई  
 नारेगीर बागे मां छादेर छीया पोकी  
 नारेगीर बागे मां जोठेर सगाई ।

## 2.2. मनोरंजन :

सगाई के पश्चात् सामुहिक मनोरंजन का क्रम छटित होता है । इसमें कई कार्यक्रम होते हैं, वे इस प्रकार हैं - ताड़ीपान, भांग, मदिरीपान, स्वागत धो, हुक्का और पान-तुपारी । सभी कार्यक्रमों में परेमिया गाई जाती है ।

### 2.2.1. ताड़ीपान :

मनोरंजन के कार्यक्रम में सर्व प्रथम ताड़ीपान किया जाता है । ताड़ीपानी पीने से पहले एक परेली गाई जाती है, पहलेी इस प्रकार है -

पंच-पंचायत राजा भोखेर सभा ।  
 सग-सगाई हरक दोपरी लात ।  
 उल्ले काटि न परेवड़ा रे ।  
 भाई उ दुधारी धाह ।  
 नदी किनारे वेम छाई ।  
 नदी डाबर नायक ।  
 क्ष्माती-क्ष्माती जोडा सदा डाबर नायक ।



### उक्त पहेलो के अनुसार -

बाग में पंचों की सामूहिक सभा उसी तरह बठी है जैसे राजा भोज के नेतृत्व में, उनके राज-दरबार में बठा करती थी । इन पंचों ने अपने सगे-संबंधियों में ही अपनी सन्तान की सगाई निश्चित की है । उसी-उसी पेड़ पर लम्बे-लम्बे काटे बटके हुए हैं । इन पेड़ों को कोई पसन्द नहीं करेगा, किन्तु नदी के किनारे छड़े इन पेड़ों के अंतःस्थ में दूध की धारा प्रवाहित होती हैं । नदी का पानी डाँवर के समान काला है, किन्तु इन पेड़ों के भीतर बहनेवाली सेंदो [ताड़ी] दूध के समान है ।

दोनों समझी मिलकर इसी शृंखला की पंचों को पिलाते हैं । इसी प्रकार अन्य पहेलियाँ कही जाती हैं ।

### 2.2.2 भांग :

ताड़ीपान के पश्चात् भांग पिLANE का कार्यक्रम होता है ।

भांग को इस प्रकार तैयार किया जाता है :-

जस-जस, किसमिस, गुड़, गाँजा, भांग की पत्ति, काली मिर्च, जायफल, जायपत्री, बादाम आदि को दूध में घोटकर बनाया जाता है । ये भांग बड़े शान से बनाई जाती हैं । भांग को लोकगीत इस प्रकार है -

डोडोया री-वी री तारो बूँडो । सतारड़ा री वी री  
तारो सोटा ।  
आज काई टोपरो कुँन भोको । सरको डाव्य छिनारिया ॥



भाग को पत्थर के ऊँझ [कुण्डों] में लकड़ी के सोठे से ढीसकर तैयार किया जाता है। इन साधनों को बनानेवाली ओठीया [पत्थर तोड़नेवाला] और बड़ई की इस गीत में प्रशंसा की गई है।

विवाह के संस्कार क विशेष पर भाग को पुसाद के रूप में किया जाता है। भाग से तात्पर्य यह है कि - संस्कार विशेष का पंचों के समक्ष अभ्यारंग करना। इसी को "भाग करणो" कहा जाता है। बनजारों में भाग का मान भंगी भूकिया नामक गोत्र को दिया जाता है।

बनजारों के विवाह में भाग के सात पुसरंग आते हैं - पहली भांग गूड़ खाने के समय संपन्न होती है इसे "गोदेर भांग" कहते हैं। यह भांग लड़कों-बेड़ों की सगाई निश्चित होने की सूचक है। भांग की पहेली इस प्रकार है -

"भाग में भांग सलताणी भांग।

हीरा मोतीन की छाण कवे क्यड़ा में छाण।

भाग मिटी न राम दीटी छाने सरीकी कावेरी बेटी।

बपटी कम बीजा भोकी लो भाई संग भांग।

उक्त गीत के अनुसार -

बनजारों का विश्वास है कि सबसे अच्छी भांग सुलतानी भांग हो सकती है। भांग पी लेने पर वे अपने आप को सुलतान ही समझने लगते हैं। उनके पास भांग का महत्व उतना ही है जितना कि हीरा-मोती के छान को दिया जाता है। भांग के नो में व्यक्ति अपनी चुटकी में झमेली के बीज को मसल डालने को विन्मत्त रहता है।



सलताणो भांग [मुस्तानी भांग] की अन्य एक पहेली इस प्रकार है ।

भांग रे भांग सलताणो भांग  
भांग न ढिटो राम न मिटो  
रामे सरीकी सभा बेठी  
सुटा मोटी सांग  
रण मोटी तलवार  
राजपूत भारो कोठडी  
सख्खा मोटी घोड लो  
सेज मोटी कामिनी  
पसिम मोटी भांग  
लो भाई सगा भांगे

उक्त पहेली के अनुसार यह सभा राम की सभा के समान है । शिकार के अवसर पर वहाँ प्रिय होती है, युद्ध के मैदान में तलवार प्रिय होती है, दरबार के लिए राजपूत प्रिय होता है, वीर को घोड़ी प्रिय होती है और सेज पर कामिनी प्रिय होती है । उसी प्रकार इस शुभ अवसर पर सलताणो भांग प्रिय है । इसे गुण कीजिये ।

### 2.2.3. मंदिराधान :

भांग के पिलाने के पश्चात् मंदिरा धान भी होता है । इस शु अवसर पर भी पहेली गाई जाती है । पहेली इस प्रकार है -

धक धक्ते धकिया बक, बके छे का तुठ  
बेठो हसिया मद पिय छ टपको पड़े बूँद





येव मोवठारो खीर लापसो, येव मोवठारो दास  
परायखाको पूछ, न पूछ तो तन मन देजाए वारू  
वेतड़ हूबो जाणेली, लो भाई प्याला मानेली ।

उबत पहेलो के अनुसार छेर की सूझी लकीरिया जलाकर  
महुए की शराब निकाली गई है । यह महुए का शराब छड़ी के समान  
है । दुग्ध की छुगी के लिए सम्बन्धियों को पिलाई जाती है ।

#### 2.2.4. स्वागत भोज :

मंदिरा पान के अनन्तर बाग में स्वागत भोज दिया जाता है ।  
भोज के अवसर पर पहेलीगाई जाती है । पहेली गाने के बाद में ही  
भोज का आरम्भ होता है । पहेली इस प्रकार है -

पाँच पाँचायत राजा भोजेर सभा  
पचारे बाबो लाख अन पचारे बाबो सवाल लौछ  
बाछाई कवेरी अमराई  
जगत एकैम एक सवाई  
रंगी रंगी पाँच मंगाबा सिता सरोकी नार  
पक्खाण छेटी जगद कणावे भूरिया  
उछा काठ न छरा  
फळ घाल दिंग बोजवार  
बनाई मोठा फल  
किसे काजेरी तीन कड़ी  
लो भाई सगा रगेरी छिखडी  
सगा बायो पामणो, उदी राबो गाद  
असी छिवारी मावली, तो दूधासु घोई पाँच



भोज के अवसर पर कहा जाता है कि राजा भोज की सभा के समान है। यह अमराई कवहरी के समान है। सीता जैसी स्त्री ने पंच-पक्वान बनाई हैं। सुके मेवे हींग-मसाले डाल कर रंगीन छिचकी भी बनाई है। हमारे सगे बैठने के लिए उँई गद्दे बिछाए हैं। भोली-भासी घर की स्त्री ने अतिथियों के पैर दूध से धोये हैं।

#### 2.2.5 होका : हुक्का :

भोजन के पश्चात् हुक्का, पान-सुपारी की व्यवस्था होती है। हुक्का में इस शुभ अवसर के लिए मंगाई गई गुजरात की तमाखू होती है। पंचों को हुक्का देते समय पहली गाई जाती है। पहली इस प्रकार है -

होका तो होती भाई, खलम भाई  
गुजरात की तमाखू कत खसीती रात  
कत खसीती रात पड़े मदों के हाथ  
दो दुःख सारी रात  
हात न जड़े, पाव न जड़े, जड़े बतीसा रंग  
खेतड़ हूबो जाणैती, ली भाई होका माने तो।

#### 2.2.6. पान-सुपारी :

हुक्का के अनन्तर पान-सुपारी की व्यवस्था होती है। पंचों को पान-सुपारी देते समय एक पहली गाई जाती है जो इस प्रकार है -

रतन गड़ेरी सुपारी, चंपा गड़ेरी पान  
कातो केम? लाल गलाल, कातो केम? कड़वा-कड़वा



कड़वा हमारी जात

चूना केम? दुंगर को काँकरा

जयसो पाणो मळ जावे तो पाणो सरीको पातळो

लूंग केम? चरकी-चरकी, सधसे जादा पाचोर

कर दू एक मन, घेतळू हूबो जाणेली

लो भाई सगा पान माने तो

रतन गद्द को सुपारी तथा चंपा पट के पान हे ।

बनजारा समाज के जैसा कड़वा गुलाल रंग का कथा भी है । पहाड़ के कंकड़ों वाला चूना है जो पानी की बूँद पड़ते ही धुल जाता है । इनके साथ चरघटो गीत भी है ।

## 2.3. चर यात्रा :

कन्या-गृह के प्रस्थान के समय अनुष्ठानों की एक श्रृंखला ही बन जाती है । इनका परिचय नीचे दिया गया है ।

### 2.3.1. पाल माँझो ॥ पत्तों का मंथ बनाना ॥ :

साड़ी अनुष्ठान के अवसर पर घर के आँगन में पत्तों का मंथ बनाया जाता है । इसे "पाल माँझो" कहते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

दूरमाँतीरी माँझा छामेलो वेतुडु ।

चांदोरी लम्बा छामेलो वेतुडु ।

सोनेरी पीड़िया रोळा मेलो वेतुडु ।

डोर डेट नायकेन बेसार मेलो वेतुडु ।



दारे-दारे फटाका टंका मेलो वेतुडु ।  
 छेंडोमा सेगाडेगेन केसार मेलो वेतुडु ।  
 और घेत भोजन करारो वेतुडु ।  
 छैरो नाम बड़ा मेलो वेतुडु ।

उक्त गीत के अनुसार -

वेतुडु ने वर अपने घर के आंगन में चांदी के छंदि का सुन्दर छलछ मण्डप बनाया है । उसने हरे-भरे पत्तों से टके मण्डप के नीचे सोने का पाट ढलवाकर उस पीछे पर नायक को तभी सगों को बिठा रखा है । मण्डप की शीतल छाया में सगे-सम्बन्धियों को भोजन खिला रहा है । इससे घर के पिताजी का नाम रोशन हो रहा है ।

मण्डप के नीचे घर के दरवाजे के सम्मुख कंकल तानकर छोटा-सा मण्डप छड़ा करते हैं । इस मंडप को पाल कहते हैं । लेकिन बनजारों के सभी गोत्र पाल का आयोजन नहीं करते । बड़त्या नामक गोत्र के लिए पाल का आयोजन आवश्यक समझा जाता है ।

### 2.3.2 मछिडुड़ी : छोटा मंडप :

साड़ी ताण्णो अनुठान के दिन सेबर की लकड़ी के एक छोट पर पानी से भरी दारी \* बाँधते हैं । इस दारी में नारियल, सुपारी, चावल, गेहूँ तथा पाँच जाने बैसे डालते हैं । दारी पर \*गण्णो\*<sup>2</sup> दकते हैं । इस लकड़ी को आंगन में गाड़ देते हैं । इस लकड़ी पर कपड़ा तान कर मंडप छड़ा कर देते हैं । इस प्रकार से निमित्त मंडप

\* लोटा

२ विशेष प्रकार का कपड़ा



को "मडिवड़ो" कहते हैं। इस अनुष्ठान पर स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

तारे बापेरो मडिवड़ो, हरो-भरो मडिवड़ो ।  
तारे दादारो मडिवड़ो, हरो-भरो मडिवड़ो ।  
मडिवड़ो घेत य हार, हरो-भरो मडिवड़ो ।

तुम्हारे पिताजी और दादा जी का मंडप हरा-भरा था  
उसी मंडप की पीक्ति में तुम्हारा यह मंडप हरा-भरा ही रहेगा ।

### 2.3.3 कक्स : ॥ कक्षा ॥ :

मडिवड़ो के मध्य स्थित सेंबर के छवि के पास दो फिट चौकोन जमीन को गोबर से लेप दिया जाता है। निची हुई धरती पर हलदी, कुंकुम, तथा ज्वार के आटे से चौक बनाते हैं। इसको "चौकोपूणों" कहते हैं। लेपकर रची हुई धरती पर "गूण" रखते हैं। गूण के उभर मिट्टी का मटका एक रखा जाता है। मटके में थोड़ा पानी, चावल, सुपारी, नारियल और पाँच पैसे डालकर उसके मुँह पर गणों ॥ विशेष कपड़ा ॥ दाक दिया जाता है। उसी छड़े को "कक्स" कहते हैं। इस अवसर पर टाठि का नायक तथा कारभारी एक-एक रुपया कक्स पर चढ़ा देते हैं। रुपया चढ़ाने को "कक्स धौकणो" कहते हैं। कक्स-धौकणों का अर्थ है - कक्स की वन्दना करना। अन्य टाठि के बनजारे कक्स की वन्दना प्रायः नहीं करते। केवल टाठि के प्रतिष्ठित व्यक्ति ही इस वन्दना में भाग लेते हैं।

### 2.3.4. जागेर दाग :

कक्स के सामने पीढ़ा पर तर को बिठाया जाता है। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति कक्स के सम्मुख जमते हुए दीये पर सुई गरम करता है



और साथ ही वह गुरु बाबा के मन्त्र को जपते रहता है । गुरु बाबा के मन्त्र को सात बार दोहराने तक सुई तपती रहती है । मन्त्र के अन्त में गरम हुई सुई से घर के भूजा को दागते हैं । दागने की प्रक्रिया को "जागेर दाग" देणो" कहते हैं । गुरु बाबा का मन्त्र इस प्रकार है :-

कोन्नी बाख, कोन्नी जाख ।

कोन्नी भाई जग समाख ।

धोको धोड़ो इस लो ।

पातिया आसवार ।

मूंगे बावड़ा मोगरा ।

तकी बावड़ी कमान ।

माईर पूजा, माईर पातो ।

माईर पूजा हार ।"

उक्त गीत के अनुसार -

सन्नेद छोड़ा है । छोड़े पर सवार होनेवाला दुबला-पतला सा है । उसके पास मूंग के अणुपात सा एक मोगरा है जिसे वह सृजनशीलता की प्रक्रिया को गीत देता है । इस सूक्ष्म सृजनशीलता में ही वह धुल्लहार, पूजा-पाती तथा धोवन-भोजन करता है । इसको केवल गुरु बाबा का ज्ञान ही समझ सकता है जो सदा जमर है ।

### 23.5 वदाव [ब्याह] :

वदाव अनुष्ठान में भी मुख्यतः कुल देवता, कुलगुरु, लोक देवता जैसी अति मानवीय शक्तियों की प्रार्थना से संबंधित गीत गाये जाते हैं । वदाव में ब्याह का अर्थ ध्वनित होता है । विवाह का



उद्देश भी कर्मदि है । कर्मदि के उपलक्ष्य में वदाव संस्कार का आयोजन होता है । इस अवसर पर बहन भाई को ग्रेम से पीढ़े पर बिठाती है । भाई के कपाम पर कूँम का टीका लगाती है । तत्पश्चात् कासे की धाली में कपूर और घी का दीया जलाकर बारती उतारती है ।

भाई के बारती के बाद देवी-देवताओं की सामुहिक वन्दना की जाती है । वन्दना का गीत इस प्रकार है :-

पैली मझावो चार दे, वी गोसाईंरो लेस्या ए ।  
गोसाईंरो जाए आणंद वदाव दे, दूसरी मझावो चार दे ।  
वी धरतीरो लेस्या ए, धरतीरो जाए आणंद वदाव दे ।  
तीसरी मझावो धार दे, बडे वी ब गंगा मातारी लेस्या ए ।  
गंगारो जाए आणंद आसनान दे, चवती मझावो चार दे ।  
वी विद्या लड़ी रो ले स्या ए, विद्या लड़ीरो जाए आणंद  
पुत दे ।

पाँचवी मझावो चार दे, वी बाप लड़ी रो लेस्या ए ।  
बाप लड़ीरो जाए आणंद आसीस दें ।

उक्त गीत के अनुसार -

प्रथम वन्दना उस गुरु बाबा को, जिसने सभी प्रकार का ज्ञान प्रदान कर लुकी जीवन का पथ-प्रदर्शन किया है । द्वितीय वन्दना उस धरती को है, जिसने अपनी गोद में बिठाकर जानंदित जीव को दुलार दिया है । तृतीय वन्दना उस गंगा माता को है, जिसके पवित्र जल से शुद्ध स्नान किया जाता है । चतुर्थ वन्दना उस विद्या की परम्परा को है, जिसको प्राप्त कर पुत्र ज्ञानी बनता है । पंचम वन्दना माता-पिता के चरणों में है, जिनकी कृपा से जीवनदान मिला है ।



## 2.3.6. साड़ी ताण्णो : ॥ साड़ी तानना ॥ :

बारात के कन्या के घर जाने के तीन दिन पूर्व साड़ी तानने का अनुष्ठान होता है। इस अवसर पर सभी को दाखत दी जाती है। इस समय दो व्यक्ति साड़ी के दोनों छोरों को पकड़कर खड़े हो जाते हैं। उस समय स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत का गायन करती हैं।

चादणी माँ चादि घोराधोरे के हरी दाल भूकिया ।  
चादणी माँ साढी लगावोर के हरी दाल भूकिया ।  
चादणी माँ टेबूपेदा जोरे हरी दाल भूकिया ।  
चादणीमाँ दूरको नवा जोरे हरी दाल भूकिया ।  
चादणीमाँ नागारा छोरा जोरे हरी दाल भूकिया ।

## 2.3.7. वेतइन साठोर डेटेन काळो ॥ वर को साडी के नीचे से भेजना ॥ :

इस साडी के नीचे से धीरे-धीरे बागै चलता है। साडी के दो छोटों को पकड़े हुए व्यक्ति घर के चलने की गति के अनुसार साडी को लपेटते हैं। उसके पीछे स्त्रियाँ गीत गाती चलती हैं। इस प्रकार घर को साड़ी के नीचे से बाहर लाते हैं। इस अनुष्ठान में स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

तू कुन्नी बाई रो बाका रे। हारी नंदलाला ।  
तू गोकुले मा करी चाका रे। हारी नंदलाला ।  
तू छीये गोरेरी साड़ी रे। हारी नंदलाला ।  
छेन-छेलाडी रो बाका रे। हारी नंद लाला ।

उक्त क गीत के अनुसार -





वर उसकी माता तथा पिता की तुलना श्रीकृष्ण भगवान्, यशोदा और नन्द से करती है। साथ ही श्रीकृष्ण की नटझंघे घेघटावों की ओर संकेत दिया गया है। भगवान् श्रीकृष्ण चोरी से माछन तथा दही खाते थे।

घर के दरवाजे पर दो व्यक्ति साड़ी के दो छोर को पकड़े रहते हैं। उस लंबी साड़ी के नीचे से दुल्हा धीरे-धीरे आगे चलता है और उसके पीछे स्त्रियाँ गीत गाती चलती हैं। साड़ी के दो छोर को पकड़े हुए व्यक्ति वर की चलने की गति के अनुपात में साड़ी को लपेटते और छोड़ते रहते हैं। इस प्रकार वर को साड़ी के नीचे से घर के बाहर लाते हैं। इसे "वेतुल्ल साड़ी घेटेन काड़णो" कहते हैं।

एक बार घर के बाहर निकल जाने के बाद वर के लिए घर के अन्दर प्रवेश करना मना है। वधू के जाने पर ही वर-वधू का संयुक्त रूप से घर में प्रवेश होता है।

साड़ी के छोर की घर के आंगन में समाप्ति पर वर वही छड़ा हो जाता है। उसके पदतल को धरती की गोबर से लेप देते हैं। लीची हुई जमीन पर ज्वार के आटे से स्वास्तिक चिह्न बनाते हैं। उस चिह्न पर पाँच पैसे रखते हैं और उससे "गुण" रखकर उसी गुण पर वर छड़ा हो जाता है। कुंवारी-कुंवारे के पाँच छ जोड़े बारी-बारी से वर पर पाँच-पाँच बार चावल पेंकते हैं। इनको "चावल वारणो" कहते हैं। चावल वारणों के बाद वर वयस्कों के पैर कुत्ता है। अगर पिता, भाई आदि किसी की अकाल मृत्यु हो गयी तो माता तथा बहने वर के गले में अपना गला डालकर रोती हैं। गम से व्याप्त वातावरण से वर को बाहर निकालने की कोशिश की जाती है।



वर और मेरिया दोनों मंडप के बाहर चले जाते हैं। वर के लिए धौली, कुर्ता आदि को कोतली में धुँयेनी रख देते हैं। उस कोतली को लेकर मेरिया मंडप को पूर्व दिशा में वर को साथ लेकर बैठता है। वर और मेरिया को पानी का लोटा दिया जाता है।

### 2.3.8. कोतली गजावणी धुँयेनी के लिए जागना :

वर यात्रा के लिए आवश्यक सामग्री को एक धौली में रखा जाता है। उस धौली को कोतली कहते हैं। "वेतइन साठी वेटेन काठेर" वनकुठान के बाद दाखत होती है। दाखत के पश्चात् "टाठे वाले रात भर जागते" हैं। इसीलिए इनको "कोतली गजावणी" कहा जाता है। सिद्धियाँ मधुर गीत गाकर नाचती हैं। उनमें से एक छंद प्रकार है -

मोडडीरो बाट भूँझो  
 पोयेवाको माटी बगाओ  
 तिरवान ककौकडीमा माठी  
 वीरो पुरो सदाई बगाओ  
 कवी छक पको दारु बको  
 तीन मंगाबार करमेनी मेको  
 पोलोसेतो खरोच बाबो टाको  
 तिव्र केरो तीन कोनी कको  
 छठ छली लीदो जगा कको  
 लडाई करन फोडा लीदो लाको  
 ज्यादा दारु पीन वेगो बाबको  
 माटी बाबेरो कररो बांगौको  
 बाबे बाबे जग्राव टाको



विष्णुदास केरी पोहरावाजी  
दारु पीवे वाकी कतरा पिदाकी  
भोवहीर बाड लदाई भूँकी

**2.3.9. केसकुन बाट लवाणी । वर को रवाना करना । :**

"कोत्को गजाश्री" कृष्णान के परवात् दूसरे दिन वर वारात के साथ रवाना होता है । वारात में केवल सात या नौ लोग जाते हैं । टांडे के छोटे बड़े सभी लोग वारात को रवाना करते के लिए उपस्थित होते हैं । वर जागे-जागे चलता है और टांडे के सभी लोग पीछे-पीछे चलते हैं । इसका कवि निम्नलिखित गीत में पाया जाता है :-

राम निम्की तांडेर भार बाईए ।  
रामेरी सेना देकी बाईए ।  
केसकु निम्की तांडेर भार बाईए ।  
केसकु री सेना देकी बाईए ।\*

इसका हिन्दी स्वाम्तर इस प्रकार है :-

इस गीत में टांडे के कुंड को सेना से संबोधित किया गया है । इस सेना के साथ वर का टांडे के बाहर निकालने का भाव प्रकट होता है ।

- 
- \* भीमना बाणोद, आयु 60 वर्ष, रिट्टभपल्ली टांडा, विकाराबाद तहसील, ब डान्हा प्रदेश



### 2.3.10 हेलेर रपया :

वर के साथ टांछिवालों का झुंड पूर्व दिशा की ओर चलता है। मैदान देखकर झुंड छड़ा हो जाता है तत्पश्चात् वर का जोड़ा दृढ़ा छोड़ शाल जमीन पर बिछा देते हैं। कुल देवता के नाम पर या गुरु के नाम पर अगरबत्ती जलाकर वर एक रपया शाल पर रखता है। रपया रखते समय वर शाल को स्पर्श नहीं करता। पाँच व्यक्ति मिलकर शाल को जमीन से उठाते हैं। वे पाँचों व्यक्ति विवाहित होते हैं। उस रपये को शाल के एक छोर पर बांध देते हैं। विवाह के समय ससुराल में यह रपया वर के पास ही रहता है। इस रपये को "हेलेर" रपया कहते हैं। "हेलेर" रपया कहीं छो गया तो अभिमाना जाता है। विवाह के पश्चात् "हेलेर" रपया गुरु को भेंट दिया जाता है। "हेलेर" रपया शाल के छोर पर बांध लेने के पश्चात् वर और लेरिया मिलकर हनुमान जी के दर्शन के लिए मन्दिर में जाते हैं। मृत पूर्वजों को बोझी, तंबाकू, दारू, ताड़ी आदि चढ़ाया जाता है। वर टांछिवालों के पैर छुकर आशीर्वाद प्राप्त करता है। आशीर्वाद लेकर वर, वधु की ओर निकल पड़ता है। उस समय टांछिवाले वर को बिदाई देते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ गीत गाती हैं। नीचे इस प्रकार है :-

तारी ढाले वेराजी रे राजार बेटा ।

तारी ढाले वेराजी रे ।

पाणी भरतु वाटड़ी जीवर बाँ - साँ लूँ-जड़ी ।

लूँ-जड़ीरो मेकोर राजा ।

तारी बरची वेराजी रे राजार बेटा ।

तारी बरची वेराजी रे ।

लकड़ी बाँदतु वाटड़ी जीवर बाँ-बाँ लूँ जड़ी ।



लूबी-लूबी रो मेला जाईर राजा ।  
तारी सोरटी तलवार र बाँ-बाँ लूबे-जड़ी ।  
पोनी पोखतु घाट तारी जोवर बाँ-बाँ लूबे-जड़ी ।

उक्त लोकगीत के अनुसार -

हे राजा का बेटा तेरी तेज तलवार से शत्रुओं को संवार कर आगे बढे । पनघट पर तेरी प्रिया राख देख रही है । तेरी प्रिया के साथ सहेलियों का झुंड भी है । तेरी तलवार और प्रेयसी को सहेलियाँ वधु को चरण करने में मदद भी करेगी । तेरी दाम और बरखी भी शत्रुओं को पराजित करने के काम में उपयोगी बनेगी । पर्वत पर लकड़ी काटनेवाली तेरी प्रिया तेरे लिए प्रतीक्षा कर रही है । रोटी सेंकती हुई प्रिया तेरे लिए राख देख रही है । तू उसके पास तुरन्त पहुँच जाओ ।

2.3.11 सीख ॥ छपकेला ॥ :

टाँठि की स्त्रियाँ यह को बिदा करने से पहले उपदेश देती हैं: "सुनुर के टाँठि में पहुँचते ही पहले टाँठि वालों को हाथ जोड़कर राम-राम कर लेना, उसके पश्चात् तम्बाकू से भरा हुक्का उन्हें पीने के लिए दे देना, सिर झुकाकर सासू के चरण छू लेना, साले-सालियों को हाथ जोड़कर सुपारी दे-देना । निम्नलिखित गीत में इसका वर्णन है । उपदेश देती हुई टाँठि की स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं :-

आग छ ससरेरो मनाव

हाता जोडी रामी-रामी कलेरे राजारो बेटा



गठ को होक्का भरदेरे राजारो बेटा  
 तवन पंचून देसरे राजारो बेटा  
 केटी बात मत सामनेसरे राजार बेटा  
 नव बंक्न रेस रे राजार बेटा  
 टाडिर नाम रकाठेस रे राजार बेटा  
 कूटि मत कठायेस रे राजार बेटा  
 बहादुर केरायस रे राजार बेटा  
 ससरेर बात मानेसरे राजार बेटा  
 जागि दिसाया सासुरो बुरलो  
 माता नबान नवण करलेस रे राजारो बेटा  
 सासुर जतोर लेलेस रे राजार बेटा  
 जागि दिसाय साबोर मन्वाव  
 हात जोडन सपारो देसरे राजार बेटा  
 नरमीतो रोषरो देसरे राजार बेटा  
 रोस मत करेस रे राजार बेटा  
 जागि छ साबेर मन्वाणो  
 नयतो-नयतो तम्बाकू देसरे राजार बेटा  
 हंसतो-हंसतो वाते करेस रे राजार बेटा  
 टाडिर वठबूदुन हज्जत देसरे राजार बेटा  
 हाता जोडी रामी-रामी करलेरे राजार बेटा ।

## 2.4 वर का स्वागत

### 2.4.1 कौतबो छरेमा लेणो

॥ धेनी की स्वीकृति ॥ :

बराती कन्धा के टाडि के पास के पठार पर या मैदान में



बैठ जाते हैं । बरात की सूचना देने के लिए लेरिया टांडे के नायक के पास जाता है । नायक कन्या के पिता को बुलाकर बरातियों के स्वागत करने के लिए कहता है । तीन दिन के पश्चात् नायक के साथ टांडे वाले बारात की ओर जाते हैं । कुंवारी लड़की पानी की दारू लेकर जागे चलती है । पीछे टांडेवाले चलते हैं । इस अवसर पर कन्या की माता उपस्थित नहीं होती । इस अनुष्ठान में स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं ।

वाया करेन जायोरे भमियार बेटा  
मजायेन लायोरे भमियार बेटा  
झुरलेन लायोरे भमियार बेटा  
हुसेती जायोरे भमियार बेटा  
नायकेर केरारे भमियार बेटा  
वेराकू जायोरे भमियार बेटा  
तीन राठ वेगेर भमियार बेटा  
काइ केला पडरेरे भमियार बेटा  
मेदाने मां पडेरे भमियार बेटा  
जाडे हट सुतेरे भमियार बेटा  
पाणी क्त सुतेरे भमियार बेटा  
पाणी क्त पीदेरे भमियार बेटा  
बाटी क्त छादेरे भमियार बेटा  
लेरिया न मेलोरे भमियार बेटा  
काई बाका पछोरे भमियार बेटा  
तार छाती पटोरे भमियार बेटा  
झंगरेन देकन तारछाती पटोरे भमियार बेटा  
कुंवार छोरी पाणीर बाजरी भर लाही भमियार बेटा



टाँडि मन्नाव जायोरे भमियार बेटा  
टाँडि नायकडा जायेरे भमियार बेटा  
चाया करेन जायोरे भमियार बेटा

#### 2.4.2. वर की प्रस्ता :

स्वागत के अवसर पर टाँडि की स्त्रियाँ वर की प्रस्ता गीत गाकर वर की प्रस्ता करती है। गीत का भाव है : वर राम नाम जपता हुआ जाया है, वह कन्या के लिए मंगल सूत्र लाया है, खोर वर बरछी, भाला लेकर गोरी को ले जाने के लिए जाया है, वह नदी, नाले और जंगल लांघ कर गोरी के टाँडि तक पहुँचा है। गीत इस प्रकार है -

राम नाम भजतो जायोरे बुसिया  
देवेन धोक्तो जायोरे बुसिया  
गहर ज्सीस लेन जायोरे बुसिया  
वड़ बूदेर ज्सीस लेन जायोरे बुसिया  
भाला बरछी लेन जायोरे बुसिया  
छाडिया, संगी संगन जायोरे बुसिया  
गटला, झंगर संगन जायोरे बुसिया  
झाँडी बोधका संगन जायोरे बुसिया  
कैना छेवतो जायोरे बुसिया  
तडके मोँ तपतो जायोरे बुसिया  
रातेन दीयाँ करतो जायोरे बुसिया  
छुरारी घालेन जायोरे बुसिया  
वाकडी पेरायेन जायोरे बुसिया  
चूँठी तीयेन जायोरे बुसिया  
बाँजर खतारेन जायोरे बुसिया





पागडी बांधन जायोरे हुसिया  
 छोक जोडन जायोरे हुसिया  
 तमाकुर कौतगी लटकान जायोरे हुसिया  
 पान सपारी लायोरे हुसिया  
 तित्तरी धालेन जायोरे हुसिया  
 नाछनो वासा जायोरे हुसिया  
 बाया करेन जायोरे हुसिया

#### 2.4.3. स्वागत के समय घर का व्यंग्य :

स्वागत अनुष्ठान के समय टांडि की स्त्रियाँ व्यंग्य से कहती हैं - तू इस टांडि के पास क्यों आया है? तू शायद दुल्हन, उसके पिता और भाई को लूटने आया है। हमारी नारी लूटने के लिए तू अपने साथियों को भी ले आया है। इसलिए तू सीधे कमरा के छत चला जा। वहाँ जाकर सूखी रोटी छा ले और छठे का छंडा पानी पी ले। बरातियों को भी अपने साथ ले जा। इस प्रकार स्त्रियाँ घर से मजाक करती हैं। इस समय का गीत इस प्रकार है -

जारे चौट्टा तू कसेन जायोरे वेतइ  
 तू बाया न कौत तू ले लूटेन जायोरे वेतइ  
 लूटेन जायोरे भूतड़ा वेतइ  
 लूटेन तू तारनार मगस लायोरे वेतइ  
 तू हत मत धन, सूदो नलवेरी घर धास रे वेतइ  
 ताटवासु सूकी बाही पडी रे वेतइ  
 जान छालेन वछियार छीनी पाणो पीत्ता वेतइ  
 सूकी छरायेन मगायेन लेजोरे वेतइ



येत मत धम रे वेतइ

अरे चोटटा तू क्सेन जायोरे वेतइ

#### 2.4.4. टांठे वालों को चुरमाँ [चुरभा] बाटना :

वर अपने साथ में घर से चुरमा लाता है । इसे स्वागत के समय टांठे वालों को प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है । पहले दोनों समझी एक दूसरे के गुरु में चुरमा डालकर हास-परिहास करते हैं । चुरमा को कच्चा पक्ष के की स्थिति भी छाती है । वे वर को चिढ़ाती है और व्यंग्य कहती हुई निम्नलिखित गीत गाती है -

ओको-ओको मूँडो, बाढो-बाढो बाकी  
ई तो नदीयाँ दकावे बाइया  
जंड-जंड डोआ, कोतवीर पूवंडी,  
ई तो छाँडियाँ दकावे बाइया  
छादलास कान, लुंठि सरोक नाक  
ई तो हाती दकावे बाइया  
लाम्ब-लाम्ब हात, लाम्बी-लाम्बी-अगिडी  
ईतो खाँसा दकावे बाइया  
लाम्बी-लाम्बी टांगे, लम्ब-लम्ब तन्वा  
ई तो उटंडो दकावे बाइया  
काढो-काढो रंग, छोक-छोक दान्त  
ई तो थैसा दकावे बाइया  
डेबरासे पैट, कोआसो मातो  
ई तो मिटका दकावे बाइया ।



#### 2.4.5. वर का कन्या के घर जाना :

वर का साला अपने भावी बहनोई को मैदान से अपने घर तक कंधे पर बिठाकर ले जाता है। घर के सामने पट्टे पर वर को लड़ा कर देता है। इस अनुष्ठान के पश्चात् बरातियों को हाथ मूँड़ धुलाते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ एक गीत गाती हैं। गीत इस प्रकार है -

पीढ़िया पर वेतड़ हूबोचरे बालाजी  
 कसैती जोन ह रकाठेस बालाजी  
 हमार नगरीन नाम रकाठेस बालाजी  
 हमार लाङ्गरीन पण्णेल जायोरे बालाजी  
 ताई छाया हमार नगरी पर रेदेस रे बालाजी

#### 2.5 घोटा नक्ता ॥ छोल पोने का कार्यक्रम ॥ :

##### 2.5.1 घोटा ॥ छोल ॥ :

वर और बरात के कन्या के घर पहुँचने पर "घोटा" पिलाया जाता है। घोटा, गुड़ और हमली का छोल ही है। चार रंजन ॥छोले॥ के पानी में घोटा छोला जाता है। विवाह अनुष्ठान का यह पहला कार्यक्रम है। घोटा अनुष्ठान में टाँडे की स्त्रियाँ कई गीत गाती हैं। उनमें से एक इस प्रकार है -

बाइए रंजने मा छोक दोने जामली गोक  
 बाइए भेब्दीन जोमा दोपरी - छससैर मौल  
 बाइए वाया करेन जायेस हूँगा नायक  
 बाइए छोकदोने छोटा नायकूर नायक



बाइए मकायेन छोटा, वेतकून सोटा  
बाइए जोन सोटा चाहेली, छोरीर पोटर  
बाइए छोटाए नकता करदीनो नायक ।

### 2.5.2 टेबो § = वरात का भोजन § :

छोटा के परचाव् कम्हा का पिता टांछेवालों के लिए,  
भोज का आयोजन करता है । इस भोज को "टेबो" कहते हैं । भोजन  
परोसने से पहले परोसने वाले निम्नलिखित पहेली कहते हैं ।

वड़ काट् वड़्यानी काट् -  
वड़ेर काट् गेदा  
गेदा पर मेळू भारी  
भारी पर मेळू बारी  
छोडोये हासि भूरिया वाजी  
पधूरी धाजी ।

### 2.5.3. धाजी बांधिणों § धाली बांधिना § :

कम्हा पहचाली एक स्त्री भोजन के लिए पक्कि में बैठे  
पुरुषों की धाली, पानी की बारी, उनके बैठने के पाट, नहाने के  
पाट, सिर की पगड़ी जादि को पहेली द्वारा बांधती है । पुरुष  
को पहेली का जवाब पहेली द्वारा ही देना पड़ता है । पहेली का  
प्रत्युत्तर देने के परचाव् ही धाली खुली हुई मानी जाती है । फिर  
पुरुष पक्कि के लोग भोजन कर सकते हैं । इस अवसर पर स्त्री ~~पहेली सुनाती है~~  
पहेली सुनाती है -



2.6 नखलेरीर बाधारे हंगोकी :

॥ कन्या का विवाह स्नान ॥

2.6.1 गरत्तणी छोट्टणी ॥= काली पोत खोलना ॥ :

विवाह अनुष्ठान से एक वर्ष पूर्व कन्या नाना प्रकार काले मोतियों को धागे में गूँथ कर अपने गले में और पैर में बाँधते हैं ।  
विवाह के समय कन्या की सहेलियाँ "गरत्तणी" को खोल देती हैं ।  
कन्या गरत्तणी पहनकर वर के साथ पैरें नवीं लगा सकती । इस अवसर पर कन्या अपनी सहेलियों से गरत्तणी \* नवीं तोड़ने के लिये प्रार्थना करती है । गीत इस प्रकार है -

गरत्तणी मत तोड़ो जाम्ने  
तोड़ो का घटाणी काकरोसी

---

\* काली घने



मार बीरार हाते री  
गरत्नी मत तोडो  
सेरेरी सेरावी  
गरत्नी मत तोडो ।

### 2.6.2 हब्देर टोकी § = हब्दी का टोका § :

जब कन्या को मंडप के नीचे पट्टे पर बैठ जाती है, तब उसका भाई हब्दी को पानी में छिन्नकर बहने के माथे पर टोका लगाता है। इस अनुष्ठान को "हब्देर टोकी" का "हब्देर टोका" कहते हैं। टोका लगाते समय कन्या रोने लगती है, अपने भाई से वह हाथ जोड़कर चिन्ती करती हुई कहती है कि मुझे अपने घर से पराए घर क्यों भेजते हो।

### 2.6.3. हब्द लगाड़णी § हब्दी लगाना § :

पिसी हुई सूजी हब्दी छाने के तेल में भिगाई जाती है। "मेदीपोटी"<sup>2</sup> और मेखल<sup>3</sup> को जलग से पोसते हैं। उसके पछवात् पिसी हुई "मेदी पोटी" और "मेखल" को हब्दी के साथ मिला देते हैं। इस प्रकार से मिश्रित लेप को सधु और वर के शरीर पर लगाया जाता है। इस अनुष्ठान को "हब्द लगाड़णी" कहते हैं। इस अवसर पर टांडि की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

मेदी लाड़ान छस दीजी  
मेदी लाड़ान छस दीजी

---

\* हब्दी का टोका      2 मेहदी को पिट्टी 3 मेहदी के पान को मेखल कहते हैं।



लड़ान छस-छस रे हब्द छस  
लड़ान छस-छस से हब्द छस  
छस-छस रे हब्द छस

#### 2.6.4 नखलेरीन वायार हंगोकी

॥ कन्या का विवाह स्नान ॥ :

हब्द लगाइयाँ अनुष्ठान के पश्चात् स्त्रियाँ नखलेरी<sup>१</sup> को स्नान कराने के लिए ले जाती हैं। वे बहुत सारे पुष्प कन्या की चेणी को खोलकर छोटी है। इस समय कन्या को अपनी माँ की याद आती है। वह सहेलियों से कहती हैं : मेरी माँ स्वयं अपने हाथों से मेरी चेणी गूँथती है थी। इस अवसर पर कन्या निम्नलिखित गीत गाकर अपनी वेदना प्रकट करती है -

मते के छोड़ो भोजाइये  
मारीज बाड़ी मेरी हातेरी लटा लटाही भूँकी गूँथी  
दुधा छोड़े लेप लगायो पटड़ी  
मारीज काकी रे हातेरी लटा लटायोरी गूँथी  
मते के छोड़ो भोजाइये  
पराये छरेर परकी साडी  
पराये छरेर दुँदी-छाँदी जोली-जोलाई साडी  
मत बिँटाबोए भोजाइये  
मत गूँतो बाडी सोनेरी हातेर बालरिया टोप  
पराये देतेरी परकी छुटो लौड़  
हमनेन जाच दकायेनी भोजाइये ।



### 2.6.5 हास-परिहास :

#### ॥ खान के समय की मस्खरी ॥

कन्या को स्नान कराते समय टांठे की स्त्रियाँ गीत गाती हुई हास-परिहास करती हैं। कन्या के शरीर को धोती है और ज़ारी-पर ज़ारी पानी बरसाती है। इस अवसर पर टांठे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

लाङ्गली हमार छूमरीन कराव असनान बाइया  
 छूमरीर पूटेन मसबा बाइया  
 चरमटङ्गोर बतेन मसबा बाइया  
 लाङ्गलीन असनान करावा बाइया  
 गौरीर टांगे मसबा बाइया  
 छोड़ी मात्ता धोवा बाइया  
 लाङ्गलीन असनान कराव बाइया  
 ज़ारी पर ज़ारी पाणी जोकोष बाइया

### 2.6.6 साड़ी पर व्यंग्य करना :

घर के द्वारा लाई हुई साड़ी पर टांठे की स्त्रियाँ व्यंग्य करती हैं। वे घर की नानाप्रकार की गालियाँ सुनाती हैं। वधू की दृष्टि में यह साड़ी उसके भैया द्वारा खरीदी गई साड़ी की तुलना में तुच्छ है। अतः कन्या स्नान के बाद कन्या इस साड़ी को न पहनने की इच्छा प्रकट करती है। इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है -

काई साड़ी लायोरे रङ्गी-पङ्गी  
 वे मोलेर साड़ी लायोरे रङ्गी-पङ्गी





वेतड़ तू कसो जादमी छी रे रड़ो-पड़ो  
 खुंदी छादी साडी लायोरे रड़ो-पड़ो  
 कव-कामेर छेनीरे रड़ो-पड़ो  
 तू बेमालेर साडी लायोरे रडी-पडी ।

2.6.7 नवलेरी वायदो : ॥ कन्या का वादा ॥ :

नहाती हुई कन्या अपने माता-पिता, भाई और भाभी को गहने भेंट करने का वादा करती है । माँ के लिए गले में हंसली, पिता के लिए और भाई के लिए कमर की करधनी और भाभी के लिए आढ़काट \* भेंट करने का वादा करती हैं । इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है -

बाडी भेय प्री जे

य तारेवासु रूपेरो हंसली छड़ा लायू या बार्या  
 बापू रेय-जे

यै ह तारेवासु कड़ेर कण्दोरी छड़ा लायू बाप हियार्या  
 वीरणा रेय-जे

य तारेवासु रूपेर कण्दोरी छड़ा लायू वीरा-हियार्या  
 भावजाण ये जे

य तारेवासु आढ़काट मंडलायू भावजाण-हियार्या

---

\* एक विशेष प्रकार का गहना ।



## 2.7 वेतड़ हंगोळी

### ॥ वर का स्नान ॥

2.7.1

स्नान करने के लिए वर को पट्टे पर बिठाया जाता है । किन्तु कन्या पक्ष के नव-युवक वर की ताकत अजमाने के लिए उसे पट्टे पर नहीं बैठने देते हैं । वर अपने साधियों के सहारे पट्टे पर बैठता है । इस अवसर पर टांडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

मारो छणा - मणा, वेतड़ चालो गंगा असनान  
मारो छणा - माधा, छोड़-छोड़ घेरी कीदो असनान  
मारो छणा-मणा, मसूरु की बोतळी म धतुरार बाजा  
मारो छणा-मणा, पटगीर कोतळी रड़ो बीजा  
मारो छणा-मणा, पैरु दीनो कोतळी कसेना बीजा ।  
मारो छणा-मणा, वेतड़ चालो गंगा असनान ।

2.7.2.

वर नहाने के लिए पट्टे पर छड़ा हो जाता है । टांडे की नायकिन के आज्ञा देने पर पट्टे पर बैठ जाता है । वह वर की सास उसके सिर पर की पागड़ी उतारती है । वह पागड़ी उतारने का अधिकार दूसरों को नहीं है । सास अपने जवाईं ॥दामाद॥ की पागड़ी उतारने के पश्चात् बारी से नहलाती है । बाद में टांडे की अन्य स्त्रियाँ वर को नहलाती है । नहलाते समय वर की बालियाँ वर के शारीरिक बनावट का वर्णन करती हुई निम्नलिखित गीत



द्वारा व्यंग्य कसती हैं । गीत इस प्रकार है -

बणूतडा जसो दकावे भेनडा  
वादेर जसो वीचकारोये भेनडा  
भेसा सरोको पस-पस करवरो भेनडा  
गद्दा सरोको वोवो-वोवो टांगावो भेनडा  
हातीर कानावो भेनडा  
जुंझोर गूदडोये भेनडा  
दूटी-टाटी कड़ेबावो भेनडा  
बणूतडा जसो दकावे भेनडा

2.7.3

नहाते समय वर की सालियाँ वर की पीठ रगड़ती हुई उसे कीचड़ में गिरा देती है । वर का धाला वजन देखने के लिए बहाने वर को उठाकर कीचड़ में गिरा देता है । दुल्हा के गिरने पर कन्या पक्ष की स्त्रियाँ उसे चिढ़ाती हैं । ये गीत में वर से इस प्रकार पूछती हैं -

कीचड़े माँ कीच छारोरे चरपक्या  
तू कतरा दाढ़ेती भूकोरे चरपक्या  
छार माँई दम छेनी रे चरपक्या  
तार माँई जोर छेनी रे चरपक्या  
तू तो बाई जसो पड़गोरे चरपक्या  
कीचछेमाँ कीच छारोरे चरपक्या

2.7.4



2.7.4

नहाने के अन्त में एक स्त्री वर के सिर पर ज़ारी से पानी डालती है। वर की सास अपने हाथों से उसकी चोटी को संवार कर चोटी से गिरे हुए पानी को छः बार मुँह में लेकर कुल्ला करती है और सातवें छूट को पी लेती है। इस अवसर पर टाँडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

गंगाद पाणी, ज़ारी पीदी  
ज़ारीद पाणी, चोटी पीदी  
चोटीद पाणी, सासु पीदी  
चोटीद पाणी कत मळ बाइया ।

2.7.4 सासुर सात सोटा

§ = सास के द्वारा सात सोटे मारा जाना §

नहाने के समय सास वर के पीठ पर मुसल से सात चोट मारती है। बनजारों का विश्वास है कि मुसल सात चोट छ़ाकर वर जानी बन जाता है। वर मुसल की चोटों के बदले में अपनी सास को दो रुपये भेंट देता है। इस अवसर पर टाँडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

वेराडू कण्जोरे गेनी तु  
वे दंगी वेराडू कण्जोरे गेनी तु  
सात चोटे सारारी छान वेराडू  
कण्जोरे गेनी तु



सामुर होतेर सौटारी घाटे पड़्या वेराढू  
भेमाँ सादे जडवाय वेराढू  
वेराढू वेतड़ तू कणजोरे गेनो तू

### 2.7.5 दोसक्या परेड़्णो ! मिट्टी के पात्र को परेड़ना ! :

स्नानोपरान्त वर पट्टे पर खड़ा हो जाता है। वर का साला दोसक्या को पाट के पास रख देता है और वह वर से दोसक्या परेड़ने के लिए कहता है। दोसक्या परेड़ने के लिए वर आगे बढ़ता है तो साला उसे पीछे खींच लेता है। इस प्रकार से वर का साला वर को पहली बार में दोसक्या परेड़ने की क्रिया को असफल करने की चेष्टा करता है। पहली बार में दोसक्या परेड़नेवाले वर को बहादुर माना जाता है। वर को ऐसे तीन दोसक्यों परेड़ना पड़ते हैं। इस तन्त्रुठान में टाठि की स्थिर्या यह गीत गाती है -

परेड़्णो दोसक्या, कमारेर दोसक्या  
फोड़्णो दोसक्या, तीन कमारेर दोसक्या  
परेड़्णो दोसक्या, नक्तार दोसक्या  
परेड़्णो दोसक्या, ठोलालीदो अण्ठा  
परेड़्णो दोसक्या, धूँलागो भोसक्या  
परेड़्णो दोसक्या, मट्टोरो दोसक्या ।

### 2.7.6 कानेन काँकरा लगाड़्णो ! कान में कंकर लगाना ! :

वर का साला कान को दो कंकर लगाकर दबाता है।  
भविष्य में परिवार के सभी सदस्यों के साथ अच्छा व्यवहार करने के



लिए वह वादा कराता है । इस अनुष्ठान को कानेन कांकरा लगाणो कहते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

सोगन छोरे खेतड़िया, लागगे तारे कानेन कांकरा  
 ससरती नवन रेस, लागगे तारे कानेन कांकरा  
 सासुती सीबो बोलेस, लागगे तारे कानेन कांकरा  
 साबेती मसकरी मसकरोस, लागगे तारे कानेन कांकरा  
 साबोन टोपर दरायेस, लागगे तारे कानेन कांकरा  
 टांडे बाबेती समोर रेस, लागगे तारे कानेन कांकरा  
 नायकेती हात जोड़ ला, लागगे तारे कानेन कांकरा ।

## 2.77 छाचड़ा गोण्णो जूते छुाना :

साला वर के जूते छुा देता है । वर साले को कुछ पैसे देता है तब वह उसके जूते लौटाता है । इस अवसर पर भी स्त्रियाँ वह वर को छिद्दाकर गीत गाती हैं । गीत इस प्रकार हैं -

छाचड़ा वासु विंवकारो हणुतड़ा  
 स्पड़ा देदारे \* मळजाय छाचड़ा  
 मोचड़ार छाचड़ा, कसो हणुतड़ा  
 साबेन स्पड़ा देदा हणुतड़ा  
 मळजाय छाचड़ा  
 छाचड़ा वासु विंवकारो हणुतड़ा ।



## 2.8 बाजार बागिर नक्ता : ॥ सप्तपदी से पूर्व अनुष्ठान ॥ :

### 2.8.1 कम्बा को स्पष्ट देना :

कम्बा को नये कपड़े पहनाकर मंडप में लाया जाता है । उसे पट्टे पर बिठाया जाता है । घर की ओर से एक व्यक्ति काली की धाली में चावल, कंडम और पाँच रुपये लेकर कम्बा के पास पहुँचता है । कम्बा को टीका लगाकर उसके सिर पर सात बार चावल रखे जाते हैं । इसके पश्चात् कम्बा को पाँच रुपये भेंट में दिये जाते हैं । इस अनुष्ठान को "छोरीन स्पष्टा मान्गो" कहते हैं । उसकी सहेलियाँ रुपये भेंट देनेवाले व्यक्ति पर गीत द्वारा व्यंग्य करती हैं । गीत इस प्रकार है -

कसो नवरो बाई ई कुबड़ो  
कसो चावल लायो बाई कुबड़ो  
कसो कुँई लायो बाई कुबड़ो  
कसो भेंट लायो बाई कुबड़ो  
कसो चाला बाई ई कुबड़ो  
कसो रपवा लायो बाई कुबड़ो  
कसो रुपवा मनारो बाई कुबड़ो  
कसो खेतदुर कुबड़ो, ईसे देकन रपट पड़ो

### 2.8.2 कम्बा को गहने भेंट देना :

कम्बा का पिता घर से सगाई के समय पाँच बछड़े लेता है । वह प्रतिदान के रूप में अपनी लड़की को कुछ गहने बनाकर देता है ।



इस अनुष्ठान को "भेगो देगो" कहते हैं। कम्बा का भाई कम्बा को मंडप में बिठाकर टांछे वालों के सम्मुख गवने भेंट करता है। इस अवसर पर भांग बीजी जाती है, जिसको केलडार भांग कहते हैं। इस अनुष्ठान में टांछिवाली स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

होरा मोतीर गेगा लेला बाई लाड़ाली  
 सोने स्पेरी गेगा लेला बाई लाड़ाली  
 कानेर कम्बा लेला बाई लाड़ाली  
 स्पेरी टोपली लेला बाई लाड़ाली  
 सोनेर-मोतीर बादाकाटा लेलाबाई लाड़ाली  
 स्पेर छूटीरा छूटरा लेला बाई लाड़ाली  
 स्पेरी हासिलो लेलाबाई लाड़ाली  
 स्पेरी हासिलो लेला बाई लाड़ाली  
 सोनेरो भूरिया लेला बाई लाड़ाली  
 स्पेरी साकांकी लेला बाई लाड़ाली  
 तारे देखेरी गेगा लेला बाई लाड़ाली

### 2.8.3. डोरण बांधणो-छोडणो :

॥ धागा बांधना - छोडना ॥ :

नहाने के पश्चात् घर को भी पट्टे पर बिठाया जाता है। पट्टे के चारों ओर पाँच छोटी हाड़िया रखी जाती हैं। प्रत्येक हाड़ी के पास विवाहित स्त्री और पुरुष ही बैठते हैं। कच्चे धागे को घर-बधू के चारों ओर से सात बार घुमाकर एक लड़ू तैयार की जाती है। इस लड़ू को डोरण कहते हैं। यह क्रम दो बार चलता है और दो लड़ू तैयार हो जाती हैं। डोरण पर सात गाँठें





बांधी जाती हैं और वर और वधू के गले में उन्हें पहना दिया जाता है । इसके पश्चात् वर-वधू के बायें हाथ को लोटे पर रख कर जम्ब एक ठोरण तैयार किया जाता है । उसे वर-वधू के हाथ पर बांधा जाता है । इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं इनमें से एक गीत इस प्रकार है -

छेनी छूमरि बारी ठोरण भेदरोच  
छेनी छूमरिबा गदका पाड़रोच  
हुँछण छीमरी दक-दक रोररोच

ठोरण कम्बा के माता पिता की सम्मति पर ही बांधी गयी है । टांठे वाली स्त्रियाँ कहती हैं कि दुलहन ठोरण वर से छुड़ाती रहे । दूसरों को ठोरण छोड़ने का अधिकार नहीं है । टांठे के सभी लोग लाद गये हैं और गाव भी चरने के लिए छूट गई है, इस अवसर पर गीत इस प्रकार है -

तारे बापे हातेरी बादा ठोरणो  
मत छोड़ ए लाड़ी  
वादा ठोरणो मत छोड़ ए लाड़ली  
छोड़कर छोड़ाऊँर  
बेटी ठोरण छोठाऊँ कर  
ताँडी हबी लादागो  
गह चरेन छूटगी ।

#### 2.8.4. चाकल वारणो [चाकल उतारना] :

वर और वधू को लोगों की नजर से बचने के लिए



“चावक वारणो” \* कार्यक्रम होता है। इस अनुष्ठान में बच्चे कसि की धाली से कुंकुम और चावल लेकर वर और वधु पर पेंके हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ गीत में वर और वधु को राम और सीता की जोड़ी से तुलना करती हैं। वे कहती हैं कि ईश्वर ने इन दोनों को एक दूसरे के लिए जन्म दिया है। गीत इस प्रकार है -

चावक वारं क कुंकु वारं  
चांदी वारं क सोनो वारं  
हीरा वरं का मोती वारं  
चावक वारं का रपचा वारं  
जो वारं सो भोड़ा  
बाई राम घरेरो जोड़ा

#### 2.8.5. पानेर बीडो

॥ पान का बीडा ॥ :

वर विवाह क में वधु का चेहरा नहीं देखता। चावक वारणो अनुष्ठान के पश्चात् वर वधु को एक पान का बीडा बसाकर देता है। पान के बीडे में लौंग इलायची के अतिरिक्त वह अपने शरीर का मेल डाल देता है। बनजारों में विश्वास है कि वधु को शरीर का मेल छिलाने से वह जीवन भर वर का साथ नहीं छोड़ती। इस अवसर पर टांडे की कुंवारीयाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

बीडा छगो छबोलो रेणो  
बीडा हम छावानी



बीड़ा मां मेल न रेणो  
बीड़ा हम छावांनी  
बीड़ाम कवरो न रेणो  
बीड़ा हम छावांनी

2.8.6. भाईती भेनेर विनती :

॥ भाई से बहन को प्रार्थना ॥ :

सप्तपदी अनुष्ठान से पहले व वधु अपने भाई से कहती है :  
तुम यहाँ की सप्तपदी की तिथि के स्थगित करने के लिए कह दो ।  
इतनी जल्दी सप्तपदी की क्या जरूरत है? इस अवसर पर कम्मा  
निम्नलिखित गीत गाती है -

वोरणी रे-ये ।

आपणे बापूरो लेको वोबा तो

आम्बा आमलीर छावा बेसन छाण्णो-<sup>वा-</sup>हिबा

पराबे पतिवारो लेको वोबा तो

आजेर सवार छाण्णो वोरणा-वा-हिबा

2.8.7 भाईन भेन तेरावणो :

॥ बहन के द्वारा भाई की प्रार्थना ॥

सप्तपदी अनुष्ठान की आगे न बढ़ाने के लिए वधु अपने भाई  
की प्रार्थना भी करती है । वह अपने भाई से इस प्रकार कहती है ।  
तु मारवाड़ देश का बड़ा व्यापारी है । तेरी कमर में मूल्बवान करधनी है ।  
तेरा बैला चतुर कहीं पर भी नहीं है । तु लाखों में एक है । तु वीर भाई  
है पिछ भी मुझे घर में से कहीं जल्दी बिदा करना चाहता है? इस अवसर पर



कम्बा निम्नलिखित गीत गाती है -

मार मारवाड़ी वीरणा  
चान्दा गढ़ेर चावड़्या  
माइर गढ़ेर वेपारी वीरणा  
लागेमाँ चालसतो तू नाबीज बोक्कायेची वीरणा  
वीरणारे जे  
अतरा जन्दो मत करो  
अतरा जन्दो करन  
कुम्हो बापोतीर लेको करेन चामो वीरणा  
आ-हिबा

2.6.8. नवलेरीरो दस {कम्बा की वेदना} :

सप्तपदी अनुष्ठान की तेवारी को देखकर कम्बा दुःखी हो जाती है। इसके घर के सामने होमकुण्ड छोड़ते समय ज्यों-ज्यों सकल की चोट धरती पर पड़ती है त्यों-त्यों कम्बा की छाती धड़कती है। वह वैवाहिक सामग्री - आक और दाक की सक्की, कम्बा छड़ा - लाने के लिए मना करती है। वह उपरोक्त वेदना को गीत में इस प्रकार प्रकट करती है।

वीरणारे - जे  
आपणे बापूरे साठ हाथेस आगेमेमाँ  
कुँवर चावड़ी मतछोदो वीरणा-आ-हिबा  
वीरणारे - जे  
मारे छातीमों सक्केरी घोरे जूँ पठा  
तारी भेनडेरी छाती छड़-छड़ाव वीरणा-आ-हिबा



वीरणारे - जे

वेणा छोड़ केवळा

वाके दावेरी सकडी मत मंगावो वीरणारे - वा - दिवळा

वीरणारे - जे

कमारेर कावो वावा

मत मंगावो वीरणारे - वा - दिवळा

..

## 2.9.1. वावा भादिर तबारी

॥ सप्तपदी की तैयारी ॥ :

सन्ध्या समय पर कुम्हार चालीस बटियाँ लाकर टाँडे के बाहर रख देता है। कच्चा पल्ल के बरतक उन बटियों को मँडप के च नीचे ले जाते हैं। बटियाँ ब बरतक में छोटी-बड़ी होती है। मँडप के नीचे चार दोलक्या रख देते हैं। उन पर क्रम से बटिया जमा दी जाती है। इस प्रकार से बटियों के चार खम्बे तैयार हो जाते हैं। इनके बीच में दो मुसल गाड़ दिने जाते हैं। बटियों पर वाक-बोर दाक की टहनिवा रख दी जाती हैं। दोनों मुसलों पर *मोंडल* "मैडल" बांधा जाता है। मुसल के छक्के में कौड़ी बोर भजामा जाती है। बनजारों का विश्वास है कि भजामा बोर कौड़ी के जलने से भूत-प्रेत का डर नहीं रहता। इनकी बीच की भूमि पर कच्चा अपनी सहेलियों के साथ उड़द, मूंग, जवार बोर गेहूँ आदि धान्य को छिड़क देती है। मँडप की धरती को पानी से सींचा जाता है। इस अवसर पर स्त्रियाँ एक गीत गाती हैं -



कम्हारेरो हाँडी, चाबीस लावे  
 कम्हारेर दोसक्या, चार मेल दीने  
 उदिरवज्ज गाददीने मूसक, मूसके देटा छालदीने कौडो-भामा  
 कम्हारेर हाँडीपर मेलदीने वाके-दुबेरो डोको  
 मैळ बाँछि सोटारे मातेपर  
 झारोड पाणोती लीपदीनो धरतीन लाडी  
 झर-झर छण्की पंचमेळदाणान लाडी

वाबार भांग  
॥ चिवाह की भांग ॥ :

मंडप के नीचे गोली धरती पर घर और वधू खड़े  
 हो जाते हैं। स्त्रियाँ चावल और कूँड से उनकी नजर उतारती  
 हैं। इस अनुष्ठान में जो भांग पिलाई जाती है उसे वाबार भांग  
 कहते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

मकावा कुला, गळ-गळ पीताणो  
 वाबार भांग बाई वाबार भांग  
 छळ-छळ हंसरे, छम-छम नाचरे  
 गळ-गळ पीताणो वाबार भांग  
 वाबार भांग बाई वाबार भांग

2.9.2. फेरा करणी  
॥ फेरे लगाना ॥ :

वधू की दाई हथेली में सुपारी के दो टुकड़े, दो कोड़िया,  
 और "हेलेर रपका" रखकर घर की दाई हथेली में धसा दिया जाता है।



वर वधू की हथेली को मजबूती से पकड़ कर प्रथम मुसल के चार और दूसरे मुसल के तीन पेदे लगाता है । इस प्रकार से वर और वधू सात पेदे लगाते हैं । इस अनुष्ठान को "पेरा पेराणो" कहते हैं । इस अवसर पर वधू स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हुई नजर आती हैं । गीत इस प्रकार है -

बाढी बे

नव लाली जीवड़ा लालू मरण बाढीबा बा-दिबा

भावजो बे-जे

बिन छोरी जीवड़ा छोरेमा चालो भावजो-बा-दिबा

बापूरे-जे

वराण पतिवार हाते मां देन चालो बापूरा-बा-दिबा

वीरणारे - जे

पगेमा पग बेढी घन देन हूबरेगो वीरणा-बा-दिबा

### 2.9.3. वकोलडी धोक्णो (गोबर की पूजा) :

पेरा पिशने के बाद वर और वधू को गोबर की पूजा के लिये ले जाया जाता है । इस पूजन में गूड़, चना, हरी चूछियाँ, कंकुम, हल्दी ले जाये जाते हैं । वकोलडी मंथ के बाहर रहती है । वर और वधू गोबर पर पहले पानी छिड़कते हैं, फिर वे उसकी पूजा करते हैं । इस अनुष्ठान को "वकोलडी धोक्णो" कहते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

छोरा नाम चोकौ न वकोलडी धोका

छोरी नाम चोकोन वकोलडी धोका



छोरी नाम चोकोन भूठान गोकी

छोरा नाम चोकोन वूड़िन गोका

2.9.4. बलंग राकावणी । बलंग रक्खा/बिछाना । :

गौबर पूजा के पश्चात् वर और वधू घर में जाते हैं। घर में पहुँचकर वधू अपनी भाभी से रंगीन बलंग बिछाने के निष कहती हैं।

बलंग का गीत इस प्रकार है :-

बलंग रोज़ा द ए मारी भावज

बलंग रोज़ा द ए दिहवा

चार टागिरा

चार नकुस्यारो

बलंग रोज़ा द रे चोरणा-आ-दिहवा

2.9.5. कोक्खा छाणो

। उलवा खाना । :

वर और वधू को उस बलंग पर बिठाया जाता है।

कन्धा की भाभी एक धाली में 'लापली' ले जाती है। इस 'लापली' को वर और वधू एक दूसरे को छिमाते हैं। बहनों भी एक ही बर्तन से पीते हैं। इस अनुष्ठान को कोक्खा छाणो कहते हैं।

2.9.6. माँठ रमणो :

। चाखन के पानी से छेपना । :

वर और वधू को आमने-सामने बिठाया जाता है। दोनों के बीच में माँठ से भरा एक पात्र रखा जाता है। निम्नलिखित व्यक्ति सुवारी





स्वभा और कोड़ी पात्र में छोड़ता है । घर और वधू इन्हें एक दूसरे से पहले पकड़ने की कोशिश करते हैं । दोनों में से जो अधिक चीजों को पकड़ता है, उसे कतुर माना जाता है । इसके अतिरिक्त एक धाली में पानी भरकर घर और वधू के सामने रख दिया जाता है । वे एक कटोरी से पानी एक दूसरे पर उछालते हैं । इस छेल में, पानी छलकाने वाले को नादान माना जाता है ।

## 2.9.7. छूटो तीपणो :

॥ कड़े पहनाना ॥ :

विवाह अनुष्ठान की समाप्ति पर कम्बा के लिए सोनार छूटो, चूडो, अंगुल्ला, पूना, होसनी, कम्बा, जाठकाट आदि गहने ले जाता है । इस अनुष्ठान में छूटो को कम्बा की वेणो में बांधा जाता है । सोनार चूडो की उसकी दाहिनी भुजा पर पहनाता है । चूडो तोपने का काम सोनार को दिया जाता है । अम्ब गहने कम्बा की सहेलियाँ पहनाती है । छूटो और चूडो पहनने के पश्चात् वधू पराये घर की मान ली जाती है । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

चूडो हणिबास तीपेस रे, सनारेर बेटा  
तारी तीपे गड़वरे, सनारेर बेटा  
चूडो हणिबास तीपेसरे सनारेर बेटा

## 2.9.8. मातो बांधणो ॥ माथा बांधना = वेणो गूँथना ॥ :

"छूटो तीपणो" संस्कार के पश्चात् स्त्रियाँ वधू की वेणो गूँथती हैं । वेणो गूँथ ते समय कम्बा रोती हुई अपनी माँ और भाभी से



“लेराती” है । इस अवसर पर निम्नलिखित गीत गाती है -

बाछिछे-जे-

मत घालो बाढी छुसरीर लोल

मत घालो सारनिचा टोपली-वा-दिवा

माछिछे-जे

सारनिचा-भूगिहार छोड़की मत घालो

मारी मारोणी हातेरी बाढे सटारी

ववासी पटङ्की मत छोड़ो बाछिछा-वा-दिवा

बाछिछे-जे मारो बानो मन सोबो बाछिछो

मारल धावणेरो मार मन दो बाछिछो-वा-दिवा

बाछिछे-जे क्सा कोमटेन लूटनाके भावजो,

छटाणे बतिभारो सोबो घालन

मन वराणो मत करो बाछिछो-वा-दिवा

## 2.9.9. गोट विवाह समाप्त का भोज :

विवाह अनुष्ठान समाप्त होने के पश्चात् कच्चा का पिता एक भोज का आयोजन करता है । इस अवसर पर बकरे की दाजत दी जाती है । “गोट” के बकरे को “मरामाबाडी” \* के सामने खड़ा कर दिया जाता है । उसकी प्रथ पीठ पर और मूँह में पानी डालकर उसके माथे पर हन्दी का टीका लगा दिया जाता है । ऊँचे पानी से धरधराता बकरा अपने शरीर को छटक देता है । इस प्रक्रिया को “छड-छडी”<sup>2</sup> कहते हैं । बकरा के

\* महाकाली देवी

2 शरीर को छटकना



छंड-छड़ी न लेने पर उत्तर दूबारा पानी छिड़का दिया जाता है ।  
पिछ लोग माता को नमस्कार करते हैं । उसके बाद उसकी बलि  
चढ़ाते हैं । बलि चढ़ाने के पश्चात् बकरे के कलेजे को देवी पर  
चढ़ाया जाता है । इस अनुष्ठान में सभी पुरुष देवी से चिन्तनी  
करते हैं । चिन्तनी इस प्रकार है -

उदे-उदे नमस्कार  
मरवामा बाड़ी सावेबणी,  
घस्तो काम फस्तो कर  
सेरे मा' सवासेर कर  
करतेय बरक्त देस  
सावकारेन समनक रकाडेल  
कवेरीन तार रकाडेल  
छरमीन छनेती घमाडेल  
बाड़ी सावेबणी,  
बाल बन्वारी, डाय छबरेरी  
सूरा मंगरीरी, जीव जीन गानीरी  
नगरी नमारीरी, कीडी मूंगीरी  
साइविल बाड़ी सावेबणी

## 2.9.10. चोरीर हंगोनी

॥ चोरी का स्नान ॥ :

विवाह अनुष्ठान के पश्चात् घर-सधु को पिछ से  
चोरी से स्नान कराया जाता है । इस अवसर पर जन्म कोई स्त्री  
या पुरुष उपस्थित नहीं होते । ऋतु स्नान के पश्चात् टांडी की स्त्रियाँ



वर-वधु को चिढ़ा कर निम्नलिखित गीत गाती है -

करलीदे बं बाई हंगोबी चोरीती, सीना जोरीती  
 खेतड़, नखलेरी वेगे चोर बाई  
 करलीदे हंगोबी चोरीती, सीनाजोरीती  
 सेर लकीगीचन करलीदे बाई  
 हंगोबी चोरीती, सीना जोरीती

...

2.10. छोरीन भार काढ़णो :

॥ कम्हा की बिदाई ॥ :

कम्हा का भाई, मामा और अन्य व्यक्ति कम्हा को घर के बाहर लाने के लिए कम्हा के पास पहुँचते हैं। कम्हा छम्बे से बंधी रस्ती को पकड़कर घर के बाहर न आने के लिए ज़िदद करती है। कम्हा का भाई उसके हाथ से रस्ती छुड़ा देता है। रस्ती छोड़ने के बाद कम्हा रस्ती की सात गाँठें बांध देती है। कहा जाता है कि कम्हा सत गाँठों के साथ अपनी बाँध छोड़ जाती है। कम्हा का भाई और मामा उसे समझाकर घर के बाहर ले जाते हैं। इस अनुष्ठान को छोरीन "भार काढ़णो" कहते हैं।

2.10.1. खेलेली :

लग्न में कम्हा के पिता के द्वारा भेंट में दिया हुआ बेल छूट से बंधा रहता है। कम्हा को उसके पीठ पर खड़ा किया जाता है। कम्हा बेल के पीठ पर खड़ी होकर अपने दोनों हाथ



हवा में पैनाकर "डोकिबा" से कहती है कि तू छूँ से कभी रस्ती को तोड़कर भाग जा तूझ ताकि मुझे अभी पति गृह में न जाना पड़े । तू मेरी बात मान जाबगा तो तुझे हरी घास खिलाऊँगी और तानाब का पानी पिलाऊँगी । तेरे लोंग लोने से तथा तेरे छुर चाँदी से मद्दवा दूँगी । कपाल पर बाँधने के लिए चाँदिका तथा गले में चाँदी की जंजीर बनवाऊँगी । तब तू सजे हुए नदी के समान गर्व से चलना । तू मेरी बात मान ले और बधा से भाग जा । तू केवल बेनों के समूह से बिछड़ेगा किन्तु मैं अपने माता-पिता से बिछड़ना पड़ेगा । इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है -

नँदियारे - जे

तू छडियेक छूट जोरे-मारे बापूरो

नँदिया - जा - निहवा

राठी तोड़ान घास जोरे-मारे बापूरो

नँदिया-जा-निहवा

नँदिया रे - जे

मंतोन दुँधिया लम्बायेरो पाणो परादू रेक मारे बापूरो

नँदिया-जा-निहवा

मे तीन दोई लोंग लोनेकी मंडा दू रे - मारे बापूरो

नँदिया-जा-निहवा

नँदियारे-जे

मे तार चारों छर स्पैती मंडा दूवे - मारे बापूरो

नँदिया-जा-निहवा

तोन करा दू चाँदीर चाँदिया क्पाकेनर-मारे बापूरो

नँदिया-जा-निहवा

नँदियारे-जे



तु सोनेर लीगेती, चांदोर छरेतो चालेखरे-मारे बापूरो  
 नैदबा-जा-निहबा  
 तु माने तो पंडडी पाङ्गन चालेखरे-मारे बापूरो  
 नैदबा-जा-निहबा  
 तोतो तार छूटामाईर छाङ्ग छूटिबारे-मारे बापूरो  
 नैदबा-जा-निहबा  
 वणन मोती मार-बाङ्गी बापू छूटिबारे-मारे बापूरो  
 नैदबा-जा-निहबा  
 नैदबारे-जे  
 तु मारीवाते मान्कारे-मारे बापूरो  
 नैदबा-जा-निहबा  
 छूटाती राङ्गी तोड़ लेन घास जोरे-मारे बापूरो  
 नैदबा-जा-निहबा

## 2610.2. मझगी (पितृ गृह) :

कम्बा बैन के पोठ पर छड़ी होकर हाथ पैसाकर  
 अपने पिताकी मझगी\* की प्रशंसा करती है। इस मझगी में उसे  
 छाने-पीने की कमी नहीं रही; उसके पिता के मझगी के किवाड़  
 सोने के हैं। वह अब पराये घर की हो गई है। इसलिए कम्बा  
 अपने लोगों से एक बार बात कर लेना चाहती है। अपने घर को  
 वह एक बार देखना चाहती है। इस वेदना की अभिव्यक्ति निम्नलिखित  
 गीत में हुई है -

छुट गम्बाये मारो बापूरी खेती  
 छायेगी पिबेगी नमरी



मारें नाचक बपुरी नंगरी  
गुजरातनी बाठी  
उमरिबाव बापू  
कैसरिया विरण्या  
खेल छोडीबाली बाठी

2.10.3. कुमार वाली :

॥ कुमार वाल ॥

खेली अनुष्ठान के पश्चात् बधू की डोली तत्काल ही  
ससुराल नहीं जाती । बारातियों को कच्चा के टाँडे के बाहरवाले  
मन्दिर में रातभर खूना पड़ता है । मन्दिर जंगल में होता है ।  
उस रात में कच्चा लोमड़ी से भोजन के लिए प्रार्थना करती है ।  
लोमड़ी की आवाज को ख़ुम माना जाता है । ख़ुम आवाज सुनकर  
बारात और एक दिन के लिए रुक सकती है । वह साकिचा के गीत में  
इस प्रकार कहती है :-

बाछिये-जे

तारा छार्ह - चाँदा छार्ह रात - जॉ-निहवा

तु छड़ी एक वदेस रात - जॉ-निहवा

छछियेक वदीस ती मं सोरू मार बाड़ीर गोदेमा - जॉ-निहवा

सुतो-बोक जागरोची नंगरीरी नाचक बापू जॉ-निहवा

तारी बेटो मां जादी रातेरी बाका पड़रे बा-जॉ-निहवा

छछियेक जटन बेसजी नाचकड़ा बापू -जॉ-निहवा

फटिबा पापकी वेजाब वजाबो -जॉ-निहवा

वेजाब पतिबान सरबी-वरबी वाट-जॉ-निहवा



छाँटिके बोलेसरेरा जंगेरा साँडिया खाँ-दिवा  
 तार बोलेती नावक बापू ऊटिया, सखण वचारिया साँडिया-  
 खाँ-दिवा  
 फेर धाम दिवा एक दाडो साँडिया-खाँ-दिवा  
 धमदीया तो पैर एक दाडो तो मैं सोई मारे बापूरे गोदेमा  
 -खाँ-दिवा  
 छठी एक मत बोलेस रे मारे बापूरो पोंसिया कूँडो-खाँ-दिवा  
 छाँटिक न बोलीस तो मैं बेसिई मार सोखतूर लार-खाँ-दिवा

2.10.4. दाखलो (गीत में दुःख की अभिव्यक्ति) :

कम्पा को विवाह के छः महीने पूर्व से दाखलो \*  
 करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। कम्पा एक दाखलो गीत में  
 अपनी वेदना प्रकट करती है, तब - टाँडे की स्त्रियाँ, कम्पा की  
 माँ, कम्पा की भाभी उसके गले से दाखलो करती है।

ए बा  
 काँडो कूँडे निरमल भरो  
 जेमा झीमरिया जाक नाको  
 जाका माँ मावडी पसागी  
 जूँ तारो छेटी पसागी खाँडो  
 -खाँ-दिवा

उक्त गीत के अनुसार काले सागर में निर्मल पानी भरा  
 था। उसमें मछुए ने जाल बिछाया और उस जाल में मछलियाँ पँदा  
 गई। उसी तरह तेरी छेटी भी पराये पछि के जाल में पँस गई है।

\* गीतों में बनजारिन के रीने के ढंग को ही दाखलो कहते हैं।





दावणो का अन्ध एक गीत इस प्रकार है -

बाठीये - जे - जा-हिबा  
 चान्दा-सूबारी जोड़ी जूं  
 माँ बेटोर जोड़ी खेतोती  
 कोड़ी मूंगो सपाती जूं तमार बेटो कोनी सपाती  
 नीबू नारक सक्जाव जूं  
 तमार बेटो सक्वाली - जा-हिबा

उक्त लोकगीत में कन्धा रौती हुई अपनी माता से कहती है कि माँ-बेटो की जोड़ी चाँद और सूरज के जैसी थी । तू मुझे पाल पोसकर पराये पथिक के साथ भेज रही है । तूम मुझे नारिकेल, नीबू की तरह बेच दी है ।

2.10.5. बाँवरी दावणो :

दावणो में कन्धा अपने पिता को सीख देने के लिए प्रार्थना करती है । दावणो इस प्रकार है -

हिस्सों के दावणों के पश्चात् पिता पुत्री के बिदाई के समय दावणो करता है । इस अवसर पर भी कन्धा के कण्ठ से एक गीत फूट पड़ता है -

सीख द बापू - सीख द रे बा - जा-हिबा  
 तारी सीकेन भुपू माँ छोटिबार गाँठ-जा-हिबा  
 रांगो जूं नवबाजू नवजू - जा-हिबा  
 रूपो जूं तपबाजू तपजू - जा-हिबा



सौनेर नाई निक्कबू - जा-निहवा

सुईर नाके माई तो निक्कबू - जा-निहवा

तमेन जालम-वाट कोनी लावू बापू-जा-निहवा

तारी सोकेन काडू, तीज तेवारेर बा-जा-निहवा

उपरोक्त लोकगीत में कन्या अपने पिता को आश्वासन देती है कि वह स्मुराल में हर किसी से नम्रतापूर्वक व्यवहार करेगी। वह कहती है कि मैं रांगे की तरह झुककर, चाम्दी की तरह तपकर, भी नाचक बापू की इज्जत रखूंगी।

#### 2.10.6 भारती दाखली :

पिता के पश्चात् भाई खिलक उठता है। बहन से मिलकर वह दाखली करता है और एक कृष्ण वातावरण को भी सृष्टि करता है। बहन भी एक गीत में खिलक पढ़ती है।

वीरणा रे - जा-निहवा

तारी भेनड़ छ करन - जा-निहवा

सात समंदरेन पार करन - जा-निहवा

तारी भेनडेन छबर लेन जायेत - जा-निहवा

उक्त लोकगीत में बहन अपने भाई से कहती है कि तू तेरी बहन का कुल क्षेम पढ़ने के लिए सात सागर को भी पार करके जाया कर।

#### 2.10.7. सोखतगूती दाखली

॥ सहेलियों के साथ रोना ॥

पारिवारिक जनों के पश्चात् कन्या की सहेलियाँ दाखली करती



है । कम्हा एक गीत गाती है जिसमें सखियों के साथ रहने और खेलने की पुरानी बातें सजीव हो उठती है - दावली इस प्रकार है -

सोबतगो ये - जा-हिबा

चाली तो कुबिरवार परारो भराजाव - जा-हिबा

बेसा तो सोबपट्टीर सादरी भराजाव - जा-हिबा

छोबेन जावो तो चरी बागकीर खेडीदेन चाला - जा-हिबा

एक छडी लागा वस्त दस छडी लगाडा - जा-हिबा

पाणवान जावा तो बापूर मङ्गान तीन क्णा देका - जा-हिबा

सोबतगो-ये-जा-हिबा

तार मार बाळपणेर दोस्ती ल्ह टूटे लागी - जा-हिबा

छुवरारो धमको जसो जापणी समसो - जा-हिबा

नंदोरो पाणो हलोको माराजु - जा - हिबा

जापणी बापूर मङ्गानिमा हूबी हलोका मारो-जा-हिबा

## 2.10.8. सम्पन्न के लिए दावली :

कम्हा की माँ अपनी सम्पन्न के लिए सम्प्रेषण देती है कि मेरे पेट की जातिडी तुम्हारे बेटे में डाल रही हूँ । फूल जैसी लाकली को तुम्हें सौंप रही हूँ । उसे किसी चीज़ को कमी पड़ गई तो वह फूल के समान मुरझा जायेगी । उसे अपनी बेटा समझकर उसका खयाल रखना । इस अवसर पर कम्हा की माँ निम्नलिखित दावली का गीत गाती हैं -

बाडिबो-ये-जा-हिबा

मार जातिरेन तमार पेटेमा छालरीचु - जा-हिबा

मार कमकेर फूल तमार पदरे माँ पाडु दोनीचु - जा-हिबा



दीवेर सरीक मार लड़ाकीरी खजाबो - जॉ-निहवा

कमरेर फूलेर जू मार मार लड़की कक कमकावस - जॉ-निहवा

## 2.10.9. जमाईती दाखली :

कम्बा की माँ अपने जीवार्थ से राती हुई कहती है कि मेरी बेटी ना समझ है, यदि उससे कोई गलती हो जाये तो मन को समन्दर बनाकर उसमें उसकी गलती को समा लो। उस समय का दाखली गीत इस प्रकार है -

बापूरे-जे

अनकम्ता भार लाइली लड़की - जॉ-निहवा

कोई गुनाखीया तो - जॉ-निहवा

तारे पेटेमाँ छालन - जॉ-निहवा

समदर करलेस - जॉ-निहवा

## 2.10.10. बाढी बापेती दाखली

॥ माता-पिता के साथ दाखली ॥ :

कम्बा जिदार्थ के अंतिम क्षण पर अपनी माँ से कहती है कि मुझे एक बार अपने गर्भ में छिपा लो। भाई से कहती है कि - मुझे अपनी जेब ॥छिस्ता॥ में कागज की पुछिया बनाकर छिपा लें। अपने पिता की गोद पर सिर टेककर कहती है कि मुझे अपनी सात हाथ की पगड़ी के अंदर में छिपा लो। इस अवसर पर दाखली का गीत इस प्रकार है -

• सागर - मनको उदार करना।



बाँडिये-जे-बाँ-दिबा

तमारे गुदकासे पेटेमाँ छालन छडी एक गोकला-बाँ-दिबा  
वीराबों रे तमारे निरमिटबा छीसेमाँ छडी एक गोको-  
बाँ-दिबा

वीरणारे-जे-बाँ-दिबा

क्यड़ा दूरसे माईती मन टाकनाके वीरणा - बाँ-दिबा  
बापूरे-जे - बाँ-दिबा

पाक्तु पोस्तु दाड लागे पण साँक्षु वेका कोनी लागे बापूरे  
- बाँ-दिबा

तार साठ हातेरी बागडीर वैवेमाँ - बाँ-दिबा  
छालन छडीक गोकला बा-बाँ-दिबा

2.10.11. नवलेरीर बाडीन समझाणो

‖ कम्हा की माता को समझाना ‖ :

विदार्ह का इस प्रकार बन्बारा कम्हा की विदार्ह का  
अक्सर कम्हा से विकलित हो जाता है जैसे सब कुछ वासुओं में डूब  
गया है । न जाने कितनी बाढ़ें आकर बदन के ठिन्हा को और बढ़ा  
देती है । जब कम्हा की माँ अर्थात् अधीर हो जाती है और उसके वासु  
रोके न रुकते तब कम्हा को सहैलियाँ उनके माँ को धीरज बंधाते हुए  
एक गीत गाती हैं -

रो मत बाडी तार छेनी छोरी  
तार छोरी चाली पर घर बाक्की  
वैवेमा हात पकडो जकौज  
और जलमेर साथी बाडी



## 2.10.12. कन्हा की बाढ़ :

कन्हा की बिदाई होने पर टांठे की स्त्रियाँ गीत गाकर कहती हैं कि नीम के पेड़ पर कौए का नीठ है; उसकी बच्ची उड़ गई और नोड़ खाली हो गया; उसी के समान बेटी की बिदाई हो जाने पर बाप का घर खाली हो गया है। इस समय का गीत इस प्रकार है -

बार्ष नीम्बेर छांटेपर कोबलो रो माओ  
बार्ष कोबल चढ़गी  
बार्ष ठालो वेगो माओ  
बार्ष बेटी चाली लसरेर घर  
बार्ष और बापेर मढ़ीगो ठाल वेगी

## 2.11. तांगडी जाणो :

॥ धेली का जाना ॥

कन्हा के दहेज में दी गई सामग्री को धेली ॥तांगडी॥ में डण्डा डालकर उसकी बेल के पीठ पर रख दिया जाता है। बधू को डौली घर के घर की ओर प्रस्थान करती है। बनजारों की बाह्यत बेलगाड़ियों पर सवार होती है। बेल गाड़ियाँ, नदी, नाले तथा पहाड़ के टेढ़े-मेढ़े रास्तों को लाँघती हुई चलती है। रास्ते में कई टांठे दिखाई देते हैं। उन टांठों की स्त्रियाँ बारातियों को पानी पिलाती हैं। कन्हा उन स्त्रियों से कहती हैं कि तुम्हारे जैसी ही माँ पीछे रह गई है। बहनों और सखियों के झुंड़ने मुखे बिदा

\* सुत्तली से गूभी हुई बड़ी धेली ।



किन्हा है । पानी पीने के पश्चात् गाड़ी चल पड़ती है । इसके बापू  
का टाँडा सौकोल पीछे हो गया है । इस अवसर पर वह निम्नलिखित  
गीत गाती है - ५

रंगोये मारी रंगारारो रंगी सनीडारो सदरी मारी बुरले

-वा-दिबा

ये लाश रंगोये मारी नानी मोटी सात्णो रो बुरलो

- वा-दिबा

रंगोये मारी बाढी बापूरी हरी-भरी हवेली - वा-दिबा ।

छूटी चालीये मारी तानी मोटी भाइयो रो मछी - वा-दिबा

रंगोये मारी हुसंगी भावजुरी बुरलो - वा-दिबा ।

2.11.1 नवलेरीन सौबतगेर दलाधा

॥ वधू को सहेलियों का समझाना ॥

कन्हा को समझाती हुई सखियाँ कहती हैं कि तू रो मत ।  
तेरा पति राम जैसा है । तेरा ससुर बाप के समान और तेरी सास माँ  
के समान है । तेरा जेठ भाई जैसा है । ये तुझे से वैठी जैसा बतावि  
करेंगे । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

तू रो मत ए, हमार लाङ्गली बाई

तोन दीने कोनी वनेर भाई, हमार लाङ्गली बाई

तू रो मत ए हमार लाङ्गली बाई

तारो पति छ रामेर भाई, हमार लाङ्गली बाई

तू रो मत ए हमार लाङ्गली बाई

तोन रकाडिय ए सीतार भाई, हमार लाङ्गली बाई

तू रो मत ए हमार लाङ्गली बाई



तार सासू छ बाड़ीर नाई, हमार लाड़ली बाई  
 तू रो मत ए हमार लाड़ली बाई  
 तार ससरी छ बापेर नाई  
 तू रो मत ए, हमार लाड़ली बाई  
 तीन रकाड़िया ए बेटीर नाई  
 तू रोमत ए, हमार लाड़ली बाई  
 तार छे जेठ छ भाईर नाई, हमार लाड़ली बाई  
 तीन रकाड़िया में भेनेर माई, हमार लाड़ली बाई

## 2.12. कम्भा पति गृह में :

कम्भा पतिगृह में पहुँचने के पश्चात् सास और ससुर के चरण छूती है ।\* इस अवसर पर उसकी सास कम्भा को अपने गले से लगा लेती है । और ससुर आशीर्वाद देता है । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

हमार नंगरीर असीस लेला, बाई सासुर असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई ससुरेर असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई जेठेर असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई नायकेर असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई तम्बजार असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई सेवार असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई बालाजीर असीस लेला  
 हमार नंगरीर असीस लेला, बाई रामेर असीस लेला  
 हमार नंगरीर नेत्र असीस लेला, बाई सौटावाकेर असीस लेला  
 हमार नंगरीर लेला, बाई खड़-बूँडेर असीस लेला

\* इसे नयन करणी कहते हैं ।





## 2.12.1. बहू को वहाँ में मिलाना :

कम्हा पति गृह में प्रवेश करके अपने नवीन जीवन का प्रारम्भ करती है। वह सर्व प्रथम टाँडे के कुप से जल भरकर लाती है। उस जल को घर में रखे हुए जल में मिलाया जाता है। यह जल सम्मिश्रण बताता है कि बहू पति के वहाँ में मिल चुकी है और उसकी कोई पृथक् सत्ता नहीं है।

## 2.12.2. कम्हा के हाथ का भोजन :

नवागत कम्हा के हाथों से पकाए हुए भोजन को खाकर घर के सम्बन्धी कम्हा को अपने कुल में मिलाने की अनुमति देते हैं। इस अनुष्ठान के पश्चात् विवाह कार्य की समाप्ति मान ली जाती है। इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

बल्लभ मालीर हातेरी पोकी मीटी,  
लालीर हातेरी लापसी मीटी,  
लालीर हातेरी छीया तोरी मीटी,  
लालीर हातेरी मेती तनी छी मीरी



**2.12.3. वेतवृत्ति विनती वर से विनती :**

कम्पा वर से कहती है कि माँ ने जन्म दिया और पिता ने पालन-पोषण किया। भाई ने लाठ-प्यार से रखा। मुझे पंचों के सम्मुख तुम्हारे साथ भेज दिया है। मेरा जीवन तुम्हारे साथ है। इस अवसर पर वधू निम्नीलिखित गीत द्वारा वर से प्रार्थना करती है -

मन जन्म दोनो मारो बापू रे राजा  
मन पाबो-पोसी मार बाढी रे राजा  
मार हात क्लाये राजा तीन  
माँ सात लम्बाई सारे लार राजा  
मौती कोई भूने खतो सम्भल्लेस राजा  
हात जोडो विनती करेरीबूरे राजा तोना ।

....



### 3. मृत्यु संस्कार के गीत :

मृत्यु के सम्बन्ध में बनजारों के विचार अनेक प्रकार के हैं। बनजारे जन्म और मृत्यु के चक्कर में विश्वास करते हैं। पूर्व जन्मों के सम्बन्ध में अनेक अनुश्रुतियाँ भी प्रचलित हैं। पिछले जन्म की यादों की सम्बन्ध में भी कितनी ही कथाएँ कही जाती हैं। बनजारा जिस मृत्यु को आदर्श मानता है, उसका रूप यह है।

अविवाहित तथा माता रोग या अकाल मृत्यु से मर जाने वालों को गाढ़ा जाता है और अन्य रस्मों का दाह संस्कार किया जाता है। दाह संस्कार पुरुष ही करता है। उसके न रहने पर अन्य परिवजन ही संस्कार कर सकता है। साधारण रस्म का संस्कार घरों के द्वारा भी किया जा सकता है।

क्यायूद्ध व्यक्ति की मृत्यु होने पर दस बजाते हुए खुशी मनाते हुए रस्म को ले जाया जाता है। रस्म के साथ कोई एक लोहे की वस्तु ले जाने की प्रथा है। विश्वास यह किया जाता है कि लोहे की वस्तु साथ में रहने से भूत-प्रेत का डर नहीं रहता। दाह संस्कार के पश्चात् चिता को धूल कर नहीं देखा जाता है। रस्म यात्रा के पश्चात् लोग किसी जलाशय नदी में स्नान करते हैं। तत्पश्चात् मृतक के सम्बन्धियों को दाह पिलायी जाती है।

मरण से लेकर तीन दिन तक शोक, शोक का समय [शोक समय] माना जाता है। इसके बाद भूत भोज आयोजित किया जाता है। इस भोज को काधिया \* कहते हैं।

---

\* जिन व्यक्तियों ने रस्म को उठाने में अपना कन्धा दिया है उसे कीधिया कहते हैं।



इस समय गीतों का रूप इस प्रकार रहता है । मरने के पश्चात् का गीत : इसमें दिवंगत के गुणों तथा उसके जीवन की अन्य स्मृतियाँ रहती हैं । इस अवसर का गीत इस प्रकार है -

बापूरे जे, ई - दिव्या  
मारो जे बापून कना केज्जुई ई - दिव्या  
मारो जे नाथक बापू हमेती छमा देगो - ई - दिव्या  
मारो जे धरमी बापू हमेना छोड़ान ज्जोगी - ई - दिव्या  
मारो जे बापू हमेन कान्धार पाल करगो - ई - दिव्या  
मारो जे बापू हमेन काटार वाळेना छेज्जोगी-ई-दिव्या

### 3.1. मृत्यु सम्बन्धी गीत :

बनजारा जाति में मृत्यु संस्कार के समय मरे हुए व्यक्ति की प्रशंसा करती हुई दिव्या इस प्रकार का गीत गाती है -

सामो लोभा  
ये पाने माहरे मुडान सरान लेन  
पडाटे सरीक पडाह  
दलक गोच बापण भी इस वाटे ती राय सान छ  
तब तब रोवो रोवो मत सामो छरो मत करो  
केना वार छ रोवो मुख्यो  
मुदेन मदटो जिखतेना बाटी

### 3.2. रसवाजा के पूर्व का गीत :

इसमें भी गुणों की स्मृतियाँ रहती हैं । समय का गीत इस प्रकार है -

मारो जे तीर नाथक - जे - ई - दिव्या  
ज्जुसी माँ नाम काठो - ई - दिव्या



तारे हाते री हवेली मां एकलीन छोडागो - ई - दिव्या  
 तारे हातेरो छेले मां नागर कूण कलाया - ई - दिव्या  
 तारे हातेरो गावडीऊन कूण चराया-ई-दिव्या  
 तारे हातेरो कन्दूत कूण देखिया-ई-दिव्या  
 सोती री सान कसेना चाली मारो जे खोर नायक - ई -दिव्या  
 यदि दिव्यगत व्यक्ति अपने पीछे अपनी स्त्री को छोड़ जाता है,

कादिया भोजन के पश्चात् उसे विधवा बनाया जाता है। उस क्रम में  
 छुड़ियों को तोड़ना, आभूषणों को उतारना व तिसदुर को पौटना  
 जैसी क्रिया जाती हैं। इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं।  
 उनमें से एक इस प्रकार है :-

मारवाडनी बाई तारे खेतुडू चलोगी  
 खी री सोभी कादुन पैक बाई  
 मारवाडनी बाई तारे खेतुडू चलोगी  
 बोलिया बोधु कादुन पैक बाई  
 फौडन पैक बाई मारवाडनी बाई  
 मारवाडनी बाई तारे खेतुडू चलोगी  
 छुमरी सब तीन सोबी देनी कादुन पैक बाई मारवाडनी बाई  
 मारवाडनी बाई तारे खेतुडू चलोगी  
 बाकडी मत हो जा बाई  
 बाकडीन तोडन पैक मारवाडनी बाई  
 मारवाडनी बाई तारे खेतुडू चलोगी  
 छुडो कादुन पैक बाई मारवाडनी बाई  
 बटकी अंगुलिका कादुन पैक मारवाडनी बाई  
 मारवाडनी बाई तारे खेतुडू चलोगी



#### ५. देवी-देवताओं के गीत :

लोक-जीवन में पौराणिक देवी-देवताओं के अतिरिक्त हृदय की अनन्य भक्ति और विश्वास के पनस्वरूप अनेकों लोक देवता, देवियों एवं पितर पितरिणियों की मान्यता है। हिन्दू शास्त्रों में जिन देवी देवताओं का उल्लेख है - ब्रह्मा-ब्रह्माणी, लक्ष्मी-विष्णुनारायण, शंकर-पार्वती, काली दुर्गा, सरस्वती, गणेशजी, बजरंगबली, आदि पूर्ण भक्ति और श्रद्धापूर्ण मानस से उनकी उपासना तो करते ही हैं - परन्तु जनमानस की अनन्य भक्ति भावना के पनस्वरूप कोई भी व्यक्ति विशिष्ट कृत्वा अथवा अलौकिक समस्कारों के कारण पूजा जाने लगता है।\* इस प्रकार से ही बनजारा जाति के अनेकों देवी-देवता सिद्ध रूप होकर पूजे जाते हैं।

बनजारा जाति में अनेकों देवी देवताओं की मान्यता है। इनको चार वर्गों में बांटा जा सकता है - १. पौराणिक देवता २. लोक देवता ३. सन्त या महापुरुष वर्ग ४. सती। पहले वर्ग में गणेशजी, राम, सीता, श्रीकृष्ण, बालाजी, हनुमान जी, सूर्य देवता और चन्द्र देवता आदि। दूसरे वर्ग में प्रेत, बौत, शीतला, तब्बजा और भवानी, आदि। तीसरे वर्ग में ११ भक्त सेवाभावा १२ लोकामन्द १३ हाथीराम बाबा १४ सोमासाद १५ कादूराम बाबा १६ गुरु नानक १७ मोरु भुक्छि आदि। चौथे वर्ग में सती माता, चौकली देवी, ठकरी और भनकी आदि।

---

\* लोक साहित्य विमर्श, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर -

डा. स्वर्णिता - पृ.सं. ११७



#### ४.१. पौराणिक देवता :

इन देवताओं में मुख्य रूप से गणेश, राम, कृष्ण, बालाजी और हनुमान आते हैं। कुछ अन्य देवता भी हैं जैसे - सूर्य और चन्द्रमा भी देवता के रूप में मान्य हैं।

##### ४.१.१. श्री गणेश जी के गीत :

वैसे तो गणेश अनुष्ठानिक मंगल की दृष्टि से पूज्य अखिल भारतीय देवता हैं किन्तु महाराष्ट्र में गणेश की मान्यता सर्वाधिक है। महाराष्ट्र के बनजारे की लम्बे स्थानों के बनजारों के अपेक्षा गणेश के पुतीक अधिक समर्पित हैं। उनमें गणेश जी के अनेक गीत प्रचलित हैं उदाहरण के लिए एक गीत दिया जा रहा है -

गौरीगौरी गणेशा बाळ ।  
तारे नाभेरी जणू माळार ॥ धू ॥  
सेर आंग तार पूजा  
तुष्ट कैलाशी राजा  
तारे के नाभे माई मजा  
वाज खिरी वजावा ठाळ ॥ १ ॥  
मनतार लागी मोठी  
देव बाजो स्डी-स्डी  
मार बंदछरे गाडी ॥

##### ४.१.२. श्रीराम और सीता के गीत :

बनजारे श्रीरामचन्द्र को अपना लाडिल पुरुष मानते हैं और



सीता माता को अपनी माँ के रूप में पूजते हैं। त्योंहारों के अवसर पर 'स्वयं' बीराम और सीता माता के कई गीत गाती हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

जसी धराती पर सीता राम छेलागी  
जसी धराती पर सीता माता छेलागी  
उनके बीच छेलारा सब दनिखी धरती तोपर  
धरती तोपर - भाई-भाईर धरती तोपर मसरेती  
जसी धराती पर दसरतस बेटा छेलागी  
जसी धराती पर जानकी बाडी छेलागी  
उनके बीच छेलार सब दनिखी धरती तोपर  
धरती तोपर भाई-भाईर धरती तोपर मसरेती  
जसी धराती पर लोकमाता छेलागी  
उनके बीच छेलारा सबदनिखी धरती तोपर  
धरती तोपर भाई-भाईर धरती तोपर मसरेती  
जसी धराती पर दनिखार बापू छेलागी  
जसी धराती पर दनिखार बाडी छेलागी  
उनके बीच छेलारा सब दनिखी धरती तोपर  
धरती-तोपर भाई-भाईर धरती तोपर मसरेती ।

#### 4.1.3. श्रीकृष्ण के गीत :

जैसा कि उन्मुख देखा जा चुका है कि बनजारों की एक शाखा माधुर बनजारों के रूप में भी जानी जाती है। स्वभावतः माधुर बनजारे ही अपने वादिम पुरुष के रूप में कृष्ण के गीत गाते। वैसे तो बनजारों के कृष्ण के छट-पट्ट के गीत गाये जाते हैं किन्तु





माधुर बनजारों में कृष्ण के बहुत से गीत प्रचलित हैं । एक गीत इस प्रकार है -

गुन्देवेरी चमत्कार भजन माना - विष्णुदास कनिराम 2,

भजन-2 ॥ चाल सरक ॥

घनबाम तारी माया कठिन रे  
छेरलीदो वात्मारामेन रे  
कुडी लागे लागो नाम तारी  
मन गुताणो माया जाकेना  
गती वेळेंदीद देवेन छेरली दो ॥ 1 ॥

मीठो लागेनी हरिभजन  
मन छेनेन रे पृथ्व दान  
गरबेती करोचो तीर्थधाम छेरली दो ॥ 2 ॥

भरम पळ्याो बुधोमा काही सुवेनो वात्मारामे मा ।  
सुदीवाट वता भगवान रे ॥ 3 ॥

पुभु तोठ माबोरो केन  
सुमेन निबाद जीवन  
विष्णु केरो तारे सेवाछेदरे ॥ 4 ॥

#### 4.1.4. बालाजी के गीत :

बनजारा जाति में बालाजी की पूजा धूम-धुल्ल धाम से की जाती है । प्रायः सभी बनजारे बालाजी की पूजा करने के लिए तिरुपति जाते हैं । कुछ लोग अपने टाँके के मन्दिर में ही भोग चढ़ाकर बालाजी की पूजा करते हैं । पूजा के अवसर पर पुरुष कई



गीत धिबझ हो जाते हैं । एक गीत इस प्रकार है -

बालाजी से बनजारा जाति का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है । किंवदन्ति के अनुसार हाथीराम बाबा श्री वैकुण्ठेश्वर बालाजी के साथ चौपड़ तक खेलते थे । इस अभिप्राय को श्री वैकुण्ठेश्वर के मन्दिर के प्रस्तर छ्त्र पर भी अंकित किया गया है । हाथीराम बाबा बनजारा जाति से ही बतलाये जाते हैं । इसलिए बनजारे लोग अपने पुरुष के साथ श्री बालाजी के भक्त बन गये । बालाजी के सम्बन्ध में कई गीत प्रचलित हैं । एक गीत इस प्रकार है -

बालाजीर देवकेमा पूजा कूण करगे ।  
पूजा हम करगेरे बालाजीरो पतिव्या ।  
बालाजीर देवकेमा भोग कूण लगाडे ।  
भोग हम लगाडेर बालाजीर पतिव्या ।  
बालाजीर देवकेमा लगी कूण कूलागे ।  
लगी हम कूलागेर बालाजीर पतिव्या ।  
बालाजीर देवकेमा भेट कूण च्छागे ।  
भेट हम च्छागेर बालाजीर पतिव्या ।

#### 4.1.5. हनुमान जी के गीत :

बनजारे हनुमान जी की घर का रक्षक समझते हैं । हनुमान जी की पूजा पुरुष ही करते हैं । पूजा के अवसर पर चुरमा बनाया जाता है । घर के सामने एक होम कुण्ड बनाया जाता है । होमकुण्ड में गाव के घी से स्नान किया जाता है । इस अवसर पर



पुरुष प्रार्थना {वरदास} करते हैं । प्रार्थना इस प्रकार है -

गादीवाणी भूत छाडा तारे सोराती  
गादीवाणी चोड़-चपट छाडा तारे सोराती  
गादीवाणी पाषीन छाडा तारे सब सोराती  
गादीवाणी अधमीन छाडा तारे सोराती  
गादीवाणी चोरेन छाडा तारे सोराती  
गादीवाणी जादू टोणान छाडा तारे सोराती  
गादीवाणी डाकी जोकोन छाडा तारे सोराती  
गादीवाणी दानान छाडा तारे सोराती

एक अन्ध गीत इस प्रकार है -

रामेरो धक्त, सीतारो सेवक  
सीको ताड़ो रकाडेस हमेना  
रामेरो भक्त, सीतारो सेवक  
हरा-भरो रकाडेस हमार छेतारीन  
रामेरो भक्त, सीतारो सेवक  
अन्ध-धनेती रकाडेस हमारे छरेना  
रामेर सेवक, सीतारो सेवक  
रोगे दकेती छप्पा रकाडेरा हमेना

..



### 3.2. लोक देवता :

पौराणिक देवताओं का सम्बन्ध जहाँ बनजारे मानस के धार्मिक स्तर से है, वहाँ लोक देवता इस मानस के जादू पल [मैजिक अस्पेक्ट] से सम्बन्धीत हैं जहाँ पौराणिक देवताओं को संतुष्ट करने के लिए "पद्मं पृथग् पद्मं तोयम्" का को भेंट दी जाती है वहाँ लोक देवता को संतुष्ट करने के लिए खिल आवाजक होती है। खिल पशु के रूप में चकरा हो स्वीकृत है। कम साधन सम्पन्न बनजारे मुँह की खिल देकर भी लोक देवता को संतुष्ट करने की कोशिश करते हैं। इन देवताओं से सम्बन्धित मंत्र भी हैं। जिन्से देवताओं को पुसन्न करके मन चाहा कार्य कराया जा सकता है। ऐसी मान्यता है। इन देवताओं से सम्बन्धित गीत भी हैं।

लोक देवताओं के विषय में डा॰ स्वर्णिता का कहना है - लोकजीवन में पौराणिक देवी देवताओं के अतिरिक्त हृदय की अनन्य भक्ति और विश्वास के पनस्वरूप अनेको लोक देवता, देवियों एवं पितर पितरिणियों को मान्यता है। हिन्दू शास्त्रों में जिन देवी-देवताओं का उल्लेख है - ब्रह्मा-ब्रह्माणी, लक्ष्मी-विष्णु नारायण, शंकर-पार्वती, काली-दुर्गा, सरस्वती, गणेशजी, अजरगबली आदि पूर्ण भक्ति और कटापूर्ण मानस से उनकी उपासना तो करते ही हैं - परन्तु जनमानस की अनन्य भक्ति भावना के पनस्वरूप कोई भी व्यक्ति विशिष्ट कृत्य भावना के पनस्वरूप कोई भी व्यक्ति विशिष्ट कृत्य लक्ष्य अलौकिक समस्कारों के कारण पूजा जाने लगता है।\*





#### 4.2.1. तुलजा :

तुलजा देवी का मन्दिर पोहरादेवी ।

में इस देवी के दर्शन करते के लिए नवकरों की टोलियाँ नवदुर्गा को  
जबसर पर जाती है । वास्तव में तन्मा और काली एक ही शक्ति  
के दो नाम हैं । तुलजा के मन्दिर में भी खिल देने की प्रथा है ।  
बनजारा जाति में तुलजा की सबसे अधिक मान्यता है । अपने  
परिवार, टाँडे और बनजारा जाति की सुरक्षा के लिए देवी के सामने  
बनजारा शिवलिंग विनत होता है । अनेक बनजारे देवी को भेट  
चढ़ाते हैं । देवी की बाधा से लौट कर बनजारा अपने घर में  
देवी की पूजा भी करता है । तुलजा देवी के सम्बन्ध में अनेक गीत  
प्रचलित हैं । घर में तुलजा देवी की छत्री भी होती है । यह क्षत्री  
प्रायः चाँदी की होती है । इस क्षत्री की तन्त्र का पुतीक माना  
जाता है । घर में इस छत्री के सामने बनी होती है । प्रार्थना के  
पश्चात् टाँडेवाले को प्रसाद बाँटा जाता है । इस अनुष्ठान में रात तक  
कई गीत और भजन गाये जाते हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

छिगछिग नौबत बाजा छंको पड़े भवानी तारो ।

छंको पड़े भवानी तारो सेवारो ।

छोसर जोगण जाँगा चाला, छोछट जो गल पाबा चाला ।

बीच चालारे छपनिया भीरु ।

भीमा रामासैतरो ताँडो पूखी तार भक्ति द ।

उमर जला सोना वरछी, सासी बोल मन्ना माह्वे ।

पाच भाई तो सेवा सरीके, गाल-गाल पर ली दे लडाई ।

कार भोजन जीतल जाबो, पट्टा कलाबो सेवा भाबा ।



चदेन घाटेरी छडो पोछिया, रेतभ पाकटो लम्बी डोर ।

उमर बेटी जान मरामा ।

पीको साठो काजक कुँकु तलक चडाबो सेवा भाबा ।

सुते के जागेर दिन्कारे लोको ।

वेगो सवाशेर निक्को दाडो ।

*खल्लेपार/लखार*

इतो तब्जौ मारन वरलीस मोह ।

माता जाईरो लस्कर वाडा नादो ।

साजोरे गुलाम छुकी, माता जाई छलतीजा ।

..

४.३. सन्त वा महारुख वर्ग : ....

४.३.१. भक्त सेवा भाबा के गीत :

बनजारे सेवा भाबा \* को कुल देवता के रूप में पूजते हैं । सेवाभाबा का मन्दिर सभी टाँठों में रहता है । इस मन्दिर पर पीला झंडा फहराया जाता है । इसको चुरमा का भोग चढाया जाता है । मन्दिर में केवल समाधि ही रहती है । इनकी पूजा पुरुष ही करते हैं । सेवा भाबा वास्तव में तुलमा देवी का ही भक्त था । इस ब्रह्मचारी भक्त ने तुलमा देवी के मन्दिर में जीवित समाधि ली । उसी समय से वह देवता के समान पूजी जाती है ।

---

\* महाराष्ट्र में पोहरादेवी नामक स्थान पर सेवा भाबा का सबसे बड़ा मन्दिर है ।



रागो धबानी मनी बटोच  
 रोज मजूक वाणी बोलवर      ॥६॥  
 दससे बदारमे बेटोह रागो  
 देखन काक वोरो भागो  
 श्रिकृष्ण छटा छोरव      ॥ १ ॥  
 रागेन पोसेवाबो ब्रह्मचारी  
 पाणी पराव छोरी कुंवारी  
 वोरे ब्योरे ठंको छोरव      ॥ २ ॥  
 भक्ती नामेरे बगीचारी फल  
 तोडन खावच गलगल  
 वासा तूष्णा पूरी कररोच      ॥ ३ ॥  
 कोणी कल सत् गुरु शिषाई  
 छाम गाबो जना मकोच

सक

#### 4.3.2. लोकामसन्द :

गुरु लोकामसन्द बनजारों का पूज्य था। उन्होंने बनजारा जाति के लिए अपने शरीर को त्याग दिया था। इनकी पूजा जान्मु में तेलगाणा ग्राम्त के जोर ग्राम्त क्नाटक के बनजारे करते हैं। इनकी पूजा पुरख ही करते हैं।

बात यह हुई कि गुरु नानक के अनुयायी सिख भी थे जोर बनजारे भी। लोकामसंद गुरु नानक के विशेष कृपा पात्र थे। सिख वर्ग इनसे चिह्नता था। नादिठ ॥ महाराष्ट्र ॥ में दोनों वर्गोंमें संबंध छिड़ गया सिखों ने इन पर आक्रमण किया। बनजारों की रक्षा के लिए जान्मु में आकर वीर मत को प्राप्त हुए। इस धर्म वीर की वहाँ पर समाधि





बनी हुई है। चैत्र मास में उस समाधि के पास पूजा के लिए जाते हैं। इस अवसर पर लगभग 50 हजार बनजारे एकत्र होते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है। यह संभवतः गुरु नानक के समकालीन थे।

साईं तेस लोकामसंद बापू  
जवातेन दूर कर लोका  
देवधरम बाद आबेनीर लोका  
ज्वानीर जादूवान छे लोका  
सदा मन रेवेणी निर्मल लोका  
सत् भावना मनेमा लादेनी लोका  
वेद गिताप ध्यान पूजेनी लोका  
काशी तिथि धाम भाबेनी लोका  
तमाशा जिन मन धामेनी लोका  
ज्वानीर निशा भरपूर लोका  
माता पितार करेनी कदर लोका  
ठमणीरे बिना कोकभाबेनी लोका  
भक्ती नामेर जवाणी जगणी लोका  
कीमत वीस मन माणी लोका  
भूनेन वाट खतान जगणीलोका ।

- 
- गुरु सोभासाद का मन्दिर महबूबनगर जिला के कंडौल तहसील में लोकामसंद नामक स्थान पर है।



### 4.3.3. हाथी राम बाबा के गीत :

आन्ध्र प्रान्त के तिरुवति नामक स्थान एक बड़ा पण्य क्षेत्र है। वहाँ पर बालाजी का मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर के सामने हाथी राम बाबा का एक विद्यालय मठ है। राम बाबा हजारों की थे। वे मधुरा से आकर तिरुवति में बस गये थे। इस मठ में प्रतिदिन हजारों बनजारे आकर हाथीराम बाबा का दर्शन करते हैं।

बालाजी और हाथीराम बाबा के सम्बन्ध में अनेक किम्बदन्तियाँ प्रचलित हैं। एक बार श्री वेंकटेश्वर जी हाथी बाबा के साथ चोतर खेलने के लिए आये और अपने हाथ का एक कंकण भूल गये। दूसरे दिन पूजारीयों ने उस कंकण को लेकर हाथीराम बाबा पर चोरी का आरोप लगाया। बात कृष्णदेवराय तक पहुँची। तब वेंकटेश्वरजी की कृपा से हाथीराम बाबा निरपराध सिद्ध हुए।

सुनते हैं कि एक बार उनके हाथी जैसे शरीर को देखकर उनके गन्ना छाने के लिए कहा गया था और रात भर में वे एक कमरे में भरे हुए गन्नों को खा गये थे। इन्हीं हाथी राम बाबा को अपने एक शक्ति का पुरुष मानते हैं। जिस प्रकार तुलमा देवी की यात्रा करने के लिए प्रतिवर्ष हजारों बनजारे जाते हैं उसी प्रकार बालाजी के दर्शन करने और हाथीराम बाबा को भेंट चढ़ाने के लिए हजारों बनजारे जाते हैं। उनके सम्बन्ध में कई गीत गाये जाते हैं :



एक अन्य गीत इस प्रकार है -

बालाजीन भक्तो हातीराम निक्कनो  
सात गटमान गौडो टेकन चङ्गो  
वामन-कण्वाती भक्तीर वाते कीदो  
बालाजीर दरसन कीदो  
बालाजीर कण्बेमा कोड़ी रम्भो  
कुण्देवराजेन भक्ति वातायो  
पुजारीजन और सक्ती वतायो  
बालाजीर देवछे समनक  
सगाधो भंदायो ।

#### 4.3.4. गुरु नानक के गीत :

दक्षिण भारत के बनजारों में से कुछ लोग गुरु नानकजी की पूजा करते हैं। इनका गुरुद्वारा बीदर और पाकिस्तान में है। उसका नाम "ननकाना" साहब है। बनजारे पूजा करते समय अरदास करते हैं। अरदास इस प्रकार है :

कजली वन में ध्व जले  
जले चंदन ना रुछा  
हम जलो बिन पंछ से  
तु क्यों जले पंछी बात  
सत्नाम  
फ ल छाबे पता बिगाडे  
बैठे तुम्हारी डाल  
तम जलो हम बड़ चला



जिसे कितना काल  
 सत्नाम  
 कजली बन में सुकरा क्या करो  
 चलो हमारा देस  
 पावा नरवा दू पिंजगी  
 महलो में कर दू साज  
 सत्नाम  
 मछली कइये दल मिले  
 कपड़ा असल सपेद  
 तिरवा रंग में साँकली  
 छोड़ा असली कपोद  
 सत्नाम

#### 4.3.5. काकूराम बाबा के गीत :

बान्ध के वादिलाबाद जिले के बनजारों और महाराष्ट्र के बनजारे काकू बाबा की पूजा करते हैं। वे इस ग्रन्थ के सुप्रसिद्ध गुरु माने जाते हैं। इनकी पूजा भी पुरुष ही करते हैं। पूजा के समय पुरुष कई भक्ति गीत गाते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है :

काकूराम बाबा साइबिगी भीबा  
 नजरेंती देखल काँधी रूप आत्मा रामेरो भीबा  
 हाते माई कलठा उ तारों भीबा  
 पथ मनें माई पस्तारों भीबा  
 जसो हरनरथ कस्तूरी रो भीबा



वोन दूँछेन तू भार जारो भीबा  
 वोर रत्न वोन भुलारोरें भीबा  
 जसो मधन करब दुधरो भीबा  
 वीम रूप निजल छीइरो भीबा  
 लसो ध्यान कगाल ब्रम्हेरोरें भीबा  
 देह जड जाणल तारो भीबा  
 क्षण बगेर दिबे दुखरो भीबा  
 बुद्धानंद चेतन्य रूप न्यारोरें भीबा  
 भजलो काबूरामेरी लीछ भीबा  
 नजरेती देखलो रूप आत्मारो भीबा

#### 4.3.6. सोमासाद :

गुरु सोमासाद बनजारों का गुरु माना जाता है । बान्हा में तेलंगाणा प्रान्त के बनजारें तथा कर्नाटक प्रान्त के बनजारे गुरु सोमासाद की पूजा करते हैं । इनकी पूजा करते समय सिद्ध धर्म के अनुसार ही अरदास किया जाता है । गुरु सोमासाद के कई गीत प्रचलित हैं ।

~~ये बान्हा के गुरु हैं~~

---

\* बान्हा के महबूबनगर जिले में कछो तहसील में इनका मन्दिर है ।



#### 4.4 सती :

सती उसे कहते हैं जो अपने पति के मृत्यु के पश्चात् अपने प्राण त्याग देती है। इस प्रकार की सती भी दिव्य स्थिति वाली हो जाती है। प्रसिद्ध सतिमा यह है - ठहरा और छनकी आदि।

सतियों के विषय में डा० स्वर्णिता का कहना है -

सतीत्व की रक्षा तथा पतिव्रत धर्म पालन के लिए बलिदान देनेवाली सतिमा, अविवाहित बाइबा, पितर-पितरणिमा तथा भोमिबे भी देवताओं की भांति पूजे जाते हैं।<sup>2</sup>

#### 4.4.1. चौकली देवी :

चौकली देवी की समाधि खाम्ना में है। यहां के बनजारे इनकी पूजा धूम-धाम से करते हैं। चौकली देवी अपने पति के मृत्यु के पश्चात् कई दिनों तक एकान्त में रहकर लोक कल्याण की कामना करती रही। कहा जाता है कि वह बनजारों की उन्नति के लिए भगवान से प्रार्थना भी करती है। वह जीवन में

\* लोक साहित्य विमर्श : पृ. सं. 117

2 वही

3 खाम्ना के रंगारेड्डी जिले में मदनपल्ली नामक गांव में इनकी समाधि है।



कभी झूठ नहीं बोली और अपने स्वार्थ के लिए कोई काम नहीं किया। मरते समय चौकली देवी बनजारों को दारु न पीने की, झूठ न बोलने की सीख दे गई थी। इनकी मृत्यु के पश्चात् बनजारे इन्हीं श्रुति के रूप में पूजने लगे। बनजारों का विश्वास है कि चौकली देवी की समाधि पर फूल चढ़ाने से उनकी मनोकामना पूरी होती है। चौकली देवी के कई गीत प्रचलित हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है :

नाम तारो गाथे दादाडी  
सस्तेर गाडी चलादेनी बाडी  
काडे माई ती बंधा दा बाडी  
भारकाड्डा बाडी माभार फादे माई ती  
पाथे हो जगत कण्ठाच आंदो  
पाथ छप्पा कर दा बाडी  
हम गोस्त अमृत पश दा बाडी  
गोह कोक छरादा बाडी  
आरे छोकामाई ती  
भार छीथ ला बाडी  
चौकली बाडी तर पग ला  
पडांघा बाडी

### 3.4.2. ठकरी देवी :

ठकरी देवी की समाधि कनाटक प्रान्त में कम्पलापुर नामक स्थान में है। कनाटक प्रान्त के बनजारे ठकरी देवी की पूजा करते हैं। पूजा के अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है -



सत्ती बाड़ी, ठररी बाड़ी  
 बेरीच देखे माँ  
 दरसण देरीच, भक्तून  
 सत्ती बाड़ी, ठरनी बाड़ी  
 गेटोच देखे माँ  
 लीची लीची ठंडीमा  
 हमेन बेसर मैलीच  
 कीचा पोकी हमेन छरारीच  
 कि सत्ती बाड़ी, ठररी बाड़ी  
 गेटोच देखेमा

#### 5. पर्वोत्सव सम्बन्धी गीत :

पर्वोत्सव सम्बन्धी गीतों में त्थोहारों और " देवकूट जातरा " के गीत अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। त्थोहारों और देवकूट जातरा " के गीतों में लोक जीवन का अर्थ स्वस्थ मिलता है। बनजारा संस्कृति इस दृष्टि से सर्वोपरि है। विभिन्न मेलों और त्थोहारों पर गाये जानेवाले गीतों का ऐतिहासिक महत्त्व भी है। बनजारा जाति में गीतों की विशिष्टता की दृष्टि से होली, दीपावली, दसराव और तीज का त्थोहार सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। धार्मिक आस्था के साथ साथ सोमासाद, सेवाभावा, लोकामसंद, बालाजी और गुरु नानक के उत्सवों पर आयोजित मेलों के अवसर पर गाये जाने गीत बड़े मनोहर, मधुर और सांस्कृतिक भावनाओं के व्यंजक होते हैं।





बनजारा जाति के मन्दिरों में जितने अधिक मेले होते हैं उतने अधिक नहीं। तालाब, पहाड़ी या झील, सरनों के किनारों पर बनजारों के पूजा किसी न किसी देवी-देवता की स्थापना कर दी और उस जगह हजारों की तादाद में वे झुट्टे होने लगे। इस प्रकार के मेले बनजारों के जीवन के लिए मनोरंजन के साधन बन गये।

देवेन्द्र सत्वाधी का कहना है कि लोक गीतों का बचपन धर्म की छाया में छत्तीत होता है। गीतों की कापरे संख्या ऐसी मिलेगी जिनका जन्म पूजा, पर्व, त्योहारों तथा व्रतों के साथ होता है। कुलदेवताओं के पूजाओं के गिर्द घूमने वाले गीतों में जनता के रोति-रिवाज हमें अपनी आत्मकथा सुना देते हैं।<sup>2</sup>

#### ५. होली :

बनजारा जाति में होली के लगभग दस दिनों पूर्व से ही होली के उत्सव के लिए टाँठे के झुंक नाचक की अनुमति प्राप्त करते हैं। नाचक के मार्गदर्शन में ही होली का पर्व मनाया जाता है। होली बनजारों का सबसे बड़ा त्योहार है। इस अवसर पर सम्पूर्ण बनजारा टाँठा गुंज उठता है। झुंक टप बजाते हैं और कुवितियाँ गाती हुई नाचती है। होली के अवसर पर झुंक दुःखी परिवारों के घरों में जाकर सामूहिक बदाजली अर्पित करते हैं। वे कहते हैं कि इस संसार में केवल सूर्य, चन्द्र, और तारे जमर है बाकी सब नाशवान है इसलिए मृतों के लिए अधिक काल तक दुःख न मानकर होली के त्योहार में सम्मिलित होकर नाचो गाओ। इस अवसर पर एक गीत गाया जाता है, गीत इस प्रकार है :



दिनिया में अमर रेनी कोई  
 बम्दा मरेनी ये दिनियामा  
 बाकी से छूटिया ये दिनिया मां  
 सूना मरेनी ये दिनिया मां  
 बाकी से छूटिया ये दिनिया मां  
 तारा मेरनी ये दिनिया मां  
 बाकी से छूटिया ये दिनिया मां  
 मरदार मूँडे मरदरे मां मारी  
 जीघतेर मूँडे मां बाटी

बदाजलि कार्यक्रम के पश्चात् टांडे में डोली के मुखिया का सर्वसम्मति  
 से चुनाव होता है। इसे गेरिया कहते हैं। यह अविवाहित  
 गेरिया युवकों के साथ टांडे के सभी वर्ग व वनाथों के सुखी जीवन के  
 लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। प्रार्थना इस प्रकार है :

लंगड़ेरी टांग सम्भारे करला भाया  
 नखोदाडो जखोर भाया  
 काणेर बाकी रम्होरे करला भाया  
 नखोदाडो जखोर भाया  
 बैरेर कान सम्भारे भाया  
 नखोदाडो जखोर भाया  
 लूरेर हाथ सम्भारे कर दारा भाया  
 डोबीर दाडो जखोर भाया



व्यापार के लिए दूर देश में गए पति के समय पर न सोटने पर दुःखी पत्नी उसकी प्रतीक्षा करती है। गीतों का ठम-पूटा हुआ है। बरगद की लकड़ी व भेड़ का चमड़ा लाकर अब ठम-कोन बनायेगा ? इसलिए विरहणी करुण स्वर में रो उठती है। लेरिबा अपने साथियों और टांठि की गतिवृत्तियों के साथ उसके द्वार पर जाता है और हथौल्लास के होली के महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए कहता है। टांठि की टोनी को देखकर विरहणी करुण स्वर में गा उठती है।

भिबारे मार माटी छ परदेने मां वेपारे माई  
 भीबारे मार छपडा टूटरो-पूटरो बेरोच खुणियर माई  
 और वास  
 भीबारे बड़बांको लकड़ा, कूण लाव - छाण्डोकूण लाव  
 भीबारे चढ़ला को लकड़ा, छेओरो चमडा चाव  
 भिबारे और बना बू वाजिबा उपड़ा मारी  
 भिबारे और बना बू बोयू गीद  
 भिबारे और बना बू नाबू सूद  
 भिबारे मार मारी छ परदेने मां वेपारे माई

विरहणी को मनाकर लेरिबा अपने साथियों के साथ टांठि के नाचक के द्वार पर पहुँचता है। वह उसकी प्रशंसा करता हुआ कहता है कि नाचक बड़ा भला है, इसीके कारण टांठि में एकता है। इसी कारण होली का त्यौहार धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर का गीत इस प्रकार है -

नाचक हमारी बड़ी भनोर भीबा  
 तांठि मां छ एक भतरोर भीबा



जत मत्तोर वत गोकुल नगरीर भीबा  
होली बाढी हमेती खुली वेगीर भीबा  
नाथकेर नाम मोटो छार भीबा  
नगरी हमारी हरीभरी वेगीर भीबा

होलिका के अवसर पर रात में होलिका को टाँडे के बाहर जलाया जाता है। इस अनुष्ठान में कुछ दूध बजाते हैं और खुशियाँ गाती हुई नाचती है। वे गीत में कहती है कि - *शेख* बीराम ने होली जलाई है, लक्ष्मण ने ठंडा सन्हाला है तथा हनुमान ने ललकारा है। गीत इस प्रकार है -

राम जन्म लीदोरा धरती पर  
राम होली रमोरा धरती पर  
राम होली बाबोरा धरती पर  
राम जन्म लीदोरा धरती पर भाइ-भाईर  
लक्ष्मण ठंडा बकडोर धरती पर  
हनुमान बुमडी मारीरा धरती पर  
राम जन्म लीदोरा धरती पर भाइ-भाईर

होलिका जलने के दूसरे दिन धू-धाम से रंग लेता जाता है। इस अवसर पर सभी लोग भाँग का दारू पीते हैं। इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं। एक गीत में खुशियाँ गाती है कि कृष्ण की पिचकारी ने राधा को नख-निख भिन्नो दिया है। राधा की चोली और लोचड़ी रंग से भोगलाई गई है। गीत इस प्रकार है -

दस वरसेरी कृष्ण मुरारीरे, बव वरसेरी राधा प्यारी रे  
मत मार कसना पिचकारी रे, मारी काँचकी भीजगी सारी रे



ठोके हातेमाँ रंगर लोटा, जमनेमा लोदो पिचकारी रे  
 मत मार कसना पिचकारी रे, मारो लोचडी भी जगी सारी रे  
 होकी रमेन राधा चाली प्यारी रे, मत्तवार कसना पिचकारी रे।  
 मतमार कसना पिचकारी रे, मारो काँचकी भीजगी सारी रे ।  
 फाग छेलते समय टाँडियालों का विश्वास रहता है कि राम,  
 कृष्ण, हनुमान, राधा, कृष्ण और बालाजी भी उनके साथ रंग गुलाल में  
 रम गये हैं । इस अवसर पर गाया गया पनग गीत इस प्रकार है -

मत मतरोर बत गोख नगरी ।  
 उसी नगरीमा बाबा राम वे राजो ।  
 दवाई पडल गोपालारी जेबोली लक्ष्मन बाबाारी ।  
 नदि लालारी रे छेरी बाडेरी रे, जेबोली लक्ष्मन बाबाारी रे ।  
 उसी नगरीमा गोषी कृष्ण वे राजो ।  
 लार-लार डोकरी तो बाँग-बाँग छोकरी ।  
 दवाई पडेरे राजा रामेरी, जेबोली लक्ष्मण बाबाारी  
 काकी दादी रीस मत करणों हम छेलावाँ होकी  
 होकी वे लारी जमार गोकी, भर बेरारी होकी ।  
 जतो मूँझ कोर ज्वाररेरे होकी छेभारे-भाई-भाई-भाई ।  
 जन्मवन्द-धन्मवन्द चालेर मरुमाइन ।  
 मम्माहतो छेबलागे पोरिबा छुवाबेरे ।  
 पोरिबा गडे पर भाबासे देख भेदाबी रे ।  
 देखबेरी छाबा, बेटी मरामा मावाँ ।  
 लेंगी कूलेद -भाइ-भाइर  
 रे लेंगी बरमाणो बाबापरिबा - लेंगी कूलेद - भाई-भाईर ।  
 पनग अपनी चरम स्थिति पर पहुँच जाने पर सभी नाच गाकर



भर जाते हैं । खुशियाँ ठफ धीरे-धीरे बजाने की प्रार्थना करती है ।  
 ठफ यदि धीरे नहीं बजाया गया और नृत्य करनेवाणियों को अधिक  
 सताया गया तो ठफ बजाने वाले पर व्यंग्य कसती है । इस अवसर पर  
 गीत इस प्रकार है -

जैसे छपे वाड़े लाम्हे-लाम्हे कलपा,  
 और कलपान देख-वलम रसियों-उष चालेद-भई-भईर ।  
 जैसे छपे वाड़े काँदि पर शाल,  
 और छ शालेन देख-वलम रसियों उष चालेदा डोलैती भई-भईरा  
 जैसे छपे वाड़े चातडी पागडी,  
 और पागडीन देख वलम रसियों उष चालेद गमते ती  
 भई-भईर ।

जैसे छपेवाड़े हातुमाई कण्डा,  
 और कण्डान देख वलम रसियों उष चालेद मतरैती भई-भईर ।

## 6.2. दीपावली :

दीपावली का त्यौहार कार्तिक अमवास्या के दिन मनाया  
 जाता है । इसे कान्की मास भी कहते हैं । दीपावली के रात को बनजारों  
 के सभी घर दीपकों से जगमगाने लगते हैं । कुंवारी कम्हावों का झुंड  
 धाली में दीपक लेकर पहले नायक के घर जाती है । वे उसे दीपावली  
 की शुभकामनाओं से शुभ कामनाएँ देकर लौटती है । उसके बाद वे सभी के  
 घर जाकर दीपावली की शुभ कामनाएँ देती हैं और उनसे आशीर्वाद लेकर  
 जाती है । इस प्रकार से घर-घर घूमने की क्रिया को "मेरा" कहते हैं ।  
 "मेरा" करते समय लड़कियाँ कई गीत गाती हैं, उनमें से एक गीत इस  
 प्रकार है -



कोटदाड़ेर दवाणी याडीर लेना असीस  
जग-मग, जग-मग दीया चक्के लेलो हमार असीस  
कानीमासेरी लक्ष्मी याडीर लेलो असीस  
मेरा कररी हम कुवारीवेरी लेलो असीस  
कोटदाड़ेर दवाणी याडीर लेना असीस

युवकों का एक झुंड तिल के छीस को एक लम्बी लकड़ी पर बांध देते हैं और उसे जलाते हैं। जलती हुई लकड़ी को हाथ में लेकर टाँडे का चक्कर लगाया जाता है। वे चक्कर लगाते समय, पशुओं को सतानेवाली मक्खी और मछरों को झड़ने के लिए कहते हैं। इनका विश्वास है कि इस प्रकार से कहने से मक्खी और मछरों का नाश होता है। इस अवसर पर बोल इस प्रकार है -

जग-झड़, जग-झड़ गंगोठ झड़  
माकी-माघर दोरों परती झड़

दीपावली के दूसरे दिन कुंवारी लड़कियाँ उपवास करती हैं। युवक गाय के सींग रंगते हैं और कन्याएँ उन्हें पूरण बोली छिनाकर पूजती हैं। इस अवसर कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

गो माता देदा हमेना असीस  
गो माता करदा हमारी नगरीन जाबाद  
गो माता जन-छने ती रकाडेस हमना  
गोमाता पदवर सेताणी सकेती रकाडेस हमना



### 5.3. दसराच [दाहरा] :

यह इस जाति का प्रमुख धार्मिक त्यौहार है। यह त्यौहार भी टांडे के नाईक के नेतृत्व में ही मनाया जाता है। इस पर्व के दिन सुबह जागिन को गोबर से सीप दिया जाता है और गो-मूत्र घर पर छिड़का जाता है। द्वार पर नीम और आम के पत्ते बांधे जाते हैं। घर के सभी लोग नये कपड़े पहन कर खूब रहते हैं। संध्या के समय घर का बड़ा आदमी नाईक द्वारा निश्चित समय पर टांडेवालों को पूजा में भाग लेने के लिये कहता है। निश्चित समय पर नाईक और टांडेवाले उसके जागिन में आकर बैठ जाते हैं। वह जागिन की पूर्व दिशा में गूण रख देता है। कुजारी लड़की तुब्जा भवानी की छत्री को जागिन में से आती है। छत्री को दूध से धोया जाता है। छत्री और कोतली को गूण पर रखकर हल्दी-कुंकुम लगाया जाता है। गूण पर कौड़ी, सुपारी, पान और चाम्दी के सिक्के भी रखे जाते हैं। इस अवसर पर नाईक की अनुमति से देवी को बकरे की कली चढ़ाते हैं। उसके बाद नाईक तुब्जा भवानी से प्रार्थना करता है कि माता टांडेवालों को सुख, संतोष से और धन-धान्य से पूर्ण रखें। प्रार्थना इस प्रकार है -

याडी साहेबणी -

हात-जोड़ू, पगना पड़े

साई तेस याडी साहेबणी

चीठा-पीठा

दब्दाबैन दूर करेस याडी साहेबणी

दसमणेन दूर, दोस्तेन कन करेस याडी साहेबणी

कवेरेनी लारेन

साबुकारेन समनक लायेस याडी साहेबणी





हमार नरारी न  
 सब शीबो ताड़ी रकाडेस याडी सादेबणी  
 वेंडे भोकेर पूजा मंजूर करला  
 वेंडे भोकेर छरेन जाबाद करदा याडी सादेबणी

भजन गाते समय तुब्जा देवी के साथ-साथ सेवाभाया के भजन भी गाये जाते हैं । उनमें से एक भजन इस प्रकार है -

गाठ बाईबाबा तारी लीला ।  
 सोबलेम जगदम्बा ज्वाला ॥ धृ ॥  
 तारी सत अदाजेरबार  
 बणानाको तू नरेरी नार  
 किदो जेरेरो अमृत गोबा ॥१॥  
 मुई मटीनकीदो जिवतो  
 मुर छडेरो रण तू जीतो  
 भमियारी सेना कीदो गोबा ॥२॥  
 पिठारारी परजेन तू रोको  
 भरी गंगान लंघन स्फो  
 धर्मी सातेन बतायो कछा ॥३॥  
 बासे आनेक पुराय तार  
 राजूदास वर्णन कर  
 तारी दया रेद छन निछा

दूसरे दिन सुबह होने पर घर के सभी लोग देवी की आरती देते हैं । आरती का गीत इस प्रकार है -

काचकेरी दीवली कपूर केरी वाडे मा ।  
 जग-मग जोत जगाई सारी रात ये ।



तोब्जा तारी बारती सदा-सदा ।  
 भवानी तारी बारती सदा-सदा ।  
 सदा सदाइये भगतुन पाइये ।  
 मोतिया चोको पुराई सारी रातये ।  
 जम्बातारी बारत सदा-सदा ।  
 भगुरी माताये, जगरी पूजारणी ।  
 डाकी-जोकी दूर-दूटै हाथ तरबुणी ।  
 दानान मार पिटाई सारी रात ये ।  
 तलजा तारी बारत सदा-सदा ।

#### 5.4. तीज :

इस त्यौहार को बँजारे "ज्वारा" कहते हैं । राखी पूर्णिमा को ताँडे की सभी कुँजारी कन्याएँ नाचक के घर जाकर तीज या ज्वार पेरने की अनुमति माँगती हैं । इस अवसर पर कन्याएँ नाचक की प्रशंसा करती हुई एक गीत गाती हैं, गीत इस प्रकार है -

हमारी नायक जायो रे बालाजी  
 कुँजारी बेटो उरो जसीस लेनदोरे बालाजी  
 हमेनी तीज पेरायो रे बालाजी  
 कुँजारी बेटोउरो जसीस ~~बालाजी~~ लेनदोरे बालाजी ।

नाचक की अनुमति मिलते ही सभी कन्याएँ गीत गाती हुई पूजा स्नान की ओर जाती हैं । इस अवसर पर सेवाभाया की स्तुति करती हुई एक गीत गाती हैं - गीत इस प्रकार है -

सँ लोदुरे भाबारी नाम  
 जेर पथ नाच्यु



मं लवरी सेवारो नाम

जेर पध नाब्धू

यह गीत तीजोत्सव का मंगला चरण है । इसके पश्चात् बादलों से सम्बन्धित गीत गाकर नृत्य करने लगती हैं । आकाश में बादल घिर जाये हैं जैसे किसी ने सुन्दर बौदनी बौद नी ही । वर्षा की छोटी-बड़ी बूंदों की बड़ी ही लगी है - गीत इस प्रकार है -

जरमरिया लागी बड़ी, नानीमोटी बूँद पड़ी

आज मारी खुसी पड़ी

रंगारारो रंगी लोखंडोर भाति पड़ी

जरमरिया लागी बड़ी, नानी मोटी बूँद पड़ी

कन्यायें गीत गाती हुई ताँडे के बाहर से वात्मीक की महीन मिट्टी लेकर नार्क के घर लौटती हैं । बस से बनी छोटी-छोटी टोकरियों में नार्कन द्वारा फुलाए गये घने या गेहूँ को बाँती हैं । तीन दिन के बाद वे अक्षुण्ण हो जाते हैं । इस अवसर पर कन्यायें श्रमोत्सव हर्षोल्लास होकर गा उठती हैं -

हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल

तू कीमेती आई तीज

हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल

तोनकूण क्लायो तीज

हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल

तौना वीरा क्लायो तीज

हरो-हरो, ज्वारो उधरो सेवालाल

तौना बापू क्लायो तीज

हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल



सावन का महिना होने के कारण हरा-भरा होकर बह रहा है । इस अवसर पर चन्दन के झूले में रेशम की डोरों बांधकर स्त्रियाँ झूल रही थी । झूलने में एक स्त्री गिर पड़ी । उसकी कमर में घोट आई है, पति ने उसे उठाकर मरहम पट्टी कर दी । दर्द कम नहीं हुआ किन्तु उसकी सहेली के जाने पर ही उसकी पीड़ा दूर हुई । इस अवसर पर का लोकगीत इस प्रकार है -

सावन-भादोरो मसत मीना आहरे तीज

हिंदोको झूरे तीज

चंदेरा सकडोरो हिंदोको

हिंदोको झूरे तीज

रेशमेर रंगीन बदनारो हिंदोको

हिन्दोको झूरे तीज

बापू मां पड़गिरे तीज

हिन्दोको झूरे तीज

छगीर पट्टीती दुखो कम वेनी रे तीज

हिन्दोको झूरे तीज

सौवत्स ती दस मरगोरे तीज

हिन्दोको झूरे तीज

नौ दिनों तक ज्वार को रखा जाता है । ज्वार के प्रति कन्याएँ सधन हो जाती हैं । नवे दिन ज्वारा का विसर्जन नदी के प्रवाह में किया जाता है । विसर्जन के पूर्व के दिन कन्याएँ ज्वारा को और कुछ दिनों के लिए रुक जाने की चिन्ती करती हैं । चिन्ती इस प्रकार है -

मारी वेला केलारी तीज छड़ीक रगली दो

मारी वेला केलारी तीज छड़ीक नाकली दो



माठी वेला केलारी तीज छड़ीक इस लीदो  
मारी वेला केलारी तीज छड़ीक बोल लीदो  
मारी वेला केलारी तीज छड़ीक पेरी मार लीदो

ज्वार का विसर्जन निश्चित तिथि पर होता है। इस दिन  
तिथि को टालने के लिए कन्याएँ ज्वारा को पूरन की रोटी छिलाने का  
प्रलोभन देती हैं। इस अवसर पर गीत इस प्रकार है -

मारी गवरीय, जाजरी बिवाड़ी रेतोईजा  
मारी गवरीय, पुरेरी पोकी छातोईजा  
मारी गवरीय, सातण मनाई जा  
मारी गवरीय, नायक मनाय रेतोई जा  
मारी गवरीय, खोरन पोकी छातोई जा

टांडे की कन्याएँ बड़े धूम-धाम से निश्चित तिथि के दिन  
नदी के प्रवाह में ज्वारा को विसर्जित करती हैं। इस समय कन्याएँ  
ज्वारा को सीस देती हैं कि तू जाड़ियों से नाता जोड़कर इनको  
माँ कह देना और पर्वतों को पिता मान लेना। वे इस अवसर पर  
एक गीत गाती हैं, गीत इस प्रकार है -

बाइय किमेती जायो बेटी जाड़िया  
बाइय मारी गवरीन से चाली  
बाइय झाडीन देखन याडी कीजी  
बाइय गटलीन देखन बापू कीजी  
बाइय जाये मारी सातण वेगेरी जाजी।

विसर्जन के अन्त में कन्याएँ ज्वारी से कहती हैं कि तू जल अगले  
वर्ष हमसे मिलने जल्दी आ लौट जाना।



## ६. कम परिवार सम्बन्धी बनजारा लोकांगीत :

बनजारा जाति में कम परिवार के गीत पुरुषों द्वारा व्यवसाय करते समय गाये जाते हैं। बनजारा लोक जीवन में पुरुषों के छेती, बायती, चराई, पिसाई ज़रूरी कुँवों से पानी भरना प्रत्येक कार्य में उत्साह और मस्ती छाया रहती है। उनकी यह मस्ती व्यवसाय करते समय गाने जानेवाले गीतों से अभिव्यक्त होती है। बनजारा लोक जीवन में हर क्षेत्र में कम करनेवाला व्यक्ति गाता हुआ मिलेगा। कठिन से कठिन काम करते हुए मनुष्य को गीत के धुन में कम का बोझ अनुभव नहीं होता और गीतों से कम का बोझ हलका हो जाता है। "स्टेण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ़ परेक्लोर" ने कम परिवार के गीतों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि मनोविज्ञान के विद्वानों तथा कार्य-दक्षता के विशेषज्ञों ने भी स्वीकार किया है कि गीतों से कार्य की उत्पादन शक्ति बढ़ती है।"

बनजारा कम परिवार सम्बन्धी गीतों के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :-

॥१॥ कृषि के गीत ॥२॥ पशु चराने के गीत ॥३॥ नदियों के गीत ॥४॥ पानी भरते समय के गीत ॥५॥ चक्को के गीत ।

2 बनजारे व्यापार के लिये - जाति सामग्री को कैल के पीठ पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान को जाया करते थे ।



### ४.१. पशु चराने के गीत :

बनजारा जाति में पशु चराने के गीत अधिस्तरीय वर्ग से सम्बन्धित होते हैं। भैंस-बकरी और गाय, चरानेवालों के निर्द्वन्द्व जीवन की इनकी उनके गीतों में मिलती है। चरवाहों के कई गीत हैं, उनमें से एक इस प्रकार है -

तीकी-तीकी गऊो रे ठेठ,  
हरी-भरी-जंगले रे माई छेटी मारो भाया  
भाया न भजूं, भाया न पूजूं  
भाया को दरसन करूं, चादकेरो दरसन करूं  
सूयारे तड़केती, सारी जम्मी विचकारी  
भाया रे गरजादा चादकेन  
भाया रे चक्कादा चिजकीन  
खीदा छुड़ियाती सारी दानिया मां  
वसोदा छुड़ियाती तीकी-तीकी गऊो पर

### ४.२. कृषि गीत :

छेती करता हुआ बनजारा छेती को देवी स्वयं मानकर उसकी उपासना करता है। देवी की स्तुति से आरम्भ गीतों में सभी विषय सम्मिलित हो जाते हैं। गीत इस प्रकार है -

जम्मी याडी उमा भवानी तारे द्वारे  
गद्द पर नौकत बाजे  
अधान बाकी दोनी  
सदर जम्मी याडी तारे द्वारे  
गद्द पर नौकत बाजे  
वाकिया उमा भवानी तारे द्वारे



गरीबेना हरीब कर दीनी  
सदर जम्मी याड़ी तारे द्वारे  
गद्द पर नोबत बाजे  
हमार छेत्तमाँ बर्कत कर दा  
सदर जम्मी याड़ी तारेद्व द्वारे  
गद्द पर नोबत बाजे

### 6.3. चक्की गीत :

बनजारा स्त्रियाँ प्रातः चार बजे से उठकर आटा पीसती हैं । चक्की चलते समय जानन्द मग्न हुई कई गीत गाती हैं, उनमें से एक इस प्रकार है -

राजपूता राजा, अमरसिंग राजा  
छोटे छोटे पर सवार राजा, दसमणा देकन छुगो राजा  
छोटैर खोरती गद्द हालागो, गद्द हालागो तार फनेज हालागी  
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा  
चक-चक तारी तलवार चक्काच;  
तलवार चक्काच, दक-दक तार दालच बोलच  
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा  
भू-भू सँड बजायो, दक-दक ठँका बजायो,  
ठँका बजायो, तुरी बोलायो  
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा  
राजपूते वासु, वेर छेवो राजा  
अमरसिंग राजा, अमर वेगो राजा  
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा





#### 6.4. पणिदारी गीत :

बनजारा लोक जीवन में प्रातःकाल स्त्रियाँ रंग-बिरंगी केसरिया, कसुक्ल बौदने जोड़ सिर पर ईछी और ईछी पर पानी के लिए टोकर रखे हुए तालाब या नदी पर जाती हुई स्त्रियों का दृश्य बड़ा मनमोहक होता है। वे स्त्रियाँ तालाब या नदी के किनारे पर इकट्ठी होकर बठकेनियाँ करती और गाती हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

गटलीर पेरेतो दाड़ो निक्कीच  
दाड़ो निक्कीच, याठी निक्कीच  
टोक्कोर वेडो लेन मार याठी निक्कीच  
गटलीर पेरेतो दाड़ो निक्कीच  
टोक्कोर वेडो लेन मार बाई निक्कीच  
गटलीर पेरेतो दाड़ो निक्कीच  
दाड़ो निक्कीच, सोक्का निक्कीच  
टोक्कोर वेडोलेन मार सोक्का निक्कीच  
गटलीर पेरेतो दाड़ो निक्कीच  
बाई दाड़ो निक्कीच

#### 7. व्यापार के गीत :

बनजारा शब्द के साथ ही व्यापार का अर्थ सम्बन्ध है। "कणज" या कनज का तात्पर्य वाणिज्य ही है। एक भोजपुरी लोकगीत में "बनिजारिया" शब्द तो वाणिज्य के अर्थ में ही प्रयुक्त होता आया है। बनजारिन का पति उत्तर देश को वाणिज्य कर्म अधि व्यापार करने जा रहा है, तब वह कहती है कि मेरे उजड़े हुए बगले की कौन



मरम्मत करेगा? \* गीत इस प्रकार है :-

पियवा जे चलेला उतर  
बनजारिया कि केई रे छवई ना ।  
मोरा उजड़ल बंगलवा  
कि केई रे छवई ना ।

बनजारा भारतवर्ष की एक ऐसी घुमन्तु जाति है जिसका सम्बन्ध मध्यकालीन इतिहास के सुत्रों से बंधा है । अपनी अनोखी केशभूषा और रंग-रूप के कारण आज भी बनजारे अपने अस्तित्व को अनेक जातियों से पृथक् छोटित करते हैं । भारतीय लोकगीत और लोक कथाओं में बनजारा अपने कैलोक पर दूर-दूर तक सामान लादकर ले जानेवाला पात्र एवं चतुर व्यक्तित्व धारण किये हुए हैं । बुन्देलखण्ड की एक लोक कहानी में बुन्देला ठाकुर को दो हुई भेंट एक बनजारा सिंघल के राजा और काकुल के बादशाह तक ले जाता है ।<sup>2</sup>

बनजारिन का पति व्यापार करने उत्तर देश को गया है । होली के अवसर पति के न लौटने पर दुःखी हो जाती है । इस वर्षोन्लास के अवसर पर काम जानेवाला रूप फूट हुआ है । व्यापार से लौटने पर नया रूप बनाने की बात पति ने कही थी । अब रूप कौन बनायेगा ? इस प्रकार से वह रौंती हुई गा उठती है -

पिया परदेसी, परगणारी मै ना कब लसी  
रूप मँछल मदल संग जाई होली, रूप मँछलर

\* भोजपुरी ग्राम गीत : पृ. 166-279 ।

2 शिवसहाय चतुर्वेदी लिखित "गोने की पिदा" संग्रह की "बुन्देला ठाकुर" शीर्षक कहानी ।



काहे को लकड़ा? काहे को चमड़ा  
 चमड़ा को लकड़ा मैदी को चमड़ा - रूप मँडार

चिरविष्णी पत्र द्वारा पति का कुल समाचार जानना चाहती है। उसका पति जिस देश में कहाँ पर होनी का त्योहार मनाया जाता है या नहीं? कहाँ पर फसग लेनी जाती है या नहीं? इस समाचार को ले जाने के लिए वह एक तोते से कहती है। गीत इस प्रकार है -

सुवा ले जोर, ले परवाना  
 ले परवाना, वत नायकेन दीजारे  
 वत लेगी बोलोरे? पूछी जा जोरे  
 वत होकी कूँ रे? पूछी जाजोरे  
 ले परवाना, वत कारभारिन दी जाजोरे  
 सुवा ले जोरे  
 ले परवाना, सुवा ले जोरे

इस गीत में बनजारे के साथ किसी विद्योगिनी का पति बारह वर्ष के पश्चात् लौटा है और वह उसी के एक वट वृक्ष के नीचे आकर ठहरा है।

बारह बरोसवा पर लखटल बनोजारिबा  
 राम की बारावा तरावा ना

मालवी गीतों में बनजारा अपनी "मोर" के लिए प्रसिद्ध है। मोर बड़े प्रमाण में लाए हुए मांस को कहते हैं। "हल्दी" के नाम से विख्यात एक गीत की प्रथम पंक्ति है -

जाई बनजारा हो मोर उतरी अठ तले  
 मोलावे लाडला लाडा रा काकाजी

अर्थ : बनजारे की मोर आकर घटवृक्ष के नीचे उतरी है। लाडले दुल्हे के काका उन्से मोल भाव कर रहे हैं।

चठम अध्याय :      ..    ..      ..      ..      ..      ..      ..      ..

बनबारा लोक गाथा  
\*\*\*\*\*



बनजारा : लोक गाथा :      ....      .....      ....

बनजारा जाति में लोकगीतों के तत्काल लोकगाथाएँ प्रचलित हैं। लोकगाथा कुछ लोगों तक ही सीमित रहती है। लोकगाथाओं में धार्मिक भाव, वीर भाव, प्रेम भाव, रोमांचक भाव संवार करते हैं। लोकगाथा में कथा का तारतम्य आदि से अंत तक क्रमानुसार चलता है। बनजारा जाति में दहाडी बनजारे लोकगाथा गाकर सुनाते हैं। पर्वोत्सव के अवसर पर अन्य गायक भी लोकगाथा गाकर सुनाते हैं।

#### 1. लोकगाथा की परिभाषा :

भारतीय साहित्य में "गाथा" शब्द गेय कथा से व्युत्पन्न है। गीत के अर्थ में यह संस्कृत "गे" धातु से



निष्पन्न हुआ है।<sup>1</sup> वाचस्पत्यम्,<sup>2</sup> ऋग्वेद,<sup>3</sup> एतरेय ब्राह्मण<sup>4</sup> तथा महाभारत<sup>5</sup> में "गाथा" का अर्थ गाने योग्य स्तोत्र किया गया है। पश्चिम में "लोकगाथा" के लिए "बेलेड" शब्द का प्रयोग किया गया है।

## 2. लोकगाथा की विशेषताएँ :

लोकगाथा की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

1. अज्ञात रचयिता 2. ग्रामाणिक मूल पाठ का अभाव
3. संगीतात्मकता 4. स्थानीय रंग 5. मौखिक परम्परा
6. उपदेशात्मक का अभाव 7. अलंकृत शैली का अभाव 8. रचयिता के व्यक्तित्व का अभाव 9. सुदीर्घ कथानक 10. टेक पदों की पुनरावृत्ति
11. जन भाषा का प्रयोग 12. सामुहिक भावभूमि 13. अनेक स्थात्मकता
14. सीदग्ध छेड़-ऐतिहासिकता 15. धर्म निरपेक्षता आदि।

## 3. लोकगाथा साहित्य का वर्गीकरण :

किट्ज ने लोकगाथाओं को दो भागों में विभाजित किया है :-

1. चारण गाथाएँ 2. परंपरागत गाथाएँ 3. इसी प्रकार से गमूर<sup>6</sup> ने लोकगाथाओं को 6 भागों में विभक्त किया है - 1. प्राचीनतम गाथाएँ
2. कृषिक गाथाएँ 3. अलौकिक गाथाएँ 4. पौराणिक गाथाएँ

\* शास्त्रिकल संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, पृ. 466

2 गार्थ - गार्थ स्तोत्र - भट्टाचार्य तारानाथ, वाचस्पत्यम्, चतुर्थ भाग,

3 अकः । यत् । दः । मस्तः । हविष्यमान् । गायत् । गाथ । पृ. 2570

सुत सौमः दुषस्थम् । -- मेक्समूलर [एडि] कथा. । पेज 732, ऋग्वेद, 1-13-

4 "तदेवा अमि यगाथा गीयते" डा. द्विवेदी [एडि] सेल्फन पदम 167

ब्राह्मणी 4 उपनिषद् - एतरेय ब्राह्मण ।

5 "गाथा च गीतिका चापि तस्य सवेष्टे नृपः ।

6 गमूर, एफ. बी. द पावुलर केलुस, पृ. 135



#### 5. सीमान्त गाथाएँ 6. वारण्यक गाथाएँ ।

डा. कृष्णदेव उपाध्याय<sup>2</sup> ने लोकगाथाओं के तीन वर्ग माने हैं ।

1. प्रेमकथात्मक गाथाएँ 2. वीरकथात्मक गाथाएँ 3. रोमांच कथात्मक गाथाएँ ।

इस दृष्टि से पारंपारिक विद्वानों में किट्टर चाइल्ड, गुप्तर, होगर्ट, सिजिविक तथा भारतीय विद्वानों में डा. तत्येन्दु; डा. कृष्णदेव उपाध्याय आदि मुख्य हैं ।

#### 4. बनजारा लोकगाथा का वर्गीकरण :

बनजारा लोकगाथाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - 1. धार्मिक गाथाएँ 2. वीरगाथाएँ 3. पुण्य गाथाएँ 4. और रोमांच गाथाएँ ।

##### 4.1. धार्मिक गाथाएँ :

धार्मिक लोकगाथाओं का मुख्य केन्द्र धर्म है । लोकगाथाओं के गाथक प्रायः दल, धाली, दफ आदि घाटों के साथ गाथा प्रस्तुत करते हैं । इन गाथाओं में पौराणिक देवी देवता, लोकदेवता, सन्त और महापुरुष, सती आदि धार्मिक गाथाएँ सम्मिलित हैं । इन लोकगाथाओं के प्रारंभ में देवी देवताओं का स्मरण मंगलाचरण के रूप में किया गया है । एक हीली गाथा में महादेव, राम, लक्ष्मण, हनुमान और हनुमान जी बनजारों के साथ पान खेले का वर्णन है । गाथा इस प्रकार है -

\* डा. उपाध्याय कृष्णदेव : लोक साहित्य की भूमिका : पृ. 149



फगुन मयना, मसाह मयना घर-घर बाजे-बाजे जानंदा  
 घाल सख्यों, जापण फगुन रम्मा, जापण जापणे दल-कनला परवत  
 सोमायोरे, महादेव जावाज बुद्धीरे कानों में । के महादेव, सोनो पारसती,  
 फगुन खेने कू । कुना देसान जाया पतिया, अधमलिया, लोठगी ।  
 मार सेकलक, बिगाकी बालू, रातू, घुमधू लठे । राम, लक्ष्मण, भरत,  
 शत्रुघ्न से पाया गहोन । कये महादेव सोनो रामजू, डोली खेने ककू ।  
 छाठी छाठीघुन, जाताकरी जाने में क्या मेरे सुजन । छट-पट  
 जामो केगे खे छाई, भगर बजाता ।

#### 4.1.1. राम, लक्ष्मण और सीता की लोकगाथा :

शिवरात्रि पर्व के अवसर पर राम, लक्ष्मण और सीता के प्रति एक लोकगाथा गाई जाती है । इस गाथा में बनजारे राम, लक्ष्मण और सीता के प्रति प्रार्थना करते हैं । गाथा इस प्रकार है -

रामा तारो गुडी अधिरा नदि पेर ।  
 रामा डाब भजन सीता भयवे ।  
 रामा जगै भवने लक्ष्मण भयवे ।  
 रामा सीताबाई धुने नूतरे छे ।  
 रामा लछमन भाई धुने भौले रो छे ।  
 रामा नूतरे मूरा भेटेलो छे ।  
 रामा चारे चणीया धोने धारे छे ।  
 रामा भाग बंदारो वरो छे ।  
 रामा तिनक कसत दरी देयडेमा ।  
 रामा भुवायमेमा, मा बेटा छे ।  
 रामा समसीर ऋते से वंकी बालो छे ।





4.1.2. मरामा बाड़ी [माता] की लोक गाथा :

मरामा बनजारों की लोक देवता है। मरामा गाथाओं में देवासुर संग्राम का वर्णन है। इन गाथाओं में देवी को भक्तानी, चामुण्डी, तब्ज्जा आदि कहा गया है। लोक गाथा इस प्रकार है -

रामेर धीती तारो पवाडा जायो, पवाडा जायोरे

रामेडा गोसारडा।

छिराजी केला भाखान जन्म दीनों, जन्म दीनोर रामेडा गोसाईं डा।

भर मिनारी तीन छबरड़ कीदी, तीन छबर कीदीरे रामेडा गोसाईं डा।

तीन रे दाड़ेरो बाडी वायदोरे मागी, वायदो मागी रे रामेडा गोसाईं डा।

बाधि ककरा दुई, सवायण गई दुई, मार जनता हाल बंध।

बाडी मत अतरा रोलन, मार जनतान छोट देणो।

अत्रि करन की सादु तार गुल्ल छोट दीनी, कोर को छर भाई।

दाब्बू मन तीन दाड़ेरो वायदो देणो, तो बाडी मानी।

कौती सायुवन अपनी देनो कोणी अपनी देदीने।

हाते पर हात भरलेनो, तीन दाड़ेर भाई, मार जाइतुन जाणो।

हाते पर हात मार लेन बाड़ी, झगर गो एके दाड़े मा।

सुल आदमीन छागी, तीसरे दाड़ेरा जावीस।

गौमाता न छागी, दी दाड़ेरा छागी रामेडा।

दि दाड़ेर भाई गमेर पचाती गौमातेन हाथे कत सादु।

कन पर माती, तो सादु-अवडा इभनुद बड़ो पड़रो किड।

हमनोन कोई ऊकको बचन कर, तमारे सरोवो मनक्या हूं



जेरे पंच गोमेरे पंचाती काक-हात जोडे, करनी  
 येन बैल करनी, तो कोई मागिची, फलोदेन तयार ।  
 तो उट पठो सादु देवरे पूजा कर लीदो भंडारेर कोतवी  
 वाते भाई परसाद, तो जाई सादु क्का लो दो वाट ।  
 तु जागतेन माणसेरो ललङ्गो पकड़ छो दोकरो ।  
 पनो सुजाड़ भेनी, बार मिडी बुडिरे भाई मारन बेक ।  
 मैलो खवड़ा क्क जान सादु, धंडारो, फेक दीनो ।  
 बाड़ी छोड़ दीनीरे सामेड़ा, गोसाइड़ा ।  
 लंग तगेर भङ्गी मारो, सादु छणो खरो सापड़ा ।  
 भंडारो फेके छम्मत, पड़े-झड़े उट वाट क्क लीरे सामेडा ।  
 बाठी ओ गामे माइती कार निक्कन सादुर वाट ।  
 देखती केसगी सामेडा गोसाइड़ा ।  
 ओर माइती नगर केसन सादुन एक लो रचया ।  
 जाबोर भीदे, वाट लगाड़ दिने, सामेड़ा गोसाइडा ।  
 जांग जायो सादु बाठी ओर सोबत वेगीरे सामेडा ।  
 कोई भउन घरेमा जावे, घरेर भाई जान बाठी दरसन ।  
 दीरी तो जम्माना घरेमा छेनी सामेड़ा ।  
 एवारेर केरुड-केरुडा किस वजार देन, सामे नातो वेपारे  
 तो भाडी, होइन जान पकड़ लीदोरे सामेडा ।  
 सादु न ल्पणों जावोरे, तीन दाड़ेरा तारो हक्क दङ्गो,  
 तीन दाड़ेमा काई, जाखी करला सामेड़ा ।  
 एक दाङ्गो वेगो - दो दाड, वेगो, तीन दाड़े भाई बाठी ।  
 मार्गत्वा सादु रो भञ्जो तोड़ जा लीरे सामेड़ा गोसाइड़ा ।



#### 4.1.3. सेवा भाषा की लोकगाथा :

सेवा भाषा बनजारों का दृष्ट गुरू है। सेवाभाषा के लौकिक और अलौकिक कार्यों का वर्णन गाथाओं में मिलता है। प्रस्तुत लोकगाथा में सेवा भाषा के अलौकिक कार्यों का वर्णन है। गाथा इस प्रकार है :-

गण गवूरे सेवालालेरो । सुकर जेता जंग देबारोर ।

मुरु घर राम जी नायकेरो । गुती बनरी मुकाम खेरो ।

गुती बनजारी रामजी रेन । तिम पुरु खेलेरे जौन ।

हल्ह, खेसा, भीमा, तिसरो । गुती बनरी----- ॥

चिन्ता पड़ी राम जी नायकेन । मोरो भीमा जायोरे भायान ।

बामनेन घर बनारी । राम जी केो देख बामनेन

जाणा लागे चित्तोड़ गड़ेन । भीमारी सगाई करेरो । गुती ॥

बामन जातो चित्तोड़ गड़ेन । जेराम जाखेर छेन ।

उसेरो छोरो भीमा सारु मागारे । जेराम केरो बामनेन ।

वासी भविष्य देख दोहर । कन्यादान छोरी जौन देस । गुती ॥

#### 4.2. वीर गाथाएँ :

बनजारे वीर गाथा को "पवाडेर" साखी कहते हैं। पवाडे का अर्थ है, किसी वीर का प्रशस्ति काव्य। वीर के पराक्रम, विद्वानों की बुद्धिमत्ता तथा किसी व्यक्ति विशेष के सामर्थ्य, गुण कौशल आदि का काव्यात्मक गेय वर्णन "पवाडा" कहा जाता है। ईसा की तेरहवीं शताब्दी

- 
- \* डा. इना गोवर्दन : प्राकृत और अपभ्रंश का हिंदी साहित्य पर प्रभाव, अनुसंधान प्रकाशन कानपुर, 1965 ईस्वी, पृ. 217 ।



में <sup>२</sup> प्रवाडों का प्रचार महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब और  
 कुछ प्रदेश में होने के लिये उपलब्ध है । <sup>३</sup> "विन्दी शब्द सागर" कार ने  
 प्रवाडे शब्द को संस्कृत प्रवाद <sup>४</sup> {प्रवाद} से ही उत्पन्न माना है ।<sup>३</sup>  
 राजस्थानी में "पाबूजी जादि के प्रवाडे, प्रसिद्ध है जिनका रचना काल  
 १७ वीं शताब्दी माना गया है । <sup>५</sup> ३

शिवाजी के पुत्र संभाजी की मृत्यु के पश्चात् <sup>६</sup> सन् १६८९ ईस्वी {  
 उन्मत्त राजाराम {१६७०-१७००} के काल में औरंगजेब मराठों पर आक्रमण  
 कर दिया था । इस काल में संभाजी छोरपड़े और छत्राजी जाधव सेना में  
 अग्रसर सरदार थे । ये दोनों सरदार सतारा जिले के कोरेगाव में औरंगजेब  
 की छावनी पर हमला कर उन्हें परास्त कर दिया । इस छटना से वनजारे  
 प्रभावित हुए । इस छटना का वर्णन सेवा भाषा लोकगाथा में किया गया  
 है । इस गाथा में शिवाजी और उनके दरबारी कवि भूषण का वर्णन भी  
 मिलता है । गाथा इस प्रकार है -

झुली शेरूबा, चौधासी कोटेरो सेवा राजीबा ।  
 अत मंडेव डेरा, अनपेक्ष कोट ।  
 वत्स्याजीरे मेलमाई, सेवा करगो चौर ।  
 कार्क लूटे ज्वार, बाजरी, कार्क लूटे रागी ।  
 बास्याजीरे मेल भाई, सेवा लूटे बानी,  
 झुली रोट - या चौरासी कोट सेवार,  
 बरबन होती, जरबन होती ।  
 एक सेवान होती, ती सबकी सुन्नत होती ।  
 झुली रौरवा, चौधासी कोटेरो, सेवाराजी धोर ।

\* डा. माधवे प्रभाकर : मराठी और उसका साहित्य, पृ. २६

२ डा. शर्मा गोवर्धन : प्राकृत और अपभ्रंश का डिग्न साहित्य पर प्रभाव

३ नाहटा अमरचन्द : प्राचीन काव्यों की रूप परंपरा, पृ. ९६



## 2.1 जयमल-पत्ता की वीर गाथा :

जयमल पता की गाथा में शौर्य, कायरता, देशप्रेम, देशद्रोह, कुल गौरव, कुल कर्क और वीरता का वर्णन है। जयमल बिजनौर का राजा था। उसका जन्म राठौर वंश की मेरठिया शाखा में हुआ था। पता केलवाडे का राजा था। वह चम्दावत शाखा के गणवत गोत्र में जन्म लिया था। जयमल और पता वीर राजा थे, वे लड़ाई के मैदान में घुसकर शत्रुओं का सामना किये थे। इनकी प्रशंसा स्वयं अकबर बादशाह ने किया था।

चित्तौड़ के संग्राम में शालुंडा का राजा चम्दावत रहीदास मारा गया। उसके पश्चात् पत्ता ने मुगलों से भिड़ गया। उस समय उसकी आयु 16 वर्ष की थी। वीर बालक मुगलों की गोली से मारा गया। इसी प्रकार से जयमल भी अकबर की बंदूक की गोली से धरती पर गिर पड़ा। अकबर उस बंदूक का नाम "संग्राम" रखा। इसका वर्णन लंकुल फजल ने अपनी "जहांगीर नामा" नामक पुस्तक में किया है। इस लड़ाई में जयमल और पत्ता की बहादुरी देखकर अकबर बहुत प्रसन्न हुआ था। उसने दिल्ली में किले के सिंह द्वार उधे चकूतरे पर दोनों की प्रस्तर स्मृति स्थापित करवाई।\* सन् 1963 ईसवी में भारत भ्रमण हेतु आए प्रेस यात्री बर्नियर ने इन वीरों के स्मारक को देखकर एक पत्र लिखा।<sup>2</sup> जयमल और पत्ता की लोकगाथा इस प्रकार है -

भुक्किया तू ज्यो माँ हूँ कैसी मोटी ।

चित्तौड़ गढ़ पर बरसत आयो जनाकत क गोती ।

जंगल पत्ता हेगे सत्ता किले सात ।

उत्तराक भुक्किया रंगियो करेन धमनी बात ।

कवच न भाँदयो सुन्दरी भोज घुघरोत ।

भुक्किया जातेती बे वदेनी नाक ।



सामगरे बाखल्का तू सामक भारी वात ॥  
 जिबवेते जेमल फल्ता देगे साथ ।  
 तार सरीक कायर रेगे करेन ज्सी बात  
 रेते ते वादेन तौ दक्क देते हात ।  
 क्वत बाधो क्वतीरो कस्तन्वा भूकिया  
 रकाळो राणा से जातूरी लाज ।  
 होती होती जगकरन होती किंदो राखमल ।  
 राठिया गोवरिन षडा लायो भूकिया ।  
 क्सा तारो दादा गवार ।  
 वावो हात बतायो भूकिया राठोड़ राज  
 जलमेर छोड़ भेग्री ।  
 उक्के छ. मूँछर करन करेची वात ।  
 क्वत बाधो सुंदर रौ भोजा ।  
 सत्ता वीसेन ठेनी लाज ।

.....

होती होती राखमन्न कियो ।  
 अन होती को जी कि नोरे बावना ।  
 राखमलोत राखवा गोरिन न पण ।  
 गोसेन कर रिनो वात ।  
 क्वत बाँधयो क्वतीरो कसन भूकिया ।  
 रकाड गो राणा से जातुरी नाज ।

### \* 2.2 सेवाभाया की वीर गाथा :

लावणिया गोखाला सेवाभाया अपना टांठा लादकर चल रहा था। मार्ग में देवगर के राजा ने उसे दरबार में आमंत्रित किया। उस दरबार में नरसी पैठ के एक गवारी ने स्वयं को अपराज्य घोषित किये जाने की



सांग की । इस विषय पर सेवाभाया क ने स्वयं को रघुंशी बताकर उसे ललकारा । दोनों वीर भिड़ गये और सेवाभाया का स्वर्गवास हुआ । इस समाचार को पाकर सेवाभाया का भाई नरसीपेठ पर आक्रमण कर दिया । इस लड़ाई में नरसीपेठ मर गया । सेवाभाया का भाई विजयी होकर नोट पड़ा । लौटते समय गंगा में बाढ़ थी किन्तु उसकी चिन्ता सुनकर गंगा शान्त हो गई । गाथा इस प्रकार है -

सतगुरु समस शारदा, सरस्वतीन धाई ।  
देवी शारदान धाईर, धाऊँ माँ कंठेमाँ सरस्वती बोल ।  
हरदो छोलन गाऊँ, लावळिया सेवा  
मजल हर मजला ढोठ ताडो लादलेर ।  
चाला लावळिया मजला-मजला लादिया ।  
सिरपेन जायो, पारवतीन जायो, देवडेन जायोरे ।

- - - - -  
देवगड से राजा, राजन क्लायो -  
लावळीया सेवा, राजा बत्तायो दरबार रे  
नरसीपेठेरो गवरी कोटी बोलियो --  
समक सेवा बात, ब रा जोतती छ टाकोर वाजो - चकहाण गेरी  
जातरी ।  
लावळिया सेवा, राको छाजो बावन कब्तीरे ।  
सेवा नाइक बोलियो -- सामक मारी बात  
गामेरो बेत्ता बातरे बात ।  
रघुपुतेरे छरेमाँ जलम लीरो ।  
वीरेरो छ क छमान, सुरेरो छ अपमान ।  
रघु कर जनम लीदो ।  
कोनी मानू बात, गाभिरा वाणी,  
छम मचायु बावन क्हापीरो ।



बदा बन्दा बड़ितिया, दालूर कोट बतायो ।  
 वर छाट मेघवर छायो, गोनीरो मार लगायो ।  
 जट जेर छाडी समत पुरिया,  
 कौसु मड़कायोर छाडी सेबेटा ।  
 सिर पड़ा हरिया बाढो मारे ।

... ..

सेवा नायक सामन क्ला, दनिया कव आयो ।  
 ससोर कव आयो, रघुर न जलम लीदो  
 पग न दियो पाछ लावडिया ।  
 सेवा छूम मचायो बावन कब्तीरे ।

... ..

सेवान छबर लागी, वाघान पड़गो कोर ।  
 चढ़ी बाघला जोरेती । पड़ी नंगारा दोळ ।  
 रघु रो वाघा, बस छड़व रणजित शोरे ।  
 चढ़ो वाघा जोरेती, छोड़ी परती घाव ।  
 सिंदुड़ा छड़तो आव, तुकारी पड़ती आवरे - आवङ ।  
 लार समत हलके आवरे ।

... ..

एकदाहु एक राते माँ परभाती ।  
 जात मलायो रघुरे वाघा ।  
 जान मलायो नरसी पेठे मारे ।  
 परभातीरो किलो फोडो, मानो तेड़ो ।  
 घालो लावडिया घेरो, एक दिन एक रात माँ ।  
 सेवारोवेर पेरो, रघुरो बाधा ।  
 वेर लियायो, सेवा नायकारो ।





#### 4.3 पुण्य गाथाएँ :

भारत में प्रेमालयान की जो मध्यकालीन परम्परा है, उसका आधार लोकगाथाएँ ही हैं। इससे सुपरी आख्यान भी बच नहीं सके। **सबसे** स्वयं सूफियों के प्रेमालयान काव्य का आधार लोकगाथाएँ ही हैं।\* बनजारा पुण्य गाथाएँ भी इसी मध्यकालीन परम्परा के साथ हैं। बनजारों का निवास राजस्थान होने के कारण इनकी प्रेमगाथाएँ अन्य जनपदों की प्रेमगाथाओं के समान हैं। सभी प्रेमगाथाओं में युद्धों का वर्णन, सुन्दरियों को प्राप्त करने का वर्णन, संयोग और वियोग वर्णन प्रस्फुटित होता है।

##### 4.3.1. दोला मारवाणीर साखी ‡ दोला-मारवाणी की गाथा ‡ :

राजस्थान, उत्तरीसमूह, और कुछ प्रान्त में दोला मारवाणी की गाथा प्रसिद्ध है। बनजारा समाज में भी यह गाथा प्रचलित है। गाथा इस प्रकार है -

दोना नरवर देश के राजा का पुत्र था और मारवाणी पगल के राजा पिंगल की पुत्री थी। इनका विवाह बचपन में हो जाता है। दोला बड़ा होकर मालवा लड़े के राजा की कन्या रेवती से विवाह कर लेता है। मारवाणी पितृगृह में रहकर व्याकुल हो जाती है। वह एक दिन स्वप्न में अपने प्रियतम को प्यार का सन्देश भेजती है। किन्तु रेवती और उसके मंत्री भीखसिंग लक्ष्मी वाहक को मरवा देते हैं। मारवाणी के प्रेम संदेश को सुनकर दोला लक्ष्मी रेवती का सिर मुँखा देता है और उसे गले पर बिठाकर नगरी के बाहर निकाल देता है। उसके पश्चात् दोला मारवाणी के साथ रहता है। गाथा इस प्रकार है -

तिजे तैवारे रो दने आयो, रे बाबू मां मारोणी रो  
सठो सग गौर रे गणवती ।



मारे पिताबेरेरी एकोदुडी भरीयमों मारोणी बाई ।  
 काड़ काड़ पेर लये साल सरोपा और गणवती ।  
 तिये तेवारे रोदने जाये दने कगोच ने याडी मां ।  
 भारोपीरो, रुडो सणस गोर रे गणवती ।  
 पाटे पिताबेरेरी ये काटडी भरीयमो ब मारोणी बाई ।  
 काडे काड पेर लाये लालसरो पाजो ए गणवती  
 कीड़ी मूंगीरो जोड़ी लक्योरे भगवानमां, मारोणी  
 रोकुडे सन मोर रे गणवती ।  
 तूं का दूर मररीये मारोणीबाई कलो प्यारी  
 सगाई उ ये दोलारी देसरे गणवती ।  
 कृण दे सेती जाइये, कर् जण बाई तमतो,  
 जावोये कृण देसरा गणवती ।  
 ठाम्ण देसेती जाइ ये मारोणी बाई  
 हमतो जमाय दोलारी देसेरी गणवती  
 लख-लख परवान गान दूधिये कर् जणबाई ।  
 तमको दिवोये दोलारी गदरे गणवती ।  
 सोने सरोकी रुप रे दोला भाया,  
 कवतेरी जातेरी गणवती,  
 कृण देसेती जाइये कर् जण बाई  
 तम तो ब जावोये कृण देसरे गणवती ।  
 सण-सण रे गोर माटी भीया,  
 तम तो जावोरे ब कृण देस रे गणवती  
 सण सणसे मां मारणीबाई  
 हमतो जमाय दोलारी देसरे गणवती  
 काया कवतेरी जोतरे टोलाई चिट्टा दिजगो  
 तम दो दोलारी गदरे गणवती ।



सण-सण रे दाडी हो बाबा,  
 तमतो बायोरे कृष्ण देखरे गणवती ।  
 लख-लख परवान गान दूधरे दाडी बाबा,  
 तम दिनयो रे दोला रो गढ़े रो गणवती ।  
 सोच सोच देखेरे दोला भरोसा,  
 वेतो तारो देखेरे ।  
 से कोई सोचों ये मारवणी  
 कवनेरो काया छ तारी रे गणवती ।  
 मारोणी बाई दोला लेन राजा,  
 दोह सुझीती जिंदगी गैजारे ।

#### 2.4. रोमांचक गाथाएँ :

इस वर्ग की गाथाओं में जादू-टोना, जाकारश्मन, रूप परिवर्तन, परिचयों की गाथाएँ मुख्य हैं ।

#### सातपरीर साखी {सात परिचयों की गाथा} :

उछिरे देखेमां भोज राजा वेतोतो झीमरा ।  
 जोर सात बेटा रे झीमरा  
 जोर बागेमां दाढ़ी सात परी झीमरा ।  
 हंगोकी करन चली जातीती झीमरा ।  
 बागेर पन्न-पूल तोड़लेन जातीत झीमरा ।  
 राजार बेटा परीभून पकड़ेन झीमरा ।  
 बागेमां जपगे झीमरा ।  
 सेन नींद जावगो झीमरा ।  
 सेन नींद जावगो झीमरा ।

नवम् अध्यायः :

**बनजारा लोक कथा**  
\*\*\*\*\*



०. प्रस्तावना।

लोकसाहित्य के रससिक्त गीत जहाँ हृदय को आप्लावित करते हैं, वहाँ हृदय को आप्लावित करते हैं, वहाँ कथाएँ मनोरंजन के साथ ही मानसिक रस तृप्ति प्रदान करती हैं। मानव स्वभाव से ही कथाप्रीय है। कथा में मन को मोहित करने की अद्भुत शक्ति होती है। "लोकमानस ज्ञान को कहानी के रूप में ही स्वीकार करता है। जो ज्ञान कहानी के रूप में सरल नहीं वह लोकमानस में नहीं पकता। मानव जाति बुद्धि का कितावा ही विकास कर ले, वह प्रत्येक नई पीढ़ी में बाल-भाव से ही जीवन-कुरु का आरंभ करते हैं। बाल-भाव की शिक्षा-दीक्षा, रुचि और विचार का एकमात्र आश्रय कहानी है।"¹ मानव मन की सहज कल्पना एवं कौतुहल कथा के प्राण हैं। "कथा मानव जीवन का उत्स है और कौतुहल भी। जीवन स्वयं सत्य है और कथा उसका प्रतिबिम्ब।"²

लोककथाओं का मूलाधार लोक-मानस होने के कारण इनमें हमारी आदिम मनोवृत्तियाँ, पारंपरिक आस्था और विश्वास संघरित होते रहते हैं। ये हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आदिम मानव मनोवृत्तियाँ, आस्थाओं और विश्वासों, रीतिरिवाजों एवं संस्थाओं के अध्ययन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती है। द्रिष्ट धामसन ने लोककथाओं की महत्ता को व्यक्त करते हुए उन्हें मानव-जाति के सांस्कृतिक इतिहास का महत्वपूर्ण भाग बतलाया है।³

१. डा० अग्रवाल वासुदेवचरण : भारत की लोककथाएँ - सोतादेवी, भूमिका, पृ० ५ ।

२. डा० शर्मा विनयमोहन : दृष्टिकोण, पृ० ९ ।

३. द्रिष्ट धामसन : दो फोक टेल्स, पृ० ४४८.



### 1. लोकगीत और लोककथा :

यद्यपि लोकगीत और लोक कथा दोनों ही लोकसाहित्य के अभिन्न अंग हैं, फिर भी दोनों के स्थापित में मौलिक अंतर है। "लोक साहित्य का जो सुदीर्घकालीन पट इस देश में बुना गया है, उसमें लोककथाएँ ताने के समान और गीत बाने के समान है। इसी ताने बाने में लोकमानस का बहुरंगी चित्र व्यजित है।"<sup>1</sup>

### 2. कथा और कहानी

कथा और कहानी में अंतर है। कल्पना/पर आधारित कहानी "कथा" कहलाती है, फिर भी जो कहानी धार्मिक अभिप्राय से अनुष्ठान के साथ सुनाने के लिए हो, वह कथा कही जाएगी।<sup>2</sup> कहानी लोकमानस की मूल भावना के रूप को स्थूल प्रतीक से अभिव्यक्त करती है, अतः कहानी में कुछ ऐसा रोचक वर्णन होता है, जिसमें अविचैकी और निर्जीव प्राणी भी बिल्कुल मनुष्यों की भाँति ही कार्य करते हुए दिखाई देते हैं और उनका लक्ष्य नैतिक उपदेश देने का रहता है।<sup>3</sup>

### 3. लोककथाओं की प्राचीनता

वेद विषय-साहित्य की प्राचीनतम पुस्तक है। उसके किन्ते ही वृत्त कहानी के रूप में हैं। यहाँ कहानियाँ भी हैं और कहानी के बीज भी।<sup>4</sup>

1.

2. डा० धीरेन्द्र वर्मा ॥ संग्र० ॥ हिंदी साहित्य कोष, पृ० 351.

3. इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, खंड 9, पृ० 21

4. डा० जगदाल वासुदेवशरण : "धूमिल फूल" की भूमिका।



श्वेद में शुनः शेष का पुस्तिक आख्यान है, जिसमें वरुण की शुनः शेष द्वारा प्रार्थना की गई है ।<sup>1</sup> अपाला और जात्रियों के नारी आदर्श का चित्रण भी इसमें मिलता है ।<sup>2</sup> संवाद-सूक्तों में पुरुरवा - उर्कगी संवाद यम-यमो संवाद<sup>3</sup> और सरमा - पाणिष संवाद<sup>4</sup> महत्वपूर्ण हैं । इसमें पुरुरवा - उर्कगी की कथा को विद्वानों ने " स्वान - मेडन " मानक स्म के अंतर्गत रखा है ।<sup>5</sup> एन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजियन एण्ड एथिक्स के अनुसार यह सुंदर और व्याख्यात्मक पुराख्यान प्राचीन मूल का आख्यान है । यह विविध स्मान्तरों में विस्तृत भू-भाग में फैला हुआ है ।<sup>6</sup> पैजर ने भी बताया है कि यह कथा संस्कृतः विश्व की प्राचीनतम प्रेमकथा है ।<sup>7</sup> इस प्रकार हमें वेदों में वे बीज और बिंदु और किसी सोमा तक उनका विकास मिलता है, जो संसार की लोक संस्कृति और लोक कथा-कहानी के एक विशद भाग का मूलाधार है ।

वेदों की बीज कहानियों पुराणों की कथाओं में परस्पर पुष्पित हुई है । ब्राह्मण ग्रंथों में - " शतपथ ब्राह्मण " में -- पुरुरवा और उर्कगी की कथा प्राप्त होती है । सृष्टि का विकास-क्रम, आर्य-आर्येतर

1. श्वेद : 1.24.30

2. श्वेद : 8.9.1

3. श्वेद : 10-85

4. श्वेद : 10-10

5. श्वेद : 10-130

6. सैन्डीनेवीयन लीजेन्ड्स और फोक टेल्स, पृ. 174.

7. इन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजियन एंड एथिक्स, उड-12, पृ. 125

7. पैजर, एन.एम. : दो ओसोपन आफ दो स्टोरी, पृ. 245



जातियों के संघर्ष, जलप्राप्तन आदि लौकिक आख्यान शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में लिखे गए हैं।<sup>1</sup> शतपथ ब्राह्मण में पुरुरवा-उर्वशी की कथा वेदों समान प्रणयगाथा के रूप में पाई जाती है, लेकिन उसका सुंदर रूपक कालिदास के विक्रमोर्वशीय नाटक में मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण में शुनःशेष का आख्यान भी पाया जाता है।<sup>2</sup> शतपथ में दधीचि की हड्डियों से बने कुज द्वारा वृषासुर के वध की कथा<sup>3</sup> तथा देवासुर संग्राम की कथा<sup>4</sup> पाई जाती है। पुराण-युग में वेदों के कमाबोज निश्चित रूप से विकसित दिखते हैं। लेकिन इस विकास-प्रक्रिया में बहुत फेर बदल हुए। वेदों में जो देवता प्रमुख थे वे गौण हो गए और उनका स्थान नए देवताओं ने ले लिया। संहिता काल के मुख्य देवता इस युग में कुछ गौण हो गए हैं, अथवा गौण प्रधान हो गए हैं और कहीं कहीं नए देवता भी कल्पित किए गए हैं।<sup>5</sup> वेदों की कथाएँ पुराणों में लोकदृष्टि से देखी जाती हैं।<sup>6</sup>

उपनिषदों में भी अनेक कथाओं का सूत्रपात हुआ है। कठोपनिषद् में नचिकेत की कथा है जिसमें यमराज से उसने तीन वर मागे थे।<sup>7</sup> कैनोपनिषद् में अग्नि और यज्ञ की रमणीय कथा दी गई है।<sup>8</sup>

- 
1. शतपथ ब्राह्मण : 11-5-1
  2. ऐतरेय ब्राह्मण : 7-3
  3. शतपथ ब्राह्मण : 2-1-6
  4. ऐतरेय ब्राह्मण : 1-4-23
  5. उपाध्याय बलदेव : वैदिक साहित्य और संस्कृति पृष्ठ 260
  6. डा. सत्येन्द्र : बृज लोक साहित्य का इतिहास, पृ. 396
  7. कठोपनिषद् : 12-13
  8. कैनोपनिषद् : 3-4-5





#### 4. बृहत्कथा :

संस्कृत में लोक कथाओं का सबसे प्राचीन और विज्ञान ग्रंथ बृहत्कथा है। डा. ब्रूलर के मतानुसार " बड़्ड कथा " की रचना ईसा की दूसरी शताब्दी में हुई थी। इसका सबसे अधिक प्रचलित और प्रख्यात अनुवाद सोमदेव का " कथा सरित्सागर " है।<sup>1</sup> इसमें 18 खंड और 24 अध्याय हैं। इसका अंग्रेजी में सी.एच. टोनी ने अनुवाद किया, जिसका 10 भागों में संपादन पैजर ने किया है।<sup>2</sup>

- 
1. उपाध्याय बलदेव : वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 346
  2. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, चौथा भाग, पृ. 111



### 5. बनजारा लोक - कथाओं का वर्गीकरण

विषय और शैली की दृष्टि से कथाओं के वर्णनात्मक तथा अभिनयात्मक ऐसे दो भेद होते हैं। इस दृष्टि से प्राचीन तथा अर्वाचीन विद्वानों से इस पर विस्तृत विवेचन किया है। प्राचीन वर्गीकरण के अनुसार कथाएँ दो वर्गों में विभाजित होती हैं --

1. कथा - कवि कल्पना द्वारा निर्मित जैसे बाणभट्ट की "कादंबरी" तथा दंडी का "दशकुमार चरित"।
2. जाण्यिका - जो इतिवृत्तात्मक है, जिसका आधार इतिहास है, जैसे बाणभट्ट का "हर्षचरित" आदि।

इस संदर्भ में आनंद वर्धनाचार्य तथा हरिभट्टाचार्य का वर्गीकरण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

आनंदवर्धनाचार्य ने कथा के तीन भेद बताए हैं --

1. परकथा - यह केवल इतिवृत्तात्मक होता है। अभिनयगुप्त के मत से इसमें विचित्र वर्णनात्मक कृतांत भी रहता है।
2. सकल कथा - इसमें समस्त कथा का सम्मिश्रण आरंभ से अंत तक उपलब्ध होता है। हेमचंद्र ने इस प्रकार की कथा को रक्ति कहा है।
3. छण्डकथा - इसमें एक देश प्रधान कथा होती है।

हरिभट्टाचार्य के द्वारा किया हुआ कथाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार है --

- क. अर्थ कथा - इन कथाओं में अर्थ की प्राप्ति का उद्देश्य प्रमुख रहता है।



- छं. काम कथा - इनमें प्रेमविवेक वर्णन अधिक पाया जाता है ।  
 गं. धर्मकथा - इनमें धार्मिक वाक्यानों की प्रधानता पाई जाती है ।  
 घं. संकीर्ण कथा - इन कथाओं के प्रेमो - मध्यम - दोनों लोकों की हज्ज रतने वाले कहे जाते हैं ।

इस प्राचीन वर्गीकरण के अतिरिक्त आधुनिक विद्वानों द्वारा भी कथाओं का वर्गीकरण किया गया है । डा. कृष्णदेव उपाध्याय तथा डा. सत्येन्द्र का नाम इस क्षेत्र में विशेष रूप से प्रचलित है ।

डा. उपाध्याय ने लोककथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया है--

- ॥१॥ उपदेश कथा ॥२॥ व्रत कथा ॥३॥ प्रेमकथा ॥४॥ मनोरंजन कथा ॥५॥ सामाजिक कथा ॥६॥ पौराणिक कथा ।<sup>१</sup>

डा. सत्येन्द्र ने कुछ लोकसाहित्य का अध्ययन में कहानियों को प्रमुक्तः ॥१॥ गाथाएं ॥२॥ अवदान ॥३॥ कहानियां ऐसे तीन भागों में बाँटकर साधारणतः कथाओं के जाठ भाग माने हैं --

- ॥१॥ गाथाएं ॥२॥ पशु पक्षी संबंधी ॥३॥ परी की कहानी ॥४॥ किंग्म की कहानी ॥५॥ बुद्धिबल संबंधी ॥६॥ निरोक्ष गमिष्ठ कहानियां ॥७॥ साधु पोरों की कहानियां ॥८॥ कारण निर्देशक कहानियां ।<sup>२</sup>

इस दृष्टि से बनजारा लोककथाओं का विव्यक्त वर्गीकरण निम्न प्रकार से है --

- |                     |                  |
|---------------------|------------------|
| १. उपदेशात्मक कथाएं | ४. अद्भुत कथाएं  |
| २. प्रेमकथाएं       | ५. मनोरंजक कथाएं |
| ३. सामाजिक कथाएं    | ६. संकीर्ण कथाएं |

१. उपाध्याय कृष्णदेव : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ. १६।

२. डा. सत्येन्द्र : कुछ लोक साहित्य का अध्ययन, पृ. ८३



उपदेशात्मक कथा :

गोसाई बाबा

- एक दाढ़ लखन सिंह : एक दिन लखन सिंह ससुराल जा रहा था ।
- सात सप्तेर घर जारोतो : वारे में पर ओत एक साधु दकायो : रास्ते पर उसे एक साधु मिला ।
- वू साधुन हाथ जोड़ुन राम-राम कीदो : उसने साधु को प्रणाम किया ।
- साधु तीन काई चाणो पूवो : साधुने कहा-तुझे क्या क चाहिए ।
- लखनसिंह बाल-बज्जार असीत मांगा : लखनसिंह सन्तान के लिये आशीर्वाद मांगा ।
- साधु ताईदीन लेन आ को : साधु ने उसकी पत्नी को लाने को कहा ।
- वू दूसरे दाढ़ और गोण-णीन लेन : वह दूसरे दिन पत्नी के साथ साधु के पास पहुँचा ।
- साधु कनगो ।
- साधु को तार गोण्णीर माते पर : साधु ने कहा - "तेरी औरत के सिर पर पट्टी बँधी है ।
- वू परी तार कल्लादेन छानेरीचा : वह परी तेरे सन्तान को छा रही है
- साधु एक लकड़ी मंत्रन दोनो : साधु एक लकड़ी को मंत्र पढ़कर दिया
- स दो मंदीक्या भी दोनो : दो तावीज भी दिया ।
- लकड़ी साँझर माते पर बांध दोनो : लकड़ी को औरत के सिर पर बांध दिया ।
- मंदीक्या दोई कोनू पर लटका दोनो : दोनों कानों पर तावीज लटका दिया
- आशीश देन एक मंत्र पढ़ो । : आशीर्वादके देकर एक मंत्र पढ़ा ।
- और पच्चा लखनसिंहरे बार बेटी : उसके पश्चात् लखनसिंह के बारह लड़के और बारह लड़की लड़कियाँ हुई ।
- बार बेटा वे



साधुर जसोसे ती लखनसिंह लुखेगो : साधू के जसोसोसे से लखनसिंह लुख हो गया ।

सू सेन धरम की दो : वह सबको दान देने लगा ।  
जौर जोलाद भी धर्म ती सकी : उसकी जोलाद भी दान-धर्म में लुखी थी वेतीती

सौंदर बेटा राजा बणे : उनके लड़के राजा बने ।  
सौंदर बेटा राजा बणी : उनकी लड़कियाँ रानियाँ बनी ।

देसेमाँ उदिर नाम मोटो वो : देश में उनका नाम हुआ ।

साधुर नाम गोसाई बाबा वेगो : साधू का नाम गोसाई बाबा हुआ ।

जकली गोसाई बाजार पूजा को दे : सभी लोग गोसाई बाबाकी पूजा करने लगे ।

....

पुनर्वाचन :

### राजकुमारीर साखी

एक राजा वेतो तो : एक राजा था ।

जौर ऐकबेटो वेती ती : उसकी एक लड़की थी ।

एक दाढ़ एक हाथी जायो : एक दिन एक हाथी जाया ।

हाती राजार बेटेन पाड़ लीदो : हाथी राजा की बेटो को उठा लिया ।

वेती राजा लड़ो : उससे राजा लड़ाई किया ।

हाती जौर बेटेन छोडो कोना : हाथी उसकी बेटो को छोड़ा नहीं ।

सू जड़वी माँ घाँस भि गो : वह जंगल में भाग गया ।

राजा फिंछौर पिटवा दिनो : राजा राज्य में नगरा पिटवा दिया

हातीन मारन राजकुमारीन लाये : उसने कहा कि जो व्यक्ति हाथी को

वाधेन बादो राज दिधु को मारकर राजकुमारी को लायेगा उसे वाधा राज्य देगा ।



छग बादमी जंगले माँ जान मदगे : कई लोग जंगल में जाकर मर गये ।  
 राजेर भाणजो जंगले माँ गो : राजा का भानजा जंगल में गया ।  
 जोर लार एक कोमटिया भी गो : उसके साथ एक बनि्या भी गया ।  
 राजेर भाणजो हातीन मार नाको : राजा का भानजा हाथी को मार  
 दिया ।

राजकुमारीन सोवत लेन आरोतो : राजकुमारी को साथ लेकर जा रहा था  
 बाटे पर राजकुमारीन तरस लागी : रास्ते में राजकुमारी को ब्यास लगी ।  
 राजेर भाणजो वावड़ी माँ वुतरा : राजा का भानजा कूर में उतरा ।  
 कोमटिया जोन वावड़ी माँ : बनि्या उसे कूर में गिरा दिया ।  
 धोले दीनी

कोमटि बा राजकुमारीन लेन राजा : बनि्या राजकुमारी को राजा के पास  
 कन जायो । लेकर जाया ।

कोमटिया राजाती आदो राज मांगो : बनि्या राजा से आधा म राज्य  
 मांगा ।

राजकुमारी से म बाते बापेने के दीनी : राजकुमारी राजा से सारी बात  
 समझा दी ।

राजा को मटियार माता समरायो : राजा ने बनि्या का सिर मुखा  
 दिया ।

गददा पर बैसारी : गधे पर बिठाया ।

जोत चुनेर भट्टीमा बकानाको : उसे चुने की भट्टी में जलवा दिया

पच राजार भाणजो जायो : बाद में राजा का भानजा जाया ।

राजा जोन आदो राज देता को : राजा उसे आधा राज्य दे दिया ।

....



पशुओं की कथा :

सावित्र्या साजी लोमड़ी की कहानी

- एक सावित्र्या वेतोती : एक लोमड़ी थी ।  
 जंगल में एक गोर साती : जंगल में एक भेड़ से उसकी दोस्ती हो  
 दोस्ती होगी गई ।  
 दोई भवन जंगल में चरने जाते थे : दोनों मिलकर जंगल में चरने जाते थे ।  
 एक दाढ़ गोरसाती तरस लागी : एक दिन भेड़ की घ्यास लगी ।  
 दोई एक तकायकन में : दोनों एक तालाब के पास पहुँचे ।  
 गोरसाती पीये लागी : भेड़ पानी पी रहा था ।  
 सावित्र्या जंगल तकायकन में धकेल दीनी : लोमड़ी ने उसे तालाब में गिरा दिया  
 गोरसाती मरगो : भेड़ मर गया ।  
 गोरसाती घर आये : गड़रिये दौड़कर आये ।  
 गोरसाती कटाड़े पर लाये : भेड़ को किनारे पर ले आये ।  
 सावित्र्या रोये ब्रह्म लागी : लोमड़ी रोने लगी ।  
 गोरसाती पूछे कसेन रोरीची : गड़रिये पूछे तू क्यों रो रही है ?  
 सावित्र्या ब्रह्म जवाब दीनी : लोमड़ी ने कहा  
 मार दोस्त मरगो : मेरा मित्र मर गया ।  
 जोर बात सामकन गोरसाती भी : उसकी ह बात सुनकर गड़रिये भी  
 रोये लाग रोने लगे ।  
 गोरसाती गोलो जोड़े माँ घासरीती : तब उनकी भेड़ बजरियाँ मैदान में  
 दौड़ रही थी ।  
 जन गोरसाती सावित्र्या को : तब गड़रियों से लोमड़ी बोली ।  
 तमार गोरसाती घासरीच : तुम्हारी भेड़ बजरियाँ दौड़ रही है ।  
 गोरसाती गोरसाती केनेन घाटी : गड़रिये भेड़ हकाबने दौड़े ।  
 माँका देकन सावित्र्या गोरसाती : माँका पाकर लोमड़ी भेड़  
 खाड़ी माँ छोड़े लगे को खाई में छोड़कर ले गई । 372



जन्म का :

रीघेर साजी भानू की का :

एक जन्म माँ एक छोटी गायड़ी बरारीती : एक छोटी जन्म में गाय बरा  
रही थी ।

वोन एक रीघ पाड़ लेगी । : उसे एक भानू उठाकर ले गया ।

कोन बोर गवी माँ लेगी : उसे उसकी गुप में ले गया ।

जोत जोन खामेन से चीजे जान दीनी : वहाँ उसे खाने की सामग्री लाकर दिया

बोर भाई छोरीन दूँडन जाये : उसके भाई उसे दूँडन जाये ।

रीघ छोरी तन्वा चाटे लागी : भानू लड़की के तन्वा चाटने लगा ।

छोरी तन्वा नरम पड़ो । : छोरी के तन्वे नरम हो गये ।

उन चालेर मसकन लेगे : उसे बचना नहीं जाता था ।

खुश्वी माँ रोती बसती ती : वह गुप में रोती दुई बैठती थी ।

रीघ सिक्कारेन गो : भानू सिक्कार के लिए गया ।

दूँडते-दूँडते बोर भाई गवी माँ जाये : दूँडते-दूँडते उसके भाई गुप में पहुँचे ।

भाईन देकन, भेन रोये लाग : भाई को देखकर वहन रोने लगी ।

भाईन भेनेनी कदि पर पाड़ ली दो : भाई ने वहन को कधि पर उठा लिया

जन्दी-जन्दी गवीर भार निकली : जन्दी-जन्दी गुप के बाहर निकला ।

बतरा माँ रीघ जायो : तभी भानू वहाँ जा पहुँचा ।

बूढ़ाँ वेर पड़गी : उनमें लड़ाई हुई ।

लड़ाई माँ रीघ एक भिडन मार नाकी : लड़ाई में भानू एक भाई को मार  
डाला ।

जन् दूतर भाई रीघिन मारना के : तब दूसरे भाई भानू को जान से मार  
डाले ।

मरती-मरती रीघ छोरी साम दीटी : मरते-मरते भानू लड़की की ओर  
देखा ।





ठोढीर भाई रीधेर मसाण भादि : लड़की के भाई ने भालू की समाधि बनाई  
 उदाङ्गी ठोरी गावड़ी चरावेर : उस दिन से लड़कियाँ गाव चराना  
 भुगगी भूल गई ।

.....

मनोरंजक कथा :

परौर साछी परिचों की कथा :

एक राजा खेतो तो : एक राजा था ।  
 और सात बेटा खेतो ते : उसके सात पुत्र थे ।  
 और गद्दे माँ एक बाग खेतो तो : उसके किले में एक बगीचा था ।  
 बागे माँ एक मोर वावड़ी : बगीचे में एक बड़ा कुआँ था ।  
 खेती तो  
 रात कणा सात परी जोमा हंगोकी : राजा के समय सात परिचों उसमें  
 करेन जाती तो नाहने के लिए जाया करती थी ।  
 हंगोकी करलेन पर तोड़लेन : स्नान करके वे फल तोड़कर ले जाती  
 जाती ह तो थी ।  
 ई बात राजा न मानम वेगी : यह बात राजा को मानूम हुई ।  
 राजा मोटे बेटान परिचूत : राजा ने बड़े लड़के को परिचों को  
 पकड़ेन मैली पकड़कर लाने के लिए भेजा ।  
 और नींद आवगी : उसे नींद आ गई ।  
 दूसरे दाढ़ दूसरो बेटा गो : दूसरे दिन दूसरा बेटा गया ।  
 तीसरे दाढ़ तीसरो बेटा गो : तीसरे दिन तीसरा बेटा गया ।  
 और भी नींद आवगी : उसे भी नींद आ गई ।



### झुंझरे/झाड़

- चारवें दाढ़ चौतो बेटा गो : चौथे दिन चौथा बेटा गया ।  
जोह भी छाने हाँते ती होरो जायो : वह भी खाली हाथ से लोटकर  
जाया ।
- पाँचवें दाढ़ पाँचवों बेटा गो : पाँचवें दिन पाँचवा लड़का गया ।  
सूसी परीखून पकड़ो कोनी : वह भी परियों को पकड़ नहीं सका ।  
छटवों बेटा दाल-तलवार लेन गो : छटवों बेटा दाल तलवार के साथ  
गया ।
- उसेन भी नींद लागगी : उसे भी नींद आ गई ।  
परी और दाल-तलवार पाढ़ : परियाँ उसकी दाल-तलवार  
लेगी उठाकर ले गई ।
- सातवें दाढ़ सेती नातक्या भाई : सातवें दिन सबसे छोटा भाई गया ।  
गो
- सू तार एक चाकू खजी मरघार : वह साथ में एक चाकू और मिरघी  
भूझी लेगी ले गया ।
- बागे माँ जान चरी खगिजी : बागमें पहुँचकर अपनी छोटी उँगली  
काट ली दो काट लिया ।
- जोपर मरघार भूझी लगाठ : उसपर मिर्च लगा दिया ।  
दोनो
- जौन नींद जाह कोनी : उसे नींद नहीं आई ।  
परीजान हंगोकी करे लाग : परियाँ कुँ में स्नान कर रही थी ।  
राजकुमार खंडून पकड़ लीदो : राजकुमार ने उन्हीं पकड़ लिया ।  
षष्ठ सात जणा सात परीजंती : उसके पश्चात् सातों-राजकुमार सात  
वाया कर लीदे परियों के साथ विवाह कर लिए ।

.....





- लाखा सूर्य, चन्द्र देवेती विनती कीदो : लाखा/सूर्य और चन्द्रदेव से विनती की ।
- दोई देव जासमानेती हेट उतर जाये : दोनों देवता गगन से नीचे उतरकर जाये ।
- सूर्य , चाम्द लाख सोनेर रुपयार : सूर्य औरचन्द्र राजा को दो  
राजान दे दोने लाख स्वर्ण मुद्राएं दे दिये ।
- राजा लाखान छोड़ दीनो : राजा लाखा को छोड़ दिया ।
- सूर्या राजान रीसैती दीटो : सूर्य भगवान राजा को गुस्से से देखा
- वह कवन भस्म वेगो । : वह जलकर भस्म हो गया ।

....

दातु कथाय :

.....

**धनजारा लोकोक्त्या**  
**\*\*\*\*\***



## बं जा रा लो को क्ति या

अनुभव, अनुभूति और विचारों के आधार पर लोक की उक्ति लोकौक्ति है। लोक की यह उक्ति लोक छाप पाने पर ही लोकौक्ति बनती है।<sup>1</sup> लोकौक्ति लोककथा और लोकगीत से पृथक् होती है, लेकिन उसमें कथा की रोचकता और गीत की गति एवं ध्वनि होती है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। लोकौक्ति केवल कहावत ही नहीं है। हर प्रकार की उक्ति लोकौक्ति है। पहली भी लोकौक्ति है।<sup>2</sup>

इनमें गागर में सागर भरा रहता है। इनमें जीवन का सत्य बड़ी मूर्खी से प्रकट होता है। इसी कारण इन्हें डा. वासुदेवकारण अग्रवाल ने "मानवी ज्ञान के घोखे और चुम्मे हुए सूत्र" कहा है।<sup>3</sup> जीवन के भिन्न-भिन्न अनुभव सर्वसाधारण जन के मानस को प्रभावित करके उसकी अभिव्यक्ति से संक्षिप्त अंग को उत्कर्ष प्रदान करते हैं। ये ही अनुभव लोकौक्तियाँ हैं।<sup>4</sup> ये मानव विज्ञान के छनीभूत रत्न हैं, जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है।<sup>5</sup>

## लोकौक्तियों की प्राचीन परंपरा

संस्कृत साहित्य लोकौक्तियों का अछूट भंडार है। वेदों और उपनिषदों में भी इनकी कमी नहीं है। महाकवि कालिदास, माघ,

1. डा. बल्लूशाल पोताम्बरदत्त : गढ़वाली परलाना, भूमिका।
2. गुप्त कृष्णानंद : लोकवाता पत्र, सं. 3, पृ. 1।
3. डा. अग्रवाल वासुदेवकारण : पृथिवीपुत्र, पृ. 111।
4. अवस्थी सत्यदत्त : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ. 280
5. परमार श्यामसुंदर : भारतीय लोकसाहित्य : पृ. 185।



भारवि और हर्ष की अमर कलाकृतियों में उनका सुंदर प्रयोग मिलता है। पंचतंत्र, हितोपदेश आदि नौति कथाग्रंथों में प्रायः नौति संबंधी लोकोक्तियों का यत्र तत्र प्रयोग किया गया है। संस्कृत में लोकोक्ति को सुभाषित या सूचित कहा गया है, जिसका अर्थ सुंदर ढंग से कहा गया कथन होता है।<sup>1</sup> सूचित शब्द को उत्पत्ति "उक्ति" से हुई और साधारण जनता ने इसको "लोकोक्ति" में बदल दिया।

वेदों की भांति ब्राह्मणग्रंथों में भी लोकोक्तियों की भरमार है। जैसे -- "अग्निं कृत्वा भ्रूयति।" या "सत्यं वा धर्मः।" "उपनिषदों" में ये लोकोक्तियाँ प्राचीनियों का हम धारण करके प्रस्तुत होती हैं। "अदमस्तु कामाय सर्वं पुत्र्यं भवति।"<sup>2</sup> तथा "विद्या मृतमर्तुः।"<sup>3</sup> रामायण महाभारत तो लोकोक्तियों से भरे हुए हैं।

रामायण में --

"आयुं चित्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत्कुः।

यश्चेन पयसा मितन्ते वारय मधुरो भवेत्।"<sup>4</sup>

अर्थात् आम के पेड़ को कुठार से काटकर नीम को परिचर्या कोम करे।

नीम को दूध से सोंके पर भी वह मोठा नहीं होता। तथा

"सैनापतां यक्षीं गन्ता, न तु योदधान्कर्ष्यते।"<sup>5</sup> अर्थात् --

"लड़े सिपाही नाम सरदार का।"

पंचतंत्र, हितोपदेश आदि ग्रंथों में नौति संबंधी उक्तियाँ बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध होती हैं। "आयतेः आयसं ऐहम्;"

1. "सुभाषितानि गीतेन, युक्तानि च लोभ्या।

मनो न रमते यस्य स योगी अथवा पशुः ॥

2. तू. उपनिषद - 2-4-5।

3. ईशावास्योपनिषद् -- ॥

4. रामायण -- 2-35-16

5. महाभारत - 5-168-28।



“ कटकेनेव कटकम् ” तथा “ इति शार्दूल समाचरेत् ” ऐसी ही उक्तियाँ हैं, जिनमें नीति या उपदेश भरा पड़ा है।

प्राकृत साहित्य भी ऐसी उक्तियों से समृद्ध है, जिसमें लोकानुभूति की व्यंजना होती है। महाकवि राजबेहरे के लिखे हुए “ कर्पूर मंत्रो ” में “ हर्ष कंक किं दप्यणेन पेक्षी ” अर्थात् हाथ कण को डारसो क्या ! अपभ्रंश में “ को तं पुसर जिठालड लिहियउ ” अर्थात् ललहट में लिखे हुए को कौन मिटा सकता है !<sup>1</sup> जैसे वृक्ष तथा सुंदर उदाहरण मिलते हैं।

#### 1. लोकोक्तियों की विशेषताएँ

लोकोक्तियों में भावों की मार्मिकता झनझुत होती है और लघु प्रत्यय से चिह्नित अर्थ प्रकट होता है। अतः सूत्ररूपता, बोलचाल की भाषा, वाणी का कटपटापन तथा रचयिता का अज्ञात होना आदि लोकोक्तियों की कुछ निजी विशेषताएँ हैं। इसके अतिरिक्त समासशैली, गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति, विशाल भाव शैली, लघुता, अनुभूति और निरोक्षण, सरलता गद्यात्मकता तथा पद्यात्मकता<sup>2</sup>, लाघवत्व, सरल भाषा तथा लोकरंजकता<sup>3</sup> भी इनकी विशेषताओं में समाहित होते हैं।

कहावतों का स्रोत अत्यंत प्राचीन है और संसार की सभी सभ्य-असभ्य जातियों में इनका प्रचार है। इनके प्रयोग से वाणी के विधान में तीव्रता तथा प्रभाव उत्पन्न होता है, भाषा शक्ति

1. पुष्पदंत महापुराण - 24-8-8 ।

2. डॉ. उपाध्याय कृष्णदेव : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ. 188 ।

3. परमार श्यामसुंदर : भारतीय लोकसाहित्य, पृ. 185 ।





होती है, श्रोताओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा लोकमानस के अनुभवों एवं ज्ञान का प्रकाशन होता है। सांसारिक व्यवहार पटुता और सामान्य बुद्धि का जैसा निदर्शन कहावतों में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। कहावतें मानव स्वभाव और व्यवहार कोश के सिकके के रूप में प्रचलित होती हैं और कर्मान् पौटों को उत्तरा-छिकार के रूप में पूर्वजों से प्राप्त होती है। जिस देश के लोकजीवन में पुष्कलता, उत्साह और व्यवहार-पटुता की धारा निरंतर गतिशील रहती है, उस देश में कहावतों का प्राचुर्य सामान्यतः देखने में आता है।<sup>1</sup> अतः सामान्य लोक जीवन में कहावतों का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है।

संस्कृत-साहित्य में कहावतों को सुभाषित कहा गया है। इनमें सुंदरता, समस्कार, प्रभविष्णुता तथा काव्यमयो उक्तियाँ पाई जाती हैं, किंतु संस्कृत के वाच्यार्थों में लोकोक्ति और कहावत में सूक्ष्म-सा भेद किया है। काव्य के अंतर्गत ये लोकोक्तियाँ अलंकार के रूप में व्यवहृत होती हैं। किसी लोकविख्यात कहावत के अनुसरण से यह लोकोक्ति अलंकार माना जाता है।<sup>2</sup> अरबी भाषा में "मखाल" शब्द कहावत के लिए प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ उपमा - अलंकार ही है।<sup>3</sup> हिंदी में भी कहावतों को लोकोक्ति मानकर अलंकार के अन्तर्गत रखा गया है।<sup>4</sup>

1. डा. सहाल कन्हेयालाल : राजस्थानी कहावतें, पृ. 51

2. "लोक प्रवादानुसृति लोकोक्तिरिति भव्यते।"

-- दोक्ति अध्याशास्त्री, कुल्लयानंद, पृ. 90 ।

3.

4. "जहाँ कहानवति अनुकरण लोकोक्ति"

-- कवि पद्माकर : पद्माकरण, पृ. 257 ।



बनजारा समाज में कथावतों का स्रोत प्राचीन है ।  
 इनके प्रयोग से बनजारा बोली में तीव्रता तथा प्रभाव उत्पन्न  
 होता है और इनके अनुभवों का प्रकाशन होता है । बनजारे प्रायः  
 इनका प्रयोग गीतों में, नसाब [न्यायालय] में या सीछ देते समय  
 करते हैं । बनजारा लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार हो  
 सकता है -

- 1॥ मुहावरे
- 2॥ लोकोक्तियाँ
- 3॥ कथावते और
- 4॥ पहेलियाँ

बनजारा बोली में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे

## 2. मुहावरे :

- |                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| 1. जाटे दाकेर भाव मालम वेणो : | जाटे दाल का भाव मामूम होना   |
| 2. जाकी माँ छूड़ नाकेवी :     | जाखों में धून खोंकता है      |
| जाकी माँ छूड़ नाकणो :         | जाखों में धून खोंकना         |
| 3. बड़डा जमाणो - बड़डा जमाणो: | बड़डा जमाना - बड़डा जमाना    |
| 4. जाकी क्सेन काड़रोवी- :     | जाखें क्यों निकाल रहा है -   |
| जाकी काड़तो :                 | जाखें निकालना ।              |
| 5. जांगळी पकड़न हात पकड़रोव : | उंगली पकड़ ली पवुंवा पकड़    |
| जांगळी पकड़न हात पकड़नो       | रहा है -                     |
|                               | उंगली पकड़कर पवुंवा पकड़ना । |



6. सकेर वासिनी खारोच : घेन की बंजी बजा रहा है  
सकेर वासिनी बजाणो : घेन की बंजी बजाना ।
7. बाँकी क्सेन रातड़ पीठ कररोची : बाँखि क्यौं लाल पीली कर रहा है  
बाँकी रातड़ पीठ करना : बाँखि लाल पीली करना ।
8. मुँडेरवड़ी पठीस - : मुँह के जल गिरेगा - मुँह के जल  
मुँडेरवड़ी पड़णो : गिरना ।
9. एक लकड़ीती हंकालरोच : एक लकड़ी से हाँक रहा है -  
एक लकड़ीती हंकालना : एक लकड़ी से हाँकना ।
10. कानेती कान खबर लागेनी : कानों कौन खबर नहीं होती  
काने ती काने ताणी खबर न : कानों कान खबर न होना ।  
लागणो
11. कानेर ब छणो काँची छ - : कान का बहुत कच्चा है - कान का  
कातर काची केणो : कच्चा होना ।
12. कान भरदीने : कान भर दिये - कान भरना ।  
कान भरदेणो
13. कुन्नार ब मोत मरणो : कुत्ते की मोत मर गया -  
कुन्नार मोत मरणो : कुत्ते की मोत मरना ।
14. टांग उखड़गी : पेर उखड़ गये - पेर पखड़ जाना ।  
टांग उखड़णो
15. जोकी जोकी देकाच - : टैदा-टैदा देखता है - टेदी ।  
जोकी जाको देखणो : जाँख देखना ।
16. बीटागो - : पाला पड़ गया - पाला पड़ना ।  
बीटाणो



- |                           |   |                            |
|---------------------------|---|----------------------------|
| 17. वेगोजको काम बिगड़णो - | : | बना हुआ खेल बिगड़ गया -    |
| वेगोजको काम बिगड़णो       | : | बना खेल बिगड़ना ।          |
| 18. करम फूटणो -           | : | करम फूट गया                |
| करम फूटणो                 | : | करम फूटना                  |
| 19. मोतेन लार लेलदो -     | : | सिर पर कपन बांध लिया       |
| मोतेन लार लेणो            | : | सिर पर कपन बांधना ।        |
| 20. छास्टातो खबर लीयू -   | : | जूतों से खबर लूंगा -       |
| छास्टातो खबर लेणो         | : | जूतों से खबर लेना ।        |
| 21. छुस-छुस कररोच -       | : | छुस-फुस कर रहा है -        |
| छुस छुस करणो              | : | छुस फुस करना ।             |
| 22. माते पर बेसार लीदोच - | : | सिर पर उठा लिया -          |
| माते पर बेसार लेणो        | : | सिर पर उठाना ।             |
| 23. सोक छाटेर पाणी पीदो - | : | घाट-घाट का पानी पीया       |
| सोक छाटेर पाणी पीणो -     | : | घाट-घाट का पानी पीना ।     |
| 24. निशाणी चूकणी -        | : | दाँव चूक गया - दाँव चूकना  |
| निशाणी चूकणो              | : |                            |
| 25. चारीवड़ी तो पत्तो     | : | चारों खाने चित्त [गिरना] । |
| बड़ जाणो ।                | : |                            |
| 26. सक्काव -              | : | चुगली जाता है -            |
| सक्काणो                   | : | चुगली खाना ।               |



27. मायेर दूध हरदे जाय - : छठी तक का दूध याद जायेगा -  
मायेर दूध हरदे जाणो : छठी का दूध याद जाना ।
28. येत जोकोड़ेन बाबवा - : यहाँ ~~मर~~ मर मारने जायेगा -  
जोकोड़ेन बाकणो : मर माना ।
29. दमे माँ दम जावणो - : दम में दम जा गया -  
दमे माँ दम जावणो - : दम में दम ~~मर~~ जाना ।
30. जम्मी पर टांग टकरी कौनी : जमीन पर पर नहीं टिक रहा ।  
जम्मी पर टांग न टकणो : जमीन पर पर नहीं टिकना ।
31. कूड़ी जवाब दीनो - : मुँह तोड़ जवाब दिया -  
कूड़ी वाट केणो : मुँह तोड़ जवाब देना ।
32. क्सेन जान छाजररोची - : क्यों जान छाये जा रहा है -  
जान छाणो : जान खाना ।
33. जाने लड़गो - : जान पर खेल गया -  
~~मर~~ जाने लड़गो : जान पर खेलना ।
34. कूड़ी वस पीणो - : जहर का कड़वा छूट पी गया  
कूड़ी वस पीणो : जहर का छूट पीना ।
35. धोका देनाको : अंगूठा दिखा दिया  
धोका देणो : अंगूठा दिखाना ।
36. कोड़ीर भाव कररोच : टके का छूट बीक रहा है -  
कोड़ीर भाव वळणो : टका छूट किकना ।
37. दूदेयाँ डंगि क्सेन माटरोची : टांग क्यों अड़ा रहा है -  
दूदेयाँ डंगि मारतो : टांग अड़ाना ।



38. तेल देख - लेकर धार देख - : तेल देख तेल की धार देख ।  
तेलेर धार देखो
39. धूक चाटणो : धूक कर चाटना
40. दान्त छाट करदीयूं : दान्त छट्टे कर दीगा -  
दान्त छाट करणो : दान्त छट्टे करना ।
41. दान्त कसेल चाबटोची - : दान्त क्यों पीस रहा है -  
दान्त चालणो : दान्त पीसना ।
42. दाके मां काबो छु : दाल में काला है -  
दाके मां काबो बाणों : दाल में काला जाना ।
43. गोठार भी काक रचा - : दिवाल के भी कान होते हैं -  
गोठार कान रेणो : दिवाल के कान होना ।
44. जूनी वाते मत काड़ - : गड़े मुर्दे नहीं उखाड़ों -  
जूनी वाते न काड़णो : गड़े मुर्दे उखाड़ना ।
45. नाक काट्यायो - : नाक काट जाये - नाक काटना ।  
नाक काटणो
46. नाम डुबोव्यायो - : नाम डुबा ड जाये - नाम  
नाम डुबोव्णो : डुबाना ।

....



### 3. लोकोक्तियाँ :

- |                                         |    |                                     |
|-----------------------------------------|----|-------------------------------------|
| 1. कन जान धमगो                          | .. | बासमान से गिरा छतुर में अटका ।      |
| 2. जनकन्ता घणो बोला                     | .. | अधकल गगरी छनक्त जाय ।               |
| 3. मोटो बादमी पुरेकी वात                | .. | उँधी दुकान फीका पकवान ।             |
| 4. तू मरसतौ दनिया सकी                   | .. | बाप मरे जग प्रब परने होई ।          |
| 5. मर जौ सरग दकावच                      | .. | बिना अपने मरे स्वर्ग नहीँ दोखता ।   |
| 6. तार जीभ आवतौ अगिर<br>गाम आवो         | .. | बाप भ्राता तो जग भ्राता ।           |
| 7. जन्दौर काम भूँसेर काम                | .. | जन्दो का काम छेतान काम ।            |
| 8. वन्टो चोर नायकेपर तसाब               | .. | उन्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।         |
| 9. बाँदू माँ काणो राजा                  | .. | अन्धों में काना राजा ।              |
| 10. एक हँसै हो हँसेकी चाजेनी            | .. | एक हाथ से ताली नहीँ बजती ।          |
| 11. न मरा तो काय करतो                   | .. | मरता क्या नहीँ करता ।               |
| 12. जूँकीदो जूँ भरणो                    | .. | जैसी करनी वैसी भरनी ।               |
| 13. कुन्नार पूछ्छी आवेट ओक              | .. | कृत्ते की पूछ टेडी की टेडी ।        |
| 14. कत नायकन कत जांगड                   | .. | कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेबो ।      |
| 15. काम निकसेती मत्तलब भलो<br>बलाही काई | .. | गाम खाने की पैड़ गिनने ।            |
| 16. जनकन्तान काई दकायेनी                | .. | काला अर भैस बराबर ।                 |
| 17. चोरेर सोबतीतो चोर वेगो              | .. | कोयला को दलाली में हाथ काले ।       |
| 18. बगलेमा छोरा टाडि में टिटोरा         | .. | बगल में छोरा शहर में टिटोरा ।       |
| 19. जो छाड़ छोदया जौम उज पड़्या         | .. | जो गछा छोदेगा, वही गिरेगा ।         |
| 20. रामेर जोड़ी एक अधो एक काणो          | .. | राम मिलाई जोड़ी, एक अन्धा एक काणा । |



21. धोतौ चना क्को बाजा .. धोधा चना बाजे छना ।
22. वक्त पड़े बाँका तो गद्दान .. मतलब को गधे को बाप  
क्को काका .. बनाना पड़ता है ।
23. भ्सा जको कृत्रा काटेनी .. जो गरजता है सो बरसता नहीं ।
24. घरे माँ बाग भार साँक्या.. घर में शेर बाहर गीदड़ ।
25. घर-घर छूँट चुली .. घर-घर घूँसे मिट्टी के ।
26. घरेर भेदी लंका बाकी .. घर का भेदी लंका टावे ।
27. माकी चकोड़ .. चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय ।
28. कोमट्या बेपारेया - .. बँक्या डेली दे पर भेली न दें ।  
माना केदेनी
29. धाट दाड़ै चाँदणी पर .. चार दिनों की चाँदनी फिर  
उज अमासेर रात .. अधिरी रात ।
30. चोर-चोर मासोर भाई .. चोर-चोर माँसेरे भाई ।
31. चोरीन उमरेटी सीता जोरी.. चोरी और सीना जोरी ।
32. दम तूटा जेतुणी जास छूटेनी.. जब तक साँस तक जास ।
33. ककडा मूँडो ज्यकी वाट .. जतने मुँह उतनी बातें ।
34. जेर जोर छ जारोज मक्क .. जिसकी लाठी उसकी भैंस ।
35. लबारीर क्तरी टागी .. झूठ के पाँच किन्ते ।
36. जन्दी धरम स्वा लाछे बराबर .. तुरन्त दान महाकल्याण ।
37. सरिया पर वागेर बाँकी .. तिनैके की जोर पहाड़ ।
38. जसो देस वसो भैस .. जैसा देश वैसा भैस ।
39. राड़ी बङ्गी पणन बङ्कोनी गी .. रस्ती जल गई पर रेंठ नहीं  
गई ।
40. छप्पेर गटला जाच दकरवा .. दूर को ढोल सुनावतें ।





41. दूदेर बन्नो जामण फूँक मारन.. बूध का जमा छाछ फूँक कर पीवे ।  
पीणो ..
42. नसीब बाँग-बाँग चालाचा .. तब्दीर चार कदम बागे चलती है ।
43. नाणक्या मूँडो मोट बात .. छोटे मुँह बड़ी बात ।
44. तादानेट दोस्ती जानेर घात.. नादान की दोस्ती जो काल जंजाल
45. पापेर छुड़िया फूटन रिया .. पाप का छड़ा फूट के रहता है ।
46. पाँच बाँगनी बराबर रेनी .. पाँचो उंगलियाँ बराबर नहीं होती ।
47. ताँडे माँ रेन नायकेही चौर .. पानी में रहकर मगर से बेर ।
48. जारे कारा बूँडा भी पोसा जाच.. गेई के साथ धून भी पिस जाता  
है ।
49. सिकारीर टांगि माँ ससिया.. बिल्ली के भाग से छोंका टूटा ।  
पड़नो ।
50. बेसजेती बौर ब तोड़नी भनो.. बैठे से बेगार भनो ।
51. लागतो शिकारी न तो .. लग जाय तो तीर नहीं तो तुक्का ।  
भिक्कारी
52. मारेवाले न बूँडो काय मोटियार  
काय .. बड़ा झरे भरे चाहे जवान मुझे हत्या  
से काम ।
53. बूँ बोया बूँ - हकूज काटनो .. जेसा बोये जेसा काटे ।
54. बोनी बाँगनीरवन झरि घी .. टेढ़ी उँगली बिना घी नहीं  
निकलेनी .. निकलता ।
55. वाँदरेन काई मालम बदरे के रो  
संवाद .. बंदर क्या जाने आदरक का स्वाद ।



4. महावत

पिये मंद हो गये बुंद । : {मद्यपान किया, बेहोश हो गए,  
अगिर माटीन मक्की संघ । अगले जादमी को ज़क्सर दे दिया।}

स्वच्छंद मद्यपान एवं परिरक्षणी जीवन के कारण बंजारे हष्टपुष्ट होते हैं । राजपूतो का अभिमान होने के कारण उन्हें जाति पराक्रम का गर्व रहता है -

गोरमाटी, छा बाटी । : {बंजारा छाता है रोटी और  
हातमा' ले काठी । हाथ में रखता है लाठी ।}

निस्त्रयीगी मनुष्य के संबंध में कहा जाता है --

छाडू भाई रो हासिया । तेते भाई रो बासीया ।  
मकाये माईरो नासीया ।

{ गायों के झुंड में सांड, खेत में उगाई हुई घास और पंचायत  
में कैमर्य के समान होते हैं । }

किसी बात की सत्यता सिद्ध होने पर कहा जाता है --

छौरीन छेडार हंस । : {लड़की को पसंद पसंद ।  
टांडरीन छुंछटेन हंस । स्त्री को छुंछट पसंद ।  
माटीन चातेर हंस । मर्द को बात पसंद ।  
केब जातेगी कते कट समय जाने पर कट जाएगी  
जारतार कंव । तेरे पैर की नस । }

छर का जादमी जब छरवालों को तकलीफ देता है तब कहा जाता है --

पाम्मी पाम्मी चोर मार : {चोर को मारने के लिए कहा तो  
कतो, छरेर गाबडोन मारन छर की गाय को मार कर पैर  
टांग तोड नको ते कच । तोड़ दिया ।}



किसी बाहरी दिशावृत्त में फँस जाने पर निम्न कहावत का प्रयोग किया जाता है --

वृं कसगी बाई, कतौ मतारौ, : ॥ ऊपरों तडक भड़क देखकर कैसे  
हल्लर मल्लर देखकर फँस गई । फँस गई । ॥

सुख के दिन आने पर सुश्रियों में ही दुःख जाने तथा भावी दुःख की  
चिन्ता न करने पर निम्नलिखित कहावत का प्रयोग किया जाता है --

आचो हादो आचो पिदो : ॥ खूब दीवाली मनाई,  
अदो अमदन । तो दाठ कोसान अब होली मना ॥  
कोनो मे अब तू जाण ।

काम कम, बकवास ज्यादा करने पर कहा जाता है --

बाई बाई, केन हेट टागि, : ॥ बकवास करके टांगि हिलाते  
सुंदलेन आयेचो तू । तू हाली हाथ आया । ॥

परंपरा को छोड़कर उल्टे मार्ग का अवलंब करने पर कहा जाता है --

अरकडी तरकडी जात पुरानी, : ॥ ऐसी वैसी जात पुरानी ।  
आपण वृं पंठाबलो कुरानी । आप उलटे तो कुरान कैसे पढोगे !

इस वर्ग की कुछ अन्य कहावतें निम्न लिखित हैं --

काक काबर बकरा काँद । : ॥ एकदम बकरे जैसा हल्लास कह या  
मल काँद फेर । चमड़ी निकालू - तेरे लिए में  
तारे वासम छेटी वृं डेर । मजबूर होकर बैठे हैं । ॥

राम राम तू आयो । : ॥ राम राम, तू आया ।  
तारौ लोबतरौ किमगी । तेरा साथी कहाँ गया ! ॥  
धम धम नाचरी नारी । : ॥ नाच रही है नारी उधर और  
कूशी डगि किमजारौ । मुझे ते जा रहे हैं किधर ! ॥

## बनजारा जाति : भाषा और लोक साहित्य



बनजारा लोकोक्ति-साहित्य में उपदेश और नीति से संवर्धित कहावतें अधिक मात्रा में पाई जाती हैं। समस्त लोक-जीवन का सार इनमें मिलता है।

पाप छिप नहीं सकता और सत्य प्रकट होकर ही रहता है।  
इस अर्थ की कहावत है --

पापेरो बलबला पानीमो : ॥पाप का बुलबुला पानी में  
बोल । बोलता है ॥

मत्स्य की बातें छोड़ बर्ष की बातें करने की प्रवृत्ति की भर्त्सना निम्न कहावत में मिलती है --

मरद मरद की जकडो । : ॥मर्द मर्द की जकडी है।  
टांग छोड जड पकडो । टांग छोड कर जड मत पकड ॥

असत्य के सो पदों के पीछे से भी सत्यदिशाई दे जाता है।  
कहावत कहती है -

चटका किदो मटकाये । : ॥चटके पटक करके मटक रहे थे।  
भीया भादो फटकाये । तुम्हें सफेद रुमाल से बांध दिया है।  
वाचटी केक एक एकन लटकाए। ठहरौ, अब समय जाया है। मैं  
एक-एक को लटका दूंगा ॥

किसी के कर्मों का श्रेय कोई अन्य ने तो निम्न कहावत कही जाती है --

बाकल माये मिटकी । : ॥बेटा मारे मैटक, बाप तोरबाज।  
बाप तिरमदास । बाप डी छाथ तो बेटा हाथ  
बाप हागी की । सुहाए ॥  
बेटा सुग हात ।



सच्चाई कभी छिप नहीं सकती । बुरे कर्मों का हिसाब चुकाना ही पड़ता है । यही बात निम्न कहावत में कही गई है --

ये नसाबी दूढ़ेसे छपाटा ।

मार मत्त लपाटा ।

जातगेच हैम, किम जावेगी कैटा ।

मनुष्य अपनी योग्यता के अनुकूल स्वरूप करता है और उसी के अनुकूल कर्म करता है । इसके लिए निम्नलिखित कहावत है --

मानै पान ।

: ॥मानी को मान और केशरम को घान॥  
केशरमोन घान ।

कमाये कोई और छाए कोई तो " अंधी पोसे कुत्ते छाथि" के अर्थात् निम्नलिखित कहावत प्रचलित है --

येर नसाबी कमाये मोई ।

छागे हरकोई । जाग पाच

देखतो किये कोई ।

अपने काम में स्वयं उदासीन और निष्क्रिय रहने पर कहा जाता है --

छाकीया वेई जाव भर हर । : ॥भरा हुआ नाला बहता वा  
छाकीया भाईतो निक्की रहा है । नाले में से एक गीदड  
तुं कडी । न बोली तुं कडी निक्का । गीदड ने न कहा  
तो मारो काई उकडी । तो मेरो क्या हानि होगी!॥

आपस में लड़ने से हानि होती है --

भर हर छुटी वाड । वानेमां वाडो जाव ठिरो ।

ठिरार टांग वाड मारो । वाकेर टांग ठिरा मारो ।



सफलता प्राप्त हेतु धैर्य की आवश्यकता होती है --

चाक सोज डोतूगीन । : ॥ चाकल पके हो नहीं, थाली चाट  
कण्डीर काँच निकल आई । चाट कर उसकी चमक निकाल दी ।।

बड़ी हानि पर ध्यान न देकर छोटी हानि पर परचाताप करना--

सारो भरीमी बन्गीन । : ॥ पुबाल का ढेर जल गया तू एक  
पूबो साठ कैसेन रायेच । जाट के लिए रोता है ।॥

दूर के ढोल सुहावने --

बाम पिशाच कोट सुंदर । : ॥ बाम बाहर से सुंदर दिखता है,  
भाई लंदर जर मार । लेकिन लंदर से कौडों से भरा है ।॥

छर्मडी का गर्त कट होने पर --

चरमट्टी पागडी वृ । : ॥ सजी पगडी बाँधने वाले तुने अब  
मारो दस दरियारो छोडेरों यौही क्यों पगडी लपेट ली ?  
जीन वृ ढिल हुई । फौजी छोडी की जीन अब ढीली  
कैसे हुई ? ॥

विविध विषयों से संबंधित कहावतें निम्नलिखित हैं --

किसी वस्तु को बाहरी दमक-चमक का भेद भूल जाने पर -

पाठ दिये सोनेरो छ्की : ॥ उठा कर देखा तो सोने की छ्की,  
फौडन दिये एक नौछ्की । लेकिन फेडने पर राख निकली ।  
बाम्म देखन मारोतो, ब्राह्मण समझकर बुलाया, वह डोम  
ढेड निकली । निकला ।॥

निकम्मे से निकम्मा मिले तो काम बन चुका --

बाक्सोर संग हिजडा करो : ॥ बालती और हिजडे का साठ ।॥  
कच ।



अक्सर से लाभ उठा लेने पर --

एक घालू एक घालू, : ॥ एक ठालू, एक ठालू, कहकर  
केन दो घाल विनौ कच । दो ठाल दिरन ॥

जब पछताउ होत क्या, जब चिठिया चुग गई छेत ।

बापन बेटा दिन । बागे : ॥ बाप बेटा दोनों मिले -  
मारे तिन । बाग हागे शेर मारे तीन - शेर बेटे को  
बेटान । बाप बनगोहिन । छा गया ॥

किसी छोटी बात से काम बिगड़ जाना --

छट मट्ठी रचो पागडी, : ॥ सज छज से लंछी हुई पगडी,  
मरमट्ठी सी मूत, तनो हुई मूछ मूछ में बाईं  
वू मू फेरे बाईं । सरो की रेख्य जैसो दाडी में छुन कैते  
दाडी मां कू छूट गराई । भर गई : ॥



## 5. पहेली

पहेली बुझक में मनोरंजन का उद्देश्य तो निहित होता ही है, साथ ही बुद्धि की परीक्षा भी ली जाती है। डा० फ्रेजर के अनुसार जब वक्ता को अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कहने में कोई बाधा आई होगी तभी पहेलियों की रचना हुई होगी।<sup>1</sup>

संस्कृत साहित्य में पहेलिका दो श्रेणियों में विभक्त है, जिन्हें क्रमशः अन्तर्यापिका और बहिलापिका कहते हैं। कुछ पहेलियों में प्रश्न का उत्तर भी जुड़ा रहता है और कुछ में उत्तर अलग से दिया जाता है। वैदिक श्रृण्वियों में अनेक ऐसी श्रृंखलाओं की रचना की है, जिनका अर्थ विचारपूर्वक ही लगाया जा सकता है।<sup>2</sup> गोता में श्रीकृष्ण द्वारा किया गया सूष्टि का वर्णन गूढ़ है, जिसका अर्थ समझना टेढ़ी छोर है।<sup>3</sup>

### 5.1. पहेलियों का वर्गीकरण

बनजारों में पहेलियों को " फोडेर साकी " कहते हैं, जिसका अर्थ है कूट प्रश्नों के उत्तर देना। इनका विषयगत विभाजन निम्न प्रकार से होगा —

1. प्रकृति तथा कृषि संबंधी      2. प्राणी-जीव संबंधी
3. भोज्य और हाथ पदार्थ —      4. घरेलू वस्तु संबंधी ।
5. जंग प्रत्यक्ष संबंधी संबंधी      6. मित्र विषय ।

1. फ्रेजर जे.जी. दी गौल्डन बथ, खंड-9, पृ. 121.

2. चत्वारि शृगा त्रयो अस्य पादा, हे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य ।  
त्रिधा बद्धो वृष्णो रोहीति, महादेवो मत्पामाजिब ॥

—डा० उपाध्याय कृष्णदेव : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ. 207 पर

3. ऊर्ध्वमूलमयः शाखमस्त्यं प्राहुरव्ययम् ।

छन्दासि यस्य पञ्जाति येस्तं वेद स वेदवित् ॥—श्रीमद्भगवद्गीता, ॥





### प्रकृति तथा कृषि संबंधी

इस वर्ग की पहेलियों की संख्या ही सबसे अधिक है ।

हैं छाठ बाबरो फूल गोदडी । : ॥ छाठ झूलता है और फूल सरते हैं । उत्तर - हरी धनिया ॥

झिलरौ समा गद गोलास बेटा : ॥ पत्तों के जंजाल में छिपा रहता है गोल बेटा । उत्तर - बैंगन

तिक्की मुंडी तिंबु राजा अन् : ॥ तिरछी मुंडी तिंबु राजा न खाता अन् पाणी न पिता । खाता है न पीता है । उत्तर - पशुओं की एक बीमारो "वैरिया"

एक चिठिया पहनी पाजामा : ॥ उत्तर - लसूँस ॥  
छुड़ीदार । उसमें छिपे पिन्ने हजार ।

धाबी भर रपिया, तराप : ॥ धाली में भरे समए हजार,  
मोजेनी तराप मोजेनी । गिन्ते गिन्ते हो गए केजार ।  
उत्तर - तारे ॥

काळे छैतर छबोर होठी पडी । : ॥ काले छेत में दही को हंडी गिर पडी । उत्तर - कपास ॥

एक मापेर तीन बेटा, तीनीर : ॥ एक माता के हुए तीन बेटे,  
सर एक । तीन सरेन रमास तीनों के सिर एक । तीन सिर  
बाधि , छुंला छोडे चार । को रूमाल बाधि और चुंला छोडे चार । उत्तर - धान बोने की लिपणी ॥

रातडी चोडो हरी पृछ । : ॥ रात के छोडे को हरी पृछ ।  
तीन आवतो तारे बापेन पृछ । उत्तर न सूँते तो अपने बाप से पृछ । उत्तर - हरी मिर्च ।



नानक्या रो माटी, लो डीती : ॥ छोटा सा बादमी, पहने डीती -  
पेर ।  
उत्तर - मक्का ।

### ग्राणी-जीव संबंधी

पशु पक्षी का मानव जीवन से दृढ़िष्ठ संबंध है । बनजारा जीवन में लो  
उनका बहुत अधिक महत्त्व है । इनसे संबंधित पहेलियाँ निम्नलिखित हैं --  
पान छेनी, सुपाही छेनी : ॥ पान खाया, सुपारी छार्ई, चूना  
मुँडर गैती लाली ।  
लगाया और जोठ लाल कर लिए ।  
उत्तर - लोता ।

नानक्या लो माटी धालम् : ॥ छोटा सा मनुष्य माथे पर फूल लटक  
धुलम्, कडकल माथे पर फूल ।  
कर करता है धालम धुलम ।  
उत्तर - मुर्गा ॥

अठमिती पर पठमिती पर : ॥ बाठ मिती पर पाठ मिती पर  
पठनाण्या, तुम मा-यातो हम  
किंजाजा करिया ।  
ठेरा लगाए, मार देते हो लो  
हम गडबड करते हैं । उत्तर - बिज्जू ।

काळे छेतम लोयेर डाग । : ॥ काले छेत में पोला दाग ।  
उत्तर - वामीण -साँप ॥

### भोज्य और हाथ पदार्थ संबंधी

भोज्य और हाथ पदार्थों से संबंधित पहेलियाँ निम्नलिखित हैं --  
माई मास, ऊपर हाउका । : ॥ अंदर मास और उपर हड्डी ।  
उत्तर - नारियल ॥

याडी याडी बाकडी देह, : माँ माँ बाकडी देह, बाकडी के  
बाकडी उपच झाड देह ।  
झाडे पर फड देह, फल छान  
मुँडी देह ।  
फल को छानता मुँह देह ।  
उत्तर - अमरुद ।



### घरेलू वस्तु संबंधी

- पाँचौम पंच भेल, दसैमा मिठी । : ॥ पाँच पंच भिन्नकर, दसका भेल  
करना । उत्तर - रसोई ॥
- दिन गोष्ठा केजाब, रात लाब : ॥ दिन में गोला होता है और  
रात में होता लंबा ।  
उत्तर - चटाई ॥
- सूखी बावडी मा' मिटकी बोलरो : ॥ सूखी बावडी में बैठकर तोता  
बोलता है । उत्तर - छटा ॥
- उठ परभाती तारो छाड लेन छीस : ॥ सुबह उठी और अपने प्रियतम  
को साथ लेकर चली ।  
उत्तर - गगरी ॥
- घाटो घाटो जान काबेन बेसगो । : ॥ गडबडी से चला और कोने में  
बैठा । उत्तर - जूते ॥
- फलेन केल खाईजा । : ॥ पेठ ने ही फल खा दिया ।  
उत्तर - दोपक ॥

### अंग-पूर्यंग संबंधी

बनजारा समाज में मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित पहेलियाँ भी हैं --

- नानकी देखी तोताबाई नाचस ॥ ॥ छोट से घर में मेना नाचती ।  
उत्तर - जीभ ॥
- नानकी सो हाँडीम । : ॥ छोटो सो हंडी में गडबडी  
मचाता । उत्तर - दात ॥



मिश्र विषय

- मां बेटीन जण बेटी मायेन : ॥ मां और बेटी दो, मां को  
पाठी हिंड । छोड बेटी निक्कली बाहर ।  
उत्तर - सोप और मोती ॥
- जमीन जड पाली पेड सो : ॥ जमीन में जड, पेड में पत्ता  
पुलौरी एकज फल । और फल - एक ही लगा है  
फल । उत्तर - जायफल ॥
- काकी गावडीर कब्जो मिमै : ॥ काली कुडी का दिल मीठा  
उत्तर - मधुमक्खी का छत्ता ॥
- छो मिनार छोरीर नव : ॥ छः महीने की छोरी, नौ  
मिनार पेट । महीने का पेट - उत्तर - बाइ ॥
- भारेत्ती जाए तीन पाम्मण : ॥ बाहर से जाए तीन मेहमान,  
दो भार बेसगो, एक माई  
पेशणी । दो बाहर बैठ गए, एक  
अंदर चला गया ।  
उत्तर - दो जूते और एक  
मनुष्य ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

## उ प संहार

आन्ध्र प्रदेश में रहनेवाले बनजारों को सम्बाड़ी नाम से भी पुकारा जाता है । यह शब्द इस जाति का नामक व्यक्ताय के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध को चोखित करता है । बनजारा शब्द वाणिज्य शब्द से व्युत्पन्न हुआ है । लालानी, लामानी शब्द जहाँ उसके नामक व्यक्ताय से ही सम्बन्धित हैं वहाँ लदेणिया शब्द उनके लादने की व्यक्ताय को प्रकट करता है ।

बनजारा जाति बाबावर जाति है और इसका वाणिज्य व्यक्ताय भी छुमंतुओं की प्रकृति का है । बनजारे की गाड़ी के साथ उसका सारा परिवार रहता है और परिवार के सदस्यों के भ्रान्ति उसके पशु भी रहते हैं । पशुओं के क्रय-विक्रय का व्यक्ताय भी इसका अपना है । किन्तु इस जाति का मुख्य व्यक्ताय सामान उधर-उधर दोना है । सामान दोने का काम जेलों से भी होता है और उंटों से भी सम्भवतः छोटे और गधे भी काम में आते हों । लाखा बनजारे की अनुवृत्ति से यह सिद्ध होता है कि वह एक लाख बैलों से लदने का काम करता था ।

लादनेवाले बनजारों की सुचना नजीर की इस पंक्ति से भी मिलता है - "सब ठाट पढ़ा रह जायगा जकलाद चलेगा बनजारा" ।

धीरे-धीरे यह जाति भारत के प्रायः सभी भागों में फैल गई । दक्षिण के दुर्गम रास्तों को पार करती हुई इस जाति के टांठे कच्चा कुमारी तक पहुँची । अपनी परिस्थितियों और प्राकृतिक वातावरण से अपनी अस्तित्व की सुरक्षा के लिये संघर्ष भी किया और समझौता भी ।

विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का परिचय छी प्राप्त नहीं किया विल्कि उनको बहुत कुछ ग्रहण भी किया । दक्षिण में इस जाति के मुख्य केन्द्र महाराष्ट्र और बान्धा बने । बान्धा के बी वेक्टरवर से इनका पुराना धार्मिक सम्बन्ध है । आज भी नित्य प्रति बालाजी के दर्शन के लिये जाते हैं और अपने सालभर के इस निमित्त जोड़े हुए पैसे बालाजी को भेंट कर जाते हैं । इनके पूर्व पुरुष हाथीराम बाबा का बालाजी से एक विशेष रागात्मक सम्बन्ध था । इसके विषय में कई अनुवृत्तियाँ भी मिलती हैं । तात्पर्य यह है कि बनजारा जाति का बान्धा प्रवेश से घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

कालान्तर में इस जाति ने पठारी, लबठ, जाबठ, बजेर, और हसर जमीन पर अधिकार भी किया । बनजारों के छूते हुए टाँडे इन स्थानों पर स्थायी रूप से बस गये । भूमि बख्शी होने पर हन्तोंने अपना क्षेत्र भूमि को समर्पित किया अन्धधा पशु पालन का व्यवसाय चमत्ता रहा । यदि टाँडियाने किसी जंतु विशेष में छुमकड़ी भी करते हैं तो अपने टाँडों में लौटकर आ जाते हैं ।

टाँडे की संरचना के केन्द्र में नायक की स्थिति है । नायक इस जाति के धार्मिक और सामाजिक मामलों पर अपना निर्णय देता है । विवाह जैसी सामाजिक संस्था भी इसके नियंत्रण में चलती और विकसित होती है । नायक जलम सवालों के निर्णय के लिये विरादरी के अन्य प्रमुख व्यक्तियों से सहायता लेता है । नायक का पद वंशानुगत होता है । टाँडे में नायक की बहुत अधिक प्रतिष्ठा होती है । टाँडा बहुत कुछ आत्मनिर्भर होता है । कुछ बनजारे सुनार का काम करते हैं और कुछ नार्थ का । टाँड़ी और चारण इसके व्यापार व्याख्यान करते हैं और प्रशस्त गायक भी है ।

जहाँ तक बनजारों के मूल स्थान का प्रश्न है, और कोई विशेष उल्लेख नहीं है। यह जाति राजस्थान से ही चलकर देश के विभिन्न भागों में फैली हुई है। इनके कई जातिगत वर्ग और गोत्र हैं। बनजारों के गोत्र अधिकारितः राजस्थान के राजपूतों से मिलते-जुलते हैं। रीति-रिवाज भी बहुत कुछ राजस्थान जैसे ही है। राजस्थान से इनके निकलने और काने के सम्बन्ध में कई अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं।

इस जाति के सामाजिक सम्बन्ध राजपूतों जैसे ही हैं। बनजारा का विवाह एक महत्वपूर्ण छटना है। टाँडे की समस्त जनता विवाह में सक्रीय रूप से भाग लेती है। सामान्य रूप से विवाह सम्पन्न करने के लिए ब्राह्मण की आवश्यकता समझी नहीं जाती पर अब कुछ लोग ब्राह्मण को बुलाने लगे हैं।

बनजारों की भाषा वैसे तो बहुत कुछ से स्थानीय प्रभाव ग्रहण करके विकसित हुई है पर इसका मूल रूप राजस्थानी बोली का ही है। राजस्थानी बोलियों की ध्वनिशास्त्रिक और व्याकरणात्मक विशेषताएँ बनजारा बोली में अनुस्यूत हैं।

बनजारा लोक साहित्य भी पुष्ट मात्रा में मिलता है। अधिकांश साहित्य गैर रूप में है - १। गीत गाये बनजारा यह गीत विभिन्न देखी-देखताओं से भी सम्बन्धित हैं और बनजारों के धर्मावृत्तान के वागे हैं। कुछ गीत संस्कारों से सम्बन्धित हैं। साहित्य की दृष्टि से इनमें प्रमुख हैं - जन्म, विवाह और मृत्यु। बनजारा गीतों में ही मर्म जोकर देखता को प्रसन्न करता है, गीतों में ही ईश्वरता है और गीतों में ही रोता है। कुछ गीत प्रबन्धात्मक भी होते हैं, जिनका गायन कापड़े लम्बे समय तक होते रहते हैं।

गीतों से के अतिरिक्त विविध पहेलियों के रूप में बनजारा मुक्तक सा दिव्य भी है। इन पहेलियों का उपयोग कई अवसरों पर



होता है । मुख्य रूप से विद्यात के अक्षर पर अनेक पतेलियां सुझाई जाती हैं ।

कई प्रकार की लोक कथाएँ भी जनजारा कहलाता सुनाता है । कुछ देवताओं, साधुओं या विरोध धीरों या मत्तियों की कहानियाँ कही जाती हैं । मनोरंजन के लिए पशु पक्षियों, परियों और राजा-रानियों की कहानियों की कही जाती हैं । बहुत से सुझाव भी प्रचलित हैं ।

संक्षेप में यद्यपि इस प्रबन्ध के निष्कर्ष हैं यद्यपि निष्कर्ष बहुत नये नहीं हैं किन्तु प्रस्तुत प्रबन्ध में मूल सामग्री के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं । ज्ञान प्रवेश के जनजारों पर यह पहला प्रबन्ध आगे के शोध कार्य के लिये प्रेरक होगा ऐसा आशा है । यह प्रबन्ध सर्वोपयोगी प्रकृति का है । आगे विरोधीकृत अध्ययन की क्रियाएँ जुड़ती हों यह मेरी कामना है ।

...

प रि शि ष्ट

---

परिशिष्ट - खं I

---

बनजारा बोली में  
प्रचलित वाक्य



बनजारा बोली में प्रचलित कहावत वाले वाक्य :

- (३६). सौ चोट सनारेर तो .. सौ चोट सुनार की एक चोट  
एक चोट लवारेर .. सुहार की ।
- (३७). हातीर दान्त छायेर नाबी.. हाथी के दाँत छाने के जोर  
कतायेर नाबी . दिखाने के जोर ।
- (३८). सोनेर परख सनारेर नग .. वीरे की परख जोहरी ही  
मालम .. जानता है ।
- (३९). धूँक चाटा तो तरस डटेनी .. जोस चाटे प्यास नहीं बुझती ।

३९.

.....

बनजारा बोली सामान्यतया प्रचलित कुछ वाक्य  
साधारण वाक्य [सामान्य कथन, सूचनात्मक वाक्य,  
स्वीकारात्मक वाक्य आदि]

1. डोकरा चाकू लीदो । .. कूड़े ने चाकू लिया ।
2. मारो बब्ब लालुनो ना । .. मेरा खेल प्यारा है ।
3. मेरे हस्तरे हस्त/मे/मेरे ..
3. मैं हाड़ी हाते माँ लीदो .. मैंने हस्ती हाथ में ली ।
4. मन चोट लग क गी .. मुझे चोट लग गयी ।
5. वह बाजार जा रहा था .. इ हाटेन जारो तो ।
6. इ हाटेन जारो तो .. वह बाजार जा रहा था ।
6. मन इ काय दीनो कोनी .. मुझको उसने कुछ नहीं दिया ।
7. मार एक बब्ब मरगो .. मेरा एकल खेल मर गया ।
8. राम जान छान्दो .. राम ने जाना छाया ।



- |                            |    |                                  |
|----------------------------|----|----------------------------------|
| 9. इ जागगो                 | .. | वह जाग उठी                       |
| 10. इ बाटी खा रोतो         | .. | वह रोटी खा रहा था ।              |
| 11. ई हमारी घर छ           | .. | यह हमारा घर है ।                 |
| 12. वह हंसते-हंसते थक गया  | .. | इ हंसतो-हंसतो हारगो              |
| ॥ इ हंसतो-हंसतो हारगो ॥    | .. | वह हंसते-हंसते थक गया ।          |
| 13. चोटैन पकड़ ली दो       | .. | चोट को पकड़ लिया ।               |
| 14. अब भी इ सोरोच          | .. | अभी तो वह सो रहा है ।            |
| 15. ऊ नाचतो-नाचतो थम गो    | .. | वह नाचते-नाचते रुक गया ।         |
| 16. इ छोरी नाचरीच          | .. | वह लड़की नाच रही है ।            |
| 17. ब्रह्म इ रमरोच         | .. | वह छेमता है ।                    |
| 18. सोमला कुराड़ी तो झाड़ू | .. | सोमला ने कुन्हाड़ी से पैद काटा । |
| काटो                       |    |                                  |
| 19. म बाटी खाईवूं          | .. | मैं रोटी खाता हूँ ।              |
| 20. मै/रोटी खा/रहा/हूँ/    | .. | मै/खाटी                          |
| म बाटी खारोवूं             | .. | मैं रोटी खा रहा हूँ ।            |
| 21. तलबे मा छोरी डूब गयी   | .. | तालाब में लड़की डूब गयी ।        |
| 22. चाके मा कपड़ा वड़गो    | .. | हवा में कपड़ा उड़ गया ।          |
| 23. मार छरेवाक काम कररीच   | .. | हमारी घरवाली काम कर रही है       |
| 24. मार चार छोरा छ         | .. | मेरे चार लड़के हैं ।             |
| 25. ई छोटी सेरेर छ         | .. | यह लड़की शहर की है ।             |
| 26. ई ताड़ुरी रंडारीच      | .. | यह औरत विधवा है ।                |
| 27. ई ताड़ुरी पण्णागीच     | .. | यह औरत ब्याहता है ।              |
| 28. ताड़ुरी पीज्जा पेटरीच  | .. | औरत पायल पहन रही है ।            |
| 29. मार गावड़ी घास गो      | .. | मेरी गाय भाग गई ।                |



30. तार छेकी मन मन्नी ती .. तेरी बकरी हमें मिनी थी ।
31. छटके सरेर जातरा भारीच .. छटकेसर का मेला ब लग रहा है ।
32. छगो माँदो सपनो दीटो .. बड़ा बुरा सपना देखा ।
33. केन्डा रमरोच .. बच्छड़ा खेल रहा है ।
34. माँ बोर छायो .. मैने बेर छाया ।
35. माँ बोर छान्दो .. मैने बेर छाया ।
36. माँ एक कपड़ा हेरा पेंक .. मैने एक कपड़ा नीचे डाल दिया है ।  
दीनों चूँ
37. छोरा छोड़े पर सवारी की दो .. लड़के ने छोड़े पर सवारी की ।
38. ई झपरेती पड़गो .. वह उमर से गिर गया ।
39. झाड़े पर कुराडी मेलोचू .. पेड़ पर कुन्हाडी रखी है ।
40. ई बकरा छ .. यह बकरा है ।
41. ये दी बकरा छ .. यह दो बकरे है ।
42. एक वादेर खेतो तो .. एक बन्दर था ।
43. इ पन्ध खारोच .. वह पल खाता है ।
44. दीरे कपड़ा धोरीच .. जोरते कपड़े धो रही है ।
45. मार टागि माँ दूकरोच .. मेरे पैट में दर्द मार रहा है ।
46. ऊँटे परती सवारी उतरी .. ऊँट से सवारी उतरी ।
47. बन्द जावच .. खेल जाते हैं ।
48. दाक सीजरीच .. दाल पक रही है ।
49. जाटो लायेना गो .. जाटा लेने गया ।
50. ई मालम छेनी क्सेन वेगो .. यह मालूम नहीं क्यों हो गया ।
51. ई मालम छेनी ई वेगो .. यह मालूम नहीं कैसे हो गया ।
52. ई मालम छेनी केवड़ी वेगो .. यह मालूम नहीं किधर हो गया ।



53. माँ ह ज्वार खादो जेना .. मेने वह ज्वार खाई जो मेरी  
मार दादी बनाईती । .. दादी ने बनाई थी ।
54. छगो मोटो दुनिया छ .. बहुत बड़ी दुनिया है ।
55. जहाँ मन चलेगा रहेगा .. जहाँ मन चलेगा रहेगा ।  
॥ जल दल भीखिया वत रीयू ॥ ॥ " ॥
56. माँ गोन वजी होरो फरन .. में गया भी जोर लौट भी आया ।  
आवगो
57. तू जतरैची वत मार दादा .. तूम जहाँ रहते हो वहाँ मेरे  
भी रच दादा भी रहते हैं ।
58. मार गामें मा तार काका रच ... मेरे गाँव में तुम्हारे चाचा रहते हैं
59. ह चोर छ .. वह चोर है ।
60. ह आयो आदमी छ .. वह भ्राता आदमी है ।
61. ई छेत मारो छ .. यह छेत मेरा है ।
62. तू कुष्टा से टाँठि रो छी .. तू कौन से टाँठि का है ।
63. छोरा दूध पीरोच .. लड़का दूध पी रहा है ।
64. ह गोबर पाड़रोच .. वह गोबर उठा रहा है ।
65. ई छ झोपड़ा छ .. यह छ झोपड़ा है ।
66. ई छड़ेर झोपड़ा छ .. यह बाँस का झोपड़ा है ।
67. ह बाजरीर छेत छ .. यह बाजरे का छेत है ।
68. ई बाजरीरो खिचड़ी छ .. यह बाजरेकी खिचड़ी है ।
69. ई लापसी अस्ली घीयेर छ .. यह हलवा अस्ली घी का है ।

...



**नकारात्मक :**

1. तू बाटो खान बाजो में .. तू रोटो खा जा में नहीं खाऊंगी ।  
खाईनी ।
2. मैं जोन दीटो भी कोनी .. मैंने उसे देखा भी नहीं ।
3. वजाबी वेगा क्सेन उरेसनी .. उठता क्यों नहीं सवेरा हो गया ।
4. बाजेती कनाई लबारी कूनी .. बाज से मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा ।
5. दू वेगे मालम ठेनी .. यह मालूम नहीं कैसे हो गया ।
6. मैं कनाई जामून खादो कोनी .. मैंने कभी जामून नहीं खाई ।
7. मन चणा छाय जायेनी .. मुझको चना नहीं खाया जाता ।
8. कोई काम करेनी .. कोई काम नहीं करता ।
9. मेर सगाई वो कोनी .. इसकी सगाई नहीं हुई है ।

.....

**पुनर्नात्मक वाक्य :**

1. छोरा गावडीन क्सेन मारो .. लड़के ने गाय को क्यों मारा ।
2. तू धान क्सेन रादी .. तुने चावल क्यों बनाई ।
3. क्सेन उरेसनी .. उठता क्यों नहीं ।
4. तार घरे माँ छी छक ठेनी .. तुम्हारे घर में छो है या नहीं ।
5. तार कतरा भाई छ .. तुम्हारे किन्तने भाई है ।
6. छान्देचक कोनी .. खाये है या नहीं ।
7. तू कत जारोघी .. तू कहाँ जा रहा है ।
8. गीद क्सेन बोलरोघी .. गीत क्यों गा रहा है ।





9. लड़ाई कसेन करारोची .. झगड़ा क्यों कर रहा है ।
10. तू माते पर पागड़ी कसेन .. तुने सिर पर पागड़ी क्यों नहीं बांधी बाँदो कौनी
11. पगे माँ छावड़ा कसेनी छेनी .. पैर में जूता क्यों नहीं है ।
12. मन काय मालम .. मुझे क्या पता ।
13. कसेन कीम जारोची .. क्यों कहाँ जा रहा है ।
14. तू येन कसेन मार रोखी .. तू इसे क्यों मार रहा है ।
15. तार गाम कट छ .. तुम्हारा गाँव कहाँ है ।
16. तार नाम काई छ .. तुम्हारा नाम क्या है ।
17. तार कुत्तो कुत्ता छ .. तुम्हारा कौन्सा कुत्ता है ।
18. इ तब्य माँ कूँ पड़गो .. वह तालाब में कैसा गिरा ।
19. काई काम छ .. क्या काम है ।
20. छान कन्ना छाराची .. खाना कब खाएंगे ।
21. तार घर कसो छ .. आप का घर कैसा है ।
22. झरर वू कूण देखू छ .. वह कौन सा मन्दिर है ।
23. वावडीर पाणी कसो छ .. कुएँ का पानी कैसा है ।
24. कीम गोली .. किधर गई थी ।
25. कसेन छासंगी .. क्यों भाग गयी ।

**26. प्रश्नोत्तर रूप में कुछ वाक्य :**

1. प्रश्न : झुझ तार कतरा छोरा छे? तुम्हारे किन्ने लड़के हैं?  
उत्तर : मार चार छोरा छ .. मेरे चार लड़के हैं ।
2. प्रश्न : कतरा बेर छादो .. किन्ने बेर खाये?  
उत्तर : चार बेर छादो .. चार बेर खाये ।



3. प्रश्न : कोई काम छ? .. क्या काम है?  
उत्तर : मार भाईर बाया .. मेरे भाई का विवाह हो रहा है ।  
वेरोच
4. प्रश्न : छान कसेन छायेसनी?.. छाना क्यों नहीं खाते?  
उत्तर : भूख छेनी .. भूख नहीं है ।
5. प्रश्न : हाटेन कूण गोच .. हाट में कौन गया है?  
उत्तर : काका गोच .. चाचा गया है ।
6. प्रश्न : पामड़ी कसेक छ? .. चुनरी कैसी है?  
उत्तर : पामड़ी छण जव छ .. चुनरी बहुत बच्छी है ।
7. प्रश्न : चावकेर कोई दाम छ? चावल का क्या भाव है?  
उत्तर : तीन स्थथा न एक किलो .. तीन स्थथे में एक किलो ।
8. प्रश्न : कौन कसेन मारो? .. उसे क्यों मारा?
9. उत्तर : इ मार कूटी काड़रो तो वह मुझे चिढ़ा रहा था ।
9. प्रश्न : जाटो कूण पोसरौच? जाटा कौन पोस रहा है?
10. उत्तर : मामी जाटो पोसरौच मामी जाटा पोस रही है ।
10. प्रश्न : छड़ कत छ? .. घास कहाँ है?  
उत्तर : छड़ छड़ मेदाने माँ छ .. घास-मेदान में है ।
11. प्रश्न : शिकारे वास कूण गोच? शिकार के लिए कौन गया है?  
उत्तर : तार मामा गोच । तुम्हारा मामा गया है ।
12. प्रश्न : कोई नगावण रादु? क्या सब्जी बनाऊँ?
- उत्तर : पालकेर भाजी रादि । पालक की भाजी बनाओ ।
13. प्रश्न : पाणी केमा भरेची? पानी किसमें भरेगी?
- उत्तर : पाणी छुड़िया माँ भरूँ । पानी मटके में भरेगी ।



जातिगत वाक्य :

- |                        |    |                           |
|------------------------|----|---------------------------|
| 1. ई राठी लिखा         | .. | वै रस्सी ले जा            |
| 2. चणा भूजला           | .. | चना भून ले                |
| 3. नखण करला            | .. | पैर छु ले                 |
| 4. तू ई कुकडीठन पाड़ला | .. | तू इनका मुर्गों को उठा ले |
| 5. ब्रह्मर मत जो       | .. | ब्रह्मर मत जो             |
| 6. पक मत छो            | .. | पक मत छा                  |
| 7. जरे भिया एत जाजो    | .. | जरे भाई ब्रह्मर जा        |
| 8. उ. बकरान लिखा       | .. | उस बकरे को ले जा          |
| 9. येतेती उगरजो        | .. | यहाँ से चला जा            |
| 10. जान काम कर         | .. | जाकर काम कर               |
| 11. जान सोजो           | .. | जाकर सोजा                 |
| 12. जान खाला           | .. | जाकर खा ले                |
| 13. दूध बीषरादा        | .. | दूध पिनाजो                |
| 14. धान राँद           | .. | खाना बना                  |
| 15. बेसजो              | .. | बैठ जा                    |
| 16. समोर नाच           | .. | ठीक से नाच                |
| 17. चिबेका मत          | .. | दाँत मत दिखा              |
| 18. जौन बाँध द         | .. | उसे बाँध दो               |
| 19. छानि जो एतेती      | .. | ब्रह्मर से भाग जा         |
| 20. राम-राम बोल        | .. | राम-राम बोलो              |
| 21. भजन कर             | .. | भजन कर                    |
| 22. छोडी घाँट          | .. | घटनी पीसो                 |

उड.

## बनजारा जाति : भाषा और लोक साहित्य



|               |               |
|---------------|---------------|
| 23. जाग जाठ   | .. जाड़ लगावो |
| 24. धापड़ मार | .. धपड़ मार   |
| 25. काम कर    | .. काम कर     |

### समाप्त देनेवाले वाक्य :

|                                     |                                          |
|-------------------------------------|------------------------------------------|
| 1. चाल पवन जावाँ                    | .. चलो, धूम कर जावें                     |
| 2. ठेकीर दूध काड़वा                 | .. बकरी का दूध निकाल लें                 |
| 3. ला, दीखो बाब्ला                  | .. ला, दीया जला लें                      |
| 4. खेत खतरा छ, मत खेत               | .. वहाँ खतरा है, मत बैठो                 |
| 5. तार छारा बीमार छ,<br>खोन जाठ द । | .. तेरा लड़का बीमार है, उसे<br>दवाई दो । |
| 6. एन माफ करदा                      | .. इसे माफ कर दो                         |
| 7. ससुरेन नखन करला                  | .. ससुर के पैर छु लें                    |
| 8. मत मार                           | .. मत मार                                |
| 9. दारु मत पी                       | .. दारु मत पीखो                          |
| 10. लबारी मत कर                     | .. झूठ मत बोल                            |
| 11. चोरी मत कर                      | .. चोरी मत करो                           |
| 12. बिनती कर                        | .. प्रार्थना करो                         |
| 13. बरला मत सामक                    | .. बुरा मत तुनो                          |
| 14. धरम करो                         | .. दान करो                               |
| 15. खलह जावो रा                     | .. प्रेम से रहो                          |
| 16. जावो काम कर                     | .. अच्छा काम कर                          |
| 17. दया कर                          | .. दया कर                                |



- |                         |    |                       |
|-------------------------|----|-----------------------|
| 18. सीन्को वैजो         | .. | शान्त रहो             |
| 19. गणिया बन            | .. | गुप्तवान बनो          |
| 20. अकलबन्द बण          | .. | वानो बनो              |
| 21. मा-बापेर सेवा कर    | .. | माता-पिता की सेवा करो |
| 22. ठोक-ठोकराडर असीस ला | .. | बड़ों का आशीर्वाद लो  |
| 23. कपट मत कर           | .. | कपट मत कर             |
| 24. मतरेती रा           | .. | भिल-कुलकर रहो         |
| 25. सस्तेवासु लड़       | .. | सज्जाई के लिए लड़ा    |

प्राप्ति करनेवाले वाक्य :

- |                               |                         |
|-------------------------------|-------------------------|
| 1. म दलेक वेका बाराम कर लू .. | मैं कुछ देर बाराम कर लू |
| 2. म गाम जान जाऊँ ..          | मैं गाँव ही जाऊँ        |
| 3. म कपड़ा धो लूँ ..          | मैं कपड़े धो लूँ        |
| 4. म अब धान खालूँ ..          | मैं अब धान खालूँ        |
| 5. म नाच देखूँ ..             | मैं नृत्य देख लूँ       |
| 6. मैं पूजा कर लूँ ..         | मैं पूजा कर लूँ         |
| 7. म जाऊँ ..                  | मैं जाऊँ                |
| 8. म जाऊँ ..                  | मैं जाऊँ                |
| 9. मार छूँछडी लादा ..         | मेरा कमल लादे           |
| 10. म हाटेन जारोवूँ, ..       | मैं बाजार जा रहा हूँ,   |
| मन एक रपया दे द               | मुझे एक रुपया दे दे     |
| 11. मार लाकली छाला ..         | मेरी लाकली छाले         |
| 12. मन मत मार ..              | मुझे मत मारो            |
| 13. मन माफ करदा ..            | मुझे क्षमा कर दो        |

## बनजारा जाति : भाषा और लोक साहित्य



- |     |                            |    |                              |
|-----|----------------------------|----|------------------------------|
| 14. | मु मन काम द                | .. | मुझे काम दो                  |
| 15. | मन बाटो द                  | .. | मुझे रोटी दीजिए              |
| 16. | मुझे मन रे वासु जाग चाणो.. |    | मुझे ब रहने के लिए जगह चाहिए |
| 17. | मा पर रोस मत कर            | .. | मुझ पर गुस्सा मत करो         |
| 18. | हात जोड़ूँ                 | .. | हाथ जोड़ता हूँ               |
| 19. | पगू पड़ूँ                  | .. | पाँव पड़ता हूँ               |
| 20. | असीस दा                    | .. | आशीर्वाद दीजिए               |
| 21. | अरदास कर                   | .. | प्राध्ना करो                 |
| 22. | मातो टेक्ला                | .. | माता टेक ले                  |
| 23. | हंगोजी कर लो               | .. | स्नान कर लीजिए               |
| 24. | से जाचगे काई               | .. | सब आ गये                     |
| 25. | आजा दीजिए                  | .. |                              |

### ढाँटे-फटकारनेवाले कुछ वाक्य :

- |    |                                           |    |                                                |
|----|-------------------------------------------|----|------------------------------------------------|
| 1. | तू ससरेर मुणांग हूबो, तोन..<br>सरम जायेनी | .. | तू स्मुर के सामने ऊड़ी,<br>तुझे शरम नहीं आयी । |
| 2. | तू माते पर कपड़ कसेन<br>बोड़ी कोनी ?      | .. | तूने सिर पर कपड़ा क्यों नहीं<br>बोड़ा ?        |
| 3. | पगे माँ छाचड़ा कसेन छेनी ..               |    | पैर में जूता क्यों नहीं है ?                   |
| 4. | गाले पर थापठ मार दिधू ..                  |    | गाल पर धमक थापठ मार दूंगा                      |
| 5. | तू नायक छी, नायकेर काम..<br>करैसनी        |    | तुम नायक हो नायक काम<br>नहीं करते ।            |



- |     |                        |    |                                   |
|-----|------------------------|----|-----------------------------------|
| 6.  | बेस बात                | .. | बेठ वहाँ                          |
| 7.  | सरम ऐनी                | .. | शरम नहीं                          |
| 8.  | काम क्सेन करेसनी       | .. | काम क्यों नहीं करता               |
| 9.  | क्सेन हरगड़ी सोयेची    | .. | क्यों हमेशा सोते रहता             |
| 10. | दान्त छोट कर दिवू      | .. | दान्त छूटे <del>मरु</del> कर दुगा |
| 11. | भेजो ऐनीजको क्तेरको    | .. | ज्ञान दोन कहींका                  |
| 12. | तू वेडो छी             | .. | तुम पागल हो                       |
| 13. | तू गत्तेलडा छी         | .. | तुम मूर्ख हो                      |
| 14. | तू बेहमान छी           | .. | तुम नमक हराम हो                   |
| 15. | तू राखिया छी           | .. | तुम कायर हो                       |
| 16. | समोर बेस               | .. | ठीक बैठो                          |
| 17. | तार चाल ठीक ऐनी        | .. | तुम्हारा बतावि ठीक नहीं है        |
| 18. | बेहज्जत मत कर          | .. | बेहज्जत मत करो                    |
| 19. | बीड़ी क्सेन पीयेची     | .. | बीड़ी क्यों पीता है               |
| 20. | गाळी क्सेन देची        | .. | गाली क्यों देता है                |
| 21. | मोटकीर नाई टर-टर मत कर | .. | मैठक के जैसा टर-टर मत कर          |
| 22. | क्सेन मूँडो परठरीची    | .. | क्यों मुँह पगड़ रही है            |
| 23. | मूँडो बुर              | .. | मुँह बन्द कर                      |
| 24. | गलपश                   | .. | चुप रहो                           |
| 25. | चट-चट मत कर            | .. | चट-चट मत कर                       |

**26. बाशीवादि वाले वाक्य :**

- |    |                               |    |                       |
|----|-------------------------------|----|-----------------------|
| 1. | तार काम पते वेदा              | .. | तुम्हारा काम शुभ हो   |
| 2. | परमात्मा तौन सकेती रकाड़ेदा.. |    | जबवर तुम्हें सुखी रहे |



- |     |                             |                            |
|-----|-----------------------------|----------------------------|
| 3.  | हमेशा गौद भरायेदा ..        | सदा फलती पूजती रहो         |
| 4.  | भाखान तार काम बणादिया ..    | भाखान तुम्हारा काम बना दे  |
| 5.  | भाखान तार गौद छोराती ..     | भाखान तुम्हारी लड़के से    |
|     | भर दीया ..                  | मोद भरे                    |
| 6.  | कसकेती रा ..                | कुल रहो                    |
| 7.  | राम तीन ताड़ो सीन्ही करया.. | राम तेरा भ्ला करे          |
| 8.  | दूदेर नाई तार घर उषणिया ..  | दूध के जैता तेरा घर उभरे   |
| 9.  | माला माल बेजाबो ..          | माला-माल हो जाय            |
| 10. | काशी कावड़ेर असीस छ ..      | बड़े-बूढ़ों का जाशीवादि है |
| 11. | मरग वेई मातार असीस ले ला    | माता का जाशीवादि ले ले     |
| 12. | काम फलते वेदा ..            | कार्य सिद्धि हो            |
| 13. | कसीबदार छी ..               | भाखान हो                   |
| 14. | काम जाबो वेदा ..            | कार्य मंगलप्रद हो          |
| 15. | राजार नाई बचोस ..           | राजा के जैता जीवोगे        |
| 16. | राणी बणीस ..                | रानी बनोगी                 |
| 17. | पीड़ा टक जाय ..             | कष्ट दूर हो जायेगी         |
| 18. | भाखान तेरे पीछे है ..       | भाखान तेरे पीछे है         |
|     | भाखान तार लार छुं           |                            |
| 19. | हमेशा कसकेती रेस ..         | सदा सुखी रहो               |
| 20. | हजारो बरस बचैस ..           | जुग-जुग जीवो               |
| 21. | नाती पौत को देख बह मरीस..   | नाती पौत को देखकर मरोगे    |
| 22. | मार उभर भी लाग जाय ..       | मेरी उमर लगजाय             |
| 23. | भाखान तीन अवकल दीया ..      | भाखान तुझे ज्ञान देगा      |
| 24. | लख पड़न मोटो जादमी बीगा..   | लिख-पढ़कर बड़ा जादमी होगा  |





25. भगवान तीन जंगरे माबती .. भगवान तुझे बाग से बाहर निकालेगा  
भी भार काटिखा ।

विस्मयादि बोद्ध वाक्य :

1. शिकार करने मामा जंगलेमाँ .. शिकार खेलने के लिए मामा  
जाते ही जंगल से छुटा त्यों ही  
कटिरा छा गया ।
2. तू जवगोवत तो मा सार .. तुम जाते तो मैं साथ चलती  
जाती
3. हाथ मरगो .. हाथ । मर गया
4. हाथ लुटागो .. हाथ लुट गया
5. जोह । काई बाध चीज छ .. जोह । बड़ी कटिखा वस्तु है ।
6. जोह । कतरा सुन्दर छोटा छ .. जोह । किस्सा सुन्दर लड़का है
7. बल्ला चोर छादो .. बुरी तरह चोर छाया
8. जरे । पड़गो .. जरे गिर गया
9. जरे । वस छान्दो .. जरे विष खा गया
10. जरे । सरप छसगो .. जरे । साँप छस गया
11. वस चछगो .. विष चढ़ गया
12. हाथ । ठाढेरीन चोर पड लेगो .. हाथ । जौरत को चोह उठाकर  
ले गया ।
13. हाथ । जैनीन भेठिखा .. हाथ । ककरी को गीदड़ उठाकर  
पाड़ लेगो



- |     |                              |    |                                     |
|-----|------------------------------|----|-------------------------------------|
| 14. | टपटन पड़गो                   | .. | पिसल कर गिर पड़ा                    |
| 15. | हाय । काँटो भड़गो            | .. | हाय । काँटा चुभ गया ।               |
| 16. | ढांडी फूटगी                  | .. | मटकी फूट गई                         |
| 17. | बरे । जवान्को छेत कगो ..     |    | बरे । जवान्को छेत कल गया ।          |
| 18. | हरे कूँडा माँ कंगार लाग्यो.. |    | झोपड़े में जाग लगी                  |
| 19. | हाय राम मातेपर नारेक पड़गो.. |    | हाय राम सिर पर नारियल गिरा          |
| 20. | छेत पड़ेतो टांगे मोडागी ..   |    | नीचे गिरने से पैर मोच छा गई ।       |
| 21. | हाय । पोसा गमागे             | .. | हाय । <sup>पैसे</sup> प्रेरे गम गये |
| 22. | हाय राम मार बापेन चोर..      |    | हाय राम मेरे पिताजी को              |
|     | मारगो                        | .. | चोर मार कर गया ।                    |

...

---

परिशिष्ट - अक्ष ॥

---

---

बनजारा शब्दावली



॥ अ ॥

|              |    |                   |
|--------------|----|-------------------|
| अकल दाढ़     | .. | अकल दाढ़          |
| अंगूठा       | .. | अंगूठा            |
| अस्तर        | .. | अस्तर             |
| अधार         | .. |                   |
| अंगीठी       | .. | अंगीठी            |
| अछवीर मनक्या | .. | अनमानूस           |
| अपणो         | .. | अपना              |
| अधारो        | .. | अधिरा             |
| अछवीर सूरौ   | .. | अछवीर सूर         |
| अगियार छूटा  | .. | अगुनू             |
| अरदास        | .. | अर्चना            |
| सूरौ         | .. | सूरौ              |
| अनकस्ता      | .. | ना समझ            |
| अदोई         | .. | चींटी विशेष, दोमक |
| अनाडी        | .. | अनाड़ी            |

॥ आ ॥

|      |    |       |
|------|----|-------|
| आरौ  | .. | आरौ   |
| आपणो | .. | अपना  |
| आरसो | .. | दर्पण |



|                      |    |                                |
|----------------------|----|--------------------------------|
| बारो                 | .. | बारा                           |
| बासामी               | .. | बासामी                         |
| बाखी                 | .. | बाखी                           |
| बामली                | .. | बमली                           |
| बातड़ो               | .. | बातड़ी                         |
| बाना                 | .. | एक बाना                        |
| बाठ बाना             | .. | बाठ बाना                       |
| बाठ                  | .. | बाठ                            |
| बाडिया               | .. | बाडा                           |
| बाडकाट               | .. | केशो में बटकाने का काटा        |
| बासरी                | .. | घर का कोना                     |
| बालमो                | .. | कलक                            |
| बावा                 | .. | छडा                            |
| बावो                 | .. | बन्हा                          |
| <del>बावल</del> बावल | .. | जसल                            |
| बारडी-बारडी          | .. | वह भूमि जहाँ कीचड़ न होता हो । |

॥ द ॥

|       |    |               |
|-------|----|---------------|
| झायची | .. | झायची का दाना |
| झडा   | .. | जडा           |
| झमा   | .. | झमें          |
| झम    | .. | झर            |
| झमान  | .. | झमान          |



॥ ई ॥

ईल .. कीड़ा

॥ उ ॥

उठ .. उठ  
उस्तरा .. उस्तरा

॥ ऊ ॥

ऊंदर .. घूँदा  
ऊन .. ऊन  
ऊँट .. ऊँट  
ऊमर .. ऊमर  
इंकाणी .. उंगानी  
ऊँडी .. गहराई

॥ ए ॥

एक .. एक  
एडी .. एडी  
एना .. इसको  
एला .. ये लोजिय  
एभा .. इसमें  
एवडी .. इधर  
एलमाली .. ठीक  
एकर .. एकड



|       |    |        |
|-------|----|--------|
| एता   | .. | बधर    |
| एतेती | .. | बधर से |

॥ खी ॥

|         |    |                               |
|---------|----|-------------------------------|
| खोर     | .. | उसका                          |
| खोरी    | .. | बकरा काटने का बनुठान          |
| खोवडी   | .. | उधर                           |
| खोतेती  | .. | उधर से                        |
| खोखनी   | .. | खोखनी                         |
| खोरसेनी | .. | झूठा करना                     |
| खोखणी   | .. | पहचानना                       |
| खोखो    | .. | टोकरी                         |
| खोखो    | .. | टेड़ा                         |
| खोकरा   | .. | बारिक सुतनी से गूँथा हुआ धेरा |

॥ क ॥

|                  |    |                                      |
|------------------|----|--------------------------------------|
| कुन्नार पोला     | .. | कुत्ते का पिन्ना ॥ कुत्ते का बच्चा ॥ |
| केन्डा           | .. | बछड़ा                                |
| केन्डो           | .. | बछिया                                |
| कुराडो           | .. | कुन्हाड़ी                            |
| कैची             | .. | कैची                                 |
| कुन्हाड़े कुन्हा | .. | कुत्ता                               |
| कुन्ही           | .. | कुत्तिया                             |



|                  |    |                                      |
|------------------|----|--------------------------------------|
| कस्तुर बिल्ली    | .. | कस्तुरी मृग                          |
| कस्तुर बिल्ला    | .. | घर्षी                                |
| कांदा            | .. | म्याज                                |
| कचोको            | .. | कोर                                  |
| कासैर धागो       | .. | कासि की बड़ी धाल                     |
| x x              |    | कासि की धालो                         |
| कान छौत्रा       | .. | कान का मेल निकालनेका चिमटा           |
| कसोरिया          | .. | कोना से उमर कपड़े से बनार्ह गई पट्टी |
| कस               | .. | एडी से उमर पैर में                   |
| कारभारी          | .. | घड़ने का गहना                        |
| कारभारी          | .. | तांडि का कार्य करनेवाला              |
| केरा             | .. | घान्मडो                              |
| कोनी             | .. | नर्ली                                |
| कसेना            | .. | क्यों                                |
| कृण              | .. | कोन                                  |
| काई              | .. | क्या                                 |
| काम              | .. | काम                                  |
| काठ              | .. | निकाल                                |
| काकोटी           | .. | रोटी बनाने का लकड़ी का बर्तन         |
| कृंठा            | .. | कीन                                  |
| कानेर फूल, कन्या | .. | कण्ठ                                 |
| कांटा            | .. | कांटा                                |
| काडोर डब्बी      | .. | दियासनार्ह की डिब्बिया               |





|              |    |                   |
|--------------|----|-------------------|
| काठी         | .. | दिवास्ताई की तीली |
| कोप          | .. | घाला              |
| काको         | .. | काला              |
| कातो         | .. | कता               |
| कोरकोँठो     | .. | गिरगुट्ट          |
| काक्यो       | .. | ककुवा             |
| काको नागसाँप | .. | काला नाग          |
| केकडो        | .. | केकड़ा            |
| कोडो         | .. | चीटो              |
| कौडी         | .. | कवडो              |
| कोटडी        | .. | कमरा              |
| किला         | .. | किला              |
| कागसो        | .. | कंगी              |
| कुर्गो       | .. | कुर्गो            |
| काटा         | .. | कटा               |
| काक्यो       | .. | चोली              |
| काका         | .. | चाचा              |
| काको         | .. | चाची              |
| कपड़ा        | .. | कपड़ा             |
| कडेर पट्टा   | .. | कमरबंद            |
| कोट          | .. | कोट               |
| कोस          | .. | कोस               |
| काधो         | .. | कधा               |
| कनसटो        | .. | कनसटो             |
| कड           | .. | कणपट्ट            |



|                   |    |                  |
|-------------------|----|------------------|
| कानेर = डमली कनार | .. | कनार             |
| कान               | .. | कान              |
| काछो              | .. | काछ              |
| कूगी              | .. | कोइनी            |
| कापती             | .. | कहया             |
| कीमा              | .. | कीमा             |
| कुन्परे           | .. | कुन्परे          |
| कुंरी             | .. | वाभी             |
| कुन्नार पिना      | .. | पिन्ना           |
| कुंवा             | .. | कुत्ता           |
| कुंराडी           | .. | कुन्वाडी         |
| काडोर ठन्वी       | .. | दियासलार         |
| कोप               | .. | प्याला           |
| कघौली             | .. | कटोरी            |
| करवा [यमराज]      | .. | यम               |
| कलोठ              | .. | खेना             |
| कमकाक्य           | .. | मुरहाती है ।     |
| कोनी              | .. | मकड़ी            |
| कोतली             | .. | धेनो             |
| कड़डी             | .. | मुगी             |
| कड़डो             | .. | मुगा             |
| कागला             | .. | कोवा             |
| कोर               | .. | जो बनजारा न हो   |
| कडाकन             | .. | शराब या ताड़ी    |
|                   |    | बेचनेवाली स्त्री |



|         |    |                         |
|---------|----|-------------------------|
| कड़वी   | .. | बड़ा चमचा               |
| कूंडो   | .. | बोझी                    |
| कूँठिया | .. | मिट्टी का छोटा कर्तन    |
| काको    | .. | काली                    |
| कडी     | .. | कटू                     |
| काचका   | .. | नारियल का एक भाग        |
| कडास    | .. | गेहूँ के जाटे का सलवा । |

॥ छ ॥

|             |    |            |
|-------------|----|------------|
| छेनी        | .. | छेन        |
| छन्वर गद्दा | .. | छन्वर      |
| छड          | .. | छास        |
| छोका        | .. | छाटो       |
| छोक         | .. | कुशल, चादर |
| छान्ठा      | .. | चप्पल      |
| छटमल        | .. | छटमल       |
| छको         | .. | छलिवान     |
| छाटो        | .. | छट्टा      |
| छिछकी       | .. | छिछकी      |
| छूटा        | .. | छूटी       |
| छोपडो       | .. | छोपडो      |
| छोडो        | .. | चरनी       |
| छान्ठा      | .. | चमडा       |
| छुरसो       | .. | कुर्सी     |



|        |    |                           |
|--------|----|---------------------------|
| खुर    | .. | खुर                       |
| खानिया | .. | नाला                      |
| खुनिया | .. | छर का कोना                |
| खोनी   | .. | कठाना                     |
| खादू   | .. | पशुओं का झुंड             |
| खुरिया | .. | बकरों की एडी और छुटने     |
| x      |    | के बीच का भाग             |
| खनिया  | .. | चीली के हाथ पर लगाने वाला |
| x      |    | वस्त्र                    |

॥ ग ॥

|             |    |               |
|-------------|----|---------------|
| गाड़र       | .. | गोबर का कीड़ा |
| गोरफली      | .. | खार           |
| गहूँ        | .. | गेहूँ         |
| गोल बटाणा   | .. | गोल मटर       |
| गुदडी       | .. | गर्दन         |
| गली         | .. | गला           |
| गोद         | .. | गोद           |
| गोडा        | .. | छुटना         |
| गोण्णी      | .. | पत्नी         |
| गोत         | .. | सगा           |
| गावडोर बाटी | .. | गाय का मांस   |
| गोरला       | .. | भेड           |
| गोरली       | .. | भेडी          |
| गोरो        | .. | गोरा          |



|                         |    |                                                 |
|-------------------------|----|-------------------------------------------------|
| गरतणी                   | .. | काली पोत                                        |
| गादी                    | .. | गद्दा                                           |
| गुङ्गो                  | .. | षायजामा                                         |
| गोद छाल लीदे जको बेटी.. |    | दत्तक कन्या                                     |
| गोद छाल लीदे जको बेटी.. |    | दत्तक पुत्र                                     |
| गोट                     | .. | शादी का एक प्रकार का अनुष्ठान,<br>बकरा काटने का |
| गोबर                    | .. | गोबर                                            |
| गायडी                   | .. | गाय                                             |
| गूली                    | .. | घुतड                                            |
| गौर                     | .. | बनजारा                                          |
| गूतणी                   | .. | गूना                                            |
| गडनो                    | .. | कुना                                            |
| गावण्या                 | .. | गानेवाला                                        |
| झें गेंदिया             | .. | मोटापन                                          |
| गुङ्गो                  | .. | छिलौना                                          |
| गटको                    | .. | छूट                                             |
| गदला                    | .. | पहाड                                            |
| गोब्बाणी                | .. | पूरण पोली के साथ जानेवाला<br>पदार्थ             |
| गोर                     | .. | कद भोज                                          |
| गदका                    | .. | उर्मग                                           |
| गरौडा                   | .. | छुना                                            |
| गोक्को                  | .. | छिपाना                                          |



|            |    |                                        |
|------------|----|----------------------------------------|
| गेणो       | .. | गहना                                   |
| गाढ        | .. | पीने के भीतर जमी हुई<br>चिकनी मिट्टी । |
| गुदला      | .. | घारा-सा                                |
| गलालण्ड    | .. | शौकीन स्त्री                           |
| गल-गल करना | .. | शोर मचाना                              |
| गळकनो      | .. | हथोलित होना                            |
| गैला       | .. | झुंड                                   |

॥ घ ॥

|        |    |                                  |
|--------|----|----------------------------------|
| घी     | .. | घी                               |
| घेरा   | .. | छटा                              |
| घुण्डी | .. | कबल                              |
| घाघोरा | .. | नईगा                             |
| घुंडी  | .. | खटन                              |
| घोटा   | .. | शादी में पिलाने का शरबत          |
| घुघरा  | .. | नूर                              |
| घोडा   | .. | घोडा                             |
| घोडी   | .. | घोडी                             |
| घुंडी  | .. | कमीज का खटन                      |
| घालना  | .. | दालना                            |
| घोट    | .. | हमली और मुक्का<br>मिश्रित शरबत । |
| घोर    | .. | चिन्ता                           |



|                |    |                            |
|----------------|----|----------------------------|
| धूरल           | .. | धूरल                       |
| धमकी           | .. | नाद                        |
| धुंडीवागो हठका | .. | बकरा या बकरी को विशेष हठकी |
| धट्टी          | .. | चक्की [जाता]               |
| धिमडो          | .. | छिपड़ी                     |

॥ च ॥

|           |    |             |
|-----------|----|-------------|
| चना       | .. | चना         |
| चाचक      | .. | चावल        |
| चा        | .. | चाय         |
| चटो जगिनी | .. | काजी अंगूठी |
| चुतठ      | .. | चुतठ        |
| चेला      | .. | चेला, शिष्य |
| चकवा      | .. | चकला        |
| चमचा      | चम | चमचा        |
| चिमटा     | .. | चिमटा       |
| चिमनी     | .. | चिमनी       |
| चुलो      | .. | चुल्हा      |
| चुनो      | .. | चुना        |
| चिमणी     | .. | छुवाका      |
| चेपलू     | .. | चप्पल       |
| चादर      | .. | चादर        |
| चुट्टा    | .. | चिलम        |
| चांदी     | .. | चांदी       |



|              |     |                                                                     |
|--------------|-----|---------------------------------------------------------------------|
| चूड़ी        | ..  | चूड़ी                                                               |
| चमकणी        | ..  | ठरना                                                                |
| चोकुन्दी     | ..  | चोकोन                                                               |
| चूर्मों      | ..  | गेहूँ की रोटों का चूर्ण बनाकर गूठ<br>और घी मिलाकर बनाया जाता है।    |
| चादिया       | ..  | लैकड़े माथे पर बाँधने का क्लात्क<br>कपडा                            |
| चंगीली       | ..  | रंगीली                                                              |
| चंगरी        | ..  | रंग बिरंगी                                                          |
| चपटी         | ..  | चटनी                                                                |
| चोकरे दाँत   | ..  | सामने के दो बड़े दाँत                                               |
| चोटा         | ..  | चौर                                                                 |
| चोटला        | ..7 | छूरी और रोपटो नामक आभूषण<br>लेणी में गूँथने पर चोटला कहलाता<br>है । |
| चिराटो       | ..  | कटौवाला पौधा                                                        |
| चरी मरी      | ..  | सज्जर                                                               |
| चटक - फ ट की | ..  | तीखा स्वाद                                                          |
| चट्टा        | ..  | दुसका                                                               |
| चकानो        | ..  | चकाना                                                               |





। उ ।

|        |    |                  |
|--------|----|------------------|
| छातो   | .. | छातो [पुरुष]     |
| छडी    | .. | छडी              |
| छवी    | .. | छाता             |
| छाण्णी | .. | छना              |
| छत     | .. | छत               |
| छपट    | .. | छत               |
| छपनो   | .. | छिपकनी           |
| छेनी   | .. | नवी              |
| छ      | .. | छे               |
| छो     | .. | छव               |
| छोटै   | .. | छोट              |
| छरी    | .. | छुरा             |
| छमडीली | .. | छ्यारी छुवती     |
| छमण्णी | .. | छमना             |
| छिंग   | .. | चौटी             |
| छंदौला | .. | रंगीला           |
| छेटी   | .. | दूरी             |
| छेडा   | .. | बाबू             |
| छेवी   | .. | बकरी             |
| छकडा   | .. | छाटी बैलगाडी     |
| छंगा   | .. | दज्जल            |
| छगाडी  | .. | बक पगड़ी का तुरा |
|        |    | तुरेबाज          |



॥ ज ॥

|               |    |                |
|---------------|----|----------------|
| जार           | .. | जवार           |
| जक्क्या       | .. | जई             |
| जक्क्यार बाटो | .. | जई का बाटा     |
| जड़           | .. | जड             |
| जापडो         | .. | जबड़ा          |
| जाध           | .. | जाध            |
| जीभ           | .. | जीभ            |
| जोठ           | .. | जोठ            |
| जालो          | .. | जाली चुन्ने की |
| जम्मी         | .. | जम्मी पश       |
| जू            | .. | जू             |
| जोग           | .. | जू जोक         |
| जनावर         | .. | तिह            |
| जागिया        | .. | जागिया         |
| जेब           | .. | जेब            |
| जम्मीवाछो     | .. | जमीनदार        |
| जठानी         | .. | जेठानी         |
| जमाई          | .. | दामाद          |
| जाम्ना        | जई | ठाधि           |
| जळ            | .. | जळ             |
| जलम           | .. | जम्म           |
| जाकणो         | .. | जाना           |
| जीवडा         | .. | मन, रतीर       |



## जगिठ

..

## बनजारों के पालतू

॥ घ ॥

बाध

..

बाध

बारो

..

गगरा

बुपडी

..

बोपडी

बिंगुर

..

बोंगुर

बगला

..

कमीज

बेजगी

..

मन्नी

बारा

..

बरना

बाग

..

नार

बुडाबो

..

प्रतिष्ठित

बागाबो

बड

नार टपकानेवाला

बामरी बोल

..

बरी-भरी बसिवाला छेत

॥ ट ॥

टांग

..

पेर

टांगिर बागबो

..

कंगुतो ॥ पेर की ॥

टपारो

..

छोटा बक्स

टमाट

..

टमाटर

टोपी

..

टोपी

टोपट

..

छोपरा

टांडा

..

बनजारों की बस्ती

टोपली

..

कान के पास बालों में बांधकर

पहनने का गहना



|          |    |                   |
|----------|----|-------------------|
| टोकी     | .. | टोका । मांग ।     |
| टेछो     | .. | पगत प्योछ         |
| टोक्को   | .. | छोबरा             |
| टिंगल    | .. | भांडा             |
| टेक      | .. | बधाई              |
| टको      | .. | टासना             |
| टेकाबाजी | .. | बडप्पन            |
| टणको     | .. | किसी बात की कृष्ण |

॥ ठ ॥

|          |    |                    |
|----------|----|--------------------|
| ठाँचा    | .. | पलंग का पाँच, कागज |
| ठाणो     | .. | धाना               |
| ठामतो    | .. | चापलूसी करता हुआ   |
| ठालो     | .. | सुना               |
| ठाल-ठालन | .. | दूस - दूसकर        |

॥ ठ ॥

|          |          |                 |
|----------|----------|-----------------|
| ठपठा     | ..       | ठप              |
| ठुग-ठुगी | ..       | ठुगठुगी         |
| ठाढो     | ..       | ठुड्डो          |
| ठब्बा    | ..       | ठिब्बा          |
| ठोकरा    | ..       | कूटा            |
| ठोकरी    | ..       | कूटी            |
| ठब्बाक   | विस्मयता |                 |
| ठाह      | ..       | सले जाने का भाव |



|       |    |               |
|-------|----|---------------|
| डोबी  | .. | टहनी          |
| डोबा  | .. | बाँछ          |
| डकार  | .. | ऊनांग         |
| डूबरा | .. | पानी का कुण्ड |
| डूनी  | .. | माँस का छोटा  |
| डूनी  | .. | दुकड़ा        |
| डोडो  | .. | टेडा          |

॥ ड ॥

|       |    |       |
|-------|----|-------|
| दौल   | .. | दौल   |
| दौलक  | .. | दौलक  |
| दाकणी | .. | दकना  |
| ढोर   | .. | पणू   |
| देगची | .. | देगची |
| दाडो  | .. | प्यार |
| दाड   | .. | आवाज  |
| दाकणी | .. | दकना  |
| दुकी  | .. | खसना  |
| दखू   | .. | मोट   |

॥ त ॥

|       |    |           |
|-------|----|-----------|
| तुरही | .. | तुरही     |
| तूरी  | .. | अरहर, तुर |
| तल्ली | .. | तिल       |



|        |    |                                                                  |
|--------|----|------------------------------------------------------------------|
| तेल    | .. | तेल                                                              |
| ताबो   | .. | ताबू                                                             |
| तितली  | .. | तितली                                                            |
| तु     | .. | तुम                                                              |
| तमारो  | .. | बापका                                                            |
| ताबो   | .. | लसाट                                                             |
| तुवाड  | .. | तख्तिया                                                          |
| तागिडी | .. | दुल्हन को शादी में दिये<br>जानेवाला दहेज को तागिडी<br>कहते हैं । |
| तमाकू  | .. | तम्बाकू                                                          |
| तेवार  | .. | त्योहार                                                          |
| ताकड़ी | .. | तराजू                                                            |
| तांडरी | .. | बौरत                                                             |
| ताजा   | .. | ताजा                                                             |
| तातो   | .. | गरम                                                              |
| टांडा  | .. | बनजारों को बस्ती                                                 |

॥ ध ॥

|         |    |        |
|---------|----|--------|
| धावर    | .. | शनिवार |
| धम      | .. | स्को   |
| धाकी    | .. | धाली   |
| धाोटिया | .. | वर     |



॥ द ॥

|             |    |               |
|-------------|----|---------------|
| दाणा        | .. | अनाज, धान्य   |
| दाडी        | .. | दाढ़ी         |
| दांत        | .. | दांत, दन्त    |
| दोस्त       | .. | थार           |
| दुतरो बाप   | .. | सोतेला बाप    |
| दम्बा       | .. | चोकर          |
| दरवाजा      | .. | दरवाजा        |
| दरवाजा चोकर | .. | देहलीज        |
| देख         | .. | मन्दिर        |
| दिक्या      | .. | छिनिया        |
| दाढ         | .. | दाल           |
| दूध         | .. | दूध           |
| दरु         | .. | शराब          |
| दीतखर       | .. | खिखार         |
| दल          | .. | दुदय          |
| दोरा        | .. | तागा          |
| दरवाणी      | .. | देवरानी       |
| दादा        | .. | दादा          |
| दादी        | .. | दादो          |
| दामन        | .. | बाधने का साधन |
| दाढ         | .. | दाढ           |
| दम          | .. | सांस          |
| दवाई        | .. | दुवाई         |



|          |    |                                    |
|----------|----|------------------------------------|
| दुबाडी   | .. | वह घास जो सदा हरा-भरा<br>रहता है । |
| दुनाघाटी | .. | माल दानेवाला, खेल                  |
| दाडी     | .. | दिन                                |
| दिखली    | .. | दीया                               |
| दिवाणी   | .. | राज्य के मन्त्री की पत्नी          |
| दगलबाज   | .. | दगा देनेवाला                       |

॥ छ ॥

|        |    |              |
|--------|----|--------------|
| धनी    | .. | पति          |
| धैर    | .. | दही          |
| धोछो   | .. | सफेद         |
| घास    | .. | भौंगी        |
| धड     | .. | धड           |
| धराध   | .. | धोनेवाला     |
| धोक्का | .. | प्राधना करना |
| छाटा   | .. | भागा         |
| धूरी   | .. | मस्ती        |
| धनी    | .. | पति          |

॥ न ॥

|        |    |      |
|--------|----|------|
| नंगावण | .. | कड़ी |
| नल     | .. | नल   |





|              |    |                                             |
|--------------|----|---------------------------------------------|
| नस           | .. | नस                                          |
| नाक          | .. | नाक                                         |
| नाडी         | .. | नाडी                                        |
| नोबत         | .. | मित्री                                      |
| नाग साप      | .. | नाग                                         |
| नीलो         | .. | नीला                                        |
| नाना         | .. | नाना                                        |
| नानी         | .. | नानी                                        |
| कू           | .. | नसक                                         |
| नायक         | .. | मुक्या                                      |
| नसाब         | .. | टांडे का न्याय                              |
| नानक्या छोडो | .. | टट्ट                                        |
| नानक्या चीतो | .. | तेदुवा                                      |
| नीलम         | .. | नीलम                                        |
| नागर         | .. | हल                                          |
| नातरौ        | .. | पुत्र जन्म के उत्तर पर<br>गाये जानेवाला गीत |
| नखन करनो     | .. | चरण हुना                                    |
| नखतो-छबतो    | .. | नम्रतापूर्वक                                |
| निलो         | .. | कच्चा                                       |
| नेग          | .. | नखर                                         |
| नसाब         | .. | न्याय                                       |
| नायकन        | .. | मुछिया की पत्नी                             |
| नखणो         | .. | कुन                                         |
| नानकी        | .. | छोटी                                        |



|       |    |               |
|-------|----|---------------|
| नई    | .. | जेसा, जेसी    |
| नेकी  | .. | बच्छाई        |
| नाटडी | .. | नटखट युवतियाँ |
| नक्ता | .. | रुम कार्य     |

॥ प ॥

|         |    |                    |
|---------|----|--------------------|
| पैदी    | .. | अंग                |
| पन्ना   | .. | पन्ना              |
| पलंग    | .. | पलंग               |
| पालकी   | .. | पालकी              |
| पूवंडी  | .. | दुम                |
| पंजा    | .. | पंजा               |
| पिचकारी | .. | पिचकारी            |
| परैवठा  | .. | प्रेमका            |
| परमका   | .. | प्रेमपूर्वक        |
| पातकिया | .. | दुखना पतला व्यक्ति |
| पतिया   | .. | पथिक               |
| पेरणी   | .. | तेरना              |
| पवार    | .. | पुठना              |
| पनठा    | .. | वर                 |
| पस्ताणी | .. | पस्ताना, पश्चाताप  |
| पोलगा   | .. | कलाउज              |
| पपोकी   | .. | पो                 |
| पोतिया  | .. | पालतु              |



|            |    |                |
|------------|----|----------------|
| बनवाडि     | .. | कौपले          |
| बदर        | .. | बांसल          |
| बायली      | .. | मेहमान         |
| पिटो       | .. | चिड़िया        |
| बन्नी      | .. | परोसने का साधन |
| बाँजरा     | .. | बायलेब         |
| बाणी       | .. | जल             |
| बलक        | .. | बलक            |
| बूटो       | .. | बीठ            |
| बेट        | .. | बेट            |
| बेटेमा     | .. | बेट ॥भीतर॥     |
| बेडू       | .. | बेडू           |
| बुल्लो     | .. | बुल्लो         |
| बूटेर बडका | .. | टोडू           |
| बेडू       | .. | गर्भ           |
| बुम        | .. | बुम            |
| बलंग       | .. | चारपाई         |
| बाणोर छोडो | .. | दरयायी छोडा    |
| बोन्नी     | .. | बोला           |
| बान        | .. | बान            |
| बरभाती     | .. | सवेरा          |
| बामडी      | .. | दुपट्टा        |
| बारा       | .. | पट्टा          |
| बटलोन      | .. | बल्लून         |
| बाट        | .. | रेडम           |



|       |    |      |
|-------|----|------|
| बागडी | .. | सापन |
| बामन  | .. | बिबि |

॥ फ ॥

|          |    |                         |
|----------|----|-------------------------|
| पसवाडी   | .. | पसली                    |
| पेटिया   | .. | लहंगा                   |
| पेको रंग | .. | हल्का रंग               |
| पूना     | .. | पूल की आकार वाली अंगूठी |
| पसवडा    | .. | पसवडा                   |
| पूली     | .. | कीम ॥ नाक की ॥          |
| पराका    | .. | हरी टहनियाँ             |
| पूदा     | .. | गोडरा                   |
| पूदी     | .. | तितली                   |

॥ ब ॥

|                |    |                                    |
|----------------|----|------------------------------------|
| बंगाई          | .. | पालना विधि                         |
| बेधिया         | .. | बिछोना                             |
| बुमडी          | .. | बोम भारना                          |
| बानो           | .. | बाहना                              |
| बेल            | .. | बैठी                               |
| बाँडो धिअर कोट | .. | वासकोट                             |
| बाबा           | .. | गुरु                               |
| बनजारा         | .. | बैनों की पीठ पर सामान              |
|                |    | सादर से जाने वाला                  |
| बोदलू          | .. | कोनी से उमर पहनने की लकड़ी की छड़ी |



|              |    |                  |
|--------------|----|------------------|
| बेगार        | .. | काँच से बनी चूठी |
| बकरा         | .. | बकरा             |
| बुरस         | .. | बुस्सा           |
| बदना         | .. | रस्सा            |
| बरमा         | .. | ब्रह्म           |
| बोते         | .. | बहुत             |
| बौंठी        | .. | बहु              |
| बदा          | .. | मनाई             |
| बक्षीस       | .. | क्षमा            |
| बकेडी        | .. | बक्कास करने वाला |
| बायाँ        | .. | नौकर             |
| बाँडो        | .. | अपूर्ण           |
| बकडी         | .. | बाहों में        |
| बतासा        | .. | फल विशेष         |
| बेलपतरा      | .. | बेल-पूल          |
| बीन          | .. | बीन              |
| बाटो         | .. | बपाती, रोटो      |
| बाजरी        | .. | बाजरा            |
| बगल          | .. | बक्की बगल        |
| बापणी        | .. | भौंठ             |
| बन्नीर मूंडो | .. | चूचुक            |
| बौंठी        | .. | बहु              |
| बार          | .. | पिता             |
| बेटा         | .. | पुत्र            |
| बेटो         | .. | पुत्री           |



|              |    |                 |
|--------------|----|-----------------|
| बाबेरतेल     | .. | बंभन            |
| बाण्णी       | .. | बादू            |
| बुनादी       | .. | नींव            |
| बंगला        | .. | महल             |
| बंबोडेर गुरं | .. | बकूल का गोंद    |
| बटाणा        | .. | मटर             |
| बिल्ली       | .. | बिल्ली          |
| बिलोर पीला   | .. | बिल्ली का बच्चा |
| बारह सिंगा   | .. | बारहा सिंगा     |
| बारहा सिंगी  | .. | बारह सिंगी      |
| बकद          | .. | केल             |
| बधवार        | .. | बुधवार          |

॥ भ ॥

|           |    |        |
|-----------|----|--------|
| भेजो      | .. | दिमाग  |
| भजा       | .. | बाह    |
| भेन       | .. | बहन    |
| भतीजी     | .. | भतीजी  |
| भतीजा     | .. | भतीजा  |
| भाई, भीया | .. | भाई,   |
| भाण्णो    | .. | भान्जा |
| भाटा      | .. | पत्थर  |
| भेठिया    | .. | भेठिया |
| भाग       | .. | भाग    |
| भाग       | .. | भाग    |



|            |    |                       |
|------------|----|-----------------------|
| भात        | .. | भात                   |
| भक्का      | .. | भक्का                 |
| भूरी सलिया | .. | उरवा                  |
| भूरिया     | .. | कभ                    |
| भौता       | .. | बौरा                  |
| भेनड       | .. | बहन                   |
| भडका       | .. | वेवकूप                |
| भूड        | .. | भाम्यहोन नारी         |
| भूनाई      | .. | भूज, भूमेया में डालना |
| भल्लों     | .. | भौकना                 |
| भेना       | .. | उछातो                 |
| भाटा       | .. | पत्थर                 |
| भङ्ग-सक    | .. | भक्ष्य करना           |

॥ म ॥

|                |    |          |
|----------------|----|----------|
| मटाई           | .. | मिठाई    |
| मर-मरा         | .. | मुरमुरा  |
| बेदध मेदार आटी | .. | मेदा     |
| मंगाळी         | .. | मधु, शहब |
| मिक्ता         | .. | टिट्डी   |
| मंगलवार        | .. | मंगलवार  |
| मिटकी          | .. | मैटक     |
| माधर           | .. | मच्छर    |
| म              | .. | मे       |



|             |    |                               |
|-------------|----|-------------------------------|
| मछमल        | .. | मछमल                          |
| मोल मेवाळी  | .. | ग्राहक                        |
| मरचा        | .. | मिरच                          |
| मसाळा       | .. | मसाला                         |
| मनक्या      | .. | मनक्य                         |
| मंगाळा      | .. | चुल्हे का पत्थर               |
| मन्ना       | .. | झोल                           |
| मठावो       | .. | श्राध्ना                      |
| मेडी        | .. | छत्तिहान के बीच गड़ी हुई धोली |
| मणि         | .. | माणिक                         |
| माला        | .. | माला                          |
| मुकुट       | .. | मुकुट                         |
| मूंगा       | .. | मूंगा                         |
| मोती        | .. | मोती                          |
| मोतीर सीपनी | .. | मोती की सीप                   |
| मसुडी       | .. | मसुडा                         |
| मुट्ठी      | .. | मुट्ठी                        |
| मूंडो       | .. | मूंगा                         |
| मोती        | .. | मोती                          |
| मोतीर सीपनी | .. | मोती की सीप                   |
| मसुडी       | .. | मसुडा                         |
| मुछ         | .. | मूछ                           |
| मामा        | .. | माला                          |
| मामी        | .. | मामी                          |
| मासी        | .. | मासी                          |





|            |             |                         |
|------------|-------------|-------------------------|
| मासीर बेटा | ..          | मासेरी बहन              |
| मासीर बेटा | ..          | मासेना भाई              |
| मज़ीद      | ..          | मस्जिद                  |
| मक्का      | ..          | मकई                     |
| मकाई       | ..          | मलार्ह                  |
| मसूर       | ..          | मसूर                    |
| मकाव       | ..          | जमाव                    |
| मेकू       | ..          | मिलार्ह, एकत्र होना     |
| मळतो       | : वकल बवेमळ | गले में गला डालकर रोना  |
| मूंग       | ..          | महंगी                   |
| कळकाणी     | ..          | मुस्कराना               |
| मूरत       | ..          | सुरत                    |
| मोचठा      | ..          | कूता                    |
| मेलणी      | ..          | रखना                    |
| मेलीठा     | ..          | वर्षा बलू               |
| मुंडी      | ..          | सर                      |
| मखलो       | ..          | मुछठा                   |
| माका       | ..          | नीठ                     |
| माँछो      | ..          | जमाना                   |
| किटको      | ..          | मेटक                    |
| मामलो      |             | तलाक पर लगाया गया हुक्क |
| मारोणी     | ..          | बबबबे मारवाणी           |
| माटी       | ..          | बादमी, पुरुष            |



॥ य ॥

|      |    |     |
|------|----|-----|
| याडो | .. | याँ |
| यार  | .. | यार |

॥ र ॥

|            |    |        |
|------------|----|--------|
| रौवा       | .. | रौवा   |
| रिम्प्या   | .. | रुमी   |
| रकाठ-स्कडी | .. | रखे    |
| राई        | .. | राई    |
| रैंडो      | .. | रैंडो  |
| रीष        | .. | भाबू   |
| रातडो      | .. | नाम    |
| रंग        | .. | ई रंग  |
| रस         | .. | ईस रस  |
| रजार्      | .. | रजार्  |
| रु         | .. | रुई    |
| रूपो       | .. | चांदी  |
| रिम्प्या   | .. | रुपया  |
| रंगमाड     | .. | रेती   |
| राख        | .. | राख    |
| टाडी       | .. | रस्ता  |
| रोकाणी     | .. | बिछाना |
| रंगडा      | .. | नामा   |
| रकाठ       | .. | रखना   |



|           |    |                                 |
|-----------|----|---------------------------------|
| कीडोर रेल | .. | चौंटी की कतार                   |
| रेल       | .. | धार                             |
| रामंडी    | .. | केल के छूट से बांधने की रस्ती   |
| रास       | .. | ढेर सारा                        |
| रंगनी     | .. | छोटा जाना                       |
| रछवा      | .. | जिस्को पत्नी की मृत्यु हो गई हो |
| रातठो     | .. | लाल                             |
| रीव       | .. | भानू                            |
| रण        | .. | युद्ध                           |

॥ ल ॥

|         |    |                           |
|---------|----|---------------------------|
| लटकेण   | .. | लटकण                      |
| लट्टा   | .. | केश बाल                   |
| लहिरट   | .. | जंगली कबूतर               |
| लोईउ    | .. | लहू                       |
| लेरिया  | .. | दोली छोड़ने/डा छोड़नेवाला |
|         |    | नौजवान                    |
| लभाण    | .. | ब्यापारी                  |
| लकडी    | .. | लकड़ी                     |
| लदेणिया | .. | सामान लादकर ले जानेवाला   |
| लालडी   | .. | मोति, मूंगा               |
| लेपा    | .. | पेटो                      |
| लबार    | .. | छुटा                      |
| लेस्या  | .. | लेने का भाव               |
| लड़ी    | .. | शृंखला                    |



बसेबडे

लौचडी

लूबी-लूबी रो मेला

लावा-लस्कर

लाढी

लेकी

लटकी

लेरा

लारी

लुङ्गा

लौलेणा

..

..

..

..

..

..

..

..

..

..

औदनी

सुन्दर युक्तियों का समूह

सगे संबंधियों की अनगिनत

संख्या

वधु

विस्ताव

जल्दी

झुमना

लारहा

पोंछना

माता

॥ व ॥

वासकी

ब वडद

वारस

वस

वसेर दाति

वदोई

वादर

वाग

वरस्पत

वजाकी

वद

..

..

..

..

..

..

..

..

..

..

..

वासुरी

उडद

वारिश

जवर

ब जवर के दाति

दोमक/ दोमक

बन्दर

वाघ

गुस्वार

उजाला

वद



|        |       |                                                                                             |
|--------|-------|---------------------------------------------------------------------------------------------|
| वह     | ..    | वह                                                                                          |
| वेरी   | .     | नदी में पानी भरने के लिए एक गज के छेरे में रेत निकालकर पानी निकालते हैं उसे वेरी कहते हैं । |
| वैतड़  | ..    | दुल्हा                                                                                      |
| वैज    | ..    | सुरास                                                                                       |
| वैपारी | ..    | ब्यापारी                                                                                    |
| विनंती | ..    | विनंती                                                                                      |
| वकीलडी | ..    | गोबर का ढेर                                                                                 |
| वाड    | ..    | छेत के चारों ओर काटि बिछाना                                                                 |
| वेणो   | ..    | होना                                                                                        |
| वदणो   | ..    | बटना                                                                                        |
| वदका   | ..    | पौधा                                                                                        |
| वधारणो | ४.    | उघाटना                                                                                      |
| वको    | ..    | संकट                                                                                        |
| वपा    | ..    | बोट                                                                                         |
| वगोणो  | ..    | बदनाम करना                                                                                  |
| वगाणों | ..    | बतावि करना                                                                                  |
| वठाव   | ..    | हाथ पै लाकर रोना                                                                            |
| वटसा   | ..    | छोटा भांडा                                                                                  |
| विचडो  | ..    | बिछडाव                                                                                      |
| वठाक   | ..    | जिस स्त्री या पुरुष का चरित्र ठीक न हो                                                      |
| वटाळो  | ..    | उठाना                                                                                       |
|        | ॥ च ॥ |                                                                                             |
| वेहडो  | ..    | झगडी जानवर                                                                                  |



| भरवत       | .. | शरवत                |
|------------|----|---------------------|
| । स ।      |    |                     |
| सुरी       | .. | सुवर                |
| सोमार      | कक | सोमवार              |
| सक्रवार    | .. | रक्रवार             |
| सोजाणो     | .. | सो जाना             |
| सूखा       | .. | सूखा                |
| सपारी      | .. | सुपारी              |
| सकाई       | .. | षका हुआ ककरे का कुन |
| साबु       | .. | साबुन               |
| सुराई      | .. | सुराही              |
| सरोता      | .. | सरोता               |
| सकर        | .. | चोनी                |
| साग-भाजी   | .. | तरकारी              |
| ससरौ       | .. | ससुर                |
| सासु       | .. | सास                 |
| संगासेण    | .. | संकीर्ण             |
| सोकेर बेटा | .. | सोतेली बेटा         |
| सोको बेटा  | .. | सोतेला बेटा         |
| सादरो      | .. | चटाई                |
| सयाणिया    | .. | सकई तिकिया          |
| सांकी      | .. | जंजीर               |
| सीडी       | .. | सीढी                |
| साठ        | .. | धान                 |



|            |     |             |
|------------|-----|-------------|
| सरा        | ..  | भुटा        |
| सुरीर बोटी | ..  | सुबर का मास |
| सरबत       | ..  | सरबत        |
| सुजी       | दुः | सुजी        |
| सपौक्या    | ..  | केवुकी      |
| साक्या     | ..  | सौमठी       |
| सांड       | ..  | सांड        |
| सोग        | ..  | सोग         |

॥ ह ॥

|              |     |                  |
|--------------|-----|------------------|
| हाट          | ..  | हाट              |
| हीरा         | ..  | हीरा             |
| हंस्ली       | ..  | हंस्ली           |
| हाथेर जगिनी  | ..  | जंगली ॥ हाथ की ॥ |
| होठ          | ..  | होठ              |
| हीवो         | ..  | छाती ॥ स्त्री ॥  |
| हणूत         | ..  | संगूर            |
| हण्णी        | ..  | हरिण             |
| हण्णीर पीला  | ..  | हरिण का लच्चा    |
| हाथी         | ..  | हाथी             |
| हटी          | हठक | हटा              |
| हठका         | ..  | हड्डी            |
| हंस्लीर हठका | ..  | हंस्ली की हड्डी  |
| हाथ          | ..  | हाथ              |
| हाक          | ..  | जावाज            |



|                  |    |                      |
|------------------|----|----------------------|
| हब्ब             | .. | हब्दी                |
| हुंठी वागो हक्का | .. | बकरी के पैर की हड्डी |
| हुक्का           | .. | हुक्का               |
| हांडी            | .. | मिट्टी का बर्तन      |
| खोडा             | .. | खोडा                 |



---

## सहायक ग्रन्थ सूची

---

## सहायक ग्रन्थ सूची

=====

- |                       |      |                                                                                 |
|-----------------------|------|---------------------------------------------------------------------------------|
| डा. स्वर्णलता :       | 1979 | लोक साहित्य विमर्श,<br>रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर                             |
| डा. बीरराम शर्मा :    | 1973 | लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग,<br>विनोद पुस्तक मन्दिर, वागरा-3                |
| डा. श्याम परमार:      |      | लोक साहित्य विमर्श,<br>जयकृष्ण अग्रवाल, जयहरी रोड, जयमेर ।                      |
| डा. एन.बी. चौधरी      | 1978 | लोक साहित्य और पावरी भाषा,<br>पुस्तक संस्थान, 37/50 गिल्लि बाजार,<br>कानपुर     |
| डा. ज्योतीराम शर्मा : | 1976 | किन्नर लोक साहित्य,<br>ललित प्रकाशन, लेवेडी सरोन,<br>बिलासपुर - विमोचन प्रकाश । |
| डा. सत्येन्द्र :      | 1971 | लोक साहित्य विज्ञान,<br>प्रधान कार्यालय : जयपाल रोड,<br>वागरा ।                 |
| डा. चन्द्रभान रावत    | 1967 | मथुरा जिले की बोली,<br>विन्दिस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद ।                          |
| पद्मसिंह शर्मा :      | 1960 | गुजराती और उसका साहित्य,<br>राजकमल प्रकाशन, दिल्ली                              |
| डा. सुनील कुमार :     | ..   | भारतीय वार्थ भाषा और विन्दी ।                                                   |
| डा. रघुवीर सिंह :     | 1963 | टाँठ कृत राजस्थान, भाग 1, छठ ।,<br>संगत प्रकाशन, जयपुर ।                        |

सर जार्ज क्लाइव : 1959  
ग्रिफ्थिन

प्रो. सत्यजित 1960  
सिद्धान्तालंकारः ..

रमाशक्ति शुक्ल : 1969

डा. प्रभाकर साधवे : 1969

डा. भोलानाथ तिवारी 1969

कूपरेण्ड : 1968

डा. वम्बाप्रसाद सुमन 1979

वही 1982

भारत का भाषा सर्वेक्षण,  
अनुवादक : डा. उदयनारायण तिवारी,  
प्रकाशन शाखा : सूचना एवं जन संपर्क  
विभाग, लखनऊ - उ.प्र.

भारत की जनजातियाँ,  
विद्या विहार, देहरादून ।

हिन्दी का व्यवहारिक व्याकरण  
और रचना ।  
विद्यामन्दिर, वाराणसी-।

भारत की पन्द्रह भाषाएँ बोलिने  
और सीखिने । पंजाबी पुस्तक भण्डार,  
दिल्ली ।

शब्दों का अध्ययन

शब्दकार, दिल्ली ।

लेखक । स्वामी - भाषा - डॉ. डा.  
विवेकनाथ प्रसाद, मोतीलाल बनारसीदास,  
बनारस ।

संस्कृति, साहित्य और भाषा,  
धार्मिकी प्रकाशन, जलौगढ़ ।

भाषा विज्ञान और सिद्धान्त  
और प्रयोग, सस्ता साहित्य भण्डार,  
दिल्ली ।

|                                        |          |                                                                                                       |
|----------------------------------------|----------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| डा. बाबुराम सक्सेना                    | 2004     | वि.सं. सामान्य भाषा विज्ञान,<br>हिन्दी साहित्य सम्मेलन,<br>प्रयाग ।                                   |
| डा. केवदत्त खाली                       | 1982     | कुमाऊँनी भाषा और संस्कृति,<br>गुआयन, कलौगढ़ ।                                                         |
| डा. भोलानाथ तिवारी                     | सं. 1884 | भाषा विज्ञान, चतुर्थ आवृत्ति ।<br>किताब मंस, प्लाहाबाद ।                                              |
| पद्मसिंह शर्मा "कम्पेन"                | 1955     | हिन्दी गुरुवाती शिक्षा, तृतीय संस्करण<br>राजस्थान प्रेस, जयपुर-2                                      |
| डा. राधावल्लभ शर्मा                    | 1969     | भारत के प्राचीन भाषा परिवार<br>और हिन्दी तीन छोटों में ।<br>प्रकाशन : राजकमल प्रकाशन ।<br>नई दिल्ली । |
| देवीरंजन सिंहदेवी :                    |          | भाषा और भाषिकी                                                                                        |
| पं. किशोरीदास याज्ञपयी                 |          | भारतीय भाषा विज्ञान,                                                                                  |
| पं. हरमोचन्द्रदास<br>त्रिकम्बानन्द सेठ | : 1928   | पास्त, ददर - मणझी, कनकस्ता ।                                                                          |
| मुहम्मद मुस्ताफा डा<br>"मददाह"         |          | उर्दू- हिन्दी शब्द कोश ।                                                                              |
| बी चन्द जैन :                          |          | वन वन घुमा बनबारा ।                                                                                   |
| डा. राजेन्द्र प्रसाद :                 | 1951     | अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन,<br>दिल्ली का उद्घाटन भाषण ।                                           |

श्रीमती इन्दिरा गान्धी 1966

ज्योतिष मेहता : 1966

जवाहर लाल नेहरू : 1956

हिन्दू वेदी हरिनिवास : 1956

विष्णु ठीरु रत्न :

डा. भाग्यलाल चौ.एस.

जोधा गौरादेव वीरभद्र :

कुलकर्णी, कृ.पा. :

डा. रामचन्द्र शुक्ल :

डॉ. जनीराम वीरभद्र पाटील :

श्री गोवर्धन शर्मा :

हिन्दू वेदी हरिहर निवास

डा. रामचन्द्रसुन्दरदास :

डा. मधुसूदन वीरभद्र :

डॉ. संपादक : मनोहर प्रभाकर :

हिन्दू पत्रिका :

हिन्दू भारतीय जनजात सेवा

हिन्दू उद्घाटन का भाषा ।

हिन्दू भारतीय जनजात सेवा

हिन्दू समारोह का भाषा ।

हिन्दू इतिहास की कला, पृ. 15

मध्य भारत का इतिहास,

प्रथम खण्ड ।

भारतीय संस्कृति और समाज,

क्रिस्ताब्ध धर,

मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास ।

राजपूतों का इतिहास ।

मराठी व्युत्पत्ति कोश

भाषा शब्द कोश

गौर जनजात लोकांचा इतिहास ।

हिन्दू साहित्य

मध्य भारत का इतिहास - प्रथम खण्ड ।

हिन्दू साहित्य का इतिहास ।

राजस्थानी भाषा और साहित्य ।

राजस्थानी साहित्य और संस्कृति ।

भाषा, मध्याह्न, हिन्दू जनजात,

भाषाविद, पुराना, जनजात,

लोक साहित्य आदि ।

### REFERENCE BOOKS

- Col. Meekenzie : Berar Censuses Report, 1881
- Irvin : Army of Indian Mughals
- Baines, Athislana : Ethnography, 1912
- Col. Tod, James : Caletters on Mahrathas, Indian Office, Tracts, 1798
- Nangundaya H.V. : The Mysore Tribes and Castes, Mysore The Constitution (S.T.) Order, 1950
- Banjara Study Team : Report of All India Banjara Study Team, 1968
- Government of India: Report of the Criminal Tribes Act Enquiry Committee 1949, Government of India
- Boas F. : General Anthropology
- Dr. D.N. Majumdar : Science and Culture
- Gillin, J.L. & Gillin, J.P. : Cultural Sociology
- Dr. S. radhakrishnan: Hindu View of Tribe
- V.A. Smith : India Vol. III
- Col. Tod, James : Annals and Antequited of Rajasthan Vol. I, Introduction
- Gurey, G.S. : Races and Castes of India
- Sinha N.K. : History of India
- Crooke W. : Castes and Tribes of the N.W. Provinces & on the Vol. IV, 1896
- Dr. Grierson : Linguistic Survey of Hindia, Vol. I, Part I
- Ibbetson, D.J. : The Punjab Castes and Tribes Vol. II
- Cowell. : Academy 14th May 1870

- E.J. Kille : Report on the Censuses of Berar 1881
- Prasad Nanwadeswar : Land & People of Tribal Bihar & Ranchi
- Government of India : Censuses of India, 1961, Report on the Population estimate of India.
- Rangra
- Epigraphica : Indica Vol.XI
- Elliot H.M. : The races of the N.W.O. of India Vol. I, London 1869
- Dr. Majumdar D.N. : Races and Culture of India, Bombay, 1958
- Sherasingh : The Sikhs of Punjab, Preface
- Cumberledge H.R. : Monograph & Banjara Class, 1882.
- Hanson S.S. : The Castes and Tribes of M.E.H. The Nizam's Domain Vol.I, Bombay
- Sir Melcolne J. : Central India Vol.II
- Sherasing M.A. : Hindu Tribes and Castes as represented in Banjara Vol.I, Calcutta 1872.
- Sir Lyall, Alfred : Asiatic Studies Vol.I
- Flower, W.C. : Report on the Censuses of British India, Vol.I, 1881
- Hastings, Warren : Censuses of India, 1891, Vol.No.IV, Berar of Hyderabad assigned districts, Calcutta, 1892
- Stuart, H.A. : Censuses of India, Vol.XIII, Madras
- Robertson B : Censuses of India, 1891 Vol.XI, the Central Provinces and Penalties Part I, Calcutta, 1893.
- Apte V.S. : Sanskrit - English- Dictionary
- Elliot H.M. : The races of North Western Provinces of India, Vol.I

- Hassan, S.S. : The Castes and Tribes of Nizam's Domination
- Shakespeare : Dictionary
- Temple R.C. : Indian Antiquary, Vol.IX
- Thurston E. : Castes and Tribes of Southern India Vol. IX, Madras, 1909
- Ibbetson : Punjab Castes & Tribes, Vol.II
- Col. Mackenzie : Berar Censuses Report, 1881
- Syed Sirajul-Hasan : The Castes and Tribes of M.E.H. Nizam's Domination, Vol.I, Bombay 1920
- Rose H.A. : Tribes and Castes of Punjab & N.W.F. Provinces Vol.II, Lahore, 1961 (Lahore)
- Prasad Narmadeshwar : People of Tribal Bihar, Ranchi, The Tribal Research Institute, 1961.
- Aiyappan A. : Report on the Socio-Economic Condition of the Ab-original Tribes of the Provinces of Madras, 1948
- Krishna Iyer, L.A. : Anthropology of India
- Nenneddy M. : Slight Criminal Classes of Bombay, Presidency.
- Censuses of India, 1961 : Report on the population, estimates of India (1820-30), The Provinces of Malwa & adjoining districts, 1922
- Sher S.S. : Sikh Sikligers of Punjab
- Censuses of India, 1961 : Mother Tongue, Vol.IX
- Dr.Chatterji, S.K. : Origin & Development of Bengali Language.
- Dr. Grierson W. : Linguistic Survey of India Vol.I, Part I, 6th Calcutta 1927
- Dr. Tessitorty : Indian Antiquary, 1914-16



- Government of India : The Scheduled Castes and Scheduled Tribes, Lists of Notification Ord 1936 and Censuses Report of India,
- Cumberlidge : Monograph on Banjara
- Wellesly : Note on Deccan
- Abb Dubb'oe : Abbu Dubb'ois Notes
- Col. Macnizie : Berar Censuses Report 1881
- Col. Tod.J. : Letters on the Marhattas 1798  
Indian Office Tracts.
- ~~MEMOR~~
- Lemmarchand A.W.M. : A Guide of Criminal Tribes,  
Nagpur 1908
- Hollis, S.T. : Criminal Tribes of U.P.1914
- Daly F.C. : Criminal Classes Operating  
In Bengal, 1916
- Naidu,M.P.R. : The Criminal Tribes of Madras
- Kant H.K. & Tourkeins L.L. : Report on the questions relating  
to wandering and criminal tribes  
of Punjab, Simla - 1914
- Bhargawa B.S. : Criminal Tribes of India, Lucknow  
R 1949
- Dr. Majumder D.N. : Culture of  
Races and Languages of India, 1949
- March of India, : Vol.9, No.3, March 1957
- K. Iyer L.A. & : Anthropology in India,  
Bal Ratnam Bombay 1961
- Bahl, Kalicharan 1967 : A reference Grammar of Hindi,  
Chicago, University of Chicago

- Beames John : 1966. Comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India, Munshiram Manoharlal, Delhi (1st Edition, 1972) Turner & Co., London
- Burton Page John : 1957. Compound and Conject Verbs in Hindi BSOASXIX 469-78 University of London.
- Chidananda Murthy M.: 1965. Lambani Janol Mattu Awara Bhase, Prabuddha Karnataka 47:3, 53-78
- Crooke, W. : 1973. Races of Northern India Cosmo Publications, Delhi. V
- Gazetteer of Bombay Presidency : 1899. Vol. IX, Part II, Bombay
- Grierson, George A. : 1968. Linguistic Survey of India. Vol. IX, Part III, Motilal Banarasidas, Delhi, Reprint, (First Edition, 1907)
- Hucker Paul : 1961. On the problem of a method for treating the compound and conjunct verbs in Hindi. BSOAS, XXIV 484-516, University of London.
- Horley, A.H. : 1960. Colloquial Hindustani Routledge & Kegan Paul Ltd., London.
- Hockett, C.F. : 1955. A manual of phonology. Indiana University Press, Bloomington.
- Irvine, William : 1962. The Army of the Indian Mughals - Its organisation and Administration Eurasia publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
- Kachru, Yamuna : 1966. An Introduction to Hindi Syntax University of Illinois, - Urbana.

- Kellogg, S.H. : 1965. A Grammar of the Hindi Language, London  
Reprint of 11th Edition,  
(1st Edition, 1975)
- Laxmi Bai, B. : 1975. An Excursion in to the semantics of some particles in Indian Languages, Osmania -  
Paper in Linguistics, Vol.I,  
53-64. Osmania University,  
Hyderabad.
- Lyons, John : 1971. Introduction to Theoretical Linguistics, Cambridge University Press, London and New York.
- Dr. Olphen, Herman van: 1970. The Structure of the Hindi Verb, Phrase, University Microfilms, Inc. Ann Arbor, Michigan
- Preteap Dr. : 1968. The Banjaras of Bapunagar (A settlement in the Urban environs of Hyderabad) Research Paper II, Tribal Cultural Research and Training Institute, Hyderabad.
- Dr. Preteap : 1970. Festivals of Banjaras, Tribal Cultural Research and Training Institute, Hyderabad.
- Siraj-ul-Hassan Syed : 1920. Caste and Tribes of M.E.H. Nizam's Dominions, Vol.I, Bombay
- Trail, Ronald L. : 1970. A Grammar of Lamani Summer Institute of Linguistics, University of Oklahoma, Norman
- R.V. Russell and Hiralal : Tribes and Castes of the Central Provinces of India.
- Mr. Bhimabhai Kirparam : Hindus of Gujrat,
- Mr. Crooke : Elliotts Races,

---

बनजारा चित्रावली

---



